

श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री

वैजयन्तीकोषः

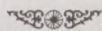
सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री



जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक
चौखम्भा भारती अकादमी

आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक
'गोकुल भवन', के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)
+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

© चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी
पुनर्मुद्रित : सन् २००८
मूल्य : रु. ४००.००

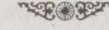
शाखा
चौखम्भा बुक्स
५ यू. ए. जवाहर नगर
(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)
मलकागंज, दिल्ली-११०००७
फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान
चौखम्भा विश्वभारती
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक
के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

मुद्रक : सुरभि प्रिंटर्स, वाराणसी

Jaikrishnadas-Krishnadas Prachyavidya Granthamala

2



VAIJAYANTĪKOṢA

OF
ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index

by
Śrī Pt. Haragovind Śāstri
Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY

VARANASI

Publisher

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY

Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East

'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)

+91-542-2332637, 2332702 (R)

© Chaukhambha Bharati Academy, Varanasi
Reprint Year : 2008

Also can be had from

CHAUKHAMBHA BOOKS

5. U. A. Jawahar Nagar

(Behind Jawahar Nagar Post-office)

Malkaganj, Delhi-110007

Phone : +91-11-23853166

Branch

CHAUKHAMBHA VISVABHARATI

Oriental Publishers & Distributors

K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Printed at : Surbhi Printers, Varanasi

प्रस्तावना

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्रांशुसितभस्माङ्ग चन्द्राङ्गिनिविलोचन ।

चन्द्रास्योमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है। देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्माजन-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं। कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्माजन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है। इसी कारण इस मनुष्य-योनि को सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है। इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सौभाग्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मा में लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ।

मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन। इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशय कष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वापेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है। अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए। शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है। यथा—

‘काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरत्तये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततथोपदेशयुजे ॥’

तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षणं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च लाभकाव्यनिषेवणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ, मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

(अग्निपुराण २३७।३-४)

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुष्ठा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।’

(महाभाष्य पस्पशाह्निक)

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीषे पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छ्रकृत ॥’

उपयुक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अधमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-सञ्चय करना परमावश्यक होता है, वह सञ्चय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-संचय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर (श्रवण) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों (ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैश-द्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क (ई० पू० ७०० वर्ष) ने निघण्टुके भाष्यरूप ‘निरुक्त’ ग्रन्थकी रचना की। वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थान्तिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दोंद्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ औप-मन्यव, ३ वार्षायणि, ४ गार्ग्य, ५ आग्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैटिकी, ९ गालव, १० स्थीलाष्टीवी, ११ क्रौष्टु और १२ काथक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। ५० श्रीभगवद्गीतेने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कदिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। (श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९)

लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक

शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

(क) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यार राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध (पृ० ४) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनोषधि-सिंहादि-नृ (मनुष्य)-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिघ्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने.....ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज (राजनिघण्टु)
११. नारायणदत्तकविराज	: राजवल्लभ
१२. पद्मनाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४. ,,	: द्विरूपकोष
१५. ,,	: त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मयुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. की. संक्षिप्तसारकार:	: उणादिवृत्ति
२७. " "	: " "
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. बोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा (२) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रत्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. घर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है।

(ख) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'सारार्थचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है। उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं।

पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है। उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

प्राप्तकोष :

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: "
७. एकाक्षरकोष	: "
८. द्विरूपकोष	: "
९. "	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: "
१५. नानार्थमञ्जरी	: भेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: "
२६. अभिधानचिन्तामणि—	
नाममालापरिशिष्ट	: "
२७. लिङ्गानुशासन	: "

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छ्रः	: जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु	: मदनपाल
३०. मुक्तावली	: श्रीधर
३१. रत्नमाला	: दण्डाधिनाथोपनाम इरुगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु	: अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह	: अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला	: अप्पयदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला	: अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी	: कालिदास
३७. शब्दार्णव	: काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार	: केशव
३९. लोकप्रकाश	: क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: गर्दसिंह
४१. शब्दमाला	: गोपीनाथ
४२. नामावली	: गोवर्धन
४३. शब्दसागर	: गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका	: चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र	: जटाधराचार्य
४६. निघण्टु	: जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह	: तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण	: त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला	: दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला	: दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान	: देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय	: धरणीश
५३. कविजीवन	: धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका	: नत्तिकरकवि
५५. वर्णाभिधान	: नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु	: नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ	: नारायणदास
५८. रत्नकोष	: नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग	: पद्मनाभ

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला :	पुण्डरीकविट्ठल
६१. वर्णदेशन :	पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष :	पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका :	बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय :	बाल्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष :	बिल्लण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु :	भार्गवाचार्य
६७. नाममाला :	भोजराज
६८. मङ्गलकोष :	मल्ल
६९. शब्दरत्नावली :	मधुरेश
७०. पदचन्द्रिका :	मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक :	प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर :	"
७३. एकाक्षरनिघण्टु :	माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी :	मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला :	रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय :	राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु :	राम
७८. उणादिकोष :	रामशर्मा
७९. शब्दमाला :	रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला :	रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु :	वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु :	वररुचि
८३. कविमञ्जरी :	वल्लभ
८४. शब्दरत्नाकर :	वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु :	विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि :	विट्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु :	वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक :	"
९०. दशदीपनिघण्टु :	वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला :	शङ्कर
९२. शिवकोष :	शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष :	श्रीहर्ष
९४. इलेषार्थपदसंग्रह :	"
९५. एकाक्षरनिघण्टु :	सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश :	सारेश्वर
९७. भुवनप्रदीपिका :	सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर :	सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक :	सोमभव
१००. एकार्थनाममाला :	सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला :	"

अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि ^१	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल ^२	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन ^३
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। (द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२०)

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।

१३२. सोमनन्दी	१३५. हट्टचन्द्र
१३३. सज्जन	१३६. हर
१३४. साहसाङ्क	१३७. कात्यायन

अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला ^१	१६२. बृहदमरकोष ^३
१३९. असालतिप्रकाश	१६३. महाखण्डनकोष
१४०. आनन्दकोष	१६४. पदरत्नावली
१४१. एकवर्णसंग्रह	१६५. राजकोषनिघण्टु
१४२. एकाक्षरकोष	१६६. पुद्गलकोष
१४३. उत्पलिनो	१६७. लिङ्गप्रकाश
१४४. ऊष्मविवेक	१६८. मुनिकोष
१४५. अजय	१६९. वर्णप्रकाशकोष
१४६. अरुण	१७०. पालकोष
१४७. इन्दुकोष	१७१. वात्स्यायनकोष
१४८. कल्पतरुकोष	१७२. कोषसार
१४९. ग्रहाभिधान (देवज्ञमुखमण्डन)	१७३. शब्दतरङ्गिणी
१५०. जकारभेद ^२	१७४. गङ्गाधर
१५१. दण्डिकोष	१७५. शब्ददीपिका
१५२. सुभूतिकोष	१७६. गोवर्द्धनकोष
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु	१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१५४. नक्षत्राभिधान	१७८. शब्दसारनिघण्टु
१५५. देशीकोष	१७९. चन्द्रकोष
१५६. नानार्थमञ्जरी	१८०. संसारावर्त
१५७. नामनिधान	१८१. चरककोष
१५८. पद्मकोष	१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१५९. भुमकोष	१८३. सकारभेद ^४
१६०. चकारभेद	१८४. सज्जीवनी
१६१. बीजकोष	१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु
	१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं।

२., ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं।

३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु	१९०. सारस्वताभिधान
१८८. साध्यकोष	१९१. हनुमन्निघण्टु
१८९. रत्नकोष	१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

(ग) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है (पृ० ६३४)। इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहासमें (पृ० ६३३) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है। इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियोंमें 'त्रिकाण्डकोश' होनेका उल्लेख किया है। उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष (उक्त इति० पृ० ६२०) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी (वही इतिहास पृ० ७७७-७७९)।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है। इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है। इनका समय शक ८५३ (ई० ९६९) है। इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है। (गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१)।

आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की। आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे। ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्जीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे। पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे। इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है। एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये।

इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्' में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय' नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीवरम्' में ही रहे।

उपर्युक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य-कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष :	कर्नल जी० ए० जाकोब
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष :	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पटिका :	वादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी :	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह :	
७. कोषावतंस :	राघवकवि
८. तिङन्ताणवतरणि :	
९. धर्मकोष :	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान :	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष :	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष :	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष :	
१४. बाङ्मयाणव :	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम् :	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम :	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष :	
१८. देशीनाममाला :	हेमचन्द्राचार्य

वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पाताल-काण्ड और ५ सामान्यकाण्ड। उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं। द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं—१ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं। ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं। इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशों-का ही प्रयोग किया गया है।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं। उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निवैश्वानरः.....' (१।२।१४) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धाग्नि, काष्ठाग्नि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा (चिता)ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्वग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' (३।५।२) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है। तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते.....' (३।४।६४) से 'गरानलप्रयोगादच प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' (३।५।१०८) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नोस, पुष्पाव्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अवभाव-काशिक, शिवव्रती, रुद्रव्रती, अहिब्रती आदि-आदि व्रतियों एवं तत्पृच्छ, अतिकृच्छ, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं। (३।६।१२५—१४९)

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिश्येताः.....' क्रिमिरः सितलोहितः' (५।३।१०—५।३।२५) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों (रङ्गों) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ

वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो'..... (५।३।२५) से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक (दो, तीन, चार और पांच) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों (स्वादों) के नाम अलग-अलग '—त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' (५।३।४५) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोंके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है।

आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले (लगभग २२५ से भी अधिक) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है। कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका। संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा। मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है।

आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया। उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया। इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गणने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया। ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोंके आदेश, सुहृद्द्वगंकी सद्भावना एवं सहानु-भूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी। उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है।

प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धारण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी। इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, झालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका। किन्तु सुलतानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की। जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी। अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है। लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है। पाठकोंको इससे अधिक सोविध्य प्राप्त होगा। सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद

मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सोभाग्य प्राप्त होने जा रहा है।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका। अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास कहेगा।

आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ। तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही। 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है। चीखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झा-जीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चीखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल (चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विट्ठलदास गुप्त)को भी साशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजोंके समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्निघन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतोभावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्ति-वश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

‘नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

ततो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात् ॥

तथा—

‘गच्छतः स्वलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥’

इति शम् ॥

‘गोविन्द-कुटीर’
केसठ (शाहाबाद)
हरिप्रबोधिनी ११
सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—

मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री

विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	१
(पर्याय-भाग : काण्ड १-५)	२-१५८
(१) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	१
२. लोकपालाध्याय	२
३. यक्षाध्याय	१०
(२) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	११
२. मेघाध्याय	१७
३. खगाध्याय	१८
४. शब्दाध्याय	२२
(३) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	२५
२. शैलाध्याय	२९
३. वनाध्याय	३२
४. पशुसंग्रहाध्याय	४७
५. मनुष्याध्याय	५२
६. ब्राह्मणाध्याय	६०
७. क्षत्रियाध्याय	७५
८. वैश्याध्याय	८९
९. शूद्राध्याय	९९
(४) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	१०८
२. जलाध्याय	११२
३. पुराध्याय	११६
४. भूताध्याय	१२७

(५) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्माध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१४९
(नानार्थभाग : काण्ड ६-८)	...	१५९-२२४
(६) द्व्यक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७२
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
(७) त्र्यक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
(८) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवलिङ्गाध्याय	...	२०८
(अर्थवलिङ्गाध्याय)	...	२०८
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१०
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१३
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१५
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२१८
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२०
ग्रन्थोपसंहार	...	२२५
परिशिष्ट	...	२२७
शब्दानुक्रमणिका	...	१-१७०

॥ श्रीः ॥

वैजयन्तीकोषः

अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।
 ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरुणां गुरवे नमः ॥ १ ॥
 प्रकार्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।
 वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥
 स्त्रीपुंनपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।
 नृस्त्री नृषण्डषण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥
 समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।
 लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥
 यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।
 विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥
 स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।
 षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥
 त्रिधित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।
 अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥
 ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् कचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।
 एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥
 इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।
 प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥
 सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।
 समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥
 न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।

१. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।
 सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥
 अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।
 देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।
 आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिर्नन्दनाः ॥ ३ ॥
 सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।
 बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥
 अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्देवतं देवता स्त्रियाम् ।
 त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥
 आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।
 ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥
 हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।
 पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥
 शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।
 परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसवाहनः ॥ ८ ॥
 पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुघणो नाभिजो विधिः ।
 वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्वाह्मी सरस्वती ॥ ९ ॥
 विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।
 दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षस्त्रिकुट्टिष्ठश्चराः ॥ १० ॥
 पीताम्बरो हृषीकेशो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।
 श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गो श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥
 वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।
 अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥
 मुञ्जकेशी मुररिपुर्गदापाणिर्धोऽक्षजः ।
 अनन्तशायी वृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥
 शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।
 कालकुन्धो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥
 पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।
 कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥
 आचारा वैष्णवी सूदमा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥
 कौस्तुभोऽस्य मणिलक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं मुदर्शनम् ॥ १७ ॥
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्ठकः ।
 आदित्यो द्विपदस्तार्क्ष्यस्त्रिविक्रम उरुकमः ॥ १९ ॥
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलायुधः ॥ २२ ॥
 बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥
 भद्राङ्को भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिधृत् ।
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाग्रजः ॥ २५ ॥
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेपुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।
 ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्याद्दृश्यकेतुरुपापतिः ॥ २९ ॥
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषी ।
 अश्वो ह्यशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।
 बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥

समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिल्लोकजिज्जिनः ।
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वर्हस्त्रिकालदृक् ।
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदमुतेन्दिरा ।
 रमाब्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाभुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।
 सुपर्णातनयस्तादर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥
 पन्नगारिविष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलम्रीवस्त्रिलोचनः ।
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्हंगायुधः ॥ ४३ ॥
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।
 मिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाव्रतः ।
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।
 उमः कटप्रदिग्वासा भाण्डः षाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥
 बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घ्रिणः ।
 पिनाकोऽजगवं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।
 अथ कूर्माण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मी भृङ्गिरिटिः शला ।
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिब्राह्मणः ॥ ५५ ॥
 स्वामो गाङ्गेयगौरेयब्रह्मचारिमहौजसः ।
 षाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।
 आर्योऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।
 यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।
 चर्ममुण्डा तु चामुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहद्यपि ॥ ६४ ॥
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः । ६४३

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरजितायां वैजयन्तां

स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्श्वनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥
 वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।
 मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनाषाद् सुराधिपः ॥ २ ॥
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।
 स्वाराड्भुक्षाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥
 आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।
 खदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।
 अश्वोऽस्य वृषणश्च स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥
 अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्मा समन्तभुक् ।
 जातवेदा बृहद्भर्तुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽभिरुदधिः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।
 कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः सुगिज्जो हव्यवाहनः ।
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥
 वभिर्भुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वञ्चतिरञ्चतिः ।
 जागृविः सहुरिः सद्विर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥
 सृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराण्येषिराशिराः ।
 तेजोऽपिस्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्नायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥
 स्कन्धाग्निः स्थूलकाष्ठाग्निर्मुर्मुस्तु तुषानलः ।
 छागणस्तु करीषाग्निर्मेघवह्निरिरमदः ॥ २० ॥
 कुक्ष्यग्निर्हृच्छयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।
 सहरक्षा दवो दुधस्ताणैश्च क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥
 क्रव्यात्तु प्रेतदाह्माग्निर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितृणां कव्यवाहनः ॥ २२ ॥
 अपोनपात्तु यज्ञाग्निः क्रत्वग्निः स्यादपान्नपात् ।
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽभिर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।
 पृथिकृद्धर्महोमेषु पदहोमेष्वाग्नीकवान् ॥ २५ ॥
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।
 ब्रह्मौदनाग्निर्भरतो यविष्ठः सवनाहुतौ ॥ २६ ॥
 महिमास्तु विवाहप्रिवैश्वदेवाभिरहुतः ।
 व्रतान्ते बहुरन्नादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।
 धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥
 शिखा जिह्वार्चिरपुमान् कीला ज्वाला च नृक्षियोः ।
 भलका तु महाज्वाला प्रवर्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।
 धूमवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुष्पो ना खट्वाङ्गश्चाथ संस्वरः ।
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥
 दीप्ताप्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरिङ्गालः कारिकाभिविद् ॥ ३२ ॥
 असितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।

यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥
 यमराड् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।
 पञ्जिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्खव आशराः ॥ ४१ ॥
 अलक्ष्मीर्निर्ऋतिर्ज्येष्ठा रावणस्तु हरान्तः ।
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥
 लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् ग्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽप्पतिः ।
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥
 प्रचेता यादसान्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।
 जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजग्रहरणो जगत् ।
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।
 मरुद्गुलिध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखश्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥
 सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।
 मृदुवातश्चिञ्चलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोभृन्भानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥
 रंहस्तरः क्ली प्रसभो जबो वेगः स्यदो रयः ।
 कुबेरो यक्षराड् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।
 कैलासनाथस्त्रिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वो सिद्धाः स्युः सनकादयः ।
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥
 विद्याधरास्तु शुचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।
 पिशाचः स्यात्कापिशोयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।
 नासत्यदस्रौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।
 नासिक्यावाश्विनौ दस्रौ विश्वकर्मा शुबर्धकिः ॥ ६ ॥
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।
 असुरा दानवा दैत्या दैत्या देवशत्रवः ॥ ९ ॥
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।
 ईदृज्वेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।
 सुधर्मा स्यादेवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।
 महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्वयः ॥ १२ ॥
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

२. अथान्तरिक्षकाण्डः

ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।
 वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥
 तारावर्तमम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।
 दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णा हरिदेववधूः सरिः ॥ २ ॥
 अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।
 क्रमात् पूर्वादिदिक्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥
 लोकपालास्ततो प्राह्णा दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।
 आनेयी तु चराशा स्यान्मैश्वरी तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥
 मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षायपराजिता ।
 कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥
 ब्राह्मी तूर्ध्वोऽथ नागी स्यान्मार्गकी चाधरा ककुप् ।
 दिक्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥
 दिक्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥
 करिण्योऽश्विनः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।
 ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥
 अर्कः सूर्योऽर्थमा सूर्यो द्वादशात्मा दिवाकरः ।
 मार्तण्डः सविता भानुर्भातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥
 सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।
 शुभणिर्हरिदश्वोऽद्विरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥
 शुमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्विषांपतिरहर्षतिः ।
 भास्करोऽहस्करो भास्वान् विवस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥
 रश्मिमाली दृगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीवतुः ।
 तर्षुर्मार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥
 पासिर्दृशानो रात्रिद्विद् प्रभाकरविभाकरौ ।
 खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥
 चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।
 आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषदम्बरः ॥ १५ ॥

घृष्टिपादमयूखांशुसान्ध्योद्योगमस्तयः ।
 किरणोस्रौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।
 शतत्रयं हिमोत्सर्गं तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।
 अथ मेध्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माण्ड्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥
 आलोकस्तु प्रभा भा रुप्रुचिदीधितिदीपयः ।
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विष्णुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विधुः ।
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥
 पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।
 ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥
 हृद्यांशुरंशुरब्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथामुखः ॥ २६ ॥
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याध्वः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥
 अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसावुभौ ॥ २९ ॥
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।
 उपप्लवोपरगौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥
 कर्षको रुधिरौ भौमः प्रव्याल्लोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।
 गीष्पत्याङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।
 तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।
 स्वर्भानुर्ग्रहकल्लोलः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कुशाः ।
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥
 तारा भं रात्रिजं विष्ण्यं सन्नक्षत्रमुडुर्न ना ।
 मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इत्वला मताः ।
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥
 निष्ठया स्वाती विशाखे तु राधे आर्द्रा तु कालिनी ।
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥
 मन्दाग्राश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।
 ज्येष्ठा ज्येष्ठप्री स्यात्प्रोष्ठपदाः पुष्ययोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥
 अश्विन्यौ वालिन्यावश्चयुजावाश्चकिन्यौ च ।
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्व्यवस्थितम् ॥ ४२ ॥
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमिन् स्त्रियश्च ताः ।
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वभूमनोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥
 अनूराधास्तु पुंभूमिन् शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।
 वीध्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥
 त्रिवीथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्तत्तत्स्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्वी परा ॥ ४७ ॥
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥

मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।
 ऐरावतं जारद्वयं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ४७ ॥
 पूर्वपश्चिमराश्यधौ सन्दालवल्लयौ क्रमात् ।
 संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ४८ ॥
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिस्तुटिः ।
 द्वे तुटी लघुक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ४९ ॥
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।
 ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५० ॥
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५१ ॥
 त्रिशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।
 दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५२ ॥
 पद्मबन्धुः कोकहितो द्युश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५३ ॥
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा घारिर्विभावरी ।
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५४ ॥
 निशीथिनी निशीथ्या च ज्योत्स्नी ज्योतिष्मती निशा ।
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५५ ॥
 बह्वयस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५६ ॥
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्युतुषु क्रमात् ॥ ५७ ॥
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैरव्यथी हि सा ॥ ५८ ॥
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ५९ ॥
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।
 छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६० ॥
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।
 दिनादौ प्राह्मपूर्वाह्नौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६१ ॥
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्रस्तु विकालकः ।

सायाह्नोऽप्यपराह्नोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६२ ॥
 साम्बाधिकः परस्तस्मात्त्रिशीथस्त्वर्धरात्रकः ।
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६३ ॥
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६४ ॥
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषावुषः ।
 व्युष्टं विभातं प्रत्युषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६५ ॥
 काल्यं प्रभातं स्त्री वोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६६ ॥
 पक्षतिश्चाथ पादूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्यादृशोऽमावास्यमावसी ॥ ६७ ॥
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ६८ ॥
 पित्र्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ६९ ॥
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।
 पर्वणी पञ्चदश्या द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७० ॥
 आग्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।
 पौषी तु महिषी माता माघी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७१ ॥
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७२ ॥
 आषाढी कृत्तिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७३ ॥
 वत्सरान्ता त्वरिष्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७४ ॥
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७५ ॥
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः ।
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७६ ॥
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात् ।
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ७७ ॥
 ज्योतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।
 आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ७८ ॥

सहस्ये स्युस्तैषपौषसैधा माघे तु शान्तकः ।
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फल्गुनिकफल्गुनौ ॥ ८२ ॥
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राध उच्छुनः ॥ ८३ ॥
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।
 ते शुके स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।
 कृबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥
 हेमन्तः प्रसवो लोभः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥
 पुष्पकालोऽपीधमस्त्री श्रीधमस्त्वाखोर ऊष्मकः ।
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥
 प्रावृड् वर्षी भूमिर्न वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेतामेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयौ पुण्यो भर्भरकः कलिः ।
 त्रियुगं तु युगासारं द्वायायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥
 तद्वात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः ॥ ९४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-
 मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥
 तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥
 इन्द्रायुधं विन्द्रधनुस्तदीर्घमृजु रोहितम् ।
 ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिहीना शतहृदा ॥ ४ ॥
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।
 गर्जितं स्तनितं शीर्णं वज्रे ह्यादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशक्तिर्न षण् ।
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशक्तिर्न षण् ॥ ६ ॥
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्र्यम्भस्तः कणः ।
 घनोपलस्तु करकः पुष्पिका मचटीति च ॥ ७ ॥
 विप्रुट् स्त्री पृपतो विन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।
 अनावृष्टिरवप्रादो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुदिनं हिमम् ।
 प्रालेयं मिडिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥
 कुहिदोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥

खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥
 विहङ्गमो विविहङ्गो विहङ्गो नभसङ्गमः ।
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भस्मन् ॥ २ ॥
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।
 पक्षिपोतस्तु चिल्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥
 गृह्याश्लेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।
 हंसो मरालो नीलाशश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।
 सृतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणौ ॥ ६ ॥
 क्षीराशश्चाप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।
 मलिनैर्मल्लिकाश्चस्तेर्धातृराष्ट्रः सितैतरैः ॥ ७ ॥
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राह्वयाह्वयः ॥ ९ ॥
 बको बकोटः कङ्कोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।
 बकजातिर्द्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥
 मदुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्गुस्तु वञ्जुलः ॥ ११ ॥
 दात्यूढश्चाथ शकटात्रिले प्लवपरिप्लवौ ।
 अन्वथन्नामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुटौ ॥ १२ ॥
 कुक्कुटो दीर्घवागदक्षः शिखी चूलिक आरणी ।
 कृकवाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।
 पारावतः कलरवो रक्तदृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।
 आत्मघोषो महानेमिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥
 बलिपुष्ट उल्लुकारिर्नाडिजङ्घोऽप्रहृष्टकः ।
 धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्गः करट इत्यपि ।
 कृष्णकाको वृद्धकाक पेन्द्रः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥
 धूङ्गणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।
 बलिभुक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥
 कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥
 श्येनायां प्राचिका चित्रपक्षे शरुकपिञ्जलौ ।
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।
 उल्लुकेटी हिका स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥
 उल्लुकः पेचकः कोण्टः काकारिर्हरिलोचनः ।
 नक्तञ्जरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुमोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।
 गोलनिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥
 शुक्लिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥
 पात्रं तु कुण्डूणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वञ्जुलः ।
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।
 आतापी चिल्लिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चापो राजविहङ्गमः ।
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥
 गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।
 दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।

दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।
 दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥
 क्रौञ्चस्तु कुङ्कुथोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चैश्वरप्रियः ।
 चकोरस्तु चलच्चक्षुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥
 कृकरो त्वथ्यकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुक्लापाङ्गः शिखावतः ॥ ३६ ॥
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्करो तर्तनप्रियः ।
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।
 शिखण्डः पिच्छमध्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥
 पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णीयकवर्तकाः ।
 लावकुक्कुटहारीतजीवस्त्रीवादयोऽपि च ॥ ४० ॥
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिपमधुपालिनः ।
 अलिद्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥
 इन्दिन्दिरो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।
 शिपुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥
 कपायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।
 गण्डोली वरटा न ह्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।
 निशामणिर्भान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी मीरिका चीरी भिक्षिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।
 पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥
 छदः पत्रो गरुडाजश्छदनं च तनूरुहम् ।
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः स्तृपाटिका ।
 डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यःमन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥

शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।
 निर्हादो रवणो नादो दवेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥
 कणिर्हादो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।
 गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥
 कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीबे गर्जना न ना ।
 क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥
 रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।
 वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्गो ह्यी घोरवाशितम् ॥ ४ ॥
 घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।
 तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥
 बुक्कनं श्ववृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।
 वृकस्य रेषणं रेषा हेषा हेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥
 वृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।
 काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥
 डक्कनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।
 पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥
 विष्फारो धनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।
 प्रणादस्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥
 स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।
 माजना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्हलध्वनौ ॥ १० ॥
 वाणं हुडुकहिकायां भेरीनादे तु टट्टरः ।
 कणनं कणितं काणो निक्काणो निक्कणः कणः ॥ ११ ॥
 वीणायाः कणतेः प्रादेः प्रकाणप्रकणादयः ।
 स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥
 गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।
 समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥
 अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।
 एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥
 कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥
 शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।
 सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥
 अनिर्बद्धं तूचावचमक्लिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।
 अनृते वितथालोकावाहतं तु मृषार्थकं ॥ १७ ॥
 अम्बूकृतं सनिष्टीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।
 कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥
 छलवाक्यं निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।
 क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥
 निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।
 विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥
 निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।
 अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥
 आग्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।
 अरार्णनां मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥
 सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्जिका ।
 उपसम्भाषणं साम्नि तत्तत्पच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥
 धनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।
 विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥
 आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।
 संवादनं वाचिकं च बलना त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥
 लुञ्जना पिञ्जना वेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।
 भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥
 कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।
 चर्चरी चर्भटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥
 उद्धूमस्तु कौरकया विगर्वा गर्वहारिका ।
 लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥
 विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।
 काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥
 प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपह्वः ।
 अपठ्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥
 हकारामन्त्रणाह्वानं संहृतिर्बहुभिः कृता ।
 अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥

मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशापोऽभिशासनम् ।
 शापोऽधिपक्षेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरुक्षणम् ।
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुलं प्रति ॥ ३४ ॥
 उत्साहः स्यादुपलम्भः परिवाग्भाषणीति च ।
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वाचिकम् ॥ ३६ ॥
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहुदितम् ॥ ३९ ॥
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहुतिः ।
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरुर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।
 क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः क्षमा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥
 धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।
 वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥
 रमा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।
 अन्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥
 अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।
 रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यवनिर्बरा ॥ ४ ॥
 द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।
 नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रिस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥
 तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।
 हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥
 इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।
 भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥
 वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकपरगन्धिकौ ।
 उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रिरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥
 ततो हिरण्यं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।
 कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरुवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥
 जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।
 लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽन्धिना ॥ १० ॥
 प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।
 मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥
 अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।
 एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥
 मालं मैनं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।
 अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥
 अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।

शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥
 अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधिः ।
 पूर्वार्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥
 मलयद्वीपमर्धौ स्यादक्षिणे तच्च दार्दरम् ।
 मालयं माहामलयं तत्पार्श्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।
 पारसीकुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।
 इत्याद्या भारते वर्षं क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूमिनि च ।
 स्त्रियो वरेन्द्री स्त्रावस्तीराढाद्या नैव भूमनि ॥ २१ ॥
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हुरुण्डकाः ।
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥
 मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्त्वैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥
 टर्कवादीककाश्मीरतुरुक्केषु ससिन्धुषु ।
 बाल्हीका बाल्हीकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।
 अप्यन्ये पारदाः किङ्गाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्रकाः कुजाः ।
 प्राग्येतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्त्रावस्ती तु परञ्जका ।
 राढा तु सुद्धाः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः साल्वा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।
 विन्ध्यान्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥
 तत्र पाण्ड्याः पाण्डियाः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।
 चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।
 अथेमे मलदाद्याख्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।
 त्रैपुरास्तु दहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥
 दाशाणीः स्थुर्वेदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।
 साल्वास्तु काङ्कुत्सीयास्तेषां त्ववयवाः परे ॥ ३८ ॥
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।
 हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च षट् साल्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।
 मेकलाः कुलटाः सौरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥
 पटञ्जरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥
 मरवः पुंसि धन्वान आसारी तु स्थली स्थलम् ।
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नानाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥
 सनलो नडवलो नड्वाङ्कार्करः शर्कराधिकः ।
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र मृतः ।
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वास्तु सुराजनि ।
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।
 पद्यः पदाङ्गयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥

श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः किमिपर्वतः ।
 शतमूर्धा वामक्षरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी सृतिः ।
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनि ।
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनि ॥ ५० ॥
 वृत्तिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।
 संक्रमस्तित्तिरिस्तुत्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥
 धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्विंशतिर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥
 अरविर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥
 दशहस्तः पितृनखो दीर्घदण्डो निदेशकः ।
 स प्राणेशानिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥
 निवर्तनं तु तिसृभौ रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ट्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।
 अहार्यगोत्रकुटीरकुटारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥
 बन्धाकिः फालिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।
 सुवेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिकुचः सः ॥ २ ॥
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।
 मलये त्रिकलापार्थो विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥
 हिरण्यनाभो मेनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।
 मायवांस्तु प्रस्रवणो हिमवांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥
 रजताद्रिस्तु कैलासो त्राद्रिर्महितश्च सः ।
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केशरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥
 उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥
 उःसः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्भरौ ।
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृपत् ॥ ८ ॥
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरेरुर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुञ्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥
 गैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।
 रोचनी रज्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिका ।
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥
 शुक्रधातौ पाक्शुक्रा कठिनी कक्खटी खटी ।
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमहृद्रमम् ।
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।

अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥
 शिलाजतु तु गौरैयमर्थ्यमश्मजमद्रिजम् ।
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।
 सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्बुरम् ।
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिरस्त्रिगौ ॥ २० ॥
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥
 रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।
 रजतं त्रापुपं रूप्यं चन्द्रभीरु यकीयसम् ॥ २३ ॥
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वङ्गजीवनम् ।
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।
 रिरी तु रीतिरुत्साहा पातलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥
 लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥
 गुरुज्येष्ठं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।
 कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥
 यवनेष्टं समोलुकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥
 रङ्गं वङ्गं त्रपु क्षोभ्यं मृदङ्गं नागजीवनम् ।
 परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।
 गुरुपत्रं तमरकं घनं मलवणं रजः ॥ ३२ ॥
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालद्वानि च ॥ ३३ ॥
 स्त्री कुटिनी पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रुक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।
 रसकम्बवयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥
 धूर्तमण्डूरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिनं पण् ॥ ३६ ॥
 स्फटिकाऽर्का रविप्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुतामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चुम्बकधामकादयः ।
 गारुत्मतं मरकतमश्मगमं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।
 विद्रुमो ना प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥
 इन्द्रनीलं महानीलं वैडूर्यं बालवायजम् ।
 कुरुविन्दास्तु कुलमापा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।
 रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥
 स्त्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।
 तुल्याञ्जनं शिखिप्रावं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
 तुत्थं तु दार्विका काथसम्भवं कर्परीति च ॥ ४३ ॥
 कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥

वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।
 कन्दकं कुन्दिलं वार्क्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने आपि ॥ २ ॥
 तदेव राज उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य निष्कुटः ॥ ३ ॥
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेख्यी वाटी फलाय चेतु ।
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो द्रुविटपी विष्ट्रोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥
 अलोकहो जगो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।
 वसुः करालिकोऽगच्छो जर्णो रुक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिकः क्षुपः ॥ ६ ॥
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।
 गुमिन्यपि च वल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥
 बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेग्रहिः ।
 पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥
 फुल्ले प्रफुल्लसम्फुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।
 उत्फुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥
 फलमामं शलाढुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।
 त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कुरमस्त्रियौ ॥ १० ॥
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिपु ।
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न ह्री वल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥
 चोचं वल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पाटितम् ॥ १४ ॥
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥
 पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।
 मणीचकं प्रसूनं च सूतं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥
 गुच्छो गुलुच्छः स्तबको मञ्ज्यां मञ्जरिवल्ली ।
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥
 आश्वत्थमैज्जुदं प्लाक्षं नैयप्रोधं च बार्हतम् ।
 वैणवं शैप्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥
 आम्रे कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।
 करको वलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।
 केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाट्टः ।
 श्रीवृत्ते पिप्पलोऽश्वत्थः प्लक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।
 प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥
 पलाशे किशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।
 आस्फोटो ब्रह्मवृक्षश्च हस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥
 बिल्वे मादूरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।
 परिव्याधे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥
 शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वज्जुलो वेतसो रथः ।
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥

कपित्थे स्युर्दधिकलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुङ्कुटी ।
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥
 छागे तु करुणो लक्षो मल्लिककुसुमप्रियः ।
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।
 त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निम्नकः ॥ ३६ ॥
 न्युब्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्दद्याग्रपात्र मधुच्छदः ।
 सर्जेश्वकर्णः साले तु कार्ण्यकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्जे बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।
 स्त्रीप्रिये वज्रुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्गोदशोधनौ ।
 रसाले वरणः सेतुस्तिक्तशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥
 दोषग्रहे तु कतको द्रावणः स्रवणः सरः ।
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥
 राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥
 गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।
 पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मचर्मिकौ ।
 पीलौ गुडफलः खंसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥
 अक्षोडः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वज्रुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥
 सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।
 कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥
 काञ्चनारोऽप्यार्ग्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽर्ग्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।
 पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४९ ॥
 विचुलः पिचुलो राक्षः कैडर्यो विषपुष्पकः ।
 काकदर्शश्छदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ५० ॥
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ५१ ॥
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।
 तिरीटो मार्जनश्चिल्वः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ५२ ॥
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।
 श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५३ ॥
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोल्बखलकं वरम् ।
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छुदारो गृहद्रुमः ॥ ५४ ॥
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।
 उदालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५५ ॥
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिग्रुः काक्षीवमोचकौ ।
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिग्रुः सुभञ्जनः ॥ ५६ ॥
 गृञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् काष्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५७ ॥
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।
 कैडर्यं कटफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५८ ॥
 सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५९ ॥
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ६० ॥
 वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ६१ ॥
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चरिबिल्वकः ।
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ६२ ॥
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरा दन्तधावनः ।
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६३ ॥
 मरुद्भवे विटखदिराऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६४ ॥

रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चञ्चुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥
 प्रियके तु प्रियङ्गुवाख्या कारम्भा फलिनी फली ।
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥
 भावज्ञा सर्षपी स्त्र्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥
 स्योनाके शोणकटवाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो भल्लुकः शुकनाशकः ॥ ६८ ॥
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्डुण्डुक आरलुः ।
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥
 पारिभद्रे द्रुक्किलिमं देवदारु सुराह्वयम् ।
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवभद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥
 पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥
 निम्बे पार्वतकैड्यद्वेषिच्छर्दनमाधिकाः ।
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिक्कुचो डहुः ॥ ७५ ॥
 पिचुले भावुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥
 धूर्धूरः काञ्चनाह्वोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥
 कूसरे भीरुमार्जारकिंशुका इङ्गुदी न षण् ।
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।
 एकास्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥
 तिन्तुडीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।
 तिन्त्रिणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।
 हीने त्वञ्जिः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥
 करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपद्रोहिणी ॥ ८४ ॥
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको दुमः ॥ ८५ ॥
 अग्निमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिच्छे काकतुण्डिका ।
 बदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।
 हस्तिकोलौ महाघोष्ठा गोपघोष्ठा महाफला ॥ ८८ ॥
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।
 सृगालकोलौ हिंसाऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥
 काकस्थात्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।
 आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शालमलिर्न षण् ॥ ९० ॥
 काण्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।
 रोचनः शिशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।
 जम्बवां त्रिसारा विरजा महाजम्बवां महाफला ॥ ९२ ॥
 सुरसाथो राजजम्बवां सुफलः सुरभिच्छदः ।
 काकजम्बवां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥
 जम्बूटनीलजम्बूटौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।
 शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥
 भस्मातक्यां त्रिलिङ्गायामग्निमुख्यप्यरुक्करः ।
 कम्पिल्ले रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥
 घातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातुपुष्पिका ।
 स्नुषां समन्तदुग्धा स्नुग्वा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥

सिद्धगुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥
 तुण्डिकेर्या रवा शीरा केसरा बदराफला ।
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥
 विषण्ण्यां भञ्जिका भाञ्जी विष्टा ब्राह्मणयष्टिका ।
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपण्यां स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेश्वरिभुरः क्षुरकः क्षुरः ।
 वासके त्वाटरूपः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रधर्षिणी ।
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः स्त्रियाम् ॥ १०२ ॥
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला ददुनाशिनी ॥ १०३ ॥
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।
 लतावृहत्यां सुस्निग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥
 हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥
 कालमेष्वां कृष्णफला वागूची वसुवञ्जिका ।
 सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥
 श्रीफल्यां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।
 ग्रामीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्टा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।
 तृङ्ग्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥
 प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मृषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥
 देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्त्रवा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥
 अजशृङ्गायां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाविके समे ।
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥
 वर्षा लङ्कायिका स्पृक्का मरुन्माला लता मरुत् ।
 कच्छूरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकठिञ्जरौ ॥ ११८ ॥
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।
 सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥
 कालपर्ण्यां तु सुरभिः करालः कालमालकः ।
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।
 विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥
 ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।
 रोदन्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥
 यासो यवासो दुस्स्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥
 सर्पदंष्ट्रयमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।
 वाटपुण्यां बला वाट्या सम्मासा चान्नसंज्ञिका ॥ १२७ ॥
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।
 अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥
 ऋषभी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।
 कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसन्नहनोऽपि च ।
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥

पाठाम्बुषा विद्धकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।
 गुडूच्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लिका ॥ १३२ ॥
 दीर्घवल्ल्यां वेत्रवन्यौ कुरुवेत्रश्च भूरदः ।
 गवाक्ष्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥
 विष्णुकान्ता परास्फोताश्वसुरी शीतलात्र तु ।
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥
 नीलायां तु महाश्वेता निष्ठयान्ता स्थूलपुष्पिका ।
 जिह्वायां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लिका ॥ १३५ ॥
 पृथिनपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गली पदपर्णिका ।
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।
 नागर्षा केशिका श्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥
 रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु ।
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥
 गोपा तु शारिवा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।
 व्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्लिका ।
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लिका ॥ १४० ॥
 क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः ।
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥
 श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥
 सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि ।
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥
 चर्मपर्ण्या तु शार्ङ्गाष्टा सुताह्वयामुपोदिका ।
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्लरी ॥ १४४ ॥
 मण्डूकपर्ण्या भण्डरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिल्लिका ।
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।
 तुण्डिकेर्षा रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्करी बदर्यञ्जलिकारिका ।
 गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥
 कलम्ब्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।
 पटुञ्चिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुक्कुटौ ॥ १४९ ॥
 निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।
 मारिषे जीवशाकः स्यादत्राल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥
 मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।
 विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥
 लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।
 जलजोऽसौ चञ्चटकः कुकुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
 भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।
 छत्राकश्च सिलिन्धश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥
 सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।
 प्रवालौ वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥
 हरिपर्णे मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण् ।
 नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥
 मत्स्याक्ष्यां शालशालीनौ पत्तरो लोहमारकः ।
 अगस्त्ये मुनिमार्जारावैगस्तिर्वज्रसेनकः ॥ १५६ ॥
 शुक्रनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।
 कपित्थपत्र्यधःपुष्पी व्रणघ्नी भरसी भरा ॥ १५७ ॥
 प्रपुष्पाडे त्वेडगजो दद्रुन्नश्चक्रमर्दनः ।
 घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥
 जाली पटोली भण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।
 पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥
 व्योस्स्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।
 अथ जिह्वा दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥
 बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।
 कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥
 महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।
 हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥
 चाङ्गेर्षा चुक्रिका दन्तशाठाम्बुष्ठांमल्लोप्यपि ।
 सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्लः कटिल्लकः ॥ १६३ ॥

राजवल्ल्युरुवल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥
 बृहत्कर्कोटके त्वैहो हस्तिकर्कोटको बली ।
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥
 राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।
 तिक्ते राजपटोलश्च भीरुस्त्विर्वारुकर्कोटः ॥ १६६ ॥
 चोदन्धुर्वाखालक्योऽप्यल्पा सा राजकर्कोटिः ।
 तुम्ब्यां पिण्डफलालाबूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥
 इक्ष्वाकुर्वासनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कोलिचित्रलौ ॥ १६८ ॥
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेक्ष्माणचेन्नालौ क्रोष्टुकर्कोटिः ।
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कार्धनवासकः ॥ १६९ ॥
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।
 महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥
 सुखवासे शीर्णवृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥
 चिद्भिटे पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्भिटा ।
 विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥
 अथो गवाक्ष्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।
 वृषा वारवुषा रम्भा काण्ठीलानशुमत्फला ॥ १७३ ॥
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥
 सुगन्ध्यल्पफला मोचा साण्ठी काण्ठी कदल्यसौ ।
 बिभीतकखिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्ठ्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।
 वैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥
 संवर्तश्च षडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।
 धात्री कर्षफला तिष्या सेठ्याध्यण्डा भटा दृढा ॥ १७७ ॥
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकूणिका ॥ १७८ ॥
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गश रक्तिका वरा ।
 भूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्यदनी नखी ।
 जङ्गा तिका च दक्षा च सा शुक्रा चेन्मधुस्रवा ॥ १८० ॥

द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥
 मालत्यां रेवती जातिर्यूधिकायां मनोज्वला ।
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥
 देवमाल्यां धरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां बनोद्भवा ॥ १८४ ॥
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥
 सुगन्धा ग्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।
 महासहायामल्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥
 शोणे बली कुरवको भाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥
 सैरेयके तु फिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।
 दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥
 पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।
 कुन्दे माष्यः शुक्रपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।
 चण्डालोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽत्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥
 वसुभट्टः पाशुपत एकाग्रिलोऽम्बुको वसुः ।
 नन्दावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥
 जपायामोदपुष्पं स्यादत्र पद्मादयोऽपि च ।
 विदार्या भूमिकुम्भाण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥
 कोष्टिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिके क्षुविदारिका ।
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥

शारद्यां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।
 गोलोम्यां जटिलोम्रोम्रगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षडग्रन्था जललम्बिका ।
 श्यामा तु सा घुणाभीष्टा काशमीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।
 महोदरी वरारोहा नादेयी बलयो वरम् ॥ १६९ ॥
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।
 शकुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिपेलवम् ।
 कुटन्नटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥
 बालं तु पिङ्गलं वज्रं ह्रीवेरं दीर्घरोमकम् ।
 चामरं चमकं ज्येष्ठं बहिष्ठं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥
 शैलमूलं तु कञ्जोरं पलाशो हिमजा जटी ।
 अशोभ्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥
 खञ्जेऽरिष्ठो गुहोच्छिष्टो रसोनो गृञ्जनः कटुः ।
 कायाङ्गं लशुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥
 जीर्णकञ्जं पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गृञ्जनो गर्जनो गुजः ।
 लशुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनद्धो महौषधः ॥ २०६ ॥
 फण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।
 गृञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥
 कन्दं त्वक्नी चित्रदण्ड उत्लुः कण्डूरसूरणौ ।
 अशोभो दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥
 शकटश्चाथ कालार्चं नूतनं वेष्टितं दलम् ।
 शोथशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ठ्यां मालुवा स्त्रियाम् ।
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।
 रोचनी रञ्जनी पीता पिञ्जा पिण्डा मनशिशला ॥ २११ ॥
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।
 दाव्या दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।
 कटक्कटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटूकटम् ॥ २१३ ॥

कटुभृङ्गं शृङ्गिवेरमार्द्रमार्द्रकमस्त्रियौ ।
 वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥
 त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।
 चपश्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥
 पकं जोडं खरं शुष्कं चिक्कणे चक्कचक्कणे ।
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगो तु योजनः ॥ २१८ ॥
 भूपूगो लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।
 पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।
 दाक्षिणात्योऽफलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।
 रक्ते स्वर्णोऽग्निकश्चाथ परिकोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥
 हलीमे केतकी न क्ली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो बलीनकः ॥ २२३ ॥
 ताल्यां दृढदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥
 सवेणवस्ते त्वक्सारास्तृणानीक्षुयवादयः ।
 इक्षुवृष्यो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥
 खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वायसालीक्षुपालिका ।
 इक्षुभेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।
 कुशे मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥
 लताकुशो तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।
 शरो मुखो भद्रमुञ्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥
 मुञ्जस्तु यज्ञियो मेध्यो मृदुत्वग्रहमेखलः ।
 उत्लुकस्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥

बालकेश्यां दृढदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।
 पुंभूभि बल्वजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥
 स्याद्वीरणं वीरवृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥
 नियुतस्तम्बजट्टदैत्यगौरकुदानवम् ।
 अभयं चावदाहं च दूर्षा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका वृणम् ॥ २३३ ॥
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तुणं पुरम् ।
 छत्रातिच्छत्रापालघ्नौ मालावृणकभूस्तृणे ॥ २३४ ॥
 पुण्जीलस्तु वृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।
 शष्पं बालवृणं शादः सर्वं तु वृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥

पशुसङ्गहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुत्यधिक्रमः ॥ १ ॥
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिहरितो हरिः ।
 हलीचणस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुर्मृगर्हिसकः ॥ २ ॥
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारुश्चन्द्रकी मृगात् ।
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिर्लत्सकमृगादनौ ।
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।
 पङ्कक्रीडनकः पोत्री किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥
 भङ्गूको दीर्घरोमर्क्षो भङ्गाटो वृकधूर्तकः ।
 विकरालोऽच्छभङ्गश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ ७ ॥
 वार्ध्रणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्रवस्वरः ॥ ८ ॥
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।
 जरन्तः कलुषः पोत्री वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशालालिकः ।
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।
 यज्ञाङ्ग एणस्तात्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः ।
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥
 रुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।
 रोहिदृश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥

न्यकुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोल्लसतः ।
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रमीः शिवः ॥ १६ ॥
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूश्चमसृणैर्घनैः ।
 नीलः स श्वेतरखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोश्चकवुरैः ।
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।
 सामूना तु समूर्ण्णा सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोश्चमदुरोमिका ।
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥
 मरुजा तूच्चमसृणमृदुपाण्डुरोमिका ।
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ॥ २२ ॥
 चनका तु चमूर्ण्णा सिताभा यदि वासिता ।
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोश्चघनरोमकः ।
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥
 कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।
 कृतारुस्तु न निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥
 रुचुस्तु शुक्लो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥
 सृमरः स्याद्वालमृगः परूर्णा चमरी न षण् ।
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूच्चजानुकः ।
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च प्राम्यैश्चैव गवादिभिः ।
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही वाह्वारणः ।
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥
 शालिजातस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्ह शितिचन्दनम् ।
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥
 श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्न्यना शलली शलम् ।
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथ्वी लोपाशगुण्डिवौ ।
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखामृगो हरिः ॥ ३९ ॥
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।
 वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गुलोऽसिताननः ॥ ४० ॥
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विवङ्को वानरो रोहिताननः ।
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरर्ष्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥
 अनड्वाह्यनड्वाह्यस्त तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥
 सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा ।
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा ।
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥
 वराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी ।
 एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वज्रुला ॥ ४५ ॥
 नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतल्लिका ।
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥
 पष्ठौह्यन्या वशा वन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥

चिरसूता वण्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥
 पीनस्तनी तु पीनोदनी सुखदोद्या तु सुव्रता ।
 दुःखदोद्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेषुका ।
 वेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाकान्ता तु सन्धिनी ।
 आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥
 विषाणी वृषभः शृङ्गी बाहो गौरक्षधूर्तिलः ।
 उक्षा गौर्वृषलोऽनङ्वान् बाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥
 सौरभेयो बलीवर्दो बाडवेयश्च शाकरः ।
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्धान् मदकोदलः ।
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्वयः ।
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥
 भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाड् युगपार्श्वगः ।
 स्थूरी पृष्ठयः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु वोदृषु ॥ ५७ ॥
 प्रासङ्ग्यः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकदयः ।
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोग्रन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।
 गोमहिष्यादिकं जीवधनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥
 छगस्तु छगलश्छागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।
 बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।
 इलिकस्तु वनच्छागो वालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेधे शृङ्गिणसम्फालवृष्टिणपेत्वहुलहृदाः ।
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥
 मेधी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।
 खररासभचकीवद्वाहबालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥
 रुक्षस्वरो धूळकर्णो नेमिर्भोरसहः शलः ।
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥
 करभश्च मयस्तूष्टो महाप्रीवः क्रमेलकः ।
 दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥
 दीर्घनादी गृहमृगः कुकुरः क्रोधनः शुनिः ।
 यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डतः शुनः ॥ ६९ ॥
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो भलुहोऽपि च ॥ ७० ॥
 शुनी तु सरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।
 ओतुर्बिडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥
 जाहको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥
 बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥
 पुच्छोऽस्त्री लूम लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।
 खुरः शफः शको विष्ठा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।
द्विपादो नहुषा गोधा त्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।
उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्त्यजातयः ॥ २ ॥
एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।
सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥
वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।
एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥
अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।
विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥
अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।
आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥
भृज्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गरम् ।
वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥
चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।
कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥
नटी भटं खवी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।
पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥
रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।
सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥
पुल्कसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।
एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥
सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।
अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥
उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।
तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुल्कसी बकम् ॥ १३ ॥
चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री भूषा परम् ।
श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥
सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रुकुञ्चं शनकी कचम् ।
कची भ्रेणं भ्रुकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।
वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥
शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटककं ततः ।
कटकर्मा स वेनी तु वागुरं वेणुकी बटम् ॥ १७ ॥
अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।
कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी सटम् ॥ १८ ॥
कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।
चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥
रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।
श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुकं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥
मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी कितम् ।
घर्घरी धर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूनवः ॥ २१ ॥
चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।
वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥
चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।
निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥
पुल्कसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।
वैदेहकी नीवलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥
भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।
सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥
नटी भ्राणञ्जकं वाटी विमण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।
कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥
कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।
चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥
वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।
एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥
निषादाब्राह्मणी भेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।
वैश्या सूचिं हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः कचित् ॥ २९ ॥
कैवर्ती बुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।
श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥
वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।
रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥

आयोगवी तु कैवर्त निषादान्मार्गरश्च सः ।
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥
 जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गैरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥
 अम्बष्ठी बेनमुग्री तु गर्गरं शनकी हनुम् ।
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥
 निषादी मेदमन्धं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।
 वैश्या छण्डभटं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥
 आयोगवी तु मधुकं घण्टिकं नान्यपूर्विका ।
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् कापि श्वपाकवाक् ।
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥
 श्वपचं सैव चण्डालाश्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।
 मागधात्ताग्रजीवं सा तक्षार्णं करणादसौ ॥ ३९ ॥
 आयोगवाश्चर्मकारं राज्ञी वार्मिकसूचकौ ।
 माहिष्याश्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥
 उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।
 निषादी धिग्वनाश्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुङ्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु दुरिञ्जकम् ।
 निष्ठयाच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥
 उग्री क्रमेलकं तस्मान्निर्णक्ता रजकश्च सः ।
 सोपाकं पुलकसी निष्ठयाश्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥
 अन्ध्री तु शबरान्निष्ठयं भिन्नं सा निष्ठयपूर्विका ।
 किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्ठयपूर्विका ॥ ४६ ॥
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ठयपूर्विका ।
 पुलिन्दश्वपचौ निष्ठयात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाङ्गकम् ।
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुलकसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।
 डोम्बी खपं सैव निष्ठयाद् बिभेणं हड्डिकं खपी ॥ ४९ ॥
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बबरं यवनादसौ ।
 पुलकसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्वाराणकम् ॥ ५० ॥
 श्वपाकं क्षत्रुग्रस्त्री केचिदाहुविषयम् ।
 चूचु किराती शबराद्वैदेहात् पुलकसात् कचित् ॥ ५१ ॥
 निष्ठयात्तु वरुटी मदगुं बह्मरं तु किरातिका ।
 निषादपुलकसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥
 विप्रा ब्रात्याद् भृज्जकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।
 अध्युढा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूढा द्विजन्मना ।
 लिच्छिवि क्षत्रिया ब्रात्याज्जल्लं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥
 ब्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।
 वैश्या ब्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥
 सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥
 अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।
 ब्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा ब्रात्याच्छुकण्टकम् ॥ ५८ ॥
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।
 ब्रात्या ब्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥
 अवरेटः सवर्णायां जाराजातः सवर्णकात् ।
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तार्यसति गोलकः ॥ ६० ॥
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्करास्तु गोलकः ।
 शूद्रकुण्डो मालवको घासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥
 एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्नाम्ना केषाञ्चिद्भूयते ॥ ६४ ॥

मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।
मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥
चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः ।
अम्बष्ठो भृज्जकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥
कट्याजीवात्स दौष्पन्तो निषादो ध्वजघोषणात् ।
कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥
नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।
चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥
शूलिको दण्डयेदण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।
निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥
स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया ।
जीवन् सवर्णा नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥
महानर्मा च मदगुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।
अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥
उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्पन्तो मत्स्यघातनात् ।
निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुञ्जरग्रहात् ॥ ७२ ॥
पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।
धनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥
करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।
चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥
रथकारो निधिप्रभ्रद्यूतापणनिरूपणात् ।
रथकारो व्यालमृगहिसावृत्तिरिति कचित् ॥ ७५ ॥
उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।
अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥
इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।
सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्कारादिकृत् ॥ ७७ ॥
सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।
वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥
मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात् ।
मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥
वाप्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।
वणिक्पथे मागधस्य वाग्भी राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चूचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।
वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥
धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।
आयोगवः पुलकसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥
चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान् ।
चण्डालो भल्लरीकक्षो वद्ध्रीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥
स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।
स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥
क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुलकसो मद्यविक्रयात् ।
पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥
आयोगवस्तैजसकृद्भूमिजम्भमणिवेधकृत् ।
स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥
अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणा ।
स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥
पुलकसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।
लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥
एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।
गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुलकसाश्च ते ॥ ८९ ॥
रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।
आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥
शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुलकसाः ।
कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥
आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।
मेदानां चक्रवृत्तित्वं विष्णुमूत्रग्रहणोऽभिनमम् ॥ ९२ ॥
आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।
मेदान्प्रचूचुमद्गूनामारण्यपशुर्हिसनम् ॥ ९३ ॥
मैत्रेयकः प्रशंसैवृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।
पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥
कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।
कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥
मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।
योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥

निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।
 धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥
 वेणः कुरीलिवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।
 वेणो राज्ञीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ १८ ॥
 वैदेह्यम्बपुत्रो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।
 आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मतक्षणम् ॥ १९ ॥
 नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वन्धिनौगमः ।
 शैखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृजकण्ठकः ॥ २० ॥
 मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।
 आद्यन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ २१ ॥
 ब्राह्म्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।
 खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकान्तः ॥ २२ ॥
 नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।
 भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ २३ ॥
 सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।
 भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ २४ ॥
 सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्तो भागवतश्च सः ।
 सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ २५ ॥
 श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।
 वैणवीं पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ २६ ॥
 श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।
 वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ २७ ॥
 गगनलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।
 ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ २८ ॥
 शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।
 त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ २९ ॥
 एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।
 चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्रतुरः सुतान् ॥ ३० ॥
 ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।
 ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्पष्टिर्हि जातयः ॥ ३१ ॥
 ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।
 आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ३२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।
 प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ३३ ॥
 शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।
 राजस्त्रीणां सूतिकानां द्वास्थ्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ३४ ॥
 विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।
 दस्युम्लेक्षणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ३५ ॥
 म्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये म्लेच्छवाचो वनौकसः ।
 कार्या क्षत्रुप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ३६ ॥
 मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।
 तत्रापि मातृकी वृत्तिर्गर्हितामनुलोमजाः ॥ ३७ ॥
 भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।
 अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ३८ ॥
 प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्राह्म्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।
 आनुलोमप्रतिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ३९ ॥
 वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।
 षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ ४० ॥
 रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।
 कैवर्तमेदभिह्माश्च सप्तैता अन्त्यजातयः ॥ ४१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।
 अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडबश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥
 आधानिकं पुंसवनं पौस्नमप्यथ गार्भिणम् ।
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्मा मन्त्राणिके समे ॥ ३ ॥
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥
 सशिखं वपनं तोडं निशिखं भिक्षुलोचकम् ।
 ओद्वितं त्वतिघृष्टं स्यात् पञ्चचीरोद्वितं पुनः ॥ ५ ॥
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वदकृतिः ।
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।
 प्राजापत्यः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।
 जातिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणव्रतः ॥ १० ॥
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।
 अघायवो बधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरुणां नरकीलकः ।
 शिशिवदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः खरुः ॥ १२ ॥
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।
 शाखाखण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्गयादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रथमौ व्रते ।
 अग्नीन्धनं त्वमिकार्यमाग्नीध्री चामिकारिका ॥ १४ ॥
 ग्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तच्चतुष्टयम् ।
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽव्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।
 मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥
 सौत्री तु धटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥
 बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उल्लखलः ॥ १९ ॥
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्धृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।
 कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु स ब्रह्मचार्यपि ।
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥
 छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माञ्जलिरिहाञ्जलिः ।
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥
 सीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्व गीतिशासनम् ॥ २९ ॥
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।
 चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोद्विताः ॥ ३० ॥
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदमञ्जना ।
 नामशास्त्रे निघण्टुर्नो सर्वविद्या कदन्निका ॥ ३१ ॥

अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रीषिणहादयः ॥ ३४ ॥
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते मावस्तालकाः ।
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शपसाः सहाः ॥ ३६ ॥
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिध्वनुनासिकः ।
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।
 परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्यङ्ग्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥
 तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत् ।
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघ्नक्षारी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रक्षालितान्नकः ।
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूदे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥
 परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संस्तुतो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।
 स्यादग्रदिधिषुश्चासौ स्यादग्रदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिषूरसौ ।
 पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।
 कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नाम्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥
 हारिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरुक् ॥ ५० ॥
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मद्धृषिका ।
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥
 विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।
 उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।
 कन्यादाने तु यदत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुल्लुर्मुङ्गलध्वनिः ।
 धोरी हुलिहुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥
 क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुककूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।
 हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥
 तद्ग्रन्थिस्त्वक्का धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्हृद् बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवा इर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।
 मधुपर्कस्तु निष्ठङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽहनि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्थकम् ॥ ६६ ॥
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।
 त्रिष्वतिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥
 अथान्याधानमाधेयमाधानं चाग्निसङ्ग्रहः ।
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।
 वीरोज्ज्वलप्रमुखास्तत्र वीरोज्ज्वो न जुहोति यः ॥ ७० ॥
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्वापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।
 जातमात्रगृहीताग्निः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नमः पुनरनग्निकः ॥ ७३ ॥
 पर्याधाताऽग्रजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।
 सुत्वा त्वभिषवाद्धूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।
 यत्सुचो देवयवो वाधतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥
 अध्वर्यूद्वातृहोतारो ब्रह्मा चेति महर्त्विजः ।
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तद्धितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।
 याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥
 प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।
 उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥
 अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।
 यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥
 सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्षकः ।
 पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥
 पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।
 सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरर्गणाः ॥ ८४ ॥
 ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।
 अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥
 सर्वेऽमी यज्ञकृतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।
 ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥
 अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।
 सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥
 प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वाद्येऽन्त्ये च कर्मणि ।
 पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥
 प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।
 सुचां सम्मार्जनं शुद्धिः सुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥
 हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।
 स्यादिधमप्रोक्षणं कार्णश्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥
 वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।
 त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥
 पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।
 उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥
 श्यैतनौधसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।
 व्यञ्जनाः पशुमंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥
 परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।
 अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥
 होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।
 होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ६६ ॥
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ६७ ॥
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्मोष्णं संयुतं पयः ।
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ६८ ॥
 सान्नाय्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ६९ ॥
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुह्वरुपभृद्भुवा ।
 अथामिहोत्रहवणी श्रपण्याधारणः सुवः ॥ १०० ॥
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥
 चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वध्नयोऽश्मसु ।
 विघ्नो घ्नो मुद्रे नरः फयोद्धननन्दनाः ॥ १०२ ॥
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।
 यूपावग्निषु पार्श्वस्थावुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।
 यूपमध्यं समादानं यूपग्रं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥
 कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृत्तिः ॥ १०५ ॥
 यूपे सप्तदशारत्नावरत्निर्मेथिकोऽधरः ।
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीकरञ्जकौ ॥ १०७ ॥
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।
 संघातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥
 चात्वालोऽस्त्री मृत्वनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।
 शस्त्राण्युक्तानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥
 स्त्र्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपात्र्यानुपूर्व्यपि ।
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ॥ ११६ ॥
 हिसाकर्माभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कार्मणम् ।
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जने ।
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।
 अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।
 आशासनेऽर्थना याज्या याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥
 भिक्षा च सनिरङ्गी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।
 उद्वन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥
 लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।
 यष्टिर्न ह्री स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।
 औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालभुक् ॥ १२५ ॥
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।
 चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्यष्टिरष्टमकालभुक् ॥ १२६ ॥
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥

पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।
 भुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥
 वर्षवातातपानङ्गे बिभ्रदभ्रावकाशिकः ।
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औल्लकोऽङ्गारशाकटे ।
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्बलको व्युपः ॥ १३२ ॥
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकतिकः ।
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥
 पद्मासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छ्रमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥
 एकैकं त्र्यहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशानात् ॥ १४० ॥
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।
 त्रिस्सप्ताहं पयःपानं क्वचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।
 पारायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥
 एकान्तरितमर्धाशं षष्ठकालेषु पाष्टिकम् ।
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥
 त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।
 पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलामुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं व्रती ॥ १४९ ॥
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।
 ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।
 और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥
 तस्य कौषीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥
 याज्ञवल्क्यस्तु योगाञ्जिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।
 यायावरो जरत्कारुर्दुर्वासास्तु कुंशारणिः ॥ १५६ ॥
 अष्टावक्रस्तु गर्भाजिर्दृढच्युस्त्रिवध्मवाहकः ।
 मत्स्यगुश्चयवनोऽथ स्याद् गोतर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।
 कात्यायनो वररुचिर्मेधजिश्च पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥
 वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।
 द्राविलः पक्षिलः स्वामी मञ्जनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥

यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥
 असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥
 महान्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गज्येष्ठश्च चेतना ।
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तरनुभूश्चितिः ।
 अवगत्यनुभूती चिज्ज्ञप्तिर्ज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥
 षोढा धीस्तस्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।
 ऊहापोहक्षमा चार्वा गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वरि ।
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरिषोऽध्यवसायवत् ।
 बैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे घञ्जोरवेङ्करो ॥ १६९ ॥
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोन्नतिः ॥ १७० ॥
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।
 अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूक्ष्मम् ।
 उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥
 स्वान्तं गूढपदं हृच्च सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यगृष्टिर्विकुण्ठना ।
 तर्कमूलिकसम्पर्श ऊहो न कल्यूहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भाषना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥
 तन्द्रा कौसीद्यसालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।
 स्यादायल्लकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥
 हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।
 तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाङ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहृदे ॥ १८० ॥
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।
 शोषुर्ना शृषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥
 बुभुक्षेच्छाऽशनाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।
 राव्यलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥
 शोकस्तु मन्युरुत्वेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।
 क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुत्क्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषहम्पुणे ।
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुन्नते ॥ १८४ ॥
 तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।
 विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजय्यं हार्दसौहृदे ।
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥
 सख्यं सात्तपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।
 आनन्दो नन्दशुद्धादस्तृप्तिमुन्नन्दिदृष्टयः ॥ १८८ ॥
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।
 डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्म्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिक्कुर्न ना ॥ १९१ ॥

उग्रता तूष्णिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकृटे ॥ १६२ ॥
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।
 ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥
 मन्दाक्षं ह्रीक्षपा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १६४ ॥
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।
 अट्टष्टजस्त्वत्र चाग्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥
 प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः ।
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥
 नन्दीमुखी आसहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैचित्र्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।
 कटमोषो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम् ।
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः क्ली मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूमिर्ना चासवः ।
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥
 आसस्तु आसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥
 स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धं गुदानिले ।
 तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥
 महामृतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।
 मर्त्यलोको जीवलोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥
 स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्गप्रहः ।
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।
 उत्तानौ चरणावूर्वोर्न्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्माकासनी ।
 अर्घपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चरणावुभौ ।
 पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।
 नियम्य मीलिताश्चेत्पर्यस्तकरणेन वा ॥ २१३ ॥
 नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्घायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।
 वस्तिशुण्डकमण्यस्य जङ्घिका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥
 अर्धनाकुलमूर्ध्वज्ञोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत् ।
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोर्भ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥
 जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठप्रहात् किणः ॥ २२१ ॥
 कर्णयोर्जानुपार्श्वाभ्यां स्पर्शं जानुनिकुञ्चनम् ।
 भुजवेष्टितजङ्घोरश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥
 पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।
 बिन्दुभेदोऽप्यथो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥
 स्वास्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥

गवादीनां निषण्णानां स्याद्वीनिषदनादिकम् ।
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।
 त्रिविक्रमासनं तादर्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥
 प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।
 धारणा तु कचिद्व्यये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मैधावी पण्डितो बुधः ।
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लघ्ववर्णो मनीष्यपि ।
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥
 सबलैस्तैश्चतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।
 सान्द्रष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥
 ते च हेरुकशोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः कचित् ।
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥
 शतत्रयं षष्ट्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 भूमिकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥
 गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥
 तत्र याः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
 षाड्गुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तिमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।
 द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥
 द्विकं तु मनश्चात्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥
 मृगायाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्तयः ।
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।
 अदृष्टं वक्षितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥

राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्नृपासनम् ॥ १५ ॥
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्नृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।
 अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु कालेसहायकः ।
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षिणः ।
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।
 हट्टे धीकर्मिकः पुर्या चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेमि भौरिकः ।
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥
 अन्तःपुरेऽन्तर्बशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदज्ञस्तु सौविदः ॥ २२ ॥
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।
 प्रदेशा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥
 मौहूर्तिकमौहूर्तव्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपूरुषः ।
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुश्छात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥
 इति संस्थाचराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।
 कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥
 सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरश्छत्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।
 मागधो मधुको घण्टाताडे घण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।
 फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपरिचारिका ॥ ३३ ॥
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।
 बन्धकी तु गता वेशमर्थयानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥
 शय्यास्रग्भूषणादौ तु निधुक्ता परिचारिका ।
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥
 असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।
 विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥
 उदासीनः परस्तस्मात् पाष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विड् जिघांसुर्हिंसनो रिपुः ।
 सपत्नोऽसहनो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।
 निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सद्गुचिः सखा ॥ ४३ ॥
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिव्ययः ॥ ४४ ॥
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥
 प्रदेशनं प्राशृतं च लम्बा तत्कोच आमिषः ।
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥

अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिभवि ।
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।
 श्वदंष्ट्रगलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।
 अहिपृष्ठं तु निर्मासपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥
 उपस्करप्रस्त्रलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शाल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥
 त्रिहयं पञ्चपादात् यदेकरथकुञ्जरम् ।
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैगुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥
 प्रत्यासारश्चमूपाणिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।
 हस्त्यश्चरथपादात् बलं स्याच्चतुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥
 इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।
 स्तम्बेरमो गजो गर्जो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥
 दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।
 महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥
 मदबृन्दः कुपी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।
 पृथुत्वं श्रुतता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।
 ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विधेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलभो विक्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मकणः ।
 आज्ञाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।
 उद्धान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।
 गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥
 मध्येमुखं तु वाहित्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥
 तस्यास्तु पर उद्घात आरक्षः कुम्भयोरधः ।
 उरःपार्श्वौ तु विश्वोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥
 करटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु श्रयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥
 कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।
 पुच्छवंशोऽपवशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोऽधः स्थिताः क्रमात् ।
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डका ॥ ७८ ॥

मण्डुकी शकुटा पाणिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७१ ॥
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।
 अथ पुच्छे स्थिता किङ्गी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्गला त्रयी ।
 कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥
 चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।
 अपष्टं त्वङ्कुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताङ्कुशः ॥ ८४ ॥
 सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हरुदृकः ।
 कीलस्तु पुण्यलः शङ्कुर्हिङ्गीरो लोहशृङ्गलः ॥ ८५ ॥
 पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पङ्क्तीशो घुटिकोऽपि च ।
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥
 पादकर्म यतं तेषां यातमङ्कुशवारणम् ।
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥
 कुदरो घोटकस्तार्क्ष्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।
 मङ्गिकाक्षः सितैर्नैत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥
 पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्यैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।
 पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनायुजमुखा हयाः ।
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ ९५ ॥
 निहीनास्त्वञ्जलारदृशम्भला दोषिणः परे ।
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ ९६ ॥
 सुसल्यन्यप्रभैर्काङ्क्षाघ्नः कराली तु जरुददः ।
 ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ ९७ ॥
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृष्ठपुञ्जपिञ्जरः ॥ ९८ ॥
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोज्जाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ ९९ ॥
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥
 कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्गाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥
 पाटलो वोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरूहकः ।
 हलाभश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।
 खेल्जाहः कर्पलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।
 कोकुराहः खुरराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥
 कर्काद्याः खुरराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।
 सरराहः सेरराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्दाम्यश्वा वडबाऽवती ।
 लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरुण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥
 अश्वा सूतेऽश्वतर्या तु मूकाज्जातः किसिदृकः ।
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।
 कश्यमश्वस्य मध्यं स्याद्वन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥

कालिका दन्तरेखा स्यादन्तच्छिद्रमुखली ।
 कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥
 लोठभूर्मुखरज्जुस्तु स्यादन्ताल्यवरक्षणी ।
 दामाञ्जनं पादपाशो नासारज्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥
 कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।
 प्राक्पादरज्जुरातालो बका स्याद् द्विप्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥
 पर्याणं स्यात् पल्ययनं बल्गावक्षेपणी कुशा ।
 कशा काम्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥
 पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।
 युग्माशनप्रसेवे तु द्वौ बाक्काणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥
 आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।
 लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायिका ॥ ११६ ॥
 तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः ।
 केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु चासिकः ॥ ११७ ॥
 अश्वानां तु गतिधारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।
 आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं बल्गितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥
 इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।
 गत्यर्थास्तद्वदर्थोश्च सर्वे ते बाच्यालङ्काराः ॥ ११९ ॥
 तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥
 अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।
 तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥
 रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्द्रुता ।
 बल्गितं बल्गनं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥
 प्लुतं तु लङ्घनं पक्षिमृगधर्मेण भिद्यते ।
 यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं बाह्यधोरणे ॥ १२३ ॥
 योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
 वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥
 दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम् ।
 प्रवाहिनी वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥
 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।
 क्रीडार्थः स्यात् पुण्यरथः कृतः कर्णीरथो मृदा ॥ १२६ ॥

कर्णीरथं प्रवहणं हयनं रथगर्भके ।
 गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाहचके ॥ १२७ ॥
 रथस्तु जयकृजैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः ।
 रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥
 वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।
 एवं काम्बलवाह्याद्याः कम्बलादभिरावृते ॥ १२९ ॥
 योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।
 धूः स्त्री धूर्वा यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥
 कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।
 अक्षकीलो त्वर्णिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न पण् ॥ १३१ ॥
 रथलीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।
 रथगुप्तिर्वरुथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥
 अनुकर्पो रथस्याधोधरणन्दार्थान् सः ।
 युगो द्वितीयः प्राप्तङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥
 अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।
 अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥
 स्त्री नेमिनी प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।
 अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥
 शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम् ।
 प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥
 आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।
 परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥
 नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः ।
 सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपाणिसारथिने ॥ १३८ ॥
 सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः ।
 पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥
 पातिकः पादिकः पद्मो रथिको रथिनो रथी ।
 सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥
 पाणिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।
 परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥
 दंशिते स्थुः कवचित्तसज्जसन्नद्धवमिताः ।
 आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥

काण्डपृष्ठस्वायुधिक आयुर्धायोऽस्त्रजीवनः ।
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुधरः ॥ १४३ ॥
 चर्मि शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादधारिणः ॥ १४४ ॥
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।
 पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्टोऽप्रतस्सरः ॥ १४५ ॥
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽप्यभ्यमित्रिय इत्यपि ॥ १४६ ॥
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।
 अशूरो हतकः क्लीबो जिष्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥
 शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥
 लघुदस्तः सुदस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।
 सायुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।
 जङ्घालोऽतजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्वयूर्जस्वलोजितौ ।
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।
 गोधा तला च न नरौ हस्तज्जो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥
 अङ्गलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्य सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुप्रमायुधम् ॥ १५७ ॥
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५९ ॥
 स्नुहीदलाभो निस्त्रिशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिता ॥ १६० ॥
 जम्बूगतस्तु खड्गाम्बु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।
 वराभोऽनिल एरण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥
 हुण्डुतः पुत्रकैरण्डः सितदीर्घानवस्थिनैः ।
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशो पुलकास्त्वपुत्राजयः ।
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।
 पटुसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।
 प्रासः कुन्तो दाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥
 भिण्डिपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्र्यस्य शेखरम् ।
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥
 शतग्री तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।
 अयःकण्टकसंछन्ना शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥
 भुसुण्डी स्याद्धारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घा मुसलयष्टिकः ।
 दुघणे मुद्गरधनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्दणम् ।
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाग्रयं शरासनम् ॥ १७२ ॥
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।
 कामुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्धायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥
 गोतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥

उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥
 पत्तानां पञ्चभिस्त्वेषां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।
 लस्तुको धनुषो मध्यमग्रं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥
 अतिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इषुर्न षण् ।
 प्रक्ष्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥
 अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।
 त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णः कर्णिकारलः ।
 स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।
 द्विद्विंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥
 स्युश्चोटलङ्ककस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।
 कर्तरी पुङ्ख आराग्रं त्वग्रं वाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥
 पत्रणा पक्षरचना धारा शस्त्रमुखं फलम् ।
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेऽग्रतः ॥ १८७ ॥
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।
 मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृगादिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।
 ततोऽप्यर्धोङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १९१ ॥
 मुष्टिमान्द्यं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १९२ ॥
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।
 मुचुटी सिःकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १९३ ॥
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खलुरिका ॥ १९४ ॥
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।
 शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १९५ ॥
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।
 अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १९६ ॥
 धौते निशातं निशितं क्षणुतं तेजितमर्थवत् ।
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १९७ ॥
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १९८ ॥
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्द्विष्टिवारणः ।
 कटिका सूत्रसंयूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १९९ ॥
 अङ्गुलं सैव वेत्राद्यैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।
 लोहाभिसार उद्योगे राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥
 यत्सेनयाऽभिनिर्याणं पत्युस्तदभिषेकनम् ।
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥
 विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।
 वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥
 नासीरोऽस्यग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुश्च युत् समित् ।
 वीराशंसनमाजेर्भूर्धोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।
 अभयवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्वलितं चलम् ॥ २०७ ॥
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्ठवम् ।
 वीराणां यद्रणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥
 प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुष्म तरः सहः ।
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥
 सन्द्रोवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदनम् ।
 निस्तर्हणं निशरणं निकारणनिशुम्भनम् ॥ २१२ ॥
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हसनम् ।
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।
 उद्वासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥
 उज्जासनं संज्ञपनं काथनं प्रविसारणम् ।
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।
 शवयानं कटः खाटिश्रिता चित्या चित्तिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्ब्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।
 किणो रूढं व्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्छयुतः शरः ॥ २१८ ॥
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्खालमूर्खितौ ॥ २१९ ॥
 परासुरपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥
 आयुर्जीवितकाले ह्यी जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

वैद्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्यो भूमिस्पृशो वैश्या ऊरुव्या ऊरुजा विशः ।
 आजीवो जीविका वृत्तिर्वार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।
 उच्छ्रो धान्यश आदानं कणिशावर्जनं सिलम् ॥ २ ॥
 ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्धृष्टिः पुनः कला ।
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।
 मध्यस्थः प्राशिनकः साक्षी मूली स्याद्दुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूलग्नकोऽन्तरः ।
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥
 सन्दंशितोऽभिशास्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।
 सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥
 समज्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्वावपाकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥

अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।
 कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥
 अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषगीः ।
 केदारः केदारः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥
 भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।
 खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूषरेरिणौ ॥ १८ ॥
 मौद्गीनकौद्रवीणायाः क्षेत्रे मुद्रादिसम्भवे ।
 यव्यत्रैहेयशालेयपष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥
 यवादेस्तिलतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।
 माप्राचचैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥
 एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।
 द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥
 खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।
 तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥
 त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।
 बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥
 लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।
 पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्स्ना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥
 भ्रूका त्विष्टकाया विद्धपस्तु क्षारमृत्तिका ।
 धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥
 दारिपत्परिपत्पक्वचिकिलाश्च निषद्वरः ।
 शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥
 क्षेत्रमध्ये कृता साल्पा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।
 हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥
 निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।
 योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥
 गोदारणं तु कुन्दालमभिः स्त्री त्णूस्तु तन्मुखे ।
 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टभस्त्रनः ॥ २९ ॥
 दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।
 स्यात्समीकरणं मत्स्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥
 न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।
 ग्रीहिर्वरेणुको बीज्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

ग्रीह्यः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।
 सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥
 सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।
 श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥
 षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।
 कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥
 माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।
 वृष्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥
 मुद्रस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।
 पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेतजयशारदाः ॥ ३६ ॥
 सुराष्ट्रचीनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।
 कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥
 वनमुद्रे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।
 खण्डी च राजमुद्गे तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥
 जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।
 कृष्णेऽस्मिस्तिलके (षण्डे) पिञ्जपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥
 तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।
 मङ्गल्यं पृथुसूयश्च ग्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥
 कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।
 त्रिष्टुभभ्रातरक्षोऽन्ताः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥
 पक्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरैऽथो राजसर्षपे ।
 क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥
 वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।
 कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥
 पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।
 खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्कुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥
 स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।
 सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥
 खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।
 अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥
 काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।
 कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥

प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका ।
 आढकी तुवरी वल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥
 कुमारी मुसली वंश्या गुडुची कटुकैषणा ।
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥
 यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका ।
 गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।
 बालनाटकवात्र्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥
 विरूक्षकोद्रवोन्नालमदनाः वनकोद्रवे ।
 चिककाणकजुनी कजुः प्रियजुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥
 शीतकजुस्तु मुसुटी पीतकजुस्तु मागवी ।
 श्यामकजुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥
 जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ।
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसोवतः ॥ ५७ ॥
 अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥
 स्त्री काककजुश्चीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।
 गर्मुत पुनर्गमुटिका धुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥
 ज्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा क्षेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेथुश्च गवेथुका ।
 गाङ्गेरुकी नागबला भूषा ह्रस्वगवेथुका ॥ ६१ ॥
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।
 माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि ब्रीहयः शालिकादयः ।
 स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका ।
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कर्णिशं धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।
 धान्यराशिस्तु बलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ ।
 समौ प्रयामनीवाकौ क्रपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥
 ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ।
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिपेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥
 क्रायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ क्रपुकः क्रयः ।
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥
 विटपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्थं पृक्थं धनं वसु ।
 वित्तं च द्रविणं द्युम्नं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्द्रव्यं तद्द्रव्यमाहतम् ।
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥
 ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।
 स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥
 शृङ्गिबेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥
 श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥
 कपिवल्ग्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।
 काण्डी बसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।
 (मरिचं) पलितं श्यामं वेङ्गनं पेन्नवं कटु ॥ ७९ ॥

लोहाख्यं श्यामवल्ली च श्यूपणं (तूषणादिकम्) ।
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटुकटम् ॥ ८० ॥
 ग्रन्थिकातलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्वषणम् ।
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विट्टिका ॥ ८१ ॥
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।
 अग्निमन्थो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चका ।
 सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥
 निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिस्त्रुटिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयतोऽपि च ।
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।
 जन्या जतूका रजनी जतुकृष्णवर्तिनी ॥ ८९ ॥
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।
 शिशुजं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥
 वह्निपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्रम् ।
 शतपर्वं च मित्रञ्च कमलञ्च शिलञ्च तत् ॥ ९२ ॥
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योज्या युगाह्वया ।
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।
 प्लावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।
 कालानुसार्य पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ९६ ॥
 क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ९७ ॥
 नाकुली सुवहा रास्ना छत्राकी सर्वलोचना ।
 गन्धिनी श्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी मुरम् ॥ ९८ ॥
 कुष्ठं वाप्यं पारिभाष्य रोगाख्यं पाकलोत्पले ।
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ ९९ ॥
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥
 धमन्यञ्जनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।
 अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं कालदलं समाः ॥ १०१ ॥
 अजमोदा तूष्पगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।
 कारवी च खराश्वोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥
 मधुं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च बरालकम् ॥ १०३ ॥
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं बरान्गं भृङ्गमुत्कटम् ।
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।
 जातीकोशं कोशफलमथागर नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥
 लोहाख्यं कृमिजं भृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनद्रुमः ।
 कालागरु तु मङ्गल्या मङ्गिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥
 श्रीवेष्टः पायसं श्रयाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥
 वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।
 कप्याख्यः कपिलः सिंहः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्जनो लालनो रसः ।
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥

वृकधूणोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।
 पीतचन्दनमर्कष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।
 कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।
 करटं चितकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशाणं शशलोमनि ॥ ११८ ॥
 अन्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥
 अक्षीवं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥
 विशुन्धलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।
 सम्भरी पुनरेतद्वद्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥
 ऊषमूषरजं सेव्यं पांशुजं यवनं पटु ।
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।
 घटिकालवणं तृणं विडवद्धनकालकम् ॥ १२४ ॥
 सौवर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।
 अक्षं तादर्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥
 सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽस्त्रियाम् ।
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्धरः ।
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाप्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः ।
 रसाढ्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
 स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।
 सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथिविका कारवी पृथुः ।
 तिन्त्रणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेधयपि ।
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्त्रयथो शर्करा सिता ।
 मधूलं तु मधुर्न स्त्री मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके ।
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रूक्षवालुकम् ॥ १३५ ॥
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥
 मदनस्तु मधुच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे ।
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशाब्धिकम् ।
 हैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कट्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥
 सञ्जावने तूप्त्रमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि ।
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥
 अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्राग्गर्भस्तु मुखबन्धनम् ।
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥
 छिन्नं दधि बुसं रूक्षं खलं सेव्यं च निश्शरे ।
 बहुसूदनमप्यस्मिन् द्रव्यं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥
 पत्रलं चाथ पकं स्यात् सञ्जातं पयसः शृतात् ।
 धुक्षिमं तूद्घृतस्नेहान्मथितात् प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥

तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राहं दधिमण्डके ।
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापञ्च मूतकम् ॥ १४४ ॥
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।
 गव्यं ज्येष्ठं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।
 आसप्ताहात्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥
 अविसोढाविमरीसे अविदूंसमवेः पयः ।
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोग्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥
 तिलाटः कूचिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।
 घोलं तृप्तं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।
 तक्रं कट्वरमशोघ्नं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥
 निरम्बु घोलं मथितमुदश्चित्तु जलार्धकम् ॥ १५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।
 पञ्जः पद्योऽप्येकजातिः शूद्राः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥
 लाडीककिङ्करप्रेङ्खपाळकपरिकर्मिणः ।
 सञ्चारिते धीकरश्च गोण्याः स्युर्दाससूनुवः ॥ ३ ॥
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्त्यायैव स्थितः कृतः ।
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥
 भृतके भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकश्चिषु ।
 भरणं भरणं भर्म वेतनं निष्क्रयो भृतिः ॥ ५ ॥
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।
 वार्त्ताहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥
 शिक्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥
 कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।
 वाणिर्व्यतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।
 धराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमस्त्री पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥
 पिञ्जनं स्याद्विहननं धराणां प्रविसारणम् ।
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥
 आवर्तनं तु वलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।
 सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥
 लेखनी तूलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभञ्जिका ।
 पल्लगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
 मणिकारो वैघटिकः शौलिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः समाः ।
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥
 शाङ्गिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका वुषा स्मृता ॥ १७ ॥
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ।
 रोषाणस्तु घृषिघृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका ।
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम् ।
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृङ्गः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥
 मेलाभन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।
 मेला (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्धृता ॥ २५ ॥
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसायपि ।
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कत्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।
 धूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 आभीरस्तु महाशूद्रो गोपो गोसङ्घयगोदुहौ ।
 गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि ।
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा वटी त्रयी ॥ ३० ॥
 ग्रन्थिबन्धो ब्रजो गोष्ठो गौष्टीनं तु पुरा ब्रजः ।
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।
 घोष आभीरपल्ली स्यात् पक्कणोऽस्त्रयन्त्यजालयः ॥ ३२ ॥
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥
 स उद्हनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तद्ध्यते ।
 ब्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥
 स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्याद्धारुतक्षणी ।
 क्रकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्तनः समौ ॥ ३६ ॥
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।
 सूनातटिविधस्थानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥
 मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।
 आच्छोटनं खेटनश्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धनी ।
 श्वा विश्वकद्रुमृगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः ।
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम् ।
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरौ ।
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥
 जालमानाय उद्दालस्तूत्रतो मुकुलाकृतिः ।
 पादकूष्मकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी ॥ ४३ ॥
 वद्धी नद्धी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्तुता ।
 परिस्तुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥
 मदना मोहकलिका मदिष्ठा काचमालिका ।
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥
 पकैस्त्विक्षुरसैरन्ना शीघ्रुः पङ्कुरसः शिवः ।
 शीतपङ्को रुक्षणीयोऽप्यपक्वै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥

मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्टिका ।
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।
 उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुकमाः ॥ ५२ ॥
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।
 सरकं चषकं चास्त्री गल्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥
 पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिस्तुचः ॥ ५५ ॥
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।
 पटच्चरः पटच्चरो बन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥
 लोप्त्रं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तेन्यं च चौरिका ।
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चकादयः ॥ ५९ ॥
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिव्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।
 जायाजीवस्तु शैलूषः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥
 रङ्गाजीवो नृत्तुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।
 सर्वकेशी कृशाब्धी च नर्तकस्त्वभ्रफुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरञ्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥
 नर्तको भूमिकां प्राप्नो देवानामर्धमानुषः ।
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥
 रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥
 प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।
 स भ्रुकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसवत् ॥ ६७ ॥
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्वारी भूमिकागतः ।
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥
 नान्दी तु पाठको नान्याः पार्श्वस्थाः पारिपाथिकाः ।
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः शिद्रो वातसुतो विटः ।
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥
 वेणुधमाः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥
 रसभावाङ्गहाराद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीराद्भुतभयानकाः ।
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च कचित् ॥ ७५ ॥
 स्थायिभावाः क्रमादेशां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्त्यद्भुतो रसः ।
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥
 बीभत्सो विकृतिश्चित्रं त्वाश्चर्यं फुल्लमद्भुतम् ।
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥
 भैरवं भीषणं घोरमाभीलं दारुणं च तत् ।
 करुणः सकृपो रौद्रस्तमोऽमी विंशतिस्त्रिषु ॥ ७९ ॥

भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्थितः ॥ ८० ॥
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।
 स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्टकोऽपि च ।
 रोमाङ्क उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥
 स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥
 सोत्प्रासे त्वाच्छ्रुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।
 निकुञ्चितशिरोगात्रमट्टहासो महाहसे ॥ ८४ ॥
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।
 न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।
 अश्रु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दनम् ॥ ८७ ॥
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥
 असौम्येऽक्षयदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।
 उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥
 वल्लभानुकुतिलीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।
 विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेर्न्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥
 सकृत्सुश्लिष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।
 मोट्टायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।
 विभ्रमो दृग्विपर्यासो ललितं कोमलक्रमः ॥ ९६ ॥
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।
 अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ९७ ॥
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ९८ ॥
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ ९९ ॥
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं डिमः ।
 ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।
 भारती सात्त्वती चैव कैशिकथारभटीति च ॥ १०१ ॥
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥
 देवो स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥
 पतिस्त्वार्थ आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।
 आबुक्स्तु पिताऽम्बा तु माता व्येष्टा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥
 बला दुसा कनिष्ठा स्यादाबुक्ता भगिनीपतिः ।
 बाला वासुर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्थपुत्रकः ।
 हण्डे हञ्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥
 अत्रहण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्वं दिव्यमैश्वरम् ।
 सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।
 स्थानान्युरः शिरः कण्ठः श्रावकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥

यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥
 ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।
 वंशादिकं तु सुषिरमानद्धं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।
 तन्मयश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥
 एकादशेकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥
 परिवादो वादनार्थ उपनाहस्तु बन्धनम् ।
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥
 ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।
 फिङ्गिल्लस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥
 तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥
 नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।
 वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढकारी किन्नरीति च ।
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्गिरो जर्जरश्च सः ।
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्ग्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥ १२९ ॥
 पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥
 ते केकिचातकाजक्रुड पिकभेकगजस्वराः ।
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासूश्च नान्यपि ॥ १३३ ॥
 स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।
 हुडुक्कस्तु हडक्कोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमभर्भराः ।
 तिमिलाट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।
 संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिता ।
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥
 प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।
 लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।
 रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥
 अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।
 कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥
 गर्तः पतेरो भूश्चभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।
 शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥
 नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।
 सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥
 उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।
 फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥
 दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो दृक्श्रवा हरिः ।
 बिलौका गूढपाञ्चक्री नाकुसद्धानिलाशनः ॥ ६ ॥
 दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।
 रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाङ्कुशलाञ्छनाः ॥ ७ ॥
 फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।
 दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥
 राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।
 वैकरञ्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥
 षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।
 त्रयोदश च राजीला वैकरञ्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥
 निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।
 दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥
 कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।
 शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥
 आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।
 अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥
 किशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।
 गोनसस्तु तिलित्सः स्याद् गोनसो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभुक् ।
 वैकरञ्जाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥
 दिव्योऽलर्कोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुकपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥
 अलगर्द्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको नित्वयन्यपि ।
 अहिनित्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौरार्द्रो ब्रह्मबालुकम् ।
 ब्रह्मघोषश्च घौषश्च पुण्डरीकं तु बालुकम् ॥ २३ ॥
 एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥
 मुस्तः कुष्ठो मेघशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालमाह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।
 अथ गौघेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥
 गौघेयश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमशीति च ।
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।
 कृकलासः प्रतिरबिः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।
 हालाहलस्त्वञ्जानिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥
 सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥

कुडथमत्स्या सुरश्वेता कुण्डणाची सुराजिका ।
 उन्दुर्मुषिकः कण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥
 चुचुन्दरी तु गन्ध्राखुगिरिका बालमूषिका ।
 वृश्चिके त्वात्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥
 खर्जुरो वृश्चिका न क्ली शूककीटोऽपि वृश्चिकः ।
 आढा शतपदी कर्णजल्लुका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥
 मूषिका लृतिका लृता तन्तुवायश्च जालिकः ।
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिर्मर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।
 लृतापट्टस्तु तत्कोश उदंशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥
 घुणः कृमिः काष्ठभवा लृतातः स्यात् पिपीलिका ।
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूक्ष्माऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥
 वम्बो वम्बचुपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥
 नीलाङ्गा कृमिरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।
 पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्यादांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥
 पृथुरोमा ऋषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥
 स्थिरजिह्वः सङ्गचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेवालौऽपदालकः ॥ ४२ ॥
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥
 एत्थालः स्याच्चाननको महाशल्कः सितायुधः ।
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नपुंसकम् ॥ ४५ ॥
 उदण्डपालनदलद्वेकराजीवकोत्पलाः ।
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिद्विधागतिः ।
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशालूराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेषिशाचकः ।
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेषिशाचकः ॥ ४९ ॥
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।
 गुहाशयस्तूपृष्ठः कश्यपो जीवथो भृथः ॥ ५० ॥
 दुली दुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराड् भूषः ।
 खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चामोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥
 उदस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुणवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥
 असिप्लवोऽम्बुलुकी स्त्री वीरलस्तु महाभूषः ।
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥
 त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।
 मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्युक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।
 शम्बूकः क्षुल्लकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
 जल्लुका तु जलालोका स्रक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥
 या जलौका वृणचरी सा स्यात् वृणजलायुका ।
 गण्डूपदः किञ्चुलको भूलता तद्विषया शिली ॥ ५९ ॥
 स्थले करिनराश्वाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।
 ते जलेऽपि जलारूपाः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुलं मेघजं कतम् ।
 नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥
 पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।
 विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥
 वार्नं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।
 वल्लूरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥
 काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।
 शीतलं स्वादुर्नि जले द्राग्भृतं तत्क्षणोद्भृतम् ॥ ४ ॥
 जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला ह्रदाः ।
 अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥
 आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
 आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥
 अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।
 अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥
 विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।
 पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥
 आहावश्च निपानश्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।
 प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥
 आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरौ ।
 उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥
 रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।
 उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरुपतिः ॥ ११ ॥
 सरित्पतिरूपारः पारावारोऽब्धिरर्णवः ।
 मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिमहोदधिः ॥ १२ ॥
 कूनेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णर्वेलाम्बुवर्धनम् ।
 डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुदुबुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥
 भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिन्स्त्वेव महत्यषण् ।
 ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।
 नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ १५ ॥
 उडुपं तु प्लवो भेल आरोह्योऽसौ तरण्डकः ।
 केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥
 कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।
 नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥
 आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।
 सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥
 कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।
 अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥
 गम्भीरञ्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यात्ते नव त्रिषु ।
 घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यङ्गी पयोवहा ॥ २० ॥
 सरणी हरणिर्भूणिर्निर्ममद्वारि तु भ्रमः ।
 उद्घाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥
 नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।
 हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्यादिनी धुनी ।
 अब्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी वहा ॥ २३ ॥
 त्रिस्तोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गा ।
 भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥
 धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।
 यमस्वसा तु यमुना कालिन्धर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥
 नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।
 बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥
 टापी तु तापिनी शैव्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।
 शतद्रुस्तु शुतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्धजाह्नवी ।
 शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥
 ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।
 नदः सरस्वान् भिद्योद्धयौ कुल्या कर्पूः कृता नदी ॥ २९ ॥

वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ १० ॥
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ११ ॥
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ १२ ॥
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं ह्री पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिन् बालुकाः ॥ १३ ॥
 उत्पल स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ १४ ॥
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।
 वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ १५ ॥
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।
 पद्मोऽस्त्री पङ्कजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ १६ ॥
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।
 सरोजमब्जमपुष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ १७ ॥
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ १८ ॥
 पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ १९ ॥
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ २० ॥
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाङ्गयम् ।
 गन्धसोमं कुमुच्चन्द्रं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ २१ ॥
 अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ २२ ॥
 मृणाली शतपर्व ह्री बिसश्च नलिनी पुनः ।
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ २३ ॥
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।
 कुमुद्वती कुमुदिनी शाख्यकं कन्दमौत्पलम् ॥ २४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्म ह्री कुसुमच्छदः ।
 किञ्जल्कः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्जोलस्त्वङ्गलोड्यकः ॥ ४६ ॥
 शुक्लकारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजश्चिकण्टकः ॥ ४७ ॥
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्लस्तर्पणो जलकण्टकः ।
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥
 शैबलो जलशूरः स्यादवका जलनीलयपि ।
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णाभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥

पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यन्ता नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।
 पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥
 ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।
 स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥
 स्युः कर्वटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।
 कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥
 पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।
 कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥
 शिबिरं मार्गनिवेशो गामार्धं वाटकोऽस्त्री स्यात् ।
 साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥
 द्वारका तु द्वारवती मथुरा तु मधूषिका ।
 मथुरा च मधूपन्ना कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥
 वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।
 मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥
 हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।
 अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥
 अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।
 देवीकोटः कोटिवर्षं माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥
 ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।
 ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥
 प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।
 सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशल्यकम् ॥ ११ ॥
 प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपग्रं त्वन्तिकाश्रयः ।
 पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥
 ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।
 खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।
 आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृत्तिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।
 गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥
 रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।
 राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥
 स एव पुरि दिङ्मार्गो वाहनी चोपविष्करम् ।
 अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥
 शय्यं निवसनं सद्य बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।
 निकायवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥
 न नोदवसितं न स्त्री गेहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।
 महाकीर्तनमोकश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥
 आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।
 वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥
 कुण्डशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।
 चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥
 सन्दानिनी तु गोशाला हविशाला विषाणिका ।
 आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥
 कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।
 संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥
 वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।
 तैलशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥
 इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।
 वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥
 क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।
 चतुश्शालं सज्जवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥
 मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेण्टं विटाश्रये ।
 कुटीरस्तु कुटी पल्ली चैत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥
 सन्यासपल्ली निर्वीरा मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
 देवतायतनं चैत्यं बिहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥
 सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका ।
 तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥
 राजवेश्मोपकार्यो स्यादुपकार्योपकारिका ।
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्धावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥

पिच्छन्दिं राजधाम्नां सन्निवेशो निकर्षणम् ।
 कूटागारं तु बलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥
 कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिगृहम् ।
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।
 आवालिर्हट्टवेश्माली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।
 अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्धाऽप्येड्ढकं त्वन्तरस्थिकम् ।
 नीत्रं बलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥
 गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुत्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥
 कोणप्रतिग्राहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खडक्किका ।
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥
 गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।
 प्रघाणप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।
 अथ त्रय्यौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यरं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यते ।
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥
 सूचिस्त्वयोऽर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वे तूर्ध्वसूचिका ।
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाङ्कुटः ॥ ४८ ॥
 साधारणी कुञ्जिका च द्वारयन्त्रं तु तालकम् ।
 एतस्योद्घाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।
 अस्त्री तु घर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरौहणी ॥ ५१ ॥
 कोणाश्रौ नर्यणिनं क्ली स्त्रियोऽश्रुत्तिकोटयः ।
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥
 दन्तिका नागदन्ताः स्युर्लङ्गनी वल्लधारणी ।
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।
 उद्धानमश्मन्तमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ ५४ ॥
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥
 कंटाहः कर्परो लट्ठो मणिकः स्यादलिञ्जरम् ।
 भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्ना स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥
 ऋषीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥
 भृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥
 घटी पारी कपाली तु त्रयी घोलश्च कर्परः ।
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥
 खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवालपा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥
 अवगाहो जलद्रोणिरुष्टिका काञ्जिकादिभृत् ।
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥

पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्रगः सम्पुटः पुटः ।
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।
 अथोर्नर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ ६५ ॥
 प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥
 शम्बूकास्तु कणाः सूक्ष्मास्तण्डुलस्य च यो मलः ।
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥
 गोधूमचूर्णे शमिता चिकसो यवचूर्णके ।
 पृथुकाश्चिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥
 खदिका तु गुडाद्याह्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु ममरा ।
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥
 पूषस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुल्माषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥
 शमिता त्वम्लदुग्धाद्रौ पक्वा खण्डे घृतोत्तरे ।
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥
 क्षीराह्यः शमितापिण्डो घृतपूरो घृते शृतः ।
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।
 जीवनान्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥
 दग्धान्नं भिस्सिटा मिङ्गी परमान्नं तु पायसम् ।
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसाग्रोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥
 खागुल्या स्याद्धानाम्लायां खागुली मण्डिका समे ।
 मासराचामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरा त्रयी ॥ ७९ ॥
 यवागुरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्वा घनद्रवा ।
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिषुतकुञ्जलम् ।
 गोलकुल्माषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥
 तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥
 सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।
 स्त्री पक्वभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥
 वेशवारः पिष्टमांसे पक्वे भूतिस्ततोऽन्यथा ।
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्बूरा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निकृत्तोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥
 शाकोऽस्त्री हरितं शिग्रुः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।
 कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥
 लेहं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥
 त्रिष्वानुताद्भ्यकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्गवाः ॥ ९२ ॥
 गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।
 शूलाकृतं भटित्रं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥

सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सर्पिर्दध्यादिसंस्कृते ।
 शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ११५ ॥
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।
 यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ११६ ॥
 दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।
 अपकतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ११७ ॥
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।
 सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ११८ ॥
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।
 त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्नेहं वसान्वितम् ॥ ११९ ॥
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १२० ॥
 कबलः कबतो ग्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १२१ ॥
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १२२ ॥
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १२३ ॥
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।
 काभं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १२४ ॥
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।
 तृप्तिः सुधा च सौहित्यं तृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १२५ ॥
 करम्बः सेकमिश्रान्ने फेला पिण्डेऽधिकोऽज्जिते ।
 खण्डपकटमुद्वेगं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १२६ ॥
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।
 करङ्को वेडादिकृते पूगताम्बूलभाजने ॥ १२७ ॥
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्तुर्युद्वेगकर्तरी ।
 भवेत् क्षुरसमुद्गं तु त्रिष्वाकर्णकरन्धके ॥ १२८ ॥
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरादेर्दारवभाजने ।
 चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १२९ ॥
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णधृत् ॥ १३० ॥

वीरस्त्राका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥
 उद्वर्तनं तूसादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लवः ।
 उपस्पृशोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।
 यत्तु सर्वौषधिसनानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥
 यन्मुक्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥
 सिक् स्त्री पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥
 चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलकिमिरोमजम् ।
 बालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥
 कौशेयं कृमिकोशोत्थे राङ्गवं मृगरोमजे ।
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि बालकादयस्त्रिषु ।
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादधोरुक्कमम्बरम् ।
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूदमं दुकूलं स्यात् ॥ १२२ ॥
 बैकत्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोतरासङ्गः ।
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि सिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥
 पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनामसी ।
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटिका ॥ १२६ ॥

चोली तु शाटिका शाटो वरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटञ्जरम् ॥ १२७ ॥
 निचोलः कञ्चुकञ्चोलः कूर्पासञ्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥
 कद्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥
 शाणी गोणी छिद्रवस्त्रेश्चिरं खण्डलमस्त्रियाम् ।
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रप्रन्थोऽस्त्री नीविरुच्यः ॥ १३० ॥
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कद्या पृष्ठे कृतोऽञ्चलः ।
 वस्त्रान्तस्त्वञ्चलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।
 आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।
 विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥
 वालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।
 बालपाश्या पारितध्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥
 ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्यया ।
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।
 अर्धहा (अतुष्पष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।
 एकावत्यनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।
 गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूमिका ॥ १४४ ॥
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।
 शिञ्जिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥
 कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥
 स्त्री चर्क्तिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।
 माष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥
 राढा शोभा छवी रुक् त्विट् सुषमा परमा छविः ।
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिगुणगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतक्कोलागरुसिलहकम् ॥ १५१ ॥
 लवङ्गपूगतक्कोलजातीफलहिमांशवः ।
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तक्कोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥
 कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकर्वमः ।
 यावो द्रुमामयोऽलक्तो लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥
 कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।
 मालाङ्कितिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।
 प्रञ्चष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुष्मिन्ते ।
 संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।
 चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।
 अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥

व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १५६ ॥
 पन्तद्वहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥
 उपला तु दृष्टपुत्रः शिला माता दृष्टसमाः ।
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्द्वः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तूत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥
 शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥
 आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्कपाल्यपि ।
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १७० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

षातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥

भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या ऋरायुजाः ।
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥
 पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥
 स्त्री योषिल्ललना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।
 वनिता महिला नारी तदुभेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥
 प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।
 अबला भामिनी कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।
 प्रातर्तुर्दिक्करी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।
 स्वैरिणी धर्षिणी पुंश्चल्यसती कुलदेत्वरी ॥ ९ ॥
 बन्धकी पांसुला चर्चा चला नगना तु कोट्टवी ।
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥
 विप्रशिका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्मन्मत्तकाशिनी ।
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥
 अध्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्यः सपत्निका ।
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ १३ ॥
 पतिवली जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमम्बरम् ॥ १४ ॥

उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि ॥ १५ ॥
 ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्यन्तर्वन्त्री च गर्भिणी ॥ १६ ॥
 अद्यश्चोना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिष्वी शिशुवर्जिता ।
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च ।
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रार्थी क्षत्रियीति च ।
 आचार्यानी च पुंयोगादर्योर्योण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।
 स्यादुपाध्यायुपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुलीति च ।
 कनिष्ठा स्थालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्चिका ॥ २८ ॥
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता ।
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।
 दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृज्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।
 दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ३४ ॥
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूमिर्न दारवत् ॥ ३५ ॥
 जाया प्रजावती मातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया वधूः ।
 स्नुषा वधूर्जनी सूनोर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता धवः ॥ ३७ ॥
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥
 वेश्यापतौ विद्वाङ्कुम्भभुजङ्गवितपल्लवाः ।
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥
 सुतः पोतश्च पुङ्गवे नरो दुहितरि स्त्रियः ।
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलदेयश्च कौलदेरश्च ।
 साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलदेयश्च ॥ ४४ ॥
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्त्वौरसः स्वजः ।
 नप्तरौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥

परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।
 अयं पत्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।
 स्युर्जातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥
 ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्त्रंसजा जरा ।
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥
 तद्वन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठाकान्तरम् ॥ ५७ ॥
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेत्रमस्त्रियाम् ।
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।
 सक्थि क्लीबं पुमान् वोरुरुरुमूलानि वङ्गणाः ॥ ५९ ॥
 अङ्गुस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्मेढः शोफकोशौ शिशनं मेहनशोफसी ।
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।
 अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुब्धनी ।
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि (मूलभागोऽस्य तु त्रिकम्) ।
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।
 अवलम्रवलम्रौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥
 न क्ली कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जत्रुणी ॥ ६९ ॥
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न षण् ।
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥
 प्रवेष्टश्च कपोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।
 व्येष्टा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥

पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।
 खरूलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युब्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलकश्चुलः ॥ ७८ ॥
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम् ॥ ७९ ॥
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।
 प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥
 दग्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्राहुपुम्माने ।
 गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिव्यापलण्डिका ।
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्ध्ना च मस्तिकः ॥ ८५ ॥
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।
 तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥
 दन्तवस्त्रं च तत्प्रान्तौ सृक्कणी दशनाः पुनः ।
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काकुदम् ॥ ८९ ॥
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका ।
 शिङ्गाणी नासिका चाथ धमनौ नासिकापुटौ ॥ ९१ ॥
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्गाणो नासिकामलः ।
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ९२ ॥
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ९३ ॥
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकाक्षः कनीनिका ॥ ९४ ॥
 वल्गु पद्म च दृग्लोम्नि दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ९५ ॥
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खकौ ।
 भूमिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ९६ ॥
 जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः ।
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ९७ ॥
 वालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ९८ ॥
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।
 पर्पर्या स्याद्वल्लरीका भल्लर्या भम्पटिः क्षुवः ॥ ९९ ॥
 केशकूटस्तु धम्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।
 चोचुस्तु वालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥
 तद्वन्थिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्गाणशिङ्गिनी ।
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा ॥ १०३ ॥
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः ।
 मूलधातुर्वहिसुतो महाधातुरस्तृक्करः ॥ १०४ ॥
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्त्रं क्षतजमासुरम् ।
 राक्थं शोध्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥

आग्नेयं प्राणदं विस्त्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥
 विस्त्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।
 अथास्थि कीकसं विडुं कललं कूरमादिकम् ॥ १०८ ॥
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।
 भारद्वाजं श्वदयितं सारमङ्गातकर्कराः ॥ १०९ ॥
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥
 तिलकं ह्योम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्यौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।
 गुल्मः ग्रीहा च डिम्बः स्यादष्टीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥
 अग्रमांसं तु हृदयं हृद्वसा त्वामिषो रसः ।
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्चरम् ॥ ११४ ॥
 पार्श्वस्य वङ्किः पश्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेर्बना ।
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थिनि ॥ ११५ ॥
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥
 ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।
 नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नाय्वना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥
 लसीका लसिका रक्तसमांसविपाकजाः ।
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥
 उच्चारो विण्ण ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।
 विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥
 प्रस्रावो देहवारि स्यान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत् ।
 सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।
 क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥
 दशथुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवथुः पुमान् ।
 शोफोऽस्त्री श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥
 स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।
 खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचचिकाः ॥ १२३ ॥
 कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जूः कण्डूयने स्त्रियः ।
 यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥
 श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु ददुः स्त्री मुखजः पुनः ।
 पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं पृष्णमुखे ॥ १२५ ॥
 मङ्कुस्तु सिद्धम सिद्धं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।
 उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छदिका वमिः ॥ १२६ ॥
 भ्रिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेक्का च हिक्किका ।
 उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ क्रथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वतिमूत्रतः ।
 आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः ॥ १२८ ॥
 नातिभिन्नस्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।
 गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥
 गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।
 शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥
 स्यादुष्टूग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।
 अशौं दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डश्चाण्डवर्द्धने ॥ १३१ ॥
 उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।
 नेत्ररुक् कामला ह्रीबं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥
 श्लेष्मदः पदवल्मीको गतिर्नाडीव्रणः पुमान् ।
 अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुडो गडुः ॥ १३३ ॥
 सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।
 गजे व्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥
 उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।
 बिडाले कणकः पोत्रिण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥

कमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥
 धरण्यां करकोत्पाटावुद्भिजे पाण्डुवर्णकः ।
 मारिर्मसूरी रुग्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥
 व्याधिव्याध्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।
 सन्तापोऽपाटवं मान्द्यमाकुल्यं रुप्रजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।
 कुशी भग्नास्थिवन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥
 पट्टस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णौघैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽतिकाथजो रसः ॥ १४१ ॥
 काथादेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।
 वार्त पाटवमारोग्यं सङ्गद्यं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥
 त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥
 आमयावी समौ ग्लास्नुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।
 वाताशोदद्रुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्रुणाः ॥ १४५ ॥
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिनौ ॥ १४६ ॥
 खलवाटः खलतिर्बध्नुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥
 सन्दोहनिवहव्यूहसमूहनिकराकराः ।
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरि ॥ ३ ॥
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।
 सङ्घसार्थौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।
 उद्भिज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।
 माणवानां तु माणव्यं बाडव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।
 गाभिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥
 जनबन्धुगजप्रासहायानां गणे स्त्रियः ।
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाडवं बडवागणे ॥ ९ ॥
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरश्चकमाजकं गजादीनाम् ।
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥
 सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।
 आपूपिकं शाष्कुलिकमित्यादिकवचेतसाम् ॥ ११ ॥
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षेत्रं कैदारकं समम् ।
 केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥

धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नट्या वन्या तृण्या ।
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।
 यमलं युगलं युगं युतकं च द्वयोर्गणे ॥ १५ ॥
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वैति त्रिषु ।
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्यन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।
 ग्रामः परोऽस्त्रादिषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।
 पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्गतिथम् ।
 बहुतिथिसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥
 यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थञ्च ।
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥
 विंशं विंशतितममेकविंशमिति वत्परं द्विधा सर्वम् ।
 षष्टितममिति वदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।
 ओजमयुगं युगं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विशतेस्त्रिषु ।
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्युरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।
 क्रमेणथ परेणथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।
 न्युर्बुवं बृन्दस्त्रवे च निस्त्रवं शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिर्बुदे ॥ २९ ॥
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते कचित् ।
 बृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निस्त्रवं बद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्खुर्बृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमाक्षगुणोत्तरम् ।
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥
 पङ्क्त्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।
 संख्यायां द्व्येकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।
 उपविशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाङ्मित्रराशयः ।
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोधी पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः कचित् ।
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा कचित् कार्षापणः पणः ।
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥
 त्रसरेणुभिरष्टाभिलिङ्गा सैव मरीचिका ।
 रथरेणुश्च रेणुश्च तास्तिस्रो राजसर्वपः ॥ ४२ ॥
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्वपः ।
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥

यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।
 रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥
 निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥
 तौ द्वौ माषावर्णिका स्याल्लोहितीकं त्रिमाषकम् ।
 शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥
 मधुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्थवा ।
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥
 तृतीये ध्वानका शाणभागे मापास्तु षोडश ।
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्पोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥
 बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम् ।
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निकुञ्च्याज्यपलानि च ।
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽक्षे विस्तवारटौ ॥ ५१ ॥
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥
 प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो बाहिकोऽध्युषः ।
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।
 चतुष्टयः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्व्याढकोऽस्त्रियाम् ।
 कंभं चाथ चतुष्टके स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्वयं पुनः ।
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी बाहस्तु तद्वयम् ॥ ५६ ॥
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भी परे पुनः ।
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं बाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥
 बाहं केचिच्चतुःखारी खारीभागं च गोणिकाम् ।
 बाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्तान्नस्य सप्ततिः ॥ ५९ ॥
 दशान्येषां शतं मानं साधै रूप्यपलैस्त्रिभिः ।
 तुला पलशतं तास्तु दशार्धं घटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥
 आचितं द्व्याचितं होढं हेलकं समकं समम् ।
 बाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः ।
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥
 पाय्यं हस्तादिभिर्मानं दुवयं कुडबादिभिः ।
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥

धर्मकर्मध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।
 सहजं निजमाजानं धर्मसगौ निसर्गवत् ॥ १ ॥
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।
 वैपरीत्यं विपर्ययो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गडु निरर्थकम् ।
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोऽङ्गिति ॥ ६ ॥
 वण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्टुरमपष्टु च ।
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥
 आग्नेडनं ऋटप्पः स्याज्झम्पः सम्पातपाटवम् ।
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥
 यात्रा व्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णिश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥
 ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।
 व्रज्याऽटाटया पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्गनलङ्घने ॥ १२ ॥
 निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥
 निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।
 आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥
 भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥
 प्रत्याहार उपदानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिर्जनम् ॥ १९ ॥
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।
 स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।
 धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।
 परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिजागरः ॥ २९ ॥
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥

संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥
 प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा ।
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्तवः स्तवः ॥ ३२ ॥
 उद्वेग उद्भ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥
 उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥
 यप्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठीवनं च निष्ठीयूतिः ।
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।
 श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥
 विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥
 सम्मूर्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं भिदा ।
 आवर्तनं काथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥
 संवीक्षणं विचयनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 सामान्यकाण्डे धर्मवर्माध्यायः ॥ २ ॥

गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।
 मसृणत्वे तु मारुङ्गकासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥
 उत्क्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिकणाः ।
 पिच्छिले स्याद् विजविलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥
 कठोरनिष्ठुरकूरुदृढदारुणकक्खटाः ।
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।
 उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूषो धूम्रः प्रतापनः ॥ ८ ॥
 तीक्ष्णश्चण्डोलबणप्रोन्द्रकरालविकारालिनः ।
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥
 शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुष्ट्रको धवलोऽर्जुनः ।
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥
 उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥
 पिङ्गो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः ।
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥
 वरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥

बलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥
 रक्तपीतासितश्येते बोलः कारीषभस्मवत् ।
 उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्लप्रधानकाः ॥ १६ ॥
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥
 कर्बुरः शुक्लहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥
 कृष्णरक्तसितः शारः किमिरः सितलोहितः ।
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तित्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥
 कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योगयोनयः ।
 स्युः शाडवराश्रच्यूषाः श्रच्यूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूपः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तित्तकषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥
 सस्वादम्लला लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥
 कषायतिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥
 मधुबोलः सोरणश्च कचिदन्त्यः करोलकः ।
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीसुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोत्थुसौ ॥ ४० ॥
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥
 कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत् ।
 न स्यात् पूर्व्वरसस्याख्या परावररसाह्वयात् ॥ ४६ ॥

सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः ॥ ४७ ॥
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घृणः ॥ ४९ ॥
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।
 पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥
 वकुले स्यात् परिमलो बलनोऽगरुधूपके ।
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥
 कुन्दोपरालो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥
 आज्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥
 उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुर् ।
 शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥
 स्नेहदोषे मेचटिको गूधे स्थालिकवैणिकौ ।
 चिस्त्रो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरं त्वाममांसकः ।
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवह्निङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।
 स शब्दो वाच्यवह्निङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥
 वर्षीयान् दशमी व्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 जघन्यजो बवीयांश्च पूर्वजे त्वग्निप्रोऽग्रजः ॥ ४ ॥
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।
 पृथिः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥
 पिचण्डिलस्तूद्रिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।
 बलिनो बलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥
 श्मश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन् ।
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥
 आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वस्तूर्ध्वजानुकः ।
 संभ्रुः संहतजानुः स्यात् प्रभ्रुः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गडुले न्युब्जकुब्जकौ ।
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥
 खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः ।
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभटः ॥ १२ ॥
 केकरो बलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकदृक् ।
 एडस्तु वधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्छुतिः ॥ १३ ॥
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।
 पङ्गुः श्रोणे खञ्जकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः ॥ १४ ॥

शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मा दुर्बालश्च द्विनम्रकः ।
 क्षपणश्रमणो नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥
 आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्थपि ।
 हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥
 प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।
 धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥
 अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।
 दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥
 प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।
 कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥
 अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।
 गविते स्तब्ध उद्वीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥
 मूर्खे त्वनेडो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।
 अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्भूतौ ॥ २१ ॥
 नीचे तु हीनापशदपामरेतरबबेराः ।
 नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौनृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥
 कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।
 दौण्डुको दण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥
 क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यसकवञ्चकौ ।
 कौकृतो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥
 ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।
 कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥
 नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्वारागकः पुनः ।
 अस्थिरप्रेमिण गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥
 अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।
 स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥
 परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।
 निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥
 अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।
 सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥
 यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।
 परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोऽसुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।
 प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥
 ग्रणेयः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।
 क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥
 सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।
 हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥
 दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।
 दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥
 कामुकः कमिताऽभीकः कम्पः कमयिताऽभिकः ।
 तृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥
 लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।
 लुभुक्षुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥
 पिपासितस्तु तृषितः पिपासुस्तपितः सतृट् ।
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥
 नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृह्यालुर्गृहीतरि ।
 संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥
 दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।
 स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समाः ॥ ३९ ॥
 लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वतिष्णुर्वर्तनः समौ ।
 निराकरिष्णुः क्षिप्तुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥
 उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।
 भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजनिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥
 उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।
 स्थास्तुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुहिस्रघातुकौ ॥ ४२ ॥
 वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।
 आशंसुराशंसितरि वन्दारुर्भवादकः ॥ ४३ ॥
 जागरूको जागरिता ऋक्षवाक् तु प्रियंवदः ।
 शङ्को मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥
 वदो वदावदो वक्ता वागीशो वक्पतिः समौ ।
 वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥
 जल्पपाकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।
 मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥

कद्वदो गह्वर्वादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।
 परान्नः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥
 सर्वात्रीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौलिकः ।
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽद्भरः ॥ ५० ॥
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥
 अदुते धीरविस्त्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।
 चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।
 चेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्धिकः ।
 उदारोदीर्घधन्यास्तु महात्मा सुकुतीति च ॥ ५६ ॥
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।
 आढ्यस्त्विम्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥
 अपि दुस्स्थकूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।
 जगत्प्रसन्नप्राणमिषदिङ्गञ्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।
 वा ह्री प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमग्रियम् ॥ ६३ ॥
 परार्थ्य ग्रामणीः स्पर्ध्य जात्यं च वरमग्रणीः ।
 उपाग्रस्तु गुणः पुंसि ह्रीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥
 निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।
 विमले वीदुधं मलिने द्वौ कश्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥
 आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विकृवो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी बधोद्यतः ॥ ६८ ॥
 शत्रूणां तापग्निरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।
 द्वेष्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्भगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥
 वध्यो विष्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।
 कार्मस्तु कर्मशीलः स्यादीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥
 गह्वोऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधमावमाः ।
 प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥
 अग्र्यं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥

चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।
 स्थास्नैकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्टोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥
 विशालमुरु विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु ।
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥
 प्रांशुचमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।
 न्यङ्नीचह्रस्वस्वर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम् ।
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥
 नूतने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युवजमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यग्वागपाक् ।
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥
 यः सहाञ्चति सप्रयङ् स विष्वद्यङ् विष्वगञ्चति ।
 देवानञ्चति देवद्यङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥
 अविलम्बितमुच्चण्डं संशितं तु सुतेजितम् ।
 उत्पिञ्जलं समुत्पिञ्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णोपहस्तितम् ।
 चलितप्रेङ्खिताधूतवेङ्खिताकम्पिता धुते ॥ ९५ ॥
 रुचिते हृद्यलषितवाङ्मिष्टेष्टेडितेहिताः ।
 संवीतं स्याद् बलयितं वेष्टितं रुढमावृतम् ॥ ९६ ॥
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्तविद्धाः स्युरीरिते ।
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दिगतं सितम् ॥ ९७ ॥
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते ।
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ९८ ॥
 लब्धात्तासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते ।
 प्रयत्ने मुदितप्रीतदृष्टाः सुहितवृषवत् ॥ ९९ ॥
 आबर्हिते तूद्वृहितोन्मूलितोत्पाटितोदधृताः ।
 ऊतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥
 मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।
 त्यक्ते तु विधुतोऽस्मृहीनधूतसमुष्मिताः ॥ १०१ ॥
 कृत्ते छनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छित्तार्दिताः ।
 स्वस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।
 भजमाने प्राप्तयुक्तन्यायान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम् ।
 अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥
 पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताः शस्ते ।
 वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्गीर्णौपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥
 उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपिताद्ग्रीणि सार्द्रवत् ।
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजग्धान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतभुक्तभक्षितजक्षिताः ।
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं स्तुतं स्तुतम् ॥ १०९ ॥
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् दृढे प्रथितमुद्रितौ ।
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्मृते विस्मृतं ततम् ॥ ११० ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥
 उतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुनुदम् ॥ ११२ ॥
 गुण्डितं रुषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्चितम् ।
 ज्ञप्तं तु ज्ञापिते हन्नं गूने मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥
 पुषिते पुष्टमुद्गूर्णोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्गते ॥ ११४ ॥
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।
 निष्पके कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निस्तृष्टं वृद्धमेधिते ।
 काचितं शिक्विते दिश्यं दिग्भवेऽध्रभवेऽध्रिथम् ॥ ११६ ॥
 यज्ञियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।
 तत्तद्वात्रभवे दन्तं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥
 पुंसः पौंसं स्त्रियाः स्त्रौणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥
 ब्रीहिणो ब्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥
 छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाशयेऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥
 समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक् ।
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥
 आभा प्रख्योपमाभिरूपा प्रकारः सन्निभं निभम् ।
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।
 विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।
 विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥
 प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।
 अनुलोममनूचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥
 अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।
 एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥
 अप्येकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।
 साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थकम् ॥ १२९ ॥
 नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।
 अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥
 अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।
 भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥
 तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।
 वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥
 परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।
 सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥
 प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम् ।
 सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥
 शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम् ।
 न्युङ्गं हारि प्रियं साधु लडहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥
 अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।
 किञ्चिन्मात्रं मितं दध्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥
 अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।
 चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥
 विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।
 पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥
 नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।
 उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥

प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।
समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रवसीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनृतं शुभम् ।
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिद्धमर्मरौ ।
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे

अर्थवर्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

६. अथ व्यत्तरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।
द्वयक्षरास्त्रयक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥
अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।
संग्रहो द्वयक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥
अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।
व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥
अर्कोऽर्कपणे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।
अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरिद्रुमाः ॥ ४ ॥
अट्टावतिशयक्षौमावधौ पूजाप्रतिक्रयौ ।
अर्योः शास्तृस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥
अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्यङ्कुश्रिहेऽन्तिकोरसोः ।
आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥
यत्नेऽर्केऽग्नौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।
आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥
इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।
इष्वोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥
ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्तिकौ ।
ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥
ओषः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।
करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥
दातुं भूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।
क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥
उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।
कन्तू कुसूलकन्दपौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥

कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्कभवानराः ।
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ ११ ॥
 क्रतू अध्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिख्यदृग्जोः ॥ १५ ॥
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः कुदौषधिशशाङ्कयोः ।
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥
 विकल्पेऽपि च कश्चस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे ।
 काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्मकेऽवनिताः खगाः ।
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥
 गणाः प्रमथसङ्ख्यौघाः प्रावाणौ पर्वतोपलौ ।
 तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुषु ॥ २० ॥
 ग्रन्थो द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।
 गर्भोऽपवरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥
 कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशो महीगुणे ।
 घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ ।
 टङ्कौ प्रमाणगवौ च डिम्बः ग्रीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥
 तर्काः काङ्क्षावितर्कोहास्त्वष्टा तदिण युशिल्पिनि ।
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥
 दवदावौ वनारण्यवह्नयोः खगार्कयोद्युवा ।
 धवो वृत्ते नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥
 धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २९ ॥
 ग्राहाभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे ।
 न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥
 नाशः पलायने मृत्यौ परिवर्त्तसेऽप्यदर्शने ।
 नम्रा वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥
 पीयुः काल उल्लूके च पीलुः काण्डे गजे हुमे ।
 पुण्ड्राः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।
 पवी वाताम्बधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डः कल्केऽपि तैलजे ।
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्पिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥
 घृते विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने ।
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके ।
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुङ्गानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥
 पाशो रज्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥
 श्वेतार्के ङाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्रणाः ।
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥
 बाष्पोऽश्रण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कहरांशवः ।
 भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥
 भवो भद्रे हरे प्राप्नौ सत्तासंसारजन्मसु ।
 भागा भाग्यांशतुर्यांशा भरभारौ गरिष्यपि ॥ ४१ ॥
 भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ ।
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥
 भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।
 फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥

मन्त्रावृणादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।
 मर्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौर्यमूढताः ॥ ४५ ॥
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।
 मृत आतञ्चने व्रीहौ व्रीह्यादेर्बन्धने तृणैः ॥ ४६ ॥
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।
 यन्ता हस्तिपके सृते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥
 ययुरश्वेऽश्वमेधाश्वे योगो विस्त्रब्धघातिनि ।
 प्राप्तौ सन्नहनोपायध्यानसङ्गतिर्युक्तिषु ॥ ४८ ॥
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।
 रेतस्यास्वादाने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥
 रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिगुः ॥ ५१ ॥
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।
 वंशः पृष्ठास्त्रिंशो गोहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥
 नासोर्ध्वास्त्रोक्षुभेदे च वहिरुत्तिष्ठ ह्येऽनले ।
 बलो धान्येऽसुरे काके गवां श्वासेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥
 वेणू वेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।
 वालौ पुच्छाश्वपुच्छौ च व्याजश्छद्मापदेशयोः ॥ ५४ ॥
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रथे पुमिन्द्रयोः ।
 वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥
 वेधसो विष्णुधातृज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।
 शम्भुर्धातृहरार्हसु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥
 शम्भो वज्रे लोहमयवलये मुसलाग्रगे ।
 शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुकोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्घयोः ॥ ५९ ॥
 कुक्कुटेऽग्नौ मयूरेशौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।
 पद्ये यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

पृथूमसूमौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।
 सन्नाजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥
 सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपान्शे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्चरोहसूतयोः ।
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे कचिन्नपुम् ।
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥
 स्तूपा वायुरणोच्छ्वाया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्श्विकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी कलास्थयपि ॥ १ ॥
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥
 आलिः सेतौ सखीपङ्क्तयोराशा दिगतिवृष्णयोः ।
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाह्विडा ॥ ३ ॥
 इलाऽप्येतासु चार्धे च स्याद्विज्ञा यागपूजयोः ।
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुपु ॥ ४ ॥
 अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूर्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥
 ऊर्णा भ्रूमध्यगावर्ते तन्तौ मेपादिलोमसु ।
 हिंसाविच्छेपयोः कीणिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥
 कदया कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।
 कर्मो हाटकपुङ्ग्यां स्यादपि शालापलालयोः ॥ ७ ॥
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।
 काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।
 करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥
 कोटिस्त्वश्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।
 गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकणिका ।
 चिन्ताचचिक्ययोश्चर्चा चूर्णिग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशङ्खद्विरुद्धान्तिरेतसोः ।
 छाया त्वनातृपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।
 जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥
 अलक्ष्म्यग्रजयोर्ज्येष्ठा गृहगोत्र्यक्षभेदयोः ।
 जिह्वा वाग्रसनार्चिषु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥
 तन्त्रीर्गुह्यचीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगे गुणे ।
 तन्दूद्रोणिप्लवे दूर्या वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥
 तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशशंशययोस्तुटिः ।
 तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥ १७ ॥
 दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।
 द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥
 दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूव्युपमातरि ।
 धनुः सुखीधनुर्ज्योसु धानां बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥
 धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।
 धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥
 निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।
 भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥
 पालिरश्रिः प्रदेशोऽङ्कः सशमश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।
 छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिर्गौरवपाकयोः ॥ २२ ॥
 क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।
 प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥
 प्रसूर्जनन्यामश्रयां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।
 पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥
 पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।
 प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥
 भसदौ गुह्यवित्कोष्ठौ भक्तिर्भागे निषेवणे ।
 भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याच्न्यायां भृतिसेवयोः ॥ २६ ॥
 भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।
 मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्मुत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥

माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मणाद्यासु प्रसूमयोः ।
 मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥
 पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।
 गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥
 राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।
 रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥
 प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।
 रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भासि तिन्त्रिडीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥
 रेटिर्वहेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।
 रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्वेदशाखयोः ॥ ३२ ॥
 लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।
 बलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥
 वर्ध्री स्नायुनि नध्र्या च व्रज्या पर्यटने गतौ ।
 विधा विधाने हस्त्यन्त्रे भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥
 वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।
 वीचिः पङ्क्त्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥
 वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽन्विजलवर्धने ।
 काले सीमि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥
 वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु हृप्रजि ।
 अश्ववर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥
 शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृतुवत्सरौ ।
 शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥
 शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पाददुमाङ्गयोः ।
 श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥
 शिखा षवालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाग्रमौलिषु ।
 शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यपि ॥ ४० ॥
 शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।
 संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥
 संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥
 गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।
 राश्ममेखलयोः स्यूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥
 स्थूणा सूर्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।
 हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभ्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।
 अभ्रं पुरःशिखामानशैष्ट्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥
 मुष्के पद्यादिकोशोऽण्डं दुःखैर्नोव्यसनेष्वधम् ।
 अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आङ्ग्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्यं मुखविले मुखे ।
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोऽङ्गयोः ॥ ३ ॥
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजम्बु च ॥ ४ ॥
 कुण्डं स्थात्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।
 पिण्याको नम्रहः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाङ्ग्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥
 चैत्यं चिताङ्गे बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।
 चिह्नमङ्के पताकायां छद्म सद्धानि कैतवे ॥ ८ ॥
 छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्वालाहकपुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छदे ।
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुड्मुम्बव्यापृतावपि ।
 तल्पं शय्याट्टजायासु तनुषी तनुविस्वृती ॥ १२ ॥
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।
 तीर्थं मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियङ्गयोः ।
 तेजो बले प्रभावेऽन्ने ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।
 द्वयं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।
 शब्देऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।
 पक्ष्म सूत्राद्यवयवे किञ्चल्के नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।
 पार्थीपि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥
 पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥
 बीजं शुक्ले फलास्थन्यन्ने भर्मणी स्वर्णवेतने ।
 वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।
 मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लम्बु च ॥ २७ ॥
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्वे रजः ॥ २८ ॥
 ललं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥
 लिङ्गं शोफसि वेषेऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।
 वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥

वर्चोऽर्चिरूपविड्भाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।
 व्रतं विष्णुवृत्तुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवल्कले ॥ ३२ ॥
 शास्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।
 शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।
 सर्पिर्घृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥
 स्नानीयेऽभिषेचे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।
 हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अथर्वलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्धयोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिर्कृष्टयोः ।
 क्लृप्तेऽर्घ्यार्घ्यमर्घाहेऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।
 आद्यमादिभवे भक्ष्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥
 मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।
 कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।
 क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।
 छिन्नाक्षौ छिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिब्लवत् ॥ ५ ॥
 चोद्यं चित्रे चोदनाहं चारु चित्रवचस्यपि ।
 जडो जालमश्च निर्बुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥
 द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।
 न्यक्षं क्षिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥
 नीचं खर्वं निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।
 मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।
 मृद्वतीक्षणे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ १३ ॥
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥

न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लिप्तो भक्षितदिग्धयोः ।
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥
 लोलं चले लोलुपे च व्यभ्रो व्यापृत आकुले ।
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीययोः ॥ १६ ॥
 विडं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥
 सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तफुल्लाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 द्वयक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव कचित् कचित् ।
 उन्नेयमर्थवल्लिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।
 शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥
 अब्जो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली लवणेऽम्बुजे ।
 प्रदेशेऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥
 अविर्भूषणवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाःसु ना ।
 अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥
 अन्तोऽस्त्र्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।
 नार्धमासेऽणिरकल्यश्रौ रूप्येऽक्षाग्रध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥
 अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्चन्तौ हयकुत्सितौ ।
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भास्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥
 अस्त्र आस्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिरेशुणि ।
 आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेष्वाभोऽपकेऽपि रुज्यपि ॥ ७ ॥
 इनास्त्वात्माधिपार्काढ्या उष्णोऽग्नौ चतुरेशपि च ।
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥
 उल्लः किरण उल्ला गौर ऋक्षं निर्लोमनीन्द्रिये ।
 कम्ब्वस्त्री वलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥
 कल्को ना सिह्मके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।
 कारा बन्धनगेहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥
 कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्ह्येऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥
 ग्रन्थौ स्तम्भे प्रकाण्डेऽसु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाघेष्वाद्रिःशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥
 अयोधनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।
 कृष्णं सीसाघलोहेषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥

शूरे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽर्जुने हरौ ।
 कोशोऽस्त्री कुड्मले दिव्ये शास्त्रेऽर्थोऽपि गृहे तनौ ॥ १५ ॥
 गृह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।
 कोलं बदरतकोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥
 कोला चव्येऽस्त्रपिप्लयोः कोलः खञ्जे प्लवे कटौ ।
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥
 कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।
 श्रोण्यां भृशे कलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥
 किङ्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले बाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥
 पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कथने कुशे ।
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।
 दवेडा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥
 क्षेमो ना प्रातरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥
 क्रोडं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥
 दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेके गृहे नषण् ।
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरी ॥ २५ ॥
 गव्यूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।
 भाण्डागारे पुमान् गञ्जः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥
 गुडौ पिण्डेक्षुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।
 गुरुगोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥
 मात्रादौ स्त्री वृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नास्ति कुलेऽचले ॥ २८ ॥
 गङ्गुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥
 घनाः कठिनसङ्घातमेषकाठिन्यमुद्गराः ।
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गर्हितं बर्हिचन्द्रकः ।
 चुम्नो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वं मन्देऽघवक्रयोः ।
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गीष्पतौ ॥ ३३ ॥
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।
 भ्रूषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽधस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्लौ समौक्तिके ।
 उडुदृष्ट्ययोरकली तुच्छं त्वमुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥
 ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।
 तीक्ष्णमुष्णे क्षण्णते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥
 कर्णमूलेऽध्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेष्वल्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥
 दंष्ट्री ग्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके कटौ ।
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥
 न्यायाचारयमाहिंसास्वस्त्री मेढ्राङ्गयोर्ध्वजः ।
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृत्ते स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्त्रुचोः ।
 स्त्री तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षशते पले ।
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्विन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याधावधोमुखे ।
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥

बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥
 पद्मोऽस्त्रयब्जेऽष्टकायां ह्री सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्क्तोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।
 पार्ष्णिहन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥
 पुमांस्तु प्रतनाकट्यां पापं स्यात् कूरपाप्मनोः ।
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे ह्री सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।
 स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने हये तु ना ॥ ५१ ॥
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृगवादिविप्रविग्नयज्ञधातृषु ॥ ५३ ॥
 अर्केऽग्नौ ह्री तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमूषु च ॥ ५४ ॥
 बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।
 साज्ये मधुनि तक्कोले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।
 बालोऽक्ली नीलभिण्ड्यां च भेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्याकभूतिषु ।
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाभिव कातरे ॥ ५९ ॥
 अन्नतत्परयोर्भक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदुसूर्यजाः ॥ ६० ॥
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥
 अक्ली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अश्वरावयवे माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यषण् ॥ ६४ ॥
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दीर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥
 युगोऽस्त्री स्यन्दनावङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।
 योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यषण् ॥ ६६ ॥
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥
 राजते भूपणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।
 त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥
 राष्ट्रेऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्याजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥
 वर्णो नीलादिविप्राद्योः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥
 वशा करिण्यां बन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।
 वशो जनस्पृहायत्तेऽवायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।
 त्रिष्वग्रये क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिसितृहिसयोः ।
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमन्त्रीरुजोस्त्रिषु ।
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥
 त्रिष्वतीतदृढाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।
 श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुं धर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥
 वसुहर्देऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये धने मणौ ।
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्त्रिषु शुण्ठ्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥

वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृष्टि स्त्रियः ॥ ७६ ॥
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योगृहे सीमसुरुङ्गयोः ।
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥
 वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुबेरयोः ॥ ८१ ॥
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुबेरयोः ।
 गजप्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिलं नपुम् ॥ ८२ ॥
 शङ्खऽस्त्री वलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽग्नौ हरौ शुचिः ।
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥
 शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।
 शुक्रं मेध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥
 क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।
 पञ्चङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्ततः ॥ ८७ ॥
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्गृते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिरावलौ ।
 शौण्डी जलदमालायां शौण्डी समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥
 शक्रो विष्टा पशूनां स्याद्देशे च गवये शक्राः ।
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥
 शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरो विक्रान्तकुक्कुटौ ।
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूपयोः ॥ ९२ ॥
 शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतथ्ययोः ॥ ९५ ॥
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पर्शर्युपतापप्रदानयोः ।
 साधुस्त्रिषुचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ९६ ॥
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ९७ ॥
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदभ्रयोः ॥ ९८ ॥
 सूनं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहादयोः ।
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाश्वांशुशुक्राग्निषु ॥ ९९ ॥
 कपिभेकाहिसिंहेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।
 हयो वशीक्रिया मन्त्रे ह्वयं दध्न्युपलेपने ॥ १०० ॥
 हत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे हीकौ नकुललज्जितौ ।
 यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्वयक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥

७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्ती हस्तकूर्परौ ।
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्वले ।
 आप्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।
 आकर्षः शारिफलको द्यूत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यावृतावपि ।
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।
 आवापो न्यास आवाले स्मरे धातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥
 श्रोण्याञ्जारोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥
 रुग्भीतितापेष्वतङ्क आशुगोऽर्के शरेऽन्तिले ।
 तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥
 अग्न्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।
 ईशानौ हरिधातारावुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्यापृतेऽपि च ।
 उत्सवस्त्वच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥
 उदर्क उत्तरे काले यच्च स्यात् फलमुत्तरम् ।
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥
 ऊर्णायुर्णनाभे स्थान्मेघतल्लोमकम्बले ।
 ऋषभोऽग्रये मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।
 वेणौ दुमाङ्गे रोमाङ्गे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥
 क्षारको मत्स्यपद्यादिपिटके पुष्पजालके ।
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥
 कौशिको गुग्गुलुलकशक्रषिष्वाहितुण्डिके ।
 कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥
 कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।
 कारुजः कलभे नाके क्ष्वधुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥
 कर्परोऽम्रौ कपालेऽपि करभोऽपि खरोष्ट्रयोः ।
 शरे किंशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु ऋषेऽपि च ॥ १९ ॥
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूल्मुकेऽपि च ॥ २० ॥
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।
 कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥
 अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने हये ।
 गरुत्मान् विहगे तादर्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।
 चिकिरोऽहौ गेहबध्नौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैवलौ ।
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।
 जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।
 तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकी ॥ २८ ॥
 तपनो भास्करो ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।
 त्रिशङ्कू तादर्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥

सपिण्डपुत्रौ दायादौ द्वापरौ युगसंशयौ ।
 दिवौकाश्चातके देवे दुघणौ धातुमुद्गरौ ॥ ३० ॥
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥
 दुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातुलोकार्काः ॥ ३२ ॥
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।
 निवेशौ शबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।
 निषधोऽद्रौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥
 निहवः स्यादविश्वासेऽपह्वे निक्ृतावपि ।
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मभृत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारेऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।
 परिघाते मूढगर्मे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।
 पर्जन्यो गर्जदध्रेऽध्रध्वाने शक्रेऽख्यन्त्रके ॥ ४२ ॥
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥
 प्रयोगो ग्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्न्यायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिल्लके किण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।
 पुरुषो धातुपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥
 पुलकोऽस्त्रे रत्नराज्यां रोमास्त्रे हीरके क्रिमौ ।
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।
 पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥
 तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्रहः प्रग्रहः पुनः ।
 तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धगर्वधेषु च ॥ ४९ ॥
 प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।
 आयोपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥
 प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।
 विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥
 पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।
 गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥
 प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।
 पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥
 पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।
 प्रतिघौ रुद्रप्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥
 प्रसादौ स्वाच्छ्रयानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।
 प्रदोषौ दोषराज्यशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥
 वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।
 भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥
 रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।
 पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥
 पृथुक्श्चिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।
 भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ॥
 भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ भुरण्यु विष्णुभास्करौ ।
 भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ॥
 भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्त्ता तनौ पुमान् ।
 राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥
 धुतूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।
 सिक्थे वसन्ते धुतूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥

विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरूकौ भेककेकिनौ ।
 मिहिः वायुमेघार्का यज्वरौ तु हयाध्वरौ ॥ ६२ ॥
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।
 रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥
 रुचको भूषणे दन्ते रुवथः कुक्कुटे ध्वनौ ।
 वज्रथः कोकिले काले वर्तकोऽश्वसुरे खगे ॥ ६४ ॥
 व्यवायो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।
 वाहसौ वह्नयजगरौ दुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥
 विस्त्रम्भौ स्नेहविश्वासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।
 विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखकुक्कुटौ ॥ ६६ ॥
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।
 विश्वात्माकेऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्टौ च विष्टरः ।
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ वालुका ॥ ६९ ॥
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरी विसर्गौ मुक्तिवर्चसी ।
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥
 अध्वर्यौ च श्रपायः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
 कक्ष्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वशुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करी ।
 स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
 क्षये रोधे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।
 समिको वृक्षवल्मीको सृदाकू व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।
 सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥
 स्वीकारोच्छ्वायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।
 सम्भवो जन्मसंहत्योराधारान्तरेचने ॥ ७९ ॥
 आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिग् बृहस्पतिसवी च यः ।
 समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥
 हर्यक्षो धनदे सिंहे व्रीह्याब्दाचिष्णु हायनः ।
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्रयक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्गण्यां जलपात्रे च दारवे ।
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥
 अभिरुया त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतिः ॥ २ ॥
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।
 कणिका तिलकाण्डेऽशो गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।
 कूचिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥
 तुर्थेऽशो मापदण्डस्य मापस्यापि च काकणी ।
 विशतौ च कपर्दानां पादुकैककपर्दयोः ॥ ६ ॥
 गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।
 वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥
 पार्या कालेऽपि घटिका रथ्यायामपि चत्तरी ।
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥
 जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि भल्लरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥
 निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।
 नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे वेणुभाजने ॥ ११ ॥
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्तवमात्यादिमातृषु ।
 पक्षतिर्गरुतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।
 गृहादिधिष्ये पिण्डे च जङ्गामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पद्धतिः ।
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रतती ततिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसूतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु करिण्यपि ।
 वृद्धी पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्या च वाचि च ॥ १७ ॥
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥
 गद्यक्षे रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥
 पथ्यायां गद्युमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥
 विपणिस्तु निषद्यापि वालुकोमिश्र च वालुका ।
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।
 वृषल्युतुमती कन्या शूद्रा बन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥
 वनिता स्निग्धनार्याश्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥
 शङ्कुल्यूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।
 संविती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूक्ष्मवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥
 अनुकमन्वये शीलेऽप्यास्पदं स्थानकृत्ययोः ।
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिनोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥
 रेतसीन्द्रियमन्त्रे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।
 उद्यानं सङ्ग्रहोद्गत्योर्वनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।
 उद्धानमुद्गमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥
 कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।
 कीलालं रुधिरं तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥
 कुरीरं ग्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।
 कैतवं कपटे द्यूते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥
 करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।
 स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।
 कटित्रं चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुर्धनुर्धरः ।
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥
 कौलीनं प्राणिभिर्द्युते कुलीनत्वापवादयोः ।
 गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।
 ग्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्यप्लवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥
 तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशस्त्रोपलब्धिषु ॥ १७ ॥
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽक्षिण च ।
 धाराग्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्कणं च वरस्त्रियाः ।
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्मभेदयोः ।
 प्रयाणं गजद्वक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।
 पातालं लोक और्वरच पतत्रं खे गरुत्याप ॥ २२ ॥
 नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।
 प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥
 सम्यग्वक्त्रि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौघे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥
 वाह्नीकं कुङ्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तृणे कत्तणेऽपि च ॥ २६ ॥
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्यापनेऽपि च ।
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥
 लाङ्गूलं वालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्घाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥

बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥
 व्यसनं शक्तिविपदोद्देवानिष्टफलैऽहसि ।
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवलकले ।
 शालूकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यधे ॥ ३४ ॥
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥
 साधनं शोकास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥
 मणौ शीधौ शीधुपाने सरकं मद्यभाजने ।
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥
 हृतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ३९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभीकौ ।
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्ह्यकृत्स्नयोः ॥ १ ॥
 आविष्टौ क्षिप्रकुटिलावाहता सादराचितौ ।
 विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।
 आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डिके ॥ ४ ॥
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥
 उदूढावूढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याय्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।
 उत्तालो हुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्धटे ॥ ७ ॥
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।
 कर्कशः प्रखरस्पर्शो निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।
 क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥
 कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्ष्यया युते ।
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥
 देहान्तरचिकित्साहं गरले पारदारिके ।
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलाल्पयोः ।
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हते ।
 निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥
 निष्ठयते प्रास्तवान्ते च वचने च दुतोदिते ।
 निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।
 प्रणाययोऽसम्भतेऽपि स्यादभिव्यङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥

प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥
 पिण्डलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।
 प्रतीच्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।
 सव्यायत्तौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैर्धितौ ॥ १८ ॥
 पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥
 मिश्रास्त्रिगधौ च परुषौ प्रगाढौ गहने दृढे ।
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥
 बीभत्सौ कृरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।
 बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिक्किङ्कुरौ ।
 मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञानसंश्रुतौ ।
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेक्षितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विवित्तौ शुद्धनिर्जनौ ।
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥
 विकृतौ रोगिदूरूपौ विशदो धवले शुचौ ।
 वल्लभौ दयिताध्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥
 पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते ।
 वदान्यो वल्गुवाग्दात्रोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।
 विधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्षिष्टविशिष्टयोरपि ॥ २७ ॥
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्यूहं स्वयं क्वचित् ।
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मानि ॥ १ ॥
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥
 अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।
 धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥
 अनन्तो नागराड्विधुरनन्तं खनिरन्तयोः ।
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे ।
 नेत्ररोगे चाजुन तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।
 अव्यक्तराने शशिजे सन्ध्याभ्रे लोहिते रंभौ ॥ ६ ॥
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेमिन् गोरसे ॥ ७ ॥
 क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फ्यां मद्यभिश्चयोः ।
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययोः ॥ ८ ॥
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मद्ये ताम्रे शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिराऽपि च ।
 न ना कवाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥
 लाजेऽवभ्योषमभ्योषाः साऽयाम्भःपेयसक्तवः ।
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥
 अविषो निर्विषेऽम्मोधावविषो दिवि पुंसि वा ।
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडूची चामराः सुराः ॥ १३ ॥
 कृत्यक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।
 अजिरं जर्जरे कामे विषयाङ्कणयोर्दृते ॥ १४ ॥
 अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।
 विद्युत्पयोरङ्गुल्यशानिरनीकोऽस्त्री चमूयुधोः ॥ १५ ॥

अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेष्वनृतं वितथे कृषौ ।
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥
 कोट्टारे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।
 शर्करायां दृष्टपुत्रे स्त्र्यस्त्र्यश्मन्थुपलो मणौ ॥ १७ ॥
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्कुरे ।
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ स्वर्बकच्छपौ ।
 अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्वद्वयेऽपि च ॥ २० ॥
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।
 कल्याणी क्षोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयस्कमयोः ॥ २१ ॥
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।
 कुहनो मूषिके सेष्ये कुहना दम्भशोलता ॥ २३ ॥
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।
 कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥
 रक्ताब्जजेऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलाजजतर्पणं ।
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु ह्यागकम्बले ।
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥
 कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।
 किञ्चलकः केसरे खे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ क्षेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिविशेषयोः ।
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुध्वनौ ।
 गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूतौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।
 कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥
 गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वृचादयः ॥ ३७ ॥
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥
 जृम्भितं जृम्भणोऽङ्गुलविष्टेषु विचेष्टिते ।
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।
 टगरष्टङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।
 तातगुः शुद्धताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥
 त्रिष्ववाकसरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥
 स्त्री पुनर्भास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥

दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।
 धर्षणं सुरते धाष्ट्ये कुलटायां तु धर्षणी ॥ ४८ ॥
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिह्ने ना तु गीष्पलौ ।
 नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिशः क्रूरखड्गयोः ।
 नालीकमञ्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।
 पटलं द्रुमकच्छदिषोः क्ली न ना पिटके गणे ॥ ५२ ॥
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।
 प्रवणो दक्षिणे प्रह्ने क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥
 बीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।
 असूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥
 प्रमीवमस्त्री कलशे मीवाप्रासादयोरपि ।
 पाटला गवि पाटल्यामाशुव्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वनि ।
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ ।
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥
 मन्त्रे दधि ब्रह्मसूत्रे हेम्नमर्थे कलशे कुशे ।
 पुलस्त्यवंश्ये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः ।
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥
 आमत्से क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥
 स्त्री स्यात् प्रथिव्यामुखायामेलायां कृत्तिकासु च ।
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि ॥ ६२ ॥
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।
 मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥
 उपसृत्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ खाद्यहर्षकौ ॥ ६६ ॥
 पित्रादेः कन्वयाऽऽप्येऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्जले ॥ ६७ ॥
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः ।
 रसनं क्ली कषायेऽग्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥
 निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।
 रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते हृदे ।
 श्वेते हारेऽप्यथोष्ठेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥
 रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणप्राणि पारदे ।
 रौहिषं रक्तकत्तणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नोलिङ्ग्यां चर्मणि भ्रुवि ॥ ७३ ॥
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूतौ तु वज्रकौ ।
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निभृते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥
 विनयं ग्राहिते चैष सुखवाहिहये पुमान् ।
 विषयी राज्ञि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेभशृङ्गिषु ।
 भैक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्दुर्दुरे न वण् ॥ ७७ ॥
 वयःस्थाऽऽमलकीपथ्याब्राह्मीषु तरुणे त्रिषु ।
 वलजा वरनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥
 वर्णकोऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने रुद्रयङ्गलैपने ।
 दुःखे विलचे व्यलीकमप्रियाकार्ययोस्तु ना ॥ ७९ ॥

वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसहे ।
 विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गजदन्तयोः ॥ ८२ ॥
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।
 स्कन्दे विशाख ऋते स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥
 पापेऽपि वृजिनं केशो पुमानिन्दुस्तु शर्वरः ।
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योदैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥
 शरत्पकादिशालीनौ प्रत्यग्रोऽब्जश्च शारदः ।
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंसे त्रिषु शर्वरः ।
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिः सङ्कटौ ॥ ९२ ॥
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥
 अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने । २ ॥
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्यादसि ॥ ३ ॥
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि ॥ ४ ॥
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।
 अवरोहोऽवतरणं शाखाण्याग्रादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥
 अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भाषाभेदप्रपातयोः ।
 अपदेशस्तु लक्ष्णे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहंसयोः ॥ ९ ॥
 अभिषङ्गस्त्वभिभावे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥
 अनिमेषोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥
 नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥

वह्निवातावपाङ्गभौं गुह्यगूधाववस्करौ ।
 कूर्मेशोऽब्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥
 अशिःस्कौ बाहुरुण्डाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।
 आशोचनी तु वहीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥
 उपक्रमश्चित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरावुच्चैःश्रवा हये ॥ १९ ॥
 दात्यौहाली कलकाणौ खड्गिखड्गौ करालिकौ ।
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥
 कुरुविन्दो हिङ्गुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।
 ऋक्षे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षुकाम्बुदे ।
 चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।
 तमोपहोऽप्यथोल्लुके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।
 दर्दुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाग्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।
 पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥
 अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥
 द्वारद्वास्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥
 परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।
 परिवारः प्रावारोऽपि नृपाहार्थेऽपि परिवर्हः ॥ २८ ॥
 परिवर्तौ जगन्नाशौ निमयेऽब्दे परिभ्रमे ।
 पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छेदे ॥ २९ ॥
 परानीस्वीकारशपथमूलैष्वपि परिग्रहः ।
 परिक्षेपो हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।
 स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥
 प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।
 मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥
 विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तपरिवारयोः ।
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥
 प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूपृष्ठे पतद्गृहे ।
 दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्टर्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥
 दक्षादिष्वग्निजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।
 ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥
 धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।
 महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥
 महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।
 रजसानू धर्ममेघौ रौहिणेयौ हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥
 लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।
 लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रमीर्भृगे ॥ ३८ ॥
 बाडबेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो हये हरौ ।
 विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥
 वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।
 वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥
 व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।
 त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥
 वारवाणिर्ज्योतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।
 वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रकौ विरोचनाः ॥ ४२ ॥
 व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।
 शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिबणिज्ययोः ॥ ४३ ॥
 वर्धमानः शरावे स्वादेरण्डे भूषणेऽपि च ।
 शङ्कुर्णौ गर्दभोष्ठावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥

श्रीवत्साङ्गौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।
 सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥
 स्तनयित्नुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।
 उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥
 समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।
 समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्घूते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥
 सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।
 स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥
 सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाब्जजेन्द्रयोः ।
 हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुञ्जरे ॥ ४९ ॥
 (इति चतुरक्षराः)

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।
 आशुशुक्षणिर्केऽग्नौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥
 शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।
 आम्ने चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥
 ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।
 ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥
 धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।
 गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥
 प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेघवाहनौ ।
 मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥
 कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।
 विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥
 निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।
 हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥
 (इति पञ्चाक्षराः)

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च ।
 आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसापतिः ॥ ५७ ॥

यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगृह्यकौ ।
 धनदेऽप्यथ वृक्षेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥
 भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आम्ने जम्बूकनीपयोः ।
 वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥
 अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।
 (इति विषमाक्षराः)
 आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥
 पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६० ॥
 (इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।
 अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गद्गुहि ॥ १ ॥
 धात्र्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।
 प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥
 अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।
 रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥
 उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।
 ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलधिषु ॥ ४ ॥
 फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।
 वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥
 श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।
 दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥
 गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।
 प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥
 मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।
 चुच्छन्दर्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥
 वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।
 गुञ्जायूथ्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥
 समुद्रान्ता यवाषे च कार्पासीस्पृक्कयोरपि ।
 गौर्योमपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥
 गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

(इति चतुरक्षराः)

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥
 चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।
 योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥
 वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफज्यां प्रावृषायणी ।
 हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।
 पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुगा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्या कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।
 रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥
 (इति विषमाक्षराः)

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वस्त्रिकायोषितोः स्त्रियौ ।
 उपायद्वारयोर्द्वीः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥
 धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।
 ज्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योमन्योर्द्यौर्दिवानुभौ ॥ १७ ॥
 ऋशब्दः स्याद्विव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।
 उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् सुक् सुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥
 लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।
 रुग्णवालाकान्तिवाञ्छासु तट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥
 यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वगन्धद्रव्यवत्कयोः ॥ २० ॥
 (इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।
 अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥
 आतञ्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।
 आराधने तोषणाप्री घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥
 जन्मोद्गमावुत्पत्तने रहोऽन्तिकमुपहरे ।
 उद्भासने वधोद्भासावधुत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।
 तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासधनार्पणे ॥ ७ ॥
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्यं हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यङ्कुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥
 प्राणिघूतं तु सङ्ग्रामे घूते च पशुपक्षिभिः ।
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।
 विदारणं तु काष्ठादेर्द्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।

(इति चतुरक्षराः)

अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्जले ॥ १३ ॥
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
 दुग्धाम्ने दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।

(इति पञ्चाक्षराः)

पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥
 आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।
 शकुनं च निमित्तं च शुमादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥
 यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।
 गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥
 स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।
 पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्वपि ॥ १८ ॥

(इति विषमाक्षराः)

खमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८ ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभिधेयवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

(अर्थवह्निज्ञाध्यायः)

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।
 अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥
 अभिपन्ना विपन्नाप्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।
 अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भत्सितेऽपि च ॥ २ ॥
 निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।
 अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥
 अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।
 उड्मिक्ते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥
 स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।
 उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥
 उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।
 कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥
 दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।
 परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥
 प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।
 विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥
 समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।
 पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥
 पौरुषेयं वधे पुंसो बृन्दे कार्यविकारयोः ।
 ब्रह्मबन्धुरधिष्ठेये निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥
 यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्झितेऽपि च ।
 लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥
 विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।
 मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥
 (इति चतुरक्षराः)
 कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।
 (इति पञ्चाक्षरः)

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥
 सरोमाञ्चे प्रतिहतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।
 स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥
 कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।
 प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

(इति विषमाक्षराः)

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।
 किं प्रश्नाच्चेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥
 (इत्येकाक्षरौ)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अभिधेयवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाध्यर्का अय्यथिषा अय्यथिष्यौ निशाक्षिती ।
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वादे गहितेऽपि च ॥ १ ॥
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्न आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥
 आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।
 उदुम्बरो द्रुदेहत्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥
 कर्णपूरो वतसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।
 काण्डपृष्ठः क्रीतसुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।
 जीवितेशः प्रेतनाथे दायते द्रविणागमे ॥ ८ ॥
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।
 निषद्वरी निशा कामकर्मसौ तु निषद्वरी ॥ ११ ॥
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसपौ निशाचरौ ॥ १२ ॥
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यूते त्रिष्वग्रसहाययोः ।
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरक्षे व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिधेयवत् ।
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥
 नीचे ब्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुष्ठभेदे मिताम्बुजे ॥ १६ ॥
 ना त्वाम्रे दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।
 दीप्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥
 ओतो चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खगे ॥ २० ॥
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ अवरे हरौ ।
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥
 वारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्नौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

(इति चतुरक्षराः)

आशितम्भवमन्नादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥
 पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥
 मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।
 हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुन्न षण् ।
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥
 द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।
 धर्मे वाद्ये प्रसृत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसृत्वरौ ॥ २९ ॥

पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ६० ॥
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ६१ ॥
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ६२ ॥
 श्रेयसी हस्तिपिप्पल्यामभयाराक्षयोरपि ।
 सरस्वती सरिद्धेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ६३ ॥
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

(इति विषमसङ्ख्याः)

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ६४ ॥
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरौ ।
 स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ६५ ॥
 गेहे कुलायो नीडोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

(इति विषमाक्षराः)

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ६६ ॥
 द्युपश्चिष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दक्षु गौर्न षण् ।
 दृक् स्त्री स्यादशने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ६७ ॥
 स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।
 गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न ह्री धनरुक्मयोः ॥ ६८ ॥
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ६९ ॥
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ७० ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।
 तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥
 गुग्गुलुलककुटजेष्विन्द्रस्याग्नैश्च चित्रके ।
 भज्जातकेऽप्यथार्कस्य भज्जातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥
 कर्पूरकम्पिप्लवकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।
 गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥
 खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।
 भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेये प्रावशैलयोः ॥ ४ ॥
 शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।
 ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वोक्षरासम्बहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
 वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वोदिवेशमसु ।
 हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥
 स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिंहके ।
 स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥
 वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।
 कुष्ठार्यभेषजे व्याधेर्मातुर्गौर्या दृषद्गवोः ॥ ८ ॥
 पिण्डारे त्ववटोः पाणेश्चायुधस्य त्वयस्यपि ।
 अपरावे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥
 रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।
 उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥
 रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।
 षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥
 माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।
 त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे ह्री किंशुके नरः ॥ १२ ॥
 गणस्यान्वेषश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।
 मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥
 सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।
 मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥

धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥
 अग्रहण्यसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसे ।
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥
 धूत्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।
 इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।
 वीरात् परास्ते भज्जाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करे विषात् ।
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेकुचगस्तिषु ॥ १९ ॥
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकिताक्षयोः ॥ २१ ॥
 पञ्चपूर्वास्तु वक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥
 स्वयमूहा यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४½ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे

पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

अनेकार्थान्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दाः निर्लिङ्गान्यवययान्यतः ।
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।
 ऐ दुःखभावे कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥
 औ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।
 प्रश्ने क्षेपे विलम्बे किं कु पापेऽल्पार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।
 तु भेदावधारणयोर्दुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥
 धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावानिकामयोः ।
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥
 प्रश्ने विकल्पे तु स्वच्छ प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥
 समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादशुक्तिषु ॥ ८ ॥
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।
 आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥
 (इत्येकाक्षराः)

अमा सहाय्ये सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥
 पीडेर्ष्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥
 अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥

अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।
 पश्चाद्वेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वाराद् दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥
 पादपूरणकृत्वायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥
 निषेधे वागलङ्कारे जीप्सनेऽनुनये खलु ।
 तूष्णीमर्थे सुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥
 तर्कनिश्चितयोनूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।
 प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽद्भुते ।
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।
 वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविवादयोः ॥ ३० ॥
 (इति द्व्यक्षराः)

अञ्जसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहाद्भुतखेदयोः ।
 समीपोभयतश्शीघ्रशाक्त्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वेषुः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यमे पुराप्रथमयोरपि ।
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३ ॥
 (इति त्र्यक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्रार्थे भटिति स्वाग्राक् मरुद्वहाय सपद्यपि ।
 चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥
 विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।
 सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे हे भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥
 बौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्वोक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।
 परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥
 किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।
 पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणर्ते च वर्जने ॥ ४ ॥
 कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।
 यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥
 शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।
 द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृतेः ॥ ६ ॥
 कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।
 दोषा नक्तं च निश्चहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥
 अपरेऽह्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वैतराधरे ।
 उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वद्युरादयः ॥ ८ ॥
 उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।
 ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥
 सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।
 अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुद्देशमः ॥ १० ॥
 अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।
 मुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽग्रतः ॥ ११ ॥
 सङ्कोचे चिञ्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।
 किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥
 निष्पमं दुष्पमं दुष्ठु गर्हे सुष्ठु सु शोभने ।
 मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥
 मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।
 युक्ते स्थाने रुषोक्तावूम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समयान् निकाषा हिरुक् ।
 साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥
 प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।
 अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥
 समकं तु सजुः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।
 सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥
 हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।
 प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥
 उपरिष्ठादुपयुध्वं स्यादधस्तादवागधः ।
 तिरश्चि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥
 प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।
 द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥
 अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।
 इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥

लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥
 अवाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीभूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरञ्ज्वादि किञ्चन ।
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥
 णचोऽञि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्तिन्ताः सम्पदादयः ।
 इञि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाल्लवाद्या घञस्तु ज्ञे ।
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ल्याबूङ्क्ष्यन्धादयः ॥ ६ ॥
 अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोल्लुकादयः ।
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दल्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहारार्थकद्विगौ ।
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

(इति स्त्रीलिङ्गाः)

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥
 इदन्नेष्वरतिर्वर्णित्वार्त्वाहिर्मेहिः प्रहिः ।
 स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥
 अङ्ग्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहितरत्तथा ।
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमथ्वादयोऽथुचि ॥ १३ ॥
 प्रश्नाद्या नङि पाकाद्या घञि ल्यौ नन्दनादयः ।
 प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

(इति पुलिङ्गाः)

त्रान्तद्वयच्कासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीबे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यः शब्दोऽणि त्रिष्टुभादयः ।
 स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।
 सांराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥
 एकद्वन्द्वाव्ययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।
 अनव्त्तपुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥
 अराजतः सभा भूभृत्सभं रक्षःसभं यथा ।
 न काष्ठादेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।
 पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥
 शशादूर्णा गृहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु मुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

(इति नपुंसकलिङ्गाः)

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विह ।
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि ध्वन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥
 कचिद्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।
 सृपाटी त्रिसरा सूमिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥
 कलम्बी शल्लकी मञ्जी वरटा जाटलिः कुटी ।
 शाटी रेणुहरेणूरुजल्लकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रयिरञ्जलिः ।
 कूपस्य च त्रिका ब्रीडा प्रेङ्गोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

(इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः)

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृङ्गीबलिङ्गकम् ।
 तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥

तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २६ ॥
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः ।
 विशेषकञ्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽब्जजे ॥ ३० ॥
 द्धवेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥
 (इति नृषण्डः)

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।
 शरव्यार्चिचर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका ॥ ३२ ॥
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।
 मये मधूलकं चेति क्वाप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥
 अनन्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।
 साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च वृद्धयन्तोः ॥ ३५ ॥
 द्विगुरन्तन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्वयपि ॥ ३६ ॥
 (इति स्त्रीषण्डः)

त्रिलिङ्गां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।
 (इति त्रिलिङ्गाः)

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥
 भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।
 अतन्नीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाश्रीयते पुनः ॥ ४१ ॥

ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।
 मचर्चिका मतल्लिका प्रकण्डमुद्धतल्लजौ ॥ ४२ ॥
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।
 योनिसम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।
 आचार्यत्विगुपाध्यायशिष्या याव्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥
 भट्टारको भट्टारको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु ।
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिदिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाह्वयाः ।
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥
 (इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः)

कृत्तद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडबौ नरि ।
 तथैवोक्षवशावहरात्राहाश्च टजन्तकाः ॥ ५१ ॥
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धान्ना पञ्चखार्यना ।
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुस्त्रिषु ॥ ५२ ॥
 प्रादिप्राप्तलमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपञ्चवये स्त्रियः ।
 कृत्यक्लीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥
 परवद् वानुवादेषु तिङ्गव्ययमलिङ्गकम् ।
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रसाः ॥ ५५ ॥

षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥
 यवश्च ब्रीहयो ब्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।
 सङ्ख्यार्थस्याबहुब्रीह्येयथाऽनेका बधूरिति ॥ ५८ ॥
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।
 (इति सामान्यन्यायाः)

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ६० ॥
 इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविद्येन दिनमणिसमतेजसा
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥
 अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्घपूजिताङ्घ्रिः
 प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।
 व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्
 सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥
 एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-
 भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।
 धत्तां विशाले हृदये मुरारि-
 स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥
 एवं सूक्ष्मैर्न्यायनिर्णीतशब्दैः
 सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।
 संवित्तीनां भूषणं सत्कवीनां
 प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥
 [नानाविद्यावेद्यवाप्रज्ञमाला
 मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।
 रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं
 प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥]
 (इति वैजयन्ती समाप्ता)

परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्गाः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

भिदुरम्	११२१३	भिदिरम्	अमरकोषः (व्याख्यासुधा) १११४७
कृकरः, ककरः	२१३३६	कृकरः, ककरः	" २१५९
महलः	२१४१०	मर्दलः	" (व्याख्यासुधा) ११७८
रुशती	२१४१८	उषती	" " ११७८
फणिर्जकः	३३१२०	फणिज्जकः	" २१४७९
पिण्या	३३१४०	पण्या	" २१४१५०
बिम्बोष्ठी	३३१४७	बिम्बिका	" २१४१३९
वाध्राणसः	३१४८	वाध्राणसः	त्रिकाण्डशेषः २१५३
		वाधीनसः	" २१५३
नैचिकी	३१४४६	नैचिकम्	" २१५२२
स्थूरी	३१४५६	स्थूरी	अमरकोषः २१८४६
कुक्कुरः	३१४६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः ४३४५
		कुक्कुरः	" ४३४५
कदञ्जिका	३१६३१	कलिन्दिका	" २१७२
		कडिन्दिका	" (मणिप्रभा) २१७२
		कलन्दिका	" " २१७२
वैष्णुतम्	३१६९५	वैष्णुतम्	" ३१५०१
		वैष्णुभम्	त्रिकाण्डशेषः २१७७
वृषी	३१६१४९	वृषी	अमरकोषः २१७४६
		वृषी	" (व्याख्यासुधा) २१७४६
क्रियदेहिका	३१६१६६	क्रियदेहिका	त्रिकाण्डशेषः (व्याख्या) ११७४
चूषा	३१७८४	दूष्या	अमरकोषः २१८४२
जागरः	३१७१५३	जागरः	अभिधानचिन्तामणिः ३१३०
		जागरः	अभिधानरत्नमाला २१३०४
भिण्डिपालः	३१७१६६	भिण्डिपालः	अमरकोषः ३१८९१
		"	अभिधानचिन्तामणिः ३१४४९

(२२७)

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्गाः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

समिकम्	३१७२०३	समीकम्	अमरकोषः २१८१०४
खले पाली	३१८३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः ३१५५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३१८३८	मकुष्ठक-मयुष्टकौ	" ४२४०
		अमरकोषः	२१९१७
विटङ्गः	३१८१७७	विटङ्गम्	" २१२१५
यष्टिमधुका	३१८१०३	यष्टीमधुकम्	" २१४१०९
		मधुयष्टी	" (व्याख्यासुधा) २१४१०९
		यष्टी	"
मणिमन् शितशिवम्	३१८१२०	शीतशिवं माणिमन्धम्	" २१९४२
		सितशिवम्	" (व्याख्यासुधा) २१९४२
		माणिबन्धम्	" (चरित्रस्वामी) २१९४२
मूका	३१९१७	मूषा	" २१९०३३
कुठारः	३१९३२	कुठरः, कुटरः	" २१९७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः ४८९
कल्लत्वम्	३१९८५	कल्लत्वम्	" २१२२०
निकायं	४३११८	निकायः	अमरकोषः २१२१५
		निकायः	" २१२१५
		निकायः	अभिधानचिन्तामणिः ४५६
कुण्डिनी	४३१२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः २१९६
मण्डपः	४३१२८	मण्डपः	अमरकोषः २१२१९
		"	अभिधानचिन्तामणिः ४६९
भिरिसटा	४३१७७	भिरिसटा	" ३१६०
		"	अमरकोषः २१९४९
मकुटः	४३१३५	मुकुटः	" २१६२०२
		मुकुटः	" (व्याख्यासुधा) २१६२०२
		"	अभिधानचिन्तामणिः ३३१४
		मुकुटः	" (स्वोपज्ञवृत्तिः) ३३१४
पिचिण्डिका	४३१५८	पिचिण्डिका	" २१२७९

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाद्यङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

प्रसृतः	४।४।७७	प्रसृतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	"	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	"	२।६।६५
		गोदः	" (मणिप्रभा)	२।६।६५
परीतदान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	"	२।६।६६
वातकः	४।४।१४५	वातकी (-किन्)	"	२।६।५९
श्लेष्मसूः	४।४।१४६	श्लेष्मणः	"	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवतम्	"	२।६।२२
निर्वार्यः	५।४।७३	निर्वार्यः	" (व्याख्यासुधा)	३।१।१३

वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क (१. पुलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा () इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं]

अ]

[अगच्छ

शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः
अ		अकुत्स १.	३।१।५५	अक्षपात १.	३।१।६१
अ ४.	८।७।१०	अकुप्य ३.	३।८।७४	अक्षफल १.	३।३।७९
अंश १.	४।४।५५	अकुप्यसहाय १.	५।१।५४	अक्षर ३.	३।६।१६२
,, १.	५।२।६	अकूपार १.	४।२।१२	,, १ ब.	७।५।३
अंशु १.	२।१।१५	,, १.	८।१।१५	अक्षरचुम्बु १.	३।१।२३
,, १.	२।१।१६	अकृत १.	३।६।९७	अक्षरजीवन १.	३।१।२३
,, १.	२।१।२६	अक्ष १.	३।७।३३	अक्षरपातक १.	२।१।५२
,, १.	६।१।६	,, १.	३।८।१५	अक्षवती २.	३।१।५९
,, १.	८।१।२५	,, ३.	३।८।१२५	अक्षि ३.	४।४।९४
अंशुक ३.	४।३।११६	,, १.	३।९।६०	अक्षिगत १.२.३.	५।४।६९
,, ३.	७।३।१	,, ३.	५।१।४९	अक्षित ३.	५।१।३०
अंशुमत् १.	२।१।१५	,, १. ३.	६।५।२	अक्षिसंस्कार १.	४।३।१५७
अंस १. ३.	४।४।७१	अक्षकील १.	३।७।३३	अक्षीव ३.	३।८।१२०
अंसल १. २. ३.	५।४।६	अक्षज ३.	३।९।७३	अक्षोड १.	३।३।४६
अंससन्धि १.	४।४।६९	अक्षजीविन् १.	३।९।५९	अक्षोहिणी २.	३।७।५८
अंसान्त १.	४।४।७०	अक्षत १. २. ३.	७।५।१४	अखण्ड १. २. ३.	५।४।८६
अंहति २.	३।६।११९	अक्षताडन ३.	३।९।३७	अखात ३.	४।२।५
अंहन ३.	५।२।१३	अक्षति २.	३।६।९०	अखिल १. २. ३.	५।४।८५
अंहस् ३.	३।६।१६८	अक्षत्र ३.	४।४।८५	,, १. २. ३.	७।४।१
अकषाय १.	५।३।३९	अक्षदर्शक १.	३।८।१४	अग १.	३।२।१
अकार्यसेवन ३.	३।६।११७	अक्षधूर्त १.	३।९।५८	,, १.	८।१।५८
अकिञ्चन १.२.३.	५।४।५९	अक्षधूर्तिल १.	३।४।५२	अगच्छ १.	३।३।५

[अगद]

अगद १.	४११४१
अगदङ्कार १.२.३.	४११४३
अगम १.	८११५८
अगरी २.	३१३८६
अगर १.	३८११०६
अगस्ति १.	३१३१५६
,, १.	३१३१५१
अगस्त्य १.	३१३१५६
,, १.	३१३१५१
अगाध १.	४११२
,, १. २. ३.	४१२१९
अगार ३.	४३११७
अगृहीतदिश १. २. ३.	३१७२१९
अग्रायी २.	१२११९
अग्नि १.	१२११५
,, १.	८११२
अग्निक १.	३१३२२१
अग्निकारिका २.	३१३१४
अग्निकार्य ३.	३१३१४
अग्निकौच ३.	४३१११९
अग्नित्त १.	३१३१७५
अग्निका २.	३१३१३
अग्निपूर्णिमा २.	२११७४
अग्निबीज ३.	३१२२०
अग्निमन्थ १.	३१३८६
,, १.	३१८८४
अग्निमुखी २.	३१३१५
अग्निविश्व २.	१२१३२
अग्निशिख ३.	३१८११७
अग्निष्टोम १.	३१३८७
अग्निष्ट १. २. ३.	३१३१०४
अग्निसख १.	१२१४९
अग्निसङ्ग्रह १.	३१३१६
अग्निसञ्ज्ञक १.	३१८८२
अग्निहोत्र ३.	३१३१०
अग्निहोत्रहवणी २.	३१३१००
अग्निहोत्री २.	३१३१५
अग्निमन्थन ३.	३१३१४
अग्न्याधान ३.	३१३१६९

वैजयन्तीकोषः

अग्न्याहित १.	३१३१७३
अग्न्युत्पात १.	१२१३३
अग्र १.	३१३१९८
,, १. २. ३.	५१३६३
,, ३.	६३११
,, १.	८११६०
अग्रज १.	४११३१
,, १. २. ३.	५१३४
अग्रजन्मन् १.	३१३१
अग्रणी १. २. ३.	५१३४
अग्रतः (-सू) ४.	८१८११
अग्रतःसर १. २. ३.	३१७१४५
अग्रदिधिषु १.	३१३१४
अग्रद्रवसंहति २.	३१८१४७
अग्रमांस ३.	४१३१४
अग्रयान ३.	३१७२०३
अग्रसन्धानी २.	१२१३६
अग्रस्थ १. २. ३.	५१३७७
अग्राम्य १. २. ३.	५१३२०
अग्रिम १. २. ३.	५१३७७
अग्रिय १. २. ३.	५१३४
,, १. २. ३.	५१३६३
अग्रीय १. २. ३.	५१३६३
अग्नेदिधिषु १.	३१३१४
अग्नेदिधिषू १.	३१३१४
,, २.	३१३१५
अग्नेसर १. २. ३.	३१७१४५
अग्रव १. २. ३.	५१३७७
अघ ३.	३१३१६८
,, ३.	६३१२
अघन १. २. ३.	५१३१२५
अघायु १. २. ३.	३१३११
अङ्क १.	२११२९
,, १.	३१९१००
,, १.	४१३६०
,, १.	६११६
अङ्कण १.	४३३३६
अङ्कति १.	१२१४८
अङ्कपालि २.	८१२१२
अङ्कपाली २.	४३११७०
अङ्कलि २.	४३११५४

[अङ्गुल]

अङ्गुट १.	४३१४८
अङ्कुर १. ३.	३३११०
अङ्कुश १. ३.	३१७१८४
अङ्कुर १. ३.	३३११०
अङ्गोद १.	३३३४१
अङ्गोल १.	३३३४१
अङ्गुथ १.	३१९१२९
अङ्ग १ व.	३१३३१
,, ३.	३१३२०८
,, ३.	४१३५२
,, ३.	४१३५५
,, १. २. ३.	६१३३
,, ४.	८१८२१
अङ्गचेष्टा २.	३१९१८
अङ्गज १.	४१३३९
,, १.	५१३३८
,, १. ३.	७१३१०
अङ्गजा २.	४१३३९
अङ्गद ३.	४३३१४३
अङ्गदीप ३.	३१३१३
,, ३.	३१३१४
,, ३.	३१३१५
अङ्गना २.	२११९
,, २.	४१३५
अङ्गनाप्रिय १.	३३३२५
अङ्गमर्दिन् १.	३१९१५
अङ्गलोड्यक १.	४२१४६
अङ्गविच्छेप १.	३१९१७
अङ्गसंस्कार १.	४३३११२
अङ्गहार १.	३१९१७
अङ्गार १. ३.	१२३३२
,, १.	२१३३१
,, १.	५३३८
अङ्गारधानी २.	४३३५५
अङ्गारशकटी २.	४३३५५
अङ्गारशकट १. २. ३.	३१३३२
अङ्गिन् १.	४३३१
अङ्गीकार १.	५२३३७
अङ्गु १.	२३३१
अङ्गुल १. ३.	३१३५२

[अङ्गुल]

अङ्गुल १.	३३३२७
,, १.	३१३१५९
,, १.	४१३७९
अङ्गुलाल १.	३८१११२
अङ्गुलि २.	४१३७४
अङ्गुलित्र ३.	३१७१५६
अङ्गुलिमुद्रा २.	४३३१४५
अङ्गुलीयक ३.	४३३१४४
अङ्गुष्ठ १.	४१३७४
अङ्गुष्ठकान्तर १.	४१३५७
अङ्गुष्ठि १.	४१३५६
अङ्गुष्ठिनामन् १.	३३३१२
अङ्गुष्ठिप १.	३३३१४
अचल १.	३२३१
अचला २.	३१३१४
अचिरव्यूढा २.	४१३७
अच्छुभञ्ज १.	३१३७
अच्युत १.	१११११
अज १.	३१३६२
,, १. २. ३.	६१३४
अजगर १.	४१३१७
,, १.	४१३१९
अजगाव ३.	१११५०
अजगाव ३.	१११५०
अजन्य ३.	३१३१९०
अजप १. २. ३.	३१३११
अजमोदा २.	३८११०२
,, २.	८२३१
अजय्य ३.	३१३१८६
अजवीथी २.	२१३१४६
अजशृङ्गी २.	३३३१४१
अजस्र १. २. ३.	५१३१३०
अजहा २.	३३३१२९
अजा २.	३१३६३
आजाजी २.	३८१८३
अजाजीव १.	३१३२९
अजित १.	११११२
अजितनेमि १.	३१३१९
अजिन ३.	३१३२१
अजिनपत्रा २.	२३३१४४
अजिनयोनि १.	३१३२५

शब्दानुक्रमिका

अजिर ३.	४१३१३६
,, १. २. ३.	५१३१२५
,, १. २. ३.	७१३१४
अजीगव ३.	१११५०
अजुका २.	३१९१०४
अज्ज १. २. ३.	५१३२१
अज्जति १.	१२३१८
अज्जन ३.	३१३३९
अज्जल १.	४३३३३१
अज्जित १. २. ३.	५१३१३३
अज्जन १.	२१३१८
,, १.	३१३१०७
,, ३.	४३३१५७
अज्जनकेशी २.	३८११०१
अज्जनवज्जिका २.	३३३१३५
अज्जनावती २.	२१३१९
अज्जनिका २.	४१३२९
अज्जलि १.	४१३७८
,, १.	५१३५३
,, १.	५१३६३
,, १.	८१३२७
अज्जलिकारिका २.	३३३१४८
,, २.	३१३१३
अज्जसा ४.	८१३३१
अज्जि १.	३३३८२
अटनी २.	३१७१७७
अटवी २.	३१३११
,, २.	८१३११
अटाव्या २.	५२३११
अट्ट १.	४३३३३
,, १.	६१३१५
अट्टहास १.	३१९८४
अट्टालिका २.	४३३३३
अट्टन ३.	३१७२००
अणक १. २. ३.	५१३७५
अणव्य १. २. ३.	३८१२०
अणि १.	२१३७९
,, १. २.	३१७३३१
,, १. २.	४३३५२
,, १. २.	६१३५५
अणिकूर्च १.	२१३८०

[अतिमुक्त]

अणु ३.	३८१११९
,, १. २. ३.	५१३१३६
अणुराजि २.	३१७१६३
अण्ड ३.	२३३५०
,, १.	३१७१६२
,, १. ३.	४१३६३
,, ३.	६३३२
अण्डज १.	४१३४२
,, १. २. ३.	४३३२
,, १.	७१३११
अण्डजा २.	७१३११
अण्डप्रहरण १.	४१३४७
अण्डमूलक ३.	४३३६०
अण्डवर्धन ३.	४३३३३१
अण्डिक १.	४३३३३४
अण्डिका २.	५१३४८
अण्डीर १.	७१३१५
अण्डुक १.	२३३३३४
,, १.	४३३४७
,, १.	४३३६३
अतः (-सू) ४.	८१७१६
अतलस्पर्श १. २. ३.	४२३१९
अतसी २.	३८१४५
अति ४.	८१७१५
,, ४.	८१८४४
अतिकृच्छ्रक ३.	३१३१३९
अतिक्रम १.	३१३११४
,, १.	५२३१६
अतिचरा २.	३८१८९
अतिचाटुवाच् २.	२१३२५
अतिच्छुत्त्र १.	३३३२३४
अतिजव १. २. ३.	३१७१५०
अतिथि १.	३१३६८
अतिथ्यर्थ १. २. ३.	३१३६७
अतिपथिन् १.	३१३४९
अतिपात १.	३१३११४
अतिबला २.	३३३१२८
अतिमर्याद १. २. ३.	५१३१३१
अतिमात्र १. २. ३.	५१३१३१
अतिमानक १. २. ३.	५१३१३१
अतिमुक्त १.	३३३१८८

अतिमुक्तक]

अतिमुक्तक १.	३१३४६
अतिमृगा १.	३१३१७२
अतियव १.	३१८५२
अतिरिक्त १.२.३.	५१३१३७
अतिविषा २.	३१८९०
अतिवेल १.२.३.	५१३१३१
अतिशय १.	५१२३
अतिशयित १.२.३.	५१३१३७
अतिसन्धान ३.	५१२३५
अतिसर्जन ३.	५१२१९
अतिसारकिन् १.२.३.	४१३१४६
अतिस्थिर १.२.३.	५१३१७९
अतिहस्तक १.	३१७७०
अतिहास १.	३१५८५
अतिहिंसन ३.	३१७२८
अतीन्द्रिय १.२.३.	५१३१३३
अतीव ४.	८८८४
अतीसार १.	४१३१२९
अत्यन्त १.२.३.	५१३१३१
अत्यन्तीन १.२.३.	३१७१४९
अत्यगला २.	३१३१३४
अत्यय १.	७१११
अत्यर्थ १.२.३.	५१३१३१
अत्यर्थस्वादु ३.	३१८१३६
अत्याकार १.	३१६१७१
अत्याधान ३.	५१२१६
अत्याहित ३.	८३११
अत्यूह १.	३१७८०
अत्रिनेत्रज १.	२११२५
अथ ४.	८१७१४
अथवाणि ३.	८१११३
अथो ४.	८१७१४
अदन ३.	४१३१०२
अदभ्र १.२.३.	५१३८५
अदय १.२.३.	५१३२४
अदसू १.२.३.	६१४१
अदावृ १.२.३.	५१३५९
अदिति २.	३१६१९१
” २.	७१२१
अदितिनन्दन १.	१११३

वैजयन्तीकोषः

अदृष्ट ३.	३१७१४
अदृष्टि २.	३१९१०
अद्धा ४.	८१७१२
अद्भुत १.	११२१७
” १.	३१७७५
” १.	३१७७७
” १.२.३.	३१७७८
अद्भर १.२.३.	५१३५०
अद्य ४.	८८८७
अद्यश्चीना २.	४१३१७
अद्रि १.	२११११
” १.	३१२१२
” १.	६१११४
अद्रिज ३.	३१२१६
अद्रिजा २.	१११५८
अद्रिधत् १.	१११२५
अद्भुत १.२.३.	५१३५२
अद्भ्यवादिन् १.	१११३४
अधः (—स्) ४.	८८८१९
अधःपुष्पी २.	३१३१५७
अधम १.२.३.	५१३७५
” १.२.३.	७१३११
अधमर्ण १.२.३.	३१८१९
अधर १.	४१३८७
” १.२.३.	५१३४७
” १.२.३.	७१३१६
अधरा २.	२१११६
अधरेद्युः (—स्) ४.	८८८८
अधरोष्ठ १.	४१३८७
अधर्म १.	३१६१६८
अधस्तात् ४.	८८८१९
अधि ४.	८१७१३
अधिक १.२.३.	५१३८५
” १.२.३.	५१३१३१
” १.२.३.	५१३१३७
अधिकधिक १.२.३.	५१३५६
अधिका २.	५११४०
अधिकाङ्ग ३.	३१७१५६
अधिकार १.	२१३११
अधिकृत १.२.३.	३१७१९
अधिष्ठित १.२.३.	८१३१२

[अनमिक

अधिलेप १.	२१३३२
अधिल्यका २.	३१३१९
अधिप १.२.३.	५१३५८
अधिपति १.२.३.	५१३५८
” १.२.३.	८१५१२
अधिमू १.२.३.	५१३५८
अधिरोहिणी २.	४१३५१
अधिवास १.	८१११६
अधिवासन २.३.	४१३१५६
अधिविज्ञा २.	४१३१३
अधिश्रयणी २.	४१३१४
अधिष्ठातृत्व ३.	१११४८
अधीतवेदक १.	३१६१८
अधीर १.२.३.	५१३१८
अधीश १.२.३.	५१३५८
अधीश्वर १.	३१७१२
अधुना ४.	८८८५
अधीऽशुक ३.	४१३१२१
अधीऽसृज १.	११११३
अधोनापित १.	३१५११
अधोभुवन ३.	४११११
अधोमुख १.२.३.	५१३१०
अध्यक्ष १.२.३.	३१७१९
” १.२.३.	५१३१३३
” १.२.३.	७१३११
अध्यण्डा २.	३१३१२९
” २.	३१३१७७
अध्ययन ३.	३१६१६३
अध्यवसाय १.	३१६१६७
अध्यस्त १.२.३.	५१३१०४
अध्यापन ३.	३१६१६३
अध्याय १.	३१३१३२
अध्युष १.	५११५३
अध्यूढा २.	४१३१३
अध्येषणा २.	३१६१२०
अध्वन् १.	३१३१४९
अध्वर १.	३१६१८२
अध्वर्यु १.	३१६१७९
अनंशुमत्फला २.	३१३१७३
अनक्षर १.२.३.	२१३१६
अनमिक १.	३१६१७३

अनङ्ग]

अनङ्ग १.	१११२७
अनङ्ग १.	३१३५२
अनङ्गही २.	३१३४२
अनङ्गवाही २.	३१३४२
अनन्त १.	४११३
” १.२.३.	७१५१४
अनन्तशायिन् १.	११११३
अनन्ता २.	२११५
” २.	३१३१२५
” २.	७१५१४
अनन्यज १.	१११२८
अनन्यवृत्ति १.२.३.	५१३१२८
अनपराध्य १.२.३.	५१३१६३
अनम्बु १.	२१३३२
अनर्गल १.२.३.	५१३१३२
अनर्थक १.२.३.	२१३१८
अनल १.	११२१५
” १.	३१८८१
अनलज्वाला २.	३१३१९७
अनलोपल १.	३१२३७
अनवधानता २.	३१६१७८
अनवरत १.२.३.	५१३१३०
अनवरकर १.२.३.	५१३१६६
अनसू ३.	३१७१२५
अनादर १.	३१६१७१
अनादृत १.२.३.	५१३१५
अनामय ३.	४१३१४२
अनामिका २.	४१३१७४
अनारत १.२.३.	५१३१३०
अनालम्बी २.	३१९११८
अनावृष्टि २.	२१२१८
अनाशक ३.	३१६१४४
अनाशकिन् १.	३१६१६०
अनि १.२.	३१७१३१
अनिच्छु १.	३१३१२६
अनिमिष १.	८१११३
अनिमेष १.	८१११३
अनिरुद्ध १.	१११२९
अनिरुद्ध १.२.३.	२१३१७
अनिर्वाप १.	२१३१३३

शब्दानुक्रमिका

अनिल १.	११२१७
” १.	३१७१६१
अनिलाशन १.	४११६
अनिश ३.	५१३१३०
अनिष्ट १.२.३.	५१३१६९
अनी २.	४१३१७
अनीक १.३.	७१५१५
अनीकवत् १.	११२१५
अनीकस्थ १.	८१११४
अनीकिनी २.	३१७१५
” २.	३१७१५८
अनु ४.	८१७१६
अनुक १.२.३.	५१३१३४
अनुकण्ठी २.	४१३१४१
अनुकम्पा २.	३१६१९२
अनुकर्ष १.	३१७१३३
अनुकर्षण ३.	३१९१५३
अनुकल्पक १.	३१६११३
अनुकामीन १.	३१७१५०
अनुकार १.	५१२१७
अनुकूल १.२.३.	५१३१२७
अनुक्रम १.	३१६११३
अनुक्रोश १.	३१६१९२
अनुग १.	३१७१६
अनुचर १.	३१७१६
अनुज १.	४१३१३
” १.२.३.	५१३१४
अनुजीविन् १.	३१७१७
अनुताप १.	३१६१८५
अनुत्तर १.२.३.	४१३१२५
अनुदात्त १.२.३.	३१६१३७
अनुद्वीप १.	३१११३
अनुनय १.	५१२१८
अनुनासिक १.२.३.	३१६१३७
अनुपद ४.	५१३१२८
अनुपदिन् १.२.३.	७१३१२७
अनुपदीना २.	४१३१६२
अनुपमा २.	२१११९
अनुपात्यय १.	३१६११४
अनुचान १.	३१६१८२
अनुचीन १.२.३.	५१३१२७

[अन्तर्धि

अनूप १.२.३.	३१११४५
अनुराध १ ब.	२१११४४
अनुरसारथि १.	२१११११
अनुङ्ग १.	४१३१४
अनुजु १.	११३१४
” १.२.३.	५१३१२२
अनृत १.२.३.	२१३१७
” ३.	३१८१३
” ३.	७१५१६
अनेक १.२.३.	८१९१५८
” १.२.३ ए.	८१९१५८
अनेकप १.	३१७१६०
अनेड १.२.३.	५१३१२१
अनेडमूक १.२.३.	५१३१३३
” १.२.३.	५१३१४४
अनेहस् १.	२११५२
अनोकह १.	३१३१५
अन्त १.	३१६१७६
” १.२.३.	५१३१२९
” १.	५१३१३१
” १.३.	६१५११
अन्तःकरण ३.	२१६१७३
अन्तःपुर ३.	४१३१३६
अन्तक १.	११२१३४
अन्तर ३.	२११७
” ३.	२११९३
” १.२.३.	३१८११०
” १.	७१५११
अन्तरगाहन ३.	५१२१४
अन्तरद्वीप १.	३१११२
अन्तरा ४.	८१८१८
अन्तराय १.	५१२१४
अन्तराल ३.	२११७
अन्तरिक्ष ३.	२११११
अन्तरिक्षासन ३.	३१६१२९
अन्तरीप ३.	४१३१३३
अन्तरीय ३.	४१३१२१
अन्तरेण ४.	८१८१४
” ४.	८१८१८
अन्तर्गङ्ग ३.	५१२१६
अन्तर्धि १.	२१११६३

अन्तर्मनस्]

अन्तर्मनस् १.२.३. पा१३४
अन्तर्यामि १. ३१६१२
अन्तर्वक्षिक १. ३१७२२
अन्तर्वह्नी २. ४१४१६
अन्तर्वह्नि १.२.३. पा१३१
अन्तश्चय्या २. ८१२२२
अन्तस्था २. ३१६३६
अन्तावसायिन् १. ३१५४९
" १. ३१५८७
" १. ३१५१०७
" १. ३१५१०७
" १. ३१५१२६
अन्तिका २. ४१३५४
अन्तिकाश्रय १. ४१३१२
अन्तिकेशय १. ४१३१६८
अन्तिम १. २. ३. पा१३७७
" १. २. ३. पा१३४०
अन्तेवासिन् १. ८१११३
अन्त्य १. २. ३. पा१३७७
" १. २. ३. ६१४१
अन्त्यजाति १. ३१५२
" २. ३१५१२१
अन्त्यजालय १. ३१५३२
अन्त्यवर्ण १. ३१५१
अन्दुक १. ३१७८३
अन्दू २. ६१२११
अन्ध १. २. ३. पा११३
" १. ६१५६
अन्धक १. ३१६२०१
(इन्धक)
अन्धकसूदन १. १११४३
अन्धकार १. ३. २११६२
अन्धकी २. २११४
अन्धतमस ३. २११६२
अन्धता २. ८१५६
अन्धमेहल १. पा१५६
अन्धस् ३. ४१३७५
अन्धु १. ४१२७
अन्ध १ ब. २१३३२
" १. ३१५३५
" १. ३१५२२

वैजयन्तीकोषः

अन्ध १. ३१५१३
" १. ३१५११७
अन्ध ३. ४१३७५
" १. २. ३. पा११०७
" ३. ८१६८
अन्धजिका २. ३१३१२७
अन्नाद १. ११२२७
अन्त्य १. २. ३. ६१४१२
अन्त्यतरेयः (-स्) ४. ८१८८
अन्त्यथा ४. ८१८२०
अन्त्यथाकृति २. पा२२४
अन्त्यथाभाव १. पा२२४
अन्त्यदा ४. ८१८७
अन्त्यनिहति २. २१४४०
अन्त्यपीडन ३. पा२२३
अन्त्यपुष् १. २१३१६
अन्त्यभृत १. २१३२६
अन्त्यलोहक ३. ३१२२८
अन्त्यवाप १. २१३१६
अन्त्यशाखास्थ १. २. ३. ३१६१३
अन्यानुक्त २. ३१६४८
अन्येयः (-स्) ४. ८१७४
अन्योन्य १.२.३. पा११२३
अन्वत्त १. २. ३. पा११२८
अन्वच् १.२.३. पा११२८
अन्वय १. ४१४४९
अन्ववाय १. ४१४४९
अन्वाहार्य ३. ८१३२
अन्वाहार्यवचन १. ११२२३
अन्विष्ट १. २. ३. पा११९८
अन्वेषणा २. ३१६१२१
अन्वेषित १.२.३. पा११९८
अन्वेष्य १. २. ३. पा११२७
अप् २ ब. ४१३३
" २. ८१७१३
अप ४. ८१७२५
अपकार १. पा२१२२
" १. पा२१२३
अपकृष्ट १. २. ३. पा१३७१

[अपरान्त

अपकृष्ट १. २. ३. पा१३७५
अपक्रम १. ३१७२१०
अपगम १. पा२१२७
अपगतभक्त १.२.३. पा१३७७
अपघन १. ४१४५५
अपचायित १. २. ३. पा११०५
अपचित १.२.३. पा११०५
अपचित २. ३१७४४
" २. ८१२११
अपक्षयज्ञ १. ३१६१७७
अपटी २. ४१३१२४
अपटीका २. ३१२८६
अपटु १. २. ३. ४१३१४४
अपतर्पण ३. ४१३१३९
अपत्य ३. ४१४४१
अपत्रपा २. ३१६१९४
अपत्रपिण्यु १.२.३. पा१३४०
अपथ ३. ३११५०
अपथिन् १. ३११५०
अपदंश १. ३१२५२
अपदंशक १. ४१३८६
अपदरोहिणी २. ३१३८४
अपदान ३. ३१७२०९
" ३. ८१३११
अपदालक १. ४११४२
अपदिश ४. २१३३
अपदेश १. ८११७
अपध्वंसज १. ३१५१२०
अपध्वस्त १.२.३. पा१३७१
अपभरणी २. २११४१
अपभ्रंश १. ८११७
अपरगन्धिक १. ३११८
अपरति २. पा२३६
अपररात्रक १. २११६६
अपराजित १. ८११५०
अपराजिता २. २११५
" २. ३१३१३३
" ३. ३१६२०८
अपराद्धशर १. २. ३. ३१७२१८
अपराध १. ३१७४७
अपराण्ठ १ ब. ३१३३५

अपराह]

अपराह १. २११६५
अपरुजा २. १११५९
अपरेयः (-स्) ४. ८१८८
अपर्णा २. १११५९
अपलाप १. २१३३०
अपलासिका २. ३१६१८१
अपवंश १. ३१७४७
अपवन ३. ३१३२
अपवरक १. ४१३५१
अपवर्ग १. ८११६
अववर्जन ३. ३१६११९
अपवाद १. २१३३३
" १. ३१७४७
" १. ८१११४
अपवारण ३. २११६३
अपव्यय १. २१३३०
अपशब्द १. ३१५१२०
" १. २. ३. पा१३२२
अपशाला २. ४१३३८
अपष्ट ३. पा२८
अपष्टु ३. पा२८
अपसर १. पा२३२
अपसर्प १. ३१७२९
अपसव्य १. ११२२८
अपस्कर १. ३१७१३५
अपस्नान ३. ३१६६४
अपहस्तित १.२.३. पा१३२५
अपहार १. पा२११९
" १. ८११३
अपहास १. ३१२८५
अपहित १.२.३. पा११०४
अपह्व १. २१३३०
" १. ८१११४
अपाङ्गर्भ १. ८१११५
अपाच् ४. पा१२९१
अपाचीन १.२.३. पा१३५१
अपाटव ३. ४१३१३८
अपादान ३. पा२११९
अपान ३. ४१३६०
" १. ७१५१२
अपानिक १. ३१३१२

शब्दानुक्रमिका

अपानपात् १. ११२२३
अपामार्ग १. ३१३११५
अपाम्पति १. ४१२१०
अपाम्पित ३. ११२१९
अपाय १. ३१७२१०
" १. पा२२७
अपार १. ४१२१०
अपार्थक १.२.३. पा१३२९
अपावृत्त १. २. ३. पा१३२७
अपाश्रय १. ४१३१६४
अपि ४. ८१७१४
अपिधान ३. २११६४
अपुञ्ज १. ११२२१
अपुनर्भव १. ३१६२३८
अपूप १. ४१३७२
अपेक्षा २. पा२२९
अपोनपात् १. ११२२३
अपौर १. ३१८३३
अप्पति १. ११२४५
" १. ४१२११
अप्पित्त ३. ११२१९
अप्पुष्प ३. ४१२३७
अप्फल ३. ३१३२२०
अप्य ३. ३१८८०
अप्रकाण्ड १. ३१३७
अप्रच्छन्न ३. ३१६१३६
अप्रहत १. २. ३. ३१८१८
अप्रहृष्टक १. २१३१६
अप्सरस् २. ११३११
अप्सरसापति १. ११२१६
अफला २. ३१३१९
अबद्ध १. २. ३. २१३१८
अबद्धमुख १.२.३. पा१३६
अबल १. ४१३२२
अबला २. ४१३५
अबाल ३. ३१३२२०
अब्ज ३. ४१२३७
" १. ६१५३
अब्जल १. ३१७१६
अब्जारि १. २११२६
अब्द १. २१११०

[अभिनिष्ठान

अब्द १. २२२११
अब्ध १. ४१२३७
अब्धा २. ४१२२३
अब्धि १. ४१२१२
" १. ८१६१३
अब्धिजा २. ११३३६
अब्धिमण्डकी २. ४११५६
अब्धिवस्त्रा २. ३१३३
अब्धिवृत्त ३. ३१३१०९
अभय ३. ३१३२३२
अभया २. ३१३१७८
अभवनि २. ८११८
अभि ४. ८१७१६
अभिक १. २. ३. पा१३३५
अभिक्रम १. ३१७२०२
" १. पा२१५
" १. पा२१६
अभिरुचा २. पा१३२२
" २. ७२२२
अभिरुचयान ३. २१३३२
अभिग्रह १. पा२१८
" १. ८११११
अभिचार १. ३१६११७
अभिज १. २. ३. पा१३६१
अभिजन १.२.३. पा१३१९
" १. ८११११
अभिजात १. २. ३. ८१३११
अभिज्ञ १. २. ३. पा१३१९
अभिज्ञान ३. २१३२९
अभितः (-स्) ४. ८१७३१
अभिताडन ३. पा२१९
अभिताप १. ४१३३५
अभिधा २. २१३३१
अभिधान ३. २१३३१
अभिध्या २. ३१६१७९
अभिनय १. ३१९१८
" १. ३१९१८
अभिनव १. २. ३. पा१३८८
अभिनविश १.२.३. पा२११४
अभिनिष्ठान १. ३१६३७
" १. ८११५०

[अभिनित]

अभिनीत १. २. ३. ८४११
अभिपन्न १. २. ३. ८४१२
अभिप्राय १. ३६१७४
अभिभूत १. २. ३. ५४१६७
अभिमन्त्रण ३. ३६१९३
अभिमर १. ८१११२
अभिमर्द १. ३७१२०५
अभिमान १. ३६११६९
" १. ८१११९
अभियाति १. ३७१४२
अभियुक्त १. २. ३. ३८११०
अभियोक्तृ १. २. ३. ३८११०
अभिरूप १. २. ३. ८४११५
अभिलाष १. ३६११८०
अभिलाषुक १. २. ३. ५४१३५
अभिवादक १. २. ३. ५४१४३
अभिवादन ३. ३६१३९
अभिवान्या २. ३४१५१
अभिदांसन ३. २०१३२
अभिदास्त १. २. ३. ३८१११
अभिदास्ति २. ८१२१२
अभिदाप १. २४१३२
अभिपङ्क १. ८१११०
अभिषव १. ३७१५१
" १. ८११११
अभिषिक्त १. ३१५५
अभिषिक्तक १. ३१५६६
अभिषुत ३. ४३१८२
अभिषेक १. ४३११३३
अभिषेणन ३. ३७१२०१
अभिसन्धान ३. ३७११९४
अभिसम्पात १. ३७१२०५
अभिसार १. ३७११६
अभिसारिका २. ३६१४६
" २. ४४११२
अभिहार १. ५१२१८
" १. ८१११०
अभीक १. २. ३. ५४१३५
" १. २. ३. ७४११
अभीक्षण ३. ७३१२
अभ्यग्र १. २. ३. ५४१८९

वज्रयन्तीकोषः

अभ्यग्र १. २. ३. ५४११४०
अभ्यङ्ग १. ४३१११२
अभ्यन्तर ३. २११७
अभ्यमित १. २. ३. ४४११४४
अभ्यमित्र १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिण १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिय १. २. ३. ३७११४६
अभ्यर्ण १. २. ३. ५४११४०
अभ्यवकर्षण ३. ५१२१७
अभ्यवस्कन्द १. ३८११६
अभ्यवस्कन्दन ३. ३७१२०७
अभ्यवहार १. ४३११०२
अभ्यवहृत १. २. ३. ५४११०८
अभ्यागम १. ३७१२०५
अभ्यागारिक १. २. ३. ५४१५२
अभ्यादान ३. ५१२१५
अभ्याधान ३. ८३१२
अभ्यान्त १. २. ३. ४४११४४
अभ्यारूढ १. २. ३. ८४१५
अभ्याश १. २. ३. ५४११४०
अभ्यास १. ३७११९५
अभ्यासादन ३. ३७१२०७
अभ्युत्थान ३. ५१२१०
अभ्युपगम १. ५१२३७
अभ्युपाय १. ५१२३७
अभ्योष १. ७५१११
अभ्र ३. ६३११
अभ्रक ३. ३१२१५
अभ्रनाग १. ११२१२
अभ्रपिशाच १. २११३७
अभ्रपुष्प १. ३३१३१
अभ्रफुल्लक १. ३११६३
अभ्रभव १. २. ३. ५४११६६
अभ्रमु २. २११९
अभ्रमुप्रिय १. ११२१२
अभ्रावकाशिक १. २. ३. ३६१३०
अभ्रि १. ३६११०२
" २. ३८१२९

[अमृतांशु]

अभ्रिय १. २. ३. ५४१११६
अमत १. ३. ३६१२०२
अमति २. ७२१२
अमत्र ३. ४३१६२
अमन १. ३३१४९
अमनि २. ७२११
अमर १. ७५११३
अमरा २. ३६११२७
" २. ४३११९
" २. ७५११३
अमरावती २. ११२१०
अमरावली २. ११२४३
अमर्त्य १. १७१५
अमर्त्यभवन ३. १११२
अमर्ष १. ३६११८३
अमर्षिन् १. २. ३. ५४१३२
अमलपालिक १. ११२५३
अमा ४. ८७११२
अमात्य १. ३७१३
" १. ३७११९
अमात्यक १. ३७१२०
अमामस्या २. २११७१
अमामसी २. २११७१
अमावसी २. २११७०
अमावस्या २. २११७१
अमावासी २. २११७०
अमावास्या २. २११७१
अमित्र ३. ३७१४०
अमुक्त ३. ३७११९६
अमुत्र ४. ८८११५
अमृणाल ३. ३३१२३१
अमृत ३. ३८१२
" ३. ३८११४६
" १. २. ३. ५४१८८
(अमृत)
" ३. ७५१७
अमृतत्व ३. ३६१२८
अमृतफल १. ३३११६६
अमृतवल्ली २. ३३११३२
अमृता २ ब. २१११८
अमृतांशु १. २११२६

अमृताशन

अमृताशन १. १११४
अमृतोद्भव १. ३३१२०४
अमोघ १. ४११५२
अमोघा २. ३३१९०
" २. ३८१९७
अम्बक ३. ४४१९४
अम्बर ३. २११२
" ३. ४३११६
अम्बरीष १. ३. ४३१५६
" १. ८५१३
अम्बला २. ४३११०७
अम्बलोन ३. ४३११०७
अम्बष्ठ १. ३५१४
" १. ३५१६५
" १. ३५१६६
" १. ३५१७०
अम्बष्टा २. ३३११३१
" २. ३३११६३
" २. ३८१७७
अम्बा २. ३१११०६
" २. ४४१२६
" २. ४४१२७
अम्बिका २. ४४१२७
" २. ७२१२
अम्बु ३. ४१२२
" ३. ८१११५
अम्बुक १. ३३११५
" १. ३३११९४
अम्बुकपि १. ४११५४
अम्बुकफ १. ४११३३
अम्बुकान्तार १. ११२४५
अम्बुकुकुट १. २३१२२
अम्बुज १. २३१३२
" १. ३३१६७
" ३. ४१२३९
" ३. ५३१२८
" १. ८६११३
अम्बुजा २. १११३६
अम्बुवर्धन १. २१२२
अम्बुवर्धन ३. ४१२३३
अम्बुवल्ली २. ३४११६४

शब्दानुक्रमणिका

अम्बुवास १. २११४५
अम्बुवेतस १. ३३१३०
अम्बुसूकर १. ४११५३
अम्बुकृत १. २. ३. २४११८
अम्भस् ३. ४२११
अम्भरा २. ४३१४४
अम्भ १. ५३१२६
अम्भलुण्डी २. ३८११४१
(अम्भलुण्डी)
अम्भलित्तकपाय १. ५३१३५
अम्भलुण्डी २. ३८११४१
अम्भलोणी २. ३३११६३
अम्भवेतस १. ३८११३३
अम्भलान १. ३३११८८
अम्भिका २. ३३१८१
अम्भोट १. ३३१९४
अय १. ३६११८९
" १. ३९१६१
अयन ३. ७३११
अयन्त्रित १. २. ३. ५४१३२२
अयश्शलाका २. ३७११८४
अयस ३. ३२१३
" ३. ८६११६
" ३. ८६११७
अयस्कान्त १. ३२१२८
अयस्कार १. ३९११६
अयाचित ३. ३८१२
अयि ४. ८७११२
अयुगच्छद १. ३३१४६
अयुगम १. २. ३. ५४१२३
अयुत ३. ५४१२८
अयोध्या २. ४३१५
अयोऽनि १. ४३१६५
अयोमणि १. ३२१३७
अयोमल ३. ३२१३६
अयोमुख ३. ३११२०
अयोर्गला २. ४३१४८
अर १. ३७१३५
" १. २. ३. ५४१२४
अरघटक १. ४२१२१

[अरुन्तुद]

अरणि १. २४१२२
" १. ३३१८६
" २. ३६१५०
" १. २. ३६११०८
अरण्य ३. ३३११
अरण्यजलित १. ३८१३९
अरण्यमक्षिका २. २३१४५
अरण्यानी २. ३३१२
अरति १. ८१११०
अरति १. ३११५५
" १. ७१११
अरर ३. ४३१४६
" १. ७५११०
अरविन्द ३. ४२११७
अराति १. ३७१४०
अराल १. ३८११११
" १. २. ३. ५४१२४
अरि १. ३७१४०
अरिचिन्तन ३. ३८११४
अरिज ३. ३२१३२
अरिज ३. ४२११६
अरिन् ३. ३७१३३
अरिम १. ३३१६४
अरिमर्दन १. १२११२
अरिमेदक १. ३३१६४
अरिश्रेणी २. २११७७
अरिष्ट १. २३११७
" १. ३३१३२
" १. ३३१२०४
" ३. ३६११९०
" ३. ४३१२०
" १. ४४१३२९
" १. २. ३. ७५१९
अरिष्टताति १. २. ३. ५४१५५
अरिष्टनेमि १. ११११२
अरुण १. ५३११७
" १. २. ३. ७५१६
अरुणा २. ३८१९०
" २. ७११६
अरुणोपल १. ३२१२०
अरुन्तुद १. २. ३. ५४११२२

[अरुल]

वैजयन्तीकोषः

[अललोहित]

अरुल ३.	७३१२	अर्थ १.	३१८७३
अरुणकर १.	३१३१५	" १.	६११३
अरुसू ३.	३१७२१७	अर्थना २.	३१६१२०
अक १.	२१११०	अर्थवाद १.	२१४३७
" १.	३१२१७	" १.	३१६३३
" १.	५१४४	अर्थशास्त्र ३.	३१६३०
" १.	८१६२	अर्थसञ्चय १.	३१७४४
अर्कवन्धु १.	१११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५१४६०
अर्कस्मिता २.	४१२२५	अर्थ्य १.	२१३१३
अर्कष्ट ३.	३१८११३	" ३.	३१२१६
अगल ३.	३१७५१	" १. २. ३.	६१४१
" १. २. ३.	४१३४७	अर्दना २.	३१६७०
" ३.	४१३५०	अर्दनि १.	८१९१०
" १. २. ३.	४१३५०	अर्दित १. २. ३.	५१४१०२
" १. २. ३.	८१९३८	" १. २. ३.	५१४११२
अगर्वध १.	३१३४८	अध १.	४१४५६
अर्घ १.	३१८७०	अर्घचन्द्र १.	३१७१८२
" १.	६११५	अर्घगुच्छ १.	४१३१४०
अर्घ्य १. २. ३.	६१४१	अर्घजाह्नवी २.	४१२२८
अर्घ्या २.	३१४४१	अर्घतूर १.	३१९१३९
अर्चना २.	३१६३९	अर्धनाकुल ३.	३१६२१८
अर्चा २.	३१६३९	अर्धनाराच १.	३१७१८१
" २.	६२२१	अर्धपद १.	३११५१
अर्चिष्मत् १.	१२२१६	अर्धपञ्चासन ३.	३१६२११
अर्चिस ३.	१२२२९	अर्धमुकुट १.	१११४७
" २. ३.	६१५६	अधमाणव १.	४१३१३९
" २. ३.	७१५३२	अधमानव १.	३१९६५
अर्जक १.	३१३११९	अधमानुष १.	३१९६५
अर्जुन १.	३१३३९	अधमायूरी २.	३१९१३१
" ३.	३१३२३५	अधमास १.	२११७९
" १.	५१३१०	अधमासतम १. २. ३. ५१११९	
" १. २. ३.	७१५५	अधमुष्टिक १.	४१४८०
अर्जुनी २.	४१२२६	अधरात्र १.	८१९१२
" २.	७१५५	अधरात्रक १.	२११६६
" २.	८१२१५	अधरूपक १.	३१८३७
अर्ण १. ३.	२१४२१	अर्धर्च १. ३.	८१९२८
अर्णव १.	४१२१२	अर्धशक्त्य ३.	३१७१८१
अर्णसू ३.	४२२१	अर्धसूची २.	३१६२१५
अर्णिका २.	४१४४	अर्धहस्तक १.	३११५८
अर्ति २.	३१७१७८	अर्धहार १.	४१३१४०
" २.	६२२१	अर्धोत्क ३.	४१३१२२

(१०)

[अलस]

शब्दानुक्रमिका

[अवष्टम्भ]

अलस १.	४१४१३५	अवक्रय १.	३१८७०	अवनाट १. २. ३.	५१४१२
" १. २. ३.	५१४५५	अवक्षेपणी २.	३१७११४	अवनि २.	३११४
" १. २. ३.	७१५५५	अवखात १.	४११३	" २.	३१३४७
अलसान्द्र १.	३१८४६	" १.	४२२७	अवन्ति १ व.	३१३३७
अलस्फुटिन् १.	३१६११२	अवगति २.	३१६१६४	अवन्तिसोम ३.	४१३८२
अलात ३.	१२२३२	अवगाह १.	४१३६१	अवन्ती २.	४१३९
अलावू २.	३१३१६७	अवगीत १. २. ३.	३१६१२	" २.	४१३२७
अलि १.	२१३४२	" १. २. ३.	८१५१	अवन्ध्य १. २. ३.	३१३८
अलि (-न्) १.	४१३३२	अवग्रह १.	८११४	अवपात १.	३१७५२
अलिक ३.	४१४९६	अवग्रह १.	२२२४	अवभ्रत १. २. ३.	५१४१२
अलिङ्ग ३.	३१६१६२	अवघात १.	४१३६६	अवम १. २. ३.	५१४७५
अलिङ्गर ३.	४१३५६	अवचूड १.	३१७१३४	अवमर्द १.	३१७२०७
अलिन् १.	२१३४२	अवच्छेद १.	३१६३३	अवमानना ३.	३१६१७२
" १.	८१६१४	अवज्ञा २.	२१४३०	अवमुण्ड १. २. ३.	३१६६६
अलिन्द १.	४१३४५	" २.	३१६१७२	अवयव १.	४१४५५
अलिप्रिय १.	८११५९	अवज्ञात १. २. ३.	५१४९५	अवर ३.	३१७७८
अलीक १. २. ३.	२१४१७	अवट १.	२३३४	(अपर)	
" ३.	७३३२	" १.	३११५४	अवरक्षणी २.	३१७११२
अलीमक ३.	३११५७	" १.	४११३	अवरज १.	४१३३१
अलोचक ३.	४१३११४	अवटीट १. २. ३.	५१४१२	" १. २. ३.	५१४४
अल्प १.	१२२५३	अवट्ट १. २.	४१४८५	अवराविला २.	२११७६
" १. २. ३.	५१४१३६	" १. २.	८१६१९	अवरीण १. २. ३.	५१४११०
अल्पतनु १. २. ३.	५१४५५	अवटोमनहस्त १.	४१४८१	अवरंट १.	३१५६०
अल्पतुङ्घी २.	३१३१६८	अवतंस १.	८११५९	अवरोध १.	४१३३६
अल्पपच १.	३१३१२०	अवतमस ३.	२११६३	अवरोह १.	३१३१२
अल्पपल्लव ३.	४२२६	अवतरण ३.	८१३१३	" १.	८११५
अल्पपुष्प ३.	३१३७०	अवतार १.	४२२२०	अवराहक २.	३१८३३
अल्पफला २.	३१३१७५	" १.	५१३२३	अवर्ण १. ३.	२१४३२
अल्पमात्र १.	३१३१२१	" १.	८११५	अवर्णवाद १.	२१४३३
अल्पहरिण १.	३१४१३	अवतारण १. २. ३.	३१९१४१	अवलम्भ १.	४१४१७
अवकटा २.	३१९८६	अवतीर्ण १. २. ३.	५१४९५	अवलेप १.	८१११५
अवकर १.	४१३५२	अवतांका २.	३१४४७	अवलोका १.	३१९९०
अवकरालय १.	३१६१११	अवदात १.	५१३१०	अवलोर्ण १.	८१११६
अवका २.	३१६६०	" १. २. ३.	८१४३	अवलोलुक १.	५१४५२
" २.	४२२४७	अवदारण ३.	३१८२८	अवलुगुज १.	३१३१०८
" २.	४२२४९	अवदाह १.	३१३२३२	अवश्यम् ४.	८१८१२
अवकाश १.	२११७	अवद्य १. २. ३.	५१४७५	अवश्याय १.	२२२९
अवकीर्णिन् १. २. ३.	३१६१३३	अवधारणा २.	२१४४०	" १.	८१९१३
अवकील १.	३१८२६	अन्धि १.	४११३	अवष्टम्भ १. २. ३.	८१४४
अवकेशिन् १. २. ३.	३१३८	अवधीरण ३.	३१७१३	अवष्टम्भ १.	३१७२०८
अवक्र १. २. ३.	५१४१२४	अवध्वस्त १. २. ३.	८१४४	" १.	८११४

(११)

[अवसन्धिका]

अवसन्धिका २.	३६११५०
अवसर १.	५२१७
अवसाद १.	३६११९१
अवसादनी २.	३६११९१
अवसित १. २. ३.	८१४३
अवसुधिरा २.	४४८४
अवस्कन्द १.	३७२०३
" १.	३८१७
अवस्कर १.	८११५५
अवस्था २.	५२१२
अवहिस्था २. ३.	३९१८६
अवहेल ३.	३६१७२
अवाक ४.	८८१९
अवाक्श्रुति १. २. ३.	५४१३३
अवाच् १. २. ३.	५४१४४
" ४.	५४१९१
अवाची २.	२११५
अवाचीन १. २. ३.	५४१९१
अवाच्य १. २. ३.	२४१६
अवान्तरदिशा २.	२११३
अवार ३.	४२१३२
अवि १.	३४१६४
" १.	५४१४
" १. २.	६५१४
अविदूष ३.	३८११४७
अविन १.	७११९
अविनीत १. २. ३.	५४१३१
अविनीता २.	४४१३२
अविमरीस ३.	३८११४७
अविरत १. २. ३.	५४१३०
अवलम्बित १. २. ३.	५४१९४
" १. २. ३.	५४१९५
अविला २.	३४१६५
अविशेष १.	३६१२०५
अविष १. २. ३.	७५१२
अविषाद १.	३७१२८
अविसोद ३.	३८११४७
अविस्तर १.	२४१४०
अवीची १.	१२१३७
अवीरा २.	४४१२०
अव्यक्त ३.	३६११६२
" १. २. ३.	७५१३३

[वैजयन्तीकोषः]

अव्यय १.	३६११९१
अव्यय २.	३६११७८
" २.	३८१८९
अव्ययिष १. २.	८१५१
अव्यय १. ३.	१११४८
" ३.	८१५१
अव्यादा २.	३८१५८
अशन ३.	४३१७५
" ३.	४३१७०
अशनाया २.	३६११८२
अशनायित १. २. ३.	५४१३६
अशनि १. २.	२११६
" १. २.	२११६
" १. २.	७५१५५
अशिख १. २. ३.	३६१६
अशित १. २. ३.	५४११०७
अशिरस् १.	३७१२१६
अशिरस्क १.	८१११६
अशिशिषा २.	३६११८२
अशिश्वी २.	४४१२०
अशीतांशु १.	२११११
अशीति २.	५४१२७
अशूर १. २. ३.	३७११४७
अशोक १.	३६११४०
अशोकवनिता २.	१२१४४
अशोका २.	३८१८६
अशोभनस्वर १. २. ३.	५४१४८
अश्मकुट्टक १.	३९१२२
अश्मगर्भ ३.	३२१३८
अश्मज ३.	३२११६
अश्मन् १.	३२१८
" १.	३६११०२
अश्मन्त ३.	४३११०४
अश्मन्तक १.	३६११९४
अश्मन्तिका २. ३.	८१६३२
अश्मरी २.	४४११२८
अश्मरीरिपु १.	३६११४१
अश्ममारक १.	३२१३४
अश्र १.	४३१५२
अश्रान्त १. २. ३.	५४१३०

[अष्टावक्र]

अश्रि २.	४३१५२
अश्रु ३.	३९१८७
अश्रुष्टार्थ १. २. ३.	२४११७
अश्रु १.	१११३०
" १.	३७१९०
" १.	८६११७
अश्रुकन्द १.	३६११२८
अश्रुकर्ण १.	३६१३८
अश्रुखुरी २.	३६११३४
अश्रुगन्धी २.	३६११२८
अश्रुतर १.	३७११०८
अश्रुस्थ १.	३६१२७
अश्रुपण्य १.	३५११२
" १.	३५१७१
अश्रुपोत १.	३७११०७
अश्रुप्रिय १.	३८१५२
अश्रुबद्ध १ द्वि.	८११५१
अश्रुमारक १.	३६११९२
अश्रुमुख १.	१३१३
अश्रुयुज २.	२११४२
अश्रुरिपु १.	३६११९२
अश्रुवाल १.	३६१२२७
अश्रु २.	३७११०७
अश्वारि १.	३६१८
अश्विन् १ द्वि.	१३१२
अश्विनी २.	२११४२
अषाढा १ व.	२११४३
अष्टकर्मपरिभ्रष्ट १.	१११३५
अष्टग्रास १. २. ३.	३६१३३
अष्टपाद १.	३४१३२
अष्टम १. २. ३.	५४१२०
अष्टमक १. २. ३.	५४१५०
अष्टमकालभुज १. २. ३.	३६१२३
अष्टमङ्गल १.	३७१९३
अष्टमान ३.	५४१५३
अष्टमिका २.	५४१५०
अष्टवर्ग १.	३७१९
अष्टाङ्ग १.	३६१२०८
अष्टापद १. ३.	८१५२
अष्टावक्र १.	३६११५७

[अष्टी]

अष्टी २.	३६१११६
" २.	६२११
अष्टीला २.	४४११३
अष्टीवत् १. ३.	४४१५९
असक्त १. २. ३.	५४१३०
असङ्ग्रह १.	३६१२०९
असत् ३.	३६११६२
असती २.	४४१९
असतीसुत १.	४४१४३
असद्व्येत १. २. ३.	३६१११
असन १.	३६१३९
असम्पुष १.	११११५
असम्पुक्त १. २. ३.	८१४४
असहन १.	३७१४१
असार १. २. ३.	५४१७६
असि १.	३७१५८
" १.	३७१५९
" १.	८६११६
असिक्ती २.	३७१३९
असित १.	२११३५
" १.	२११७९
" १.	३९१४९
" १.	५३१११
असितानन १.	३४१४०
असिद १.	३८१३०
असिधावक १.	३९११५
असिधेनुका २.	३७११६३
असिपत्रिका २.	३६१९७
असिपुत्री २.	३७११६३
असिप्लव ३.	४११५५
असु १ व.	३६१२०३
असुर १.	१३१९
" १.	३७१६१
" १.	३८१२४
असुरभि १.	५४१४७
" १.	५४१४८
असुराचार्य १.	२११३४
असुराह्वय ३.	३२१२८
असुराचिका २.	३८१२९
असुर्या २.	३६११८४
असुर्येण ३.	३६११७२

[शब्दानुक्रमणिका]

अस्फुर १.	४४११०४
अस्फुरा २.	४४११०३
अस्फुर ३.	४४११०६
असोढ १.	३७१६९
असोल १.	५३१३६
अस्त १.	३२१६
" १. २. ३.	५४१९७
अस्तम ४.	८८११६
अस्तमयाचल १.	३२१६
अस्तमत् १. २. ३.	५४१५७
अस्तु ४.	८७१३३
अस्त्येय ३.	३६१२०९
अस्त्र ३.	३७१५७
अस्त्रग्राम १.	५४११७
अस्त्रजीवन १. २. ३.	३७१४३
अस्त्रशासन ३.	३६१३०
अस्त्रिन् १. २. ३.	३७१४३
अस्थान ३.	३७१५९
" १. २. ३.	४२११९
अस्थि ३.	४४११०८
" ३.	४४११०८
अस्थिखाद १.	३४१७०
अस्थितेजस् ३.	४४१११०
अस्थिपञ्जर ३.	४४१११४
अस्थिमत् १.	३६१३०
अस्थिर १. २. ३.	५४१६८
अस्थिप्रेमन् १. २. ३.	५४१२६
अस्थिसङ्घात १.	३६१३०
अस्थिसङ्ग्रह १.	४४११३०
अस्थिसम्भव ३.	४४१११०
अस्थिस्नेह १.	४४१११०
अस्पन्दनस्थिति २.	३७१८९
अस्फुटभाषण १. २. ३.	५४१४७
अस्मद् १. २. ३.	८११४९
अस्मिता २.	३६११६९
अस्त्र ३.	४४११०५
" १. ३.	६५१७
अस्तु ३.	३९१८७
अस्वप्न १.	१११३३

[आ]

अह ४.	८७१३२
अहंयु १. २. ३.	५४१२९
अहङ्कार १.	३६११६९
अहङ्कारिन् १. २. ३.	५४१२९
अहत ३.	४३१२०
अहन् ३.	२११५६
अहमहमिका २.	३६११७१
अहमपूर्विका २.	३६११७०
अहर्गण १.	३६१८४
अहर्पति १.	२१११२
अहर्मुख ३.	२११६८
अहस्कर १.	२१११२
अहस्तान १.	१२१२६
अहह ४.	८७१३२
अहार्य १.	३२११
अहि १.	४११५
" १.	६११५
अहिंसा २.	३६१२०९
अहिक १.	४११४३
अहिच्छत्र १ व.	३११२६
" ३.	३६११५३
अहित १.	३७१४०
अहितस्वयनी २.	४११२१
अहिपताक १.	४१११८
अहिपृष्ठ ३.	३७१५३
अहिभय ३.	३७११५
अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
अहिमतिन् १. २. ३.	३६१३३१
अहीन १.	३६१८५
" १.	३६१८५
अहीरिणि २.	४११२०
अहेरु २.	३६११४२
अहो ४.	८८११६
अहोत्र ३.	३६१९६
अहोरात्र ३.	२११५५
अह्नाय ४.	८८११
आ	
आ ४.	८७११
" ४.	८७१२

[आ]

वैजयन्तीको

[आख्य]

आः ४.	८७१२	आख्यान ३.	२१४३८
आकम्पित १.२.३.	५४१९५	आख्यायनी २.	२४१२५
आकर १.	३२११०	आख्यायिका २.	२४१३८
" १.	५११२	आगन्तु १.	३१६६८
" १.	७११९	आगम १.	७११८
आकर्णक १.२.३.	४३११०८	आगस् ३.	३१७४७
आकर्णकर्षण ३.	३१७१९१	" ३.	८३११६
आकर्ष १.	३१७७२	आगू (-अगुर्) २.	३१८४७
" १.	७११३	आग्निमारुत ३.	३१६१५२
आकलन ३.	८३१३	आग्नीध्री २.	३१६१४
आकल्प १.	४३१३२	आग्नेय ३.	२११९०
आकार १.	५२१२२	" १.	२११९०
" १.	७११७	" १.	२११९२
आकारगोपना २.	३१९८६	" ३.	३१६६५
आकारणा २.	२४३३०	" १.	३१६१५२
आकालिकी २.	२२१४	" ३.	४३११०६
आकाश १. ३.	२११२	" १. २. ३.	५४१११८
आकीर्ण १.२.३.	५४१११०	आग्नेयी २.	२११४
आकुल्य ३.	४३११३८	" २.	२११९१
आकून ३.	३१६१७४	आग्रह १.	७११२
आकूति २.	३१६१७४	आग्रहायणिक १.	२११८१
आकृति २.	७२१२	आग्रहायणी २.	२११३८
आक्रन्द १.	७११५	" २.	२११७४
आक्रम १.	५२११६	आग्रायणी २.	२११७४
आक्रीड १.	३३३३	आवटलिका २.	३१७१२५
आक्रीश १.	१४३२२	आघात १.	७११८
आचारण ३.	२४३३४	आघारण १.	३१६१००
आचारित १.२.३.	३१८११	आङ्गलौकिक १.	३१६१९८
आचिस १. २. ३.	५४१६७	आङ्गिक १. २. ३.	३१७९९
आक्षेप १.	७१११०	" १. ३.	४३११२८
आक्षेपक १.	४३१३३	आङ्गिरस १.	२११३३
आक्षोड १.	३३३४६	आचाम १.	४३३७८
आखण्डल १.	१२१६	आचार १.	३१६१५५
आखनिक १.	३४३६	आचारा २.	११११६
आखु १.	४११३१	आचार्य १.	३१५५६
" १.	६११७	" १.	३१६२२
आखुभुज् १.	३१४७१	" १. २.	८११४४
आखुयान १.	१११५४	आचार्या २.	४३१२३
आखेट १.	३१९३९	आचार्यानी २.	४३१२२
आखोर १.	२११८८	आचित ३.	५११६२
आख्या २.	२४३३१	" १. २. ३.	५४११५

(१४)

आच्छादन ३.	२११६४
" ३.	४३१११६
" ३.	८३३३
आच्छुरित ३.	४३१११२
आच्छुरितक ३.	३१९१४
आच्छोदन ३.	३१९३८
आजक ३.	५१११०
आजान ३.	५२११
आजानज १.	१११६
आजानेय १.	३१७९४
आजि २.	६२३३
आजीव १.	३१८११
" १. ३. ३.	५४११६
(आजिल)	
आज्ञा २.	३१७३४
" २.	३१७४८
आज्ञागणिका २.	३१७३४
आज्य ३.	३१८१३८
" ३.	५११५१
" ३.	६३३२
आज्याधिवासन ३.	३१६९०
आज्याधिभ्रयण ३.	३१६९०
आज्यावेक्षण ३.	३१६९०
आटक १.	२३३१८
आठरूष १.	३३३१०१
आटि ३.	२३३११
आटोप २.	३१९८९
आडम्बर १.	३१९१३८
" १. ३.	८१५४
आडिण्डिक ३.	३१६१६
आढक ३.	४३३४१
" १.	५११६३
आढकिक १.२.३.	३१८२१
आढकी २.	३२११७
" २.	३१८४८
आढा २.	४११३३
आढिक ३.	४३११०८
आढ्य १. २. ३.	५४१५७

[आणवीन]

शब्दानुक्रमणिका

[आभिगामिकगुण]

आणवीन १.२.३.	३१८२०	आदित्य १.	११११९	आन्तरालिक १.	३१५११९
आतङ्क १.	७११९	" १.	१३३८	आन्त्र ३.	३१४११३
आतञ्जन ३.	३१८१४४	" १.	२१११५	(अन्त्र)	
" ३.	८३३४	आदिदेव १.	११११५	आन्दोल १.	३१७१३७
आतनायिन् १.२.३.	५४१६८	आदिम १. २. ३.	५४१७६	आन्दोलन ३.	३१७१३७
आनति २.	२११६२	आदीनव १.	५२१४	आन्ध्रसिक १.२.३.	४३१९२
आतप १.	१२३३१	आहत १. २. ३.	७३१२	आन्वीक्षी २.	३१६३१
" १.	२११२२	आदेशिन् १.	३१७२५	आपगा २.	४२१२३
आतपत्र ३.	३१७१६	आद्य १. २. ३.	५४१७६	आपण १.	४३३३४
आतर १.	४२११८	" १. २. ३.	६३१२	आपद् १.	३१६१९१
आताना २.	३३११८६	" १.	६१५७	आपन ३.	५२११३
आतपिन् १.	२३३२८	आद्यून १. २. ३.	५४१५१	आपन्न १. २. ३.	५४११०९
आताल १.	३१७११३	आधान ३.	३१६६९	" १. २. ३.	७३१२
आति २.	२३१११	आधानिक ३.	३१६३३	आपन्नसत्त्वा २.	४३११६
आतिथ्य १.२.३.	३१६६७	आधार १.	४२१६	आपमित्यक ३.	३१८६
" १.	३१६६८	" १.	७११५	आपव १.	३१६१५५
आतिवाहिक १.	१२३३८	आधि १.	६११७	आपाण्डुफल १.	३३३१६६
आतुर १. २. ३.	४३११४४	आधिक १.	३१८७०	आपात १.	७११९
आतोद्य ३.	३१९११४	आधूत १. २. ३.	५४१९५	आपान ३.	३१९५०
आत्तगन्ध १.२.३.	५४१६७	आधेय ३.	३१६६९	आपिङ्गलक १.	३१६१२२
आत्मगुप्ता २.	३३३१२९	आधोरण १.	३१७८८	आपिञ्जन ३.	३१८११४
आत्मघोष १.	२३३१५	आध्यात्मिक १.	३१६२०८	आपीड १.	४३११५४
आत्मज १. २.	४३१३९	आन १.	३१६२०४	आपीन ३.	३३१५१
आत्मन् १.	६११६	आनक १.	३१९१३३	आपूपिक ३.	५११११
आत्मनीन १.	८१५३	" १. ३.	३१९१३३	आस १. २. ३.	३१७४३
आत्मभू १.	७११६	आनकदुन्दुभि १.	१११२६	" १. २. ३.	३१८१९
आत्मस्मरि १.२.३.	५४१५०	आनत १. २. ३.	५४१८३	" १. २. ३.	५४१९९
आत्मयोनि १.	८१११६	आनद्ध ३.	३१९११५	आप्रपदीन १. २. ३.	
आत्मसम्बन्ध १. १११४८		आनन ३.	४३१८६		४३१२१
आत्माशिल्प १.	४११४१	आनन्द १.	३१६१८८	आप्राप्त १.	३१६११
आत्मीय १.२.३.	३१७४३	आनन्दन ३.	३१६१८६	आप्लव १.	४३११३
आत्रेय १.	४३११०४	आनन्दना २ व.	२१११८	आप्लाव १.	४३११३
आत्रेयी २.	४३११५	आनर्त १.	७११४	आप्लुत १. २. ३.	७३१३
आथर्वण ३.	३१६३७	आनाय १.	३१६७	आबद्ध १. २. ३.	३१७१४२
" ३.	४३२२०	" १.	७११४३	आबन्ध १.	३१८२८
आदर्श १.	४३११६२	आनाह १.	३१६६१	आबर्हित १.२.३.	५४११००
आदान ३.	३१७१८९	" १.	४३१२८	आलु १.	३१९१०६
आदाली २.	३३३१६२	" १.	५२१५	आभरण ३.	४३११३३
आदि १.	५४१७६	आनील १.	३१७१००	आभा १. २. ३.	५४११२२
आदितेय १.	१११३	आनुपूर्वी २.	३१६११४	आभाषण ३.	२४३२३
आदित्य १.	१११३	आनुपूर्व्य ३.	३१६११३	आभिगामिकगुण १.	३१७४
				" १.	३१७४८

(१५)

[आभीर]

आभीर १.	३१५६
" १.	३१५९९
" १.	३१९२८
आभीरपल्ली २.	३१९३२
आभील ३.	१२३९
" १. २. ३.	३१९७९
" १. २. ३.	७४१२
आभोग १.	७४१७
आभ्यन्तरवृत्त ३.	३१९७४
आम् ४.	८८१७
आम १.	४४१३८
" १.	६५५७
आमण्ड १.	३३३६५
आमनस्य ३.	१२३९
आमन्त्रण ३.	२४३१
आमन्त्रणिक ३.	३३३३
आमपात्र ३.	३३३६४
आममांसक १.	५३३७६
आमय १.	४४१३८
आमयाचिन् १. २. ३.	४४१४५
आमलक १. २. ३.	३३३७७
आमिच्छा २.	३३३९८
आमिष १.	३३३४६
" ३.	४४१०७
" १.	४४११४
" ३.	५३३५५
आमिपाशिन् १. २. ३.	५४१५०
आमिषी २.	३३३१००
आमुक्त १. २. ३.	३३३१४२
आमुष्यायण १. २. ३.	५४१५३
आमोद १.	५३३५०
" १.	७४१७
आम्नाय १.	७४१३
आम्न ३.	३३३२१
" १.	३३३२५
आम्नात १.	३३३३१
आम्नेडन ३.	५२३९
आम्नेडित १. २. ३.	२४३२२

वैजयन्तीकोषः

आय १.	३३७४४
आयत्त १. २. ३.	५४३८१
आयति २.	७२३३
आयत्त १.	३३९४
" १. २. ३.	५४३२८
आयल्लक ३.	३३३१७८
आयशूलिक १. २. ३.	५४३७४
आयस्त १. २. ३.	७४३३
आयान ३.	३३७११६
आयाम १.	३३३१६७
" ३.	३३७१९१
" १.	५२३५
आयास १.	३३३१९३
आयु १.	१२३२५
आयुध २.	३३७१५७
" २.	३३७२०६
आयुध ३.	३३३३३
" ३.	३३७१५७
" ३.	८३३९
आयुधग्रय २.	३३७१७२
आयुधिक १. २. ३.	३३७१४३
आयुधीय १. २. ३.	३३७१४३
आयुर्वेद १.	३३३२९
आयुर्वेदिन् १. २. ३.	४४१४४
आयुस् ३.	३३७२२१
" ३.	६३३५
आयोग १.	७४१४
आयोगव १.	३३३२२
" १.	३३३२९
" १.	३३३८२
" १.	३३३८६
आयोधन ३.	३३७२०४
" ३.	८३३४
आर १.	३३३३१
" १.	३३३२६
आरकूट १. ३.	३३३२६
आरक्ष १.	३३७१८
" १.	३३७७४
आरग्वध १.	३३३४८
आरट्ट १ व.	३३३३४

[आर्य]

आरट्ट १. २. ३.	३३३४६
" १.	३३७९६
आरणिन् १.	३३३३३
आरति २.	५२३३६
आरनाल ३.	४३३८१
आरभट १. २. ३.	३३७१४७
आरभटी २.	३३९१०१
आरम्भ १.	३३९१४०
" १.	५२३१५
आरलु १.	३३३३९
अरव १.	२४३३
आरा २.	३३९१३३
आराग्र ३.	३३७१८५
आरात् ४.	८३७१६
आराधन ३.	३३३३८
" ३.	८३३४
आराम १.	३३३३२
आरालिक १. २. ३.	४३३९२
आराव १.	२४३३
आरु १.	३३३१५४
" १.	५३३२४
आरुढ १.	३३८५२
आरेवत १.	३३३४८
आरोग्य ३.	४४१४४२
आरोपित १. २. ३.	५४११०४
आरोह १.	३३७८८
" १.	७४१७
आरोहण ३.	४३३५१
" ३.	५२३१५
आरुवध १.	३३३४८
आर्जिक १. २. ३.	४४३३३
आर्तगल १.	३३३१९०
आर्तव ३.	४४३१६
आर्ति २.	३३३१८७
" २.	३३७१७८
आर्द्र १. ३.	३३३२१४
" १. २. ३.	५४३१०७
आर्द्रक १. ३.	३३३२१४
आर्द्रा २.	२३३४०
आर्य १.	३३७२३
" १.	३३९१०६

[आर्य]

आर्य १. २. ३.	५४३६१
" १. २. ३.	६४३३
आर्यक ३.	३३३६६
आर्यपुत्र १.	३३९१०६
आर्या २.	१३३५८
आर्यावर्त १.	३३३२३
आर्यभ ३.	३३३१९९
आर्यभी २.	२३३४७
आर्यभ्य १. ३.	३३३५५
आल ३.	३२३१४
आलगन्धिका २.	३३७३४
आलम्भ १.	६३३१०
आलय १.	४३३१८
आलवाल ३.	४२३१०
आलस्य ३.	३३३१५८
" १. २. ३.	५४३५५
आलान ३.	३३७८२
" ३.	७३३३
आलाप १.	२४३२३
आलावर्त १.	४३३१५९
आलास्य १.	४३१५३
आलि १.	४३३३२
" २.	५३३२४
" २.	६३३३
आलिङ्गन ३.	४३३१७०
आलिङ्ग्य १.	३३९१२९
आलिन्द १.	४३३४५
आली २.	३३८२६
" २.	४३३२५
आलीढ ३.	३३७१८७
आलु २.	४३३५७
आलुक १.	५३३४४
आलेख्यलेखा २.	३३९२४
आलेप १.	४३३१४७
आलोक १.	१३३३१
" १.	७४१८
आवतारिक १.	४३३४३
आवन्त्य १.	३३५५३
" १.	३३५१०१
आवपन ३.	४३३६२
आवर्जन ३.	५२३४०

शब्दानुक्रमिका

आवर्त १.	४२३३०
आवर्तन ३.	३३९११
" ३.	५२३४१
आवलि २.	५३३२४
आवसथ १.	४३३१८
आवसथ्य १.	१३३२५
" १.	४३३२७
आवसित १. २. ३.	३३८६७
आवाप १.	३३७१४
" १.	७४३३
आवापक १.	४३३१४४
आवालि ३.	४२३१०
आवालि २.	४३३३५
आवाह १.	४२३३
आविः (-स्) ४.	८३८१८
आविक १.	४३३१२९
आविद्ध १. २. ३.	५४३१२३
" १. २. ३.	७४३२
आविध १.	३३९१८
आविल ३.	४२३४
आविश १.	३३३१६१
(आवश)	
आवृत्त १.	३३९१०७
आवृत् २.	३३३११३
" २.	३३३११४
आवृत्त १.	३३५५
" १.	३३५९०
" १. २. ३.	५४३९६
आवेग १.	३३९१८९
आवेशन ३.	४३३२२
आवेशिक १.	३३३६८
आवेष्टक १.	४३३१४
आशंसितृ १. २. ३.	५४३४३
आशंसु १. २. ३.	५४३४३
आशङ्का २.	३३३१७६
आशय १.	३३३१७४
" १. २. ३.	५४३११४
" १.	७४३१७
आशर १.	१३३४१

[आषाढ]

आशा २.	२३३२
" २.	६३३३
आशाबन्ध १.	४३३३५
आशासन ३.	३३३१२०
आशितम्भव १.	८३३२५
आशिर १.	१३३१९
" १.	७३३३
आशिसू २.	६३३२
आशीविष १.	४३३५
" १.	४३३१३
आशु ३.	३३३२२
" १. २. ३.	५४३१२५
आशुग १.	१३३४९
" १.	७३३९
आशुशुक्ति १.	८३३५०
आशोचनि १.	३३३१६
आश्रय १. २. ३.	३३३७८
आश्रम १. ३.	४३३२६
" १. ३.	७४३१६
आश्रय १.	३३७३
आश्रयाश १.	१३३१७
आश्रव १.	५२३४
" १.	५२३३७
" १. २. ३.	५४३४९
आश्लेष १.	४३३१६९
आश्लेषा २.	२३३३३
आश्व ३.	५३३१०
आश्वकिनी २.	२३३४२
आश्वस्थ ३.	३३३२२
आश्वयुज १.	२३३८५
आश्वस १.	३३३२०५
आश्विक १.	३३५७१
आश्विन १ द्वि.	१३३३
" १.	२३३८५
आश्विनी २.	२३३७६
आश्विनेय १ द्वि.	१३३३
आश्वीन १. २. ३.	३३७१०८
आषाढ १.	२३३८४
" १.	३३३३

[आषाढ]

आषाढ १.	३१६१८
आषाढी २.	२११७६
आस १.	३१७१७२
" १.	५३२८
आसक्त ३.	२११६२
आसङ्ग ३.	३१११३
" १.	३१७१५९
आसन ३.	३१६२१०
" ३.	३१७१६
" ३.	४३११६४
" ३.	५३१४०
" ३.	७३३३
आसना २.	५२११४
आसन्दी २.	४३११६०
" २.	४३११६४
आसन्न १. २. ३.	५४११४१
आसव १.	३३२२१७
" १.	३११४७
" १.	३११४९
" १.	३११५१
" १.	३११५२
आसादित १. २. ३.	५४११९
आसार १.	३१७२०१
" १.	७११२
आसारी २.	३११४२
आसाविक १.	३१५११२
आसिक ३.	३१७१९४
आसीन १. २. ३.	५४११०
आसुतीवल १.	३१९४४
" १.	८११५०
आसुर १.	२३११७
" ३.	३२३३४
" १.	३१८१२४
" ३.	४४११०५
आसुरी २.	३१८४२
आसूति २.	३१९५१
आसेचनक १. २. ३.	५४१६५
आस्कन्दन ३.	३१७२०३

वैजयन्तीकोषः

आस्कन्दित १. २. ३.	३१७११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३१७१२०
आस्तरण ३.	४३११६६
आस्ताव १.	३१६११०
आस्तिक १. २. ३.	५४३३७
आस्था २.	३१८१३
" २.	५२३३७
" २.	६२३२
आस्थान ३.	३१८१४
आस्थानगृह ३.	४३२०
आस्थानी २.	३१८१४
आस्पद ३.	७३३३
आस्फोटनी २.	३१९१८
आस्फोट १.	३३३२९
आस्फोता २.	३३१३४
" २.	३३१३८५
आस्य ३.	४४१८६
" ३.	६३३३
आस्या २.	५२११४
आस्र ३.	३१९१८७
" १.	६५५७
आस्वाद्य ३.	४३१९१
आहत १. २. ३.	२४११७
" १. २. ३.	७४३३
आहति २.	३१६१८९
आहर १.	३१६२०४
आहव १.	३१७२०५
आहवनीय १.	१२३२४
आहार १.	७११८
आहार्य ३.	३१८११४
" १. २. ३.	३१९१९
" ३.	४३३७६
आहाव १.	४२३९
आहिक १ व.	२१३३७
" १.	३१६१५४
आहिण्डक १.	३१५४४
(आहिण्डक)	
" १.	३१५९३

[इच्छु]

आहिताग्नि १	३१६१७३
आहिण्डक १.	४११२५
आहुक ३.	४३३८
आहुति २.	३१६१६९
आहोपुरुषिका २.	३१६१७०
आहोस्वित् ४.	८१८२
आहिक १.	३१६३२
आह्वय १.	२४३३१
आह्वा २.	२४३३१
आह्वान ३.	२४३३१
इ ४.	८१११०
इच्छु १.	३३३२२५
इच्छुगन्धा २.	३३३१४१
इच्छुगन्धिका २.	३३३१९६
(गण्डिका)	
" २.	३३३२२७
इच्छुपालिका २.	३३३२२६
इच्छुभेद १.	३३३२२६
इच्छुर १.	३३३१०१
इच्छुविदारिकार. ३.	३३३१९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३१८२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३१८२२
इच्छुसुनिका २.	४३३२५
इच्छुदक ३.	३११११
इच्छुवाकु १.	३३३४९
" २.	३३३१६८
इक्ष १.	५२३२२
इक्षत् १. २. ३.	५४३६१
इक्षाल १.	१२३३२
इक्षित ३.	५२३२२
इक्षुद १. २. ३.	३३३१०८
इक्षुदी २.	३३३१३९
इक्षु २.	३१६१७९
" २.	३१६१८२
इक्षुवासु १.	१२३१८
इक्षु २.	४४३११

[इज्जल]

इज्जल १.	३३३६७
इज्या २.	३३३३१
" २.	६२३४
इज्याशील १.	३३३७५
इज्वर १.	३३३५३
इडा २.	६२३३
इतर १. २. ३.	५४३२२
इतरथा ४.	८१८२०
इतरेतर १. २. ३.	५४३१२३
इतरेतुः (-स्) ४.	८१८१८
इति ४.	८१७१७
इतिकथा २.	८२३३
इतिह ४.	२४३३८
" ४.	८१८२१
इतिहास १.	२४३३८
इत्थम् ४.	८१८२०
इत्थम्भाव १.	५२३२३
इत्तरी २.	४४३९
इत्वास १.	३३३१९९
इदानीम् ४.	८१८१५
इद्ध ३.	२१३२२
इध्म १. ३.	२११८८
" १.	३३३१९६
इध्मप्रोक्षण ३.	२३३१९०
इध्मवाहक १.	३३३१५७
इन १.	६५५७
इन्दिन्दिर १.	२३३३३
इन्दिरा २.	११३३६
इन्दीवर ३.	४२३३५
इन्दीवरी २.	३३३१४२
इन्दु १.	२१३२५
" १.	५१३५२
" १.	८३३३
" १.	८३३६
इन्द्र १.	१२३११
" १.	६१३८
" १.	८३३३
इन्द्रक ३.	४३३२०
इन्द्रकोश १.	४३३३२
इन्द्रच्छुद १.	४३३१३८
इन्द्रजाल ३.	३१७१३

शब्दानुक्रमणिका

इन्द्रजित् १.	१२३४४
इन्द्रदारद १.	४१२४४
इन्द्रधनुस् ३.	२३३३
इन्द्रनील ३.	३२३४०
इन्द्रभगिनी २.	११३६२
इन्द्रमद १.	४४३३६
इन्द्रमह १.	३३३६९
इन्द्रयव १. ३.	३३३७३
इन्द्रलुप्तक ३.	४४३२६
इन्द्रवस्ति १.	४४३५७
इन्द्रवारुणी २.	३३३७७
इन्द्रवृद्धि १.	३१७९८
इन्द्रवृत्तादिक ३.	३१७९
इन्द्रसुरस १.	३३३११८
इन्द्रस्वम् २.	११३६२
इन्द्राणी २.	१२३११
इन्द्राणीमह १.	३३३५७
इन्द्रायुध ३.	२३३३
" १.	३१७९२
इन्द्रावरज १.	११३१९
इन्द्रिय ३.	३३३२०३
" ३.	७३३४
इन्द्रियग्राम १.	५१३१७
इन्द्रियार्थ १.	५१३२
इन्धन ३.	३३३९६
इन्वका २ व.	३१३३९
इभ १.	३१७६०
इभ्य १. २. ३.	५४३५७
इभ्या २.	३३३१०३
इरम्मद १.	१२३२०
इरा २.	३१९४५
" २.	६२३४
इरिण १. २. ३.	३१८१८
" १. २. ३.	७४३४
इर्वारु १.	३३३१६६
" २.	३३३१७२
इला २.	३१३३
" २.	६२३४
इलावृत्त ३.	३१३७
इलिक १.	३३३६३
इली २.	३१७१६०

[ईश्वर]

ईश्वला २ व.	२१३३९
इव ४.	८१८१५
इष १.	२१३८५
इषीक १ व.	३१३३४
इषीका २.	३३३२५
इषु १. २.	३१७१८०
इषुधि १. २.	३१७१७९
इष्ट ३.	३३३११५
" १. २. ३.	३१७३३
" १. २. ३.	५४३९६
इष्टका २.	३१८२५
इष्टि २.	६२३४
इष्टव १.	६१३८
इष्टवास १.	३१७१७२
ईक्ष ३.	४४३९४
" ३.	७३३४
ईक्षणिका २.	४४३११
ईक्षान १.	२११८४
ईक्षित १. २. ३.	५४३९६
" १. २. ३.	५४३१०६
ईति २.	६२३५
ईदृश १.	१३३१०
ईप्सा २.	३३३१८०
ईरित १. २. ३.	५४३९६
ईर्म १. ३.	३१७२१७
ईर्यापथस्थिति २.	३३३११६
ईर्या २.	३३३१८४
ईषिका २.	४४३११६
ईली २.	३१९३७
ईश १.	११३४०
" १. २. ३.	५४३५८
" १.	८१३३५
ईशशक्ति २.	११३४९
ईशान १.	११३४०
" १.	७१३१०
ईशित् १. २. ३.	५४३५८
ईश्वर १.	११३४०
" १.	३३३३७
" १.	३३३५३

[ईश्वर]

ईश्वर १.	४१४१३५
" १. २. ३.	५१४१५७
" १.	७१४१३५
ईश्वरप्रिय १.	२१३१३५
ईश्वर ४.	८१८१२
ईश्वर २.	३१८१२७
ईश्वरान्त १.	३१७१६९
ईश्वरान्तबन्धन ३.	३१७१३०
ईश्वरि १.	११२११९
ईश्वर ३.	५१२१११
ईश्वर २.	३१६११७९
" २.	६१२१५
ईश्वरमृग १.	५१५१८
" १.	३१७११००
ईश्वर १. २. ३.	५१४१९६
उ	
उ ४.	८१७११०
" ४.	८१७१११
उक्थ ३.	३१६११११
उक्थ १.	३१४१५५
उक्थ १.	३१४१५२
" १.	८१६१५
उक्थवश १.	८१५१५१
उक्थ २.	४१३१५५
उक्थ १. २. ३.	४१३१५४
उग्र १.	११११४६
" १.	३१५११३
" १.	३१५१७२
" १.	३१५१७६
" १.	३१५११६
" ३.	३१८१२४
" ३.	३१८११४८
" १. २. ३.	३१७१७९
उग्रगन्ध १.	३१३१७७
" १.	८१५१५
उग्रगन्ध २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१५१५
उग्रता २.	३१६१९२
उग्रधन्वन् १.	११२१६
उग्रविष १.	३१३१९३

वैजयन्तीकोषः

उग्र २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१२११४
उग्रिका २.	३१६१९२
उचित १. २. ३.	५१४१०३
" १. २. ३.	७१४१७
उच्च १. २. ३.	५१४१८१
उच्चकैः (-स्) ४.	८१८११९
उच्चण्ड १. २. ३.	५१४१९४
उच्चतालक ३.	३१५१५४
उच्चन्द्र १.	२१११६६
उच्चय १.	४१३१३०
उच्चल ३.	३१६११७२
" ३.	३१७१७५
उच्चलित ३.	३१७१७२
उच्चस्वन १.	२१४१३
उच्चार १.	४१३११९
उच्चारणा २.	३१६१३५
उच्चूड १.	३१७१३४
उच्चैः (-स्) ४.	८१८११९
उच्चैःश्रवस् १.	११३१११
" १.	८११११९
उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.	
	३१६११०
उच्छीर्ष ३.	४१२१६७
उच्छुन ३.	२१११८३
उच्छूर १.	२१११६५
उच्छृङ्खल १. २. ३.	
	५१४१३२
उच्छ्राय १.	३१३११६
उच्छ्रित १. २. ३.	७१४१५
उच्छ्रिताग्रक १. २. ३.	
	५१४१८१
उच्छ्रास १.	३१५१३२
" १.	३१६१२०४
उज्जट १. २. ३.	३१३१४५
उज्जासन ३.	३१७१२५
उज्ज १.	३१८१२
उज्ज १. २.	४१३१२६
उहु २. ३.	२११३८
उहुप ३.	४१२१६

[उत्तमसाहस]

उहुराज १.	२११२७
उहुीन ३.	२१३१५०
उहुीश १.	११११४५
उत १. २. ३.	५१४११२
" ४.	८१७११८
" ४.	८१८१२
उताहो ४.	८१८१२
उत्क १. २. ३.	५१४१३४
उत्कट १.	३१३१२३०
(इट्कट, तिलकट)	
" ३.	३१६१२१६
" ३.	३१८१८०
" ३.	३१८१०४
" १. २. ३. ५१४१३७	
" १. २. ३. ५१४१३७	
" १. २. ३. ७१४१७	
उत्कण्ठ १. २. ३. ८१९१२७	
उत्कण्ठा २.	३१६११७८
उत्कर १.	३१६११११
" १.	५१११३
उत्कलिका २.	३१६११७८
" २.	४१२१२४
उत्कार १.	५१२१२१
उत्कारिका २.	४१३१७२
उत्कीर्ण १.	४१२१७
उत्कुञ्ज १.	४१३१६९
उत्कोच १.	३१७१४६
उत्क्रम १.	५१२११६
उत्क्रोश १.	२१३१३४
उत्क्रिसिका २.	४१३१३४
उत्क्रुद्रल १.	५१३१४
उत्खात १.	३१६१२२९
उत्खेद १.	३१६११८३
उत्त १. २. ३.	५१४१०७
उत्तंस १.	४१३१५४
" १.	८१११५९
उत्तस ३.	४१३१८९
उत्तम १. २. ३.	५१४१६२
" १. २. ३.	७१४१६
उत्तमर्णक १. २. ३.	३१८१८
उत्तमसाहस १.	५१११४१

उत्तमा]

उत्तमा २.	३१३११६०
उत्तमाङ्ग ३.	४१४१८५
उत्तमोत्खात १.	३१६१२३०
उत्तमोत्तमिक ३.	३१९१३२
उत्तर ३.	२१४१३७
" ३.	३१८११६
" १. २. ३. ७१५११८	
उत्तरच्छद १.	४१३११६६
उत्तराङ्ग ३.	४१३१३३
उत्तरायण १.	२१११९०
उत्तरासङ्ग १.	४१३१२३
उत्तरीय ३.	४१३१२२
उत्तरेद्युः (-स्) ४.	८१८१८
उत्तान १. २. ३.	५१४१२०
उत्तानशय १. २. ३.	५१४१२
उत्ताल १. २. ३.	५१४१५२
" १. २. ३.	७१४१७
उत्त्रास १.	३१६११०६
उत्थान ३.	४१४१२८
" ३.	७१३१५
उत्थित १. २. ३.	३१८११८
" १. २. ३. ५१४१५२	
उत्थुस १.	५१३१४०
उत्पतन ३.	८१३१५
उत्पतिवृत् १. २. ३. ५१४१४२	
उत्पतिष्णु १. २. ३. ५१४१४२	
उत्पत्ति २.	४१४११८
उत्पल ३.	३१८१९९
" १.	४१११४६
" ३.	४१२१३४
" ३.	४१२१३५
उत्पलावर्त १ व.	३१११३३
उत्पश्य १. २. ३. ५१४१५४	
उत्पाट १.	४१४१३७
उत्पाटित १. २. ३.	
	५१४११००
उत्पाट १.	३१६११९०
उत्पाद १.	३१४१३२
उत्पादशयन १.	२१३१३४
उत्पिञ्जल १. २. ३.	
	५१४१९४

शब्दानुक्रमणिका

उत्पिब १.	२१३१३५
उत्पिष १.	५१३११२
उत्प्रास १.	२१४१३५
उत्प्रेक्षा २.	३१६११७४
उत्फुल्ल १. २. ३.	३१३१९
उत्स १.	३१२१७
उत्सङ्ग १.	३१७१७६
" १.	४१४१६०
उत्सन्नाग्नि १.	३१६१७१
उत्सर्जन ३.	३१६११९९
उत्सव १.	३१६१६१
" १.	७१११११
उत्सादन ३.	८१३१५
उत्साधन ३.	४१३११३
उत्साह १.	३१६१६७
" १.	३१९१७६
उत्साहा २.	३१२१२५
उत्सुक १. २. ३. ५१४१३०	
उत्सृष्ट १.	३१३१५५१
" १. २. ३. ५१४१०१	
उत्सेध १.	७११११०
उदक ३.	४१२१२
उदक्या २.	४१४१५५
उदग्र १. २. ३.	५१४१८१
उदग्रदत् १.	३१७१६९
" १. २. ३. ५१४१९	
उदच् ३.	२१११८
" १. २. ३. ४.	
	५१४१९१
उदज १.	५१२१३१
उदञ्जन ३.	४१३१५५
उदधि १.	४१२११०
उदन्त १.	२१४१३९
उदन्त्या २.	३१६११८१
उदन्वत् १.	४१२११०
उदपान १. ३.	४१२१९
उदय १.	३१२१६
" १.	३१७१४४
उदयनीय १.	३१६१५८
उदयादि १.	३१२१६
उदर ३. २.	४१४१६७

[उद्गाल]

उदरग्रन्थि १.	४१४१३०
उदरत्राण ३.	३१७१५४
उदरिल १. २. ३.	५१४१७
उदर्क १.	७१११२
उद्विस् १.	११२११५
उद्वसित १. २. ३.	
	४१३१९९
उद्विषत् ३.	३१८१५०
उदात्त १. २. ३.	३१६१३७
" १. २. ३.	८१७१६
उदान १.	७१११२
उदार १. २. ३.	५१४१२०
" १. २. ३.	५१४१५६
" १. २. ३.	७१४१४
उदारक १.	३१८१५९
उदावर्त १.	४१४१३२
उदासीन १.	३१७१४०
उदास्थित १.	३१७१२७
" १.	८११११९
उदाहार १.	२१४१४१
उदित १. २. ३.	७१४१५
उदीची २.	२१११५
उदीचीन १. २. ३.	
	५१४१९१
उदीच्य १.	३१११२२
उदीर्ण १. २. ३.	५१४१५६
उदुब्ज १. २. ३.	५१४१९०
उदुम्बर १ व.	३१११३९
" ३.	३१२१२५
" १.	३१३१२८
" १. ३.	८१५१४
उदुम्बरा २.	४१३१४४
उदूखल २.	४१३१६५
उदूढ १. २. ३.	५१४१८०
" १. २. ३.	७१४१६
उदूत १. २. ३.	५१४११४
उदूमनीयक ३.	४१३१२०
उदूढा १. २. ३.	५१४१३१
उदूढा १.	३१६१७९
उदूगार १.	४१४१२६
उदूगाल १.	४१४१२६

[उद्गूर्ण]

उद्गूर्ण १. २. ३. पा१११४
उद्गृहीत १. २. ३. ८११६
उद्गीव १. २. ३. पा११२०
उद्ग १. ८११४२
उद्गन १. ३११३५
उद्गटन ३. ४१२२१
उद्गात १. २११४१
" १. ३११२४
" १. ४१३३२
उद्गंश १. ४११३५
उद्गण्ड १. ४११४६
उद्गाम १. ११२४६
" १. २. ३. पा११३२
उद्गाल १. ३१३६०
" १. ३११४३
उद्ग्राव १. ३११२११
उद्गन १. ३१११०२
उद्गरण ३. ८१३६
उद्गर्ष १. ३११६१
उद्गव १. ३११६१
उद्गान ३. ४१३५४
" ३. ७१३५
उद्गार १. ३१८४
उद्गूम १. २११२८
उद्गृह १. २. ३. पा११००
" १. २. ३. पा१११२
" १. २. ३. ७११५
उद्गृथ १. ४१२२९
उद्गृथ १. ३११४१
उद्गृथवृषभ १. ३१११२२
उद्गृह १. २. ३. ३१३१९
उद्गृहित १. २. ३. पा११००
उद्गव १. ४१११८
उद्गिज १. २. ३. ४१११
उद्गिद् २. ४१११
उद्गिद् ३. ३१८१२२
" १. ४१११८
" १. २. ३. ४१११
उद्गृम १. पा१२३३

वैजयन्तीकोषः

उद्यत १. २. ३. पा१११४
उद्यम १. ३१११६७
" १. पा१२३४
उद्यान ३. ३१३३
" ३. ७१३४
उद्युक्त १. २. ३. पा१३०
उद्योग १. ३. पा१२५
उद्योत १. २१११६
उद्ग १. ४११५४
(द्र)
उद्गकलाहक १. ३१११०१
उद्गर्तन ३. ४१३११३
उद्गान्त ३. ३११६८
" १. २. ३. पा१११४
उद्गासन ३. ३११२१४
" ३. ८१३५
उद्गाह १. ३११५५
उद्गेग १. ३१११६७
" ३. ४१३१०६
" १. पा१२३३
उद्गेगकर्तरी २. पा३११०८
उद्गुर १. ४११३१
उद्ग १. २. ३. पा११०७
उद्गत १. २. ३. पा११८१
उद्गतनासिक १. २. ३. पा११६
उद्गतानत १. २. ३. पा११८३
उद्गति २. पा१२२४
उद्गाम १. पा१२२४
उद्गाल १. ३१८५५
उद्गिद् १. २. ३. ३१३१९
उद्गन्त १. ३१३७६
उद्गदिष्णु १. २. ३. पा११४१
उद्गनस् १. २. ३. पा१३४
उद्गथ १. ३११२११
उद्गाथ १. ३११४०
उद्गाद १. ३१११७७
उद्गान ३. पा११५६
उद्गिषित १. २. ३. ३१३१९

[उप्ताप]

उन्मीलन ३. ३१११०
उन्मीलित १. २. ३. ३१३१९
उन्मुख १. २. ३. पा११५४
" १. २. ३. पा११९०
उन्मूलित १. २. ३. पा११००
उन्मेष १. ३१११९०
उप ४. ८१११८
उपकण्ठ १. २. ३. ३१११२०
" १. २. ३. पा११४१
उपकर्या २. ४१३३०
उपकल्प १. ३१३११३
उपकार १. पा१२२२
उपकारिका २. ४१३३०
उपकार्या २. ४१३३०
उपकुञ्जिका २. ३१८८५
" २. ३१८८७
उपकुर्वाण १. ३११८
उपकुल्या २. ३१८७७
उपक्रम १. २११४१
" १. ३११२५
" १. पा१११५
" १. ८१११८
उपक्रिया २. पा१२२२
उपक्रोश १. ३१११९३
उपखिल ३. ३११३३
उपगूहन ३. ४१३१६९
उपग्रह १. ८१११८
उपग्राह्य ३. ३११४५
उपग्र ३. ४१३१२
उपचर्या २. ४११३२९
अपचार १. ८१११७
उपचित १. २. ३. पा११५७
" १. २. ३. पा११०८
उपचित्रा २. ३१३११३
उपच्छन्दन ३. २११२३
उपजाप १. ३१११३
उपजिह्विका २. ४१३३८
उपजोषम् ४. ८१११७
उपज्ञा २. ३११२५
उप्ताप १. ८१११९

उपत्यका]

उपत्यका २. ३१२१९
उपत्रिंश १. २. ३. व. पा११३५
उपदंश १. ३११५२
" १. ४१३८६
" १. ४११३२
उपदा २. ३११४५
उपदीका २. ४१३३८
उपदेहिका २. ४१३३८
उपद्रव १. ३१११९०
उपद्रष्टृ १. ३११८१
उपधा २. ३१११९५
" २. ७१२३
उपधान ३. ४१३१६७
उपनत १. २. ३. पा११०४
उपनय १. ३११७
उपनाय १. ३११७
उपनाह १. ३११२१
" १. ८१११७
उपनिधि १. ३१८१२
उपनिमन्त्रण ३. ३११९३
उपनिवेशिनी २. २११७९
उपनिषद् २. ८१२३
उपन्यास १. २११४१
उपपति १. ४१३३८
उपप्राप्त १. २. ३. पा११०४
उपप्लव १. २११३०
" १. ३१११९०
उपबर्ह ३. ४१३१६७
उपबर्हण ३. ४१३१६७
उपभृत् २. ३१११००
उपमन्त्रण ३. २११४४
उपमा २. पा११२२
उपमान ३. ३११२१
" ३. ८१११७
उपयम १. ३११५५
उपयाम १. ३११५४
उपयोग १. पा१२२५
उपरक्त १. २११३०
" १. २. ३. पा११६८

शब्दानुक्रमणिका

उपरक्षण ३. ३११५९
उपरति २. ४१३३६
उपरथ्या २. ४१३१६
उपरमग ३. पा१३६
उपराग १. २११३०
उपराम १. पा१३६
उपरि ४. ८१८१९
उपरिष्ठात् ४. ८१८१९
उपरिस्थूणा २. ४१३४१
उपल १. ३१२८
" १. २. ३. ७१५७
उपलब्धि २. ३११६४
" २. ८११४
उपलम्भ १. पा११९
उपलवण १. ३११२६
उपला २. ४१३१६३
उपलिङ्ग ३. ३१११९०
उपवन ३. ३१३२
उपवर्ण १. ३१५२
उपवर्तन ३. ३११४९
" ३. ३११११
उपवर्ष १. ३११५४
उपवसथ १. ४१३२
उपवस्तु १. ३११४४
उपवास १. ३११४४
उपविंश १. २. ३. व. पा११३५
उपविषा २. ३१८१०
उपविष्कर ३. ४१३१७
उपविष्ट १. २. ३. पा११०
उपवीत ३. ३११२०
" ३. ८१३१७
उपवेद १. ३१३३०
उपवेश ३. पा११४
उपवेणव ३. २११६७
उपशक्त्यक ३. ४१३११
उपशाय १. ४१३१६७
उपश्रुत १. २. ३. पा११०६
उपसंन्यान ३. ४१३१२१
उपसंहार १. पा११८
उपसंग्रहण ३. ३११४०

[उपानह]

उपसन्न १. २. ३. पा११०४
उपसम्पन्न १. २. ३. ३११२२०
" १. २. ३. ४१३१९४
" १. २. ३. ८११२६
उपसम्भाषण ३. २११२३
उपसर्ग १. ३१११९०
उपसर्जन ३. पा११६४
उपसर्गा २. ३११४६
उपस्कर १. ४१३१९०
उपस्करस्खलिनी २. ३११५४
उपस्करव्रत ३. ३११४८
उपस्थ १. ३१११०३
(उपस्थाव)
" १. ४११६०
" १. ३. ४११६७
उपस्थान ३. पा१२१
उपस्थित १. २. ३. पा११०४
उपस्पर्श १. ४१३११३
" १. ८१११९
उपस्पर्शन ३. ८१३१४
उपहसित ३. ३११८४
उपहार १. ३११४५
उपहालक १ व. ३१११७
उपहर ३. ८११५
उपांशु १. ३११९२
" ४. ८१३२
उपाग्र १. २. ३. पा११६४
उपात्यय १. ३११११४
उपादान ३. पा११८
उपाधि १. ७११११
उपाध्याय १. ३११२२
" १. २. ३. ८११४४
उपाध्याया २. ४११२३
उपाध्यायानी २. ४११२२
उपाध्यायी २. ४११२२
" २. ४११२३
उपानह २. ४१३१६२

उपान्त]

वैजयन्तीकोषः

[ऊरव्य

उपान्त १. २. ३.	उर्वरा २.	३११४	उपस् २. ३.	२११६९
उपायन ३.	" २.	३१८१७	" २. ३.	६१५८
उपालम्भ १.	उर्वारु २.	३१३१६७	उपा २.	२११५७
उपावृत्त १. २. ३.	" १.	३१३१७२	" २.	३११४१
उपासङ्ग १.	उर्वी २.	३११११	" ४.	८१८१११
उपासत्त ३.	उलङ्कल १.	४११३७	उपापति १.	१११२९
उपासना २.	उलन्द १.	१११४६	उषित १. २. ३.	७१४७
उपासित १. २. ३.	उलप १.	३१३३७	उष्ण १.	३१४६७
उपाहित १.	" १.	३१३२२९	उष्णीवक १.	४१४१३१
उपेक्षा २.	उलम्ब ३.	४१३३७०	उष्णधूम्रपुच्छिका २.	३१३१२६
उपेन्द्र १.	उलक १.	२१३२२	उष्ट्रिका २.	४१३६१
उपोढ १. २. ३.	उलकचेटी २.	२१३२१	उष्ण १.	२११८८
उपोदिका २.	उलकारि १.	२१३१६	" १.	३१३५६
उपोद्घात १.	उलखल १.	३१६१९	(कृष्ण)	
उप्तकृष्ट १. २. ३.	" ३.	४१३६५	" ३.	५१३७
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	" ३.	४१४७०	" १. २. ३.	६१५८
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	उलखली २.	३१७१११	उष्णक १. २. ३.	५१५५४
उमा २.	उल्लु १.	३१६५७	उष्णवीर्य १.	४११५४
" २.	उल्का २.	१११३२	उष्णागम १.	२११८८
उमापति १.	उल्ब ३.	४१४१८	उष्णिका २.	४१३८०
उमासुत १.	उल्बण १.	५१२९	उष्णीष १. ३.	४१३१२४
उम्बुरा २.	" १. २. ३.	५१३३४	" ३.	४१३१३५
उम्य १. २. ३.	" १. २. ३.	५१३३७	" ३.	४१४८५
उरग १.	उल्बणक ३.	३१६८२	उत्त १.	२११६६
उरगाशन १.	उल्बस्थूणा २.	४१३३९	" १. २.	६१५९
उरण १.	उल्मुक ३.	११२३२	उत्तरा २.	३१४४२
उरभ्र १.	उल्लसनक ३.	३१६८२	ऊ	
उररी ४.	उल्लाघ १. २. ३.	४१४९३	ऊक १.	२१३३
उरस् ३.	उल्लाघ १.	२१४२९	ऊख १.	४१४६५
" ३.	उल्लिखित १. २. ३.	८१४५	ऊत ३.	४१४४
उरसिल १. २. ३.	उल्लु १.	३१३२०८	" १. २. ३.	५१४१००
उरस्य १.	उल्लुक १.	३१३२२९	" १. २. ३.	५१४११२
उरस्वत् १. २. ३.	उल्लेखनीय १.	३१३३२	ऊति २.	६१२५
उरस्सूत्रिका २.	उल्लोच १.	४१३१२३	ऊधस् ३.	३१४५१
उराह १.	उल्लोल १.	४१२१४	ऊधस्य ३.	३१८१४६
उरु १. २. ३.	उशनस् १.	२११३४	ऊन १. २. ३.	५१४८६
उरुकम १.	उशि १. ३.	६१५८	ऊम् ४.	८१८१४
उरुवल्ली २.	उशीर १. ३.	३१३२३१	ऊम १.	६११८
	उष १.	२११६८	ऊररी ४.	८१७१७
	उयण ३.	३१८७९	ऊरव्य १.	३१८१
	उषर्द्ध १.	११२१५		

ऊरी]

शब्दानुक्रमणिका

[एकविंशतितम

ऊरी ४.	८१७१७	ऊषणा २.	३१८७६	ऊवभ १.	३१७१७
ऊरु १. २.	४१४५९	(दूषणा)		" १.	३१९१३२
" १. २.	८१९२६	ऊषण १. २. ३.	३१८१८	" १.	७१११३
ऊरुज १.	३१८१९	ऊषण ३.	३१८१२३	ऊषभा २.	३१६५१
ऊरुपर्वन् ३.	४१४५९	ऊषवत् १. २. ३.	३१८१८	ऊषभी २.	३१३१२९
ऊरुमूल ३.	४१४५९	ऊषम १.	२११८८	ऊषि १.	१११३०
ऊर्ज २.	८१९१८	ऊषमन् १.	२११८८	" १.	३१६१५०
ऊर्ज १.	६११३	" १.	३१६३६	" २.	३१८९४
ऊर्जस्वल १. २. ३.	३१७१५१	" १.	५१४९	" १.	६११९
ऊर्जस्विन् १. २. ३.	३१७१५१	ऊह १. २.	३१६१७५	ऊष्टि १. २.	३१८१५८
	३१७१५१	ऊहन ३. २.	३१६१७५	ए	
ऊर्जित १. २. ३.	३१७१५१	ऊ		एक १. २. ३.	५११२५
ऊर्णनाभ १.	४११३४	ऊ २.	८१९१८	" १. २. ३.	६१४३
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊच १.	३१३६९	एककुण्डल १.	८११५१
ऊर्णा २.	३१४२५	" १.	३१४७	एकग १. २. ३.	५१४१२८
" २.	३१९३३	" ३.	५११६०	एकगुरु १.	३१६२४
" २.	६१२६	" १. २. ३.	६१५९	एकग्रन्थ १.	३१६३३
ऊर्णायु १.	७११३३	ऊक्षगन्धिका २.	३१३१९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊक्षर १.	७१११४	एकतीर्थिन् १.	३१६२४
ऊर्ध्वक १.	३१९१२९	ऊक्ष २.	३१६२६	एकदन्त १.	१११५३
ऊर्ध्वजानुक १. २. ३.	५१४१०	ऊक्षीष ३.	४१३५७	एकदा ४.	८१८६
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५१४१०	ऊक्षु १. २. ३.	५१४१२४	एकदश १. २. ३.	५१४१३
ऊर्ध्वधन्वन् १.	११२३	" १. २. ३.	६१४२	एकदेश १.	४१४५५
ऊर्ध्वनापित १.	३१५६७	ऊक्ष ३.	३१८३	एकधुर १. २. ३.	३१४५८
ऊर्ध्वमूल १.	३१३२२९	" १. २. ३.	५१३३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वलोक १.	११११	" ३.	६१३३	एकपक्षि २.	२११६९
ऊर्ध्वसूचिका २.	४१३४८	ऊक्षु १.	२११८६	एकपटलमाली २.	
ऊर्ध्व २.	२११६	" १.	४१४१६	३१३१८५	
ऊर्मि १. २.	४१२१४	ऊक्षुमती २.	४१४१५	एकपद् ३.	५१२६
ऊर्मिका २.	४१२१४४	ऊक्षे ४.	८१८३	एकपदी २.	३११४९
ऊर्मिमत् १. २. ३.	५१४१२३	ऊक्षिज् १.	३१६७८	एकपर्णा २.	१११६१
ऊर्मिला २.	३१६४५	" १.	८१९४४	एकपाटला २.	१११६१
ऊवध्य ३.	३१६२०५	ऊक्ष १. २. ३.	३१८६७	एकपिङ्ग १.	११२५८
ऊष १.	३१८२५	ऊक्षु १.	१११३	एकरूप १. २. ३.	५१४७९
" ३.	३१८१२३	ऊक्षय १.	३१४१४	एकवर्ण १.	३१५३
" १.	५१३२८	ऊक्षयकेतु १.	१११२९	एकविंश १. २. ३.	
ऊषण ३.	३१८७५	ऊक्षयप्रोक्ता २.	३१८३	५११२२	
" १.	५१३२६	" २.	८१२४	एकविंशतितम १. २. ३.	५११२२

एकशततम]

वैजयन्तीकोषः

[ओषधि

ओषधीश]

शब्दानुक्रमणिका

[कटक

एकशततम १. २. ३.	एतर्हि ४.	८१८५
आशर ३	एतश १.	३६११
एकसर्ग १. २. ३.	एतावतिथ १. २. ३.	५११२०
५११२८	एतिन् १.	३६१२०५
एकहायनी २.	एत्थाल १.	४११४४
एकाक्ष १.	एध १.	३६१९६
एकगिन १.	एधस् २.	३६१९६
एकग्र १. २. ३. ५११२८	एधित १. २. ३. ५१११६	
एकान्न १.	एनस् ३.	३७१४७
एकान्नग्रह १.	३.	८३११६
एकान्नल ३.	एरका २.	३३१२३३
एकदश १. २. ३. ५११२१	एरुण्ड १.	३३१६४
एकदशी २.	एलक १.	३३१३६
एकान्त १. २. ३.	एला २.	३३११०३
५१११९	३.	३८१८७
१. २. ३.	एलारसालक ३.	५३१३६
५११२९	एलावालुक ३.	३८१९५
१. २. ३.	एव ४.	८७११८
५११३२	४.	८८११५
एकान्तरितिन् १. २. ३.	एवम् ४.	८७११९
३६१३५	४.	८८११५
एकान्तरिन् १. २. ३.	४.	८८११७
३६१३५	एषण १.	३७११८०
एकायन १. २. ३.	एषणा २.	३८१५०
५११२८	एषणिका २.	३९११९
५११२९	एषमः (-स्) ४.	८९११०
एकावली २.	ऐ	
एकाष्टील १.	ऐ ४	८७१२
एकाष्टीला २.	ऐकागारिक १.	३९१५५
एकाह १.	ऐङ्गुद ३.	३३१२२
एजन ३.	ऐतिह्य ३.	२४१३८
एड १. २. ३.	ऐन्द्र १.	३६१८६
५१११३	ऐन्द्रलुसिक १. २. ३.	४१११४७
एडक १.	ऐन्द्र १.	२३११७
एडगज १.	ऐन्द्री २.	१११६२
३३११५८	२.	२११४
एडमूक १. २. ३. ५१११३	२.	३३११७२
५१११३	ऐरावण १.	१२११२
एडक ३.		
एण १.		
एणीकृत १. २. ३. २४११४		
एत १.		
एतन १.		

ऐरावत १.	१२११२
१.	२११८
३.	२११४९
३.	२२१३
३.	३८१११५
ऐरावती २.	२११४६
२.	२२१५
ऐरुक ३.	३६१८८
ऐरुण्डक १.	४३१४३
ऐलविल १.	१२१५६
ऐलेय ३.	३८१९५
ऐश्वर ३.	३९१५८
३.	३९१११०
ऐश्वर्य ३.	१११४७
३.	८५१३४
ऐह १.	३३११६५
ओ	
ओकस् ३.	४३११९
३.	६३१४
ओष १.	३९११२३
१.	४२१३०
१.	६१११०
ओङ्कार १.	३६१२३३
ओज १. २. ३.	५११२३
ओजस् ३.	६३१४
ओजस्विन् १. २. ३.	३७११५१
ओट्टित ३.	३६१५
ओत १. २. ३.	३९११२
ओतु १.	३४१७१
ओदन १. ३.	४३१७६
ओम् ४.	८७१३
ओराल १.	५३१२०
ओलक १.	३३११५१
१.	५३१४३
१.	५३१४४
१.	५३१४४
ओलहन् १.	३८१४४
ओषक ३.	३७१५६
ओषधि २.	३३१६
२.	३८१७५

ओषधीश १.	२११२५
ओष्ठ १.	४११८७
ओष्ठय १. २. ३.	५१११७
ओष्ण ३.	५३१९
ओसर १.	३८१८४
ओहार १.	४११५०
औ	
औक्षक ३.	५३११०
औजस ३.	३२११८
औसुवय ३.	३६११७८
औदनिक १. २. ३.	४३१२३
औदर १.	४३१८२
औदरिक १. २. ३.	५४१५१
औदुम्बर १.	३६१२२५
औदुम्बरायण १.	३६१८
औदालक ३.	३८१३३६
औपगवक ३.	५१११७
औपयिक १. २. ३.	५४११०३
औपरोधिक १.	३६११९
औपवाह्य १.	३७१६९
औसिका २.	३९११०६
औमीन १. २. ३.	३८१२०
औरञ १.	४३११२९
औरञ्जक ३.	५१११०
औरस १.	४३१४५
और्ध्वरथ्यक १. २. ३.	३६११७
और्व १.	१२१२१
और्वमतिन् १. २. ३.	३६१३५
और्वशेष १.	३६११५१
औलूक १. २. ३.	३६१३२
औशीर ३.	५१११७
३.	७३१५
औषध ३.	३८१७५
३.	४१११४१

औष्टक ३.	५११५
औष्णिह ३.	३६१३४
क	
क १.	१११७
३.	४२१२
१.	८५१३६
कवि २.	४३१२३
कंस ३.	५११५५
१. ३.	६५१११
कंसरिपु १.	१११२६
कंसोत्पल ३.	४२१७२
ककुद १. २.	८५१२८
ककुद ३.	३७१८०
३.	८५१२८
ककुदावर्त १.	३७१९७
ककुदिन् १.	३४१५४
ककुवत् १.	३४१५४
ककुवती २.	४११६४
ककुम् २.	२११२
ककुम् १.	३९११२०
ककुहा २ व.	२११२१
कक्खट १.	५३१५
कक्खटी २.	३२११३
कक् १.	४३१३१
१.	६११३४
१. २. ३.	४४१६७
कक्क ३.	३३११
कक्क २.	३७१८४
२.	४३१३१
२.	६२१७
कक्कपट १.	४३१२९
कक्क १.	२३१३१
कक्कट १.	३७११३
कक्कटीक १.	११११५
कक्कण ३.	४३११३
३.	७३१११
कक्कत १.	४३११२
१. २. ३.	८५१२७
कक्कपत्र १.	३७११८१
कक्कमुख १.	३९११७

कङ्काल १. ३.	४११११४
कङ्कलि १.	३३१४०
कङ्कु २. ३.	३८१५५
कच १.	३५११५
१.	५११९७
कचङ्गला २.	३११४२
कचू १.	३३१२०८
कच्चर १. २. ३.	५४१६६
कच्चित् ४.	८७११९
कच्चोर ३.	३३१२०३
कच्छ १.	४२१३२
१.	४३१३३१
१.	६१११४
कच्छप १.	१२१६०
१.	४११५०
कच्छपी २.	४११११९
कच्छुर १. २. ३.	४४११४५
कच्छुरा २.	३३१२५
२.	३३१२९
कच्छू २.	४४१२३
कच्छूदार १.	३३१५४
(कच्छूदार)	
कच्छूरक १	३३११७
कजल ३.	४३११५७
कन्चुक १.	४११२१
१.	४३१२८
१.	७१११५
कन्चुकिन् १.	३७१२३
कज ३.	४२१३६
१.	४४१९८
कजल ३.	४२१३६
कट १.	३७१७५
१.	३७१२१६
३.	३८१७५
१.	४११२३
१.	४३११२
१.	४३११६६
१.	४४१६५
१. २. ३.	६५११८
१. २. ३.	८५१२७
कटक १. ३.	३२१८

[कटक]

कटक १. ३.	४३१४
" १. ३.	४३१४४
" १. ३.	७५३१
कटक ३.	३८११९
कटकर १.	३५१७
" १.	३५१७६
कटकर्मन् १.	३५१७
कटकी २.	४३२४
कटङ्कटेरी २.	३३२१३
कटम् १.	१११४६
कटभी २.	३३१३९
कटमोष १.	३६२०१
कटशर्करा २.	४११७
कटाटङ्क १.	१११४४
कटाह १.	३३११०
" १.	४३१५६
कटि २.	४३१६४
कटिका २.	३७१९९
कटिन्न ३.	७३११
कटिप्रोथ १.	४३१६५
कटिल्लक १.	३३११६३
कटिल्लका २.	३३११४६
कटिलीर्षक १.	४३१६५
कटिसूत्र ३.	४३११४६
कटी २.	८१२२७
कटीकूप १.	४३१६५
कटीर ३.	७३१६
कटु १.	३३१५३
" १.	३३१२८
" १.	३३२०४
" ३.	३३२१३
" ३.	३८१७९
" ३.	३८१८०
" २.	३८१८६
" १.	३८१३०
" १.	५३२२६
" १.	५३२२६
" १.	५३१४७
" १. २. ३.	६११३७
" १. २. ३.	६४१४
कटुकषायक १.	५३३०

वैजयन्तीकोषः

कटुका २.	३८१५०
कटुकाण १.	२३३३४
कटुक्त १.	५३३३०
कटुतिक्तकषाय १.	
कटुतुम्बी २.	३३११६७
कटुभङ्ग ३.	३३२१४४
कटुम्भरा २.	३८१८६
कटुरोहिणी २.	३८१८६
कटुकट ३.	३३२१३९
" ३.	३८१८०
कटुफल १.	३३१५८
कटुवङ्ग १.	३३३६८
कटुवर ३.	३८१४९
कटुवाङ्ग १.	३३३६८
कटुवार १.	३८१३९
" १.	५३३३२
कटाकु १.	७१११८
कठार १.	३९१३२
कठिञ्जर १.	३३१११८
कठिन १.	५३१४
कठिनी २.	३२११३
कठोर १.	५३१५
कडङ्गर १.	३८१६४
कडम्बक १.	४३१९०
कडार १.	५३११८
कण १.	३५३३०
" १.	४३१७
" १.	४३१७०
" १.	६१११५
कणकुक्कुट १.	३५३३४
कणजीरण १.	३८१८४
कणय १.	३७१६७
कणा २.	३८१८४
कणि १.	२४२
कणिका २.	३९२५
" २.	३९१२०
" २.	७२४
कणिश ३.	३८१६४
कण्टक १.	२३११५
" १.	३९१८४

[कतुण]

कण्टक १.	७१११४
कण्टकच्छेदन १. ३७१६५	
कण्टकप्रतीसार २.	
	३७१५३
कण्टका २.	२३१४७
कण्टकानना २.	२३१४७
कण्टकारी २.	५३१०५
कण्टकाली २.	५३१०६
कण्टकिन् १.	३३१५०
" १.	३३३६४
कण्टकिफल १.	३३३७४
" १.	३३१४१
कण्ट १. २. ३.	४३१८३
" १.	६११३३
कण्टकूणिका २.	३९११७
कण्टदोष १.	३९११२
कण्टपाल १.	२३२२६
कण्टभूषा २.	४३१३७
कण्टमणि १. २.	४३१७०
कण्टीरव १.	३३२
कण्टकाल १.	१११४५
कण्टेगुड १.	४३१७०
कण्डन ३.	४३३६६
" ३.	४३३६७
कडार ३.	४२३९
" १.	५३१३३
कण्डू २.	४३१२४
कण्डूति २.	४३१२४
कण्डूयन ३.	४३१२४
कण्डूया २.	४३१२४
कण्डूर १.	३३२०८
कण्डूरा २.	३३१२९
कण्डोल ३.	४३३६४
कण्डोलवीणा २.	३९१२७
कण्व १. २. ३.	५३१३३
कत ३.	४२११
कतक १.	३३३२
" ३.	३८१५०
कतिथ १. २. ३.	५३१२०
कतिपयथ १. २. ३.	५३१२०
कतुण ३.	३३३३४

[कथम्]

कथम् ४.	८१२०
कथा २.	२४३८
" २.	३९१४२
कथाप्रसङ्ग १. २. ३.	
	८४१३३
कथित १.	५३१५८
कदध्वन् १.	३११५०
कदन ३.	३७२१५
कदन्निका २.	३६३१
कदम्ब १.	३३३६०
" १.	३३३६७
कदम्बक १.	३८१४१
" ३.	५११२
कदर १.	३३३६३
" १.	४३१२३
कदर्य १. २. ३.	५३१५९
कदल १.	३३१७३
कदलि २.	३७८६
कदली २.	३३१७४
" २.	३४१८
" २.	३४२५
कदाचित् ४.	८१८
कदुष्ण ३.	५३१९
कदु १.	५३१८
कद्वद १. २. ३.	५३२५
" १.	५३१७
कनक ३.	३२१९
कनकाली २.	२३२१
कनिष्ठ ३.	३८१२२
कन्दर्प १.	१११२७
" ३.	४३३१
" १. २. ३.	५३३१
" १. २. ३.	७३१९
कनिष्ठा २.	४३२७
" २.	४३७४
कनीनिका २.	४३७४
" २.	४३९४
कनीयस् १. २. ३.	७५१९
कनीयस ३.	३२२४
कन्तु १.	६११२
कन्थटिका २.	४३१२८

शब्दानुक्रमिका

कन्था २.	४३३७
" २.	४३१२८
कन्द १. ३.	३३२०८
" १. ३.	४२४२
" १. ३.	४३१९०
" १.	८६२५
कन्दर १. २. ३.	३२३६
" १.	३३३३०
" १. २. ३.	८१३७
कन्दराल १.	३३१५९
कन्दरी २.	८१३७
कन्दल १.	३३२१०
" १.	८१३१
" १. २. ३.	८१३८
कन्दली २.	३३२१०
" २.	८१३८
कन्दु १.	४३१५६
" १. २. ३.	८१२७
कन्दुक १.	४३१६२
कन्दोब्ज ३.	४२३४
कन्दोष्ठ ३.	४२३४
कन्धरा २.	४३१८३
" २.	४३११७
कन्यका २.	४३१६
कन्यसा २.	४३२७
कन्या २.	३३३६७
" २.	३३१८८
" २.	४३१६
" २.	८६१४
कन्याकुब्ज १.	४३३७
कन्यापिपीलिका २.	४३३७
कन्याप्रसूतिजा २.	३६३८
कप १.	३३३७२
(कृपा)	
कपट १. ३.	३६१९५
कपर्द १.	१११५०
" १.	४३१५७
कपर्दिन् १.	१११४०
कपाल १. २. ३.	४३१५९
" १. ३.	४३११५
कपालिन् १.	१११४०

[कपोल]

कपालिनी २.	११३६४
कपाली २.	४३१५९
कपि १.	३३३३९
" १.	३७६१
" १.	६११३३
" १.	८१११०
कपिकच्छू २.	३३१२९
कपिकोडा २.	३३१७९
कपिञ्जल १.	२३२०
कपिस्थ १.	३३३३२
(कृप)	
कपिस्थपत्नी २.	३३१५७
कपिप्रिया २.	३३३८१
कपिल १.	११३३०
" १.	११३१
" १.	३३३६९
" १.	३८११०
" १.	५३११८
कपिला २.	२११९
" २.	३२२७
" २.	३३१२२
" २.	३३३३३
" २.	३८१५५
कपिलोहक ३.	३२२७
कपिवल्ली २.	३८१७८
कपिश १.	३९१४८
" १.	५३११८
कपिश २.	४३३६
कपी २.	३७१५६
कपीतन १.	३३३३१
" १.	३३१५९
" १.	३३३७२
कपोत १.	२३२३
" १.	३८१२९
" १.	५३१२२
" १.	७१२०
कपोतपाली २.	४३१५३
कपोताङ्घ्रि २.	३८१००
कपोताञ्जन ३.	३२३२
कपोल १.	४३१९०
कपोल २.	३८३६६

[कप्याख्य]

वैजयन्तीकोषः

[कर्क]

कप्याख्य १.	३१८११०	करक १.	२१२७
कफ १.	४१४१२१	" १.	३१३२५
कफणि १. २.	४१४७२	" १.	३१३७२
कफहरी २.	३१८१८	" १.	४१३५७
कफिल १.	३१९११३	" १.	४१३३७
कफोणि १. २.	४१४७२	करकवर्तिका २.	४१३६०
कबत १.	४१३१०१	करङ्क १.	४१३५८
कबन्ध १. ३.	३१७२१६	" १.	४१३१०७
कबरी २.	४१४१००	" १.	४१३११४
कबल १.	४१३१०१	करज ३.	३१८१९९
कबली २.	४१३१११	" १.	४१३७६
(कपिली)		करञ्ज १.	३१३६२
कम् ४.	८१७३	करञ्जक १.	३१३१०७
कमठ १. २. ३.	७१५२०	कर्कट १.	२१३१७
कमण्डलु १.	३१६१२४	" १.	३१७७५
" १. ३.	८१९३१	" १.	३१८११६
कमन १. २. ३.	५१३३४	" १.	७१५२१
कमनीय १.	३१३८२	करटा २.	३१४४९
कमल ३.	३१८१२	करण १.	३१५१७
" ३.	४१३३९	" १.	३१५५५
" १. २. ३.	७१५२६	" १.	३१५७४
कमलच्छद १.	२१३३१	" १.	३१५१०३
कमितृ १. २. ३.	५१३३५	" ३.	३१६६०
कमुजा २.	४१४१०२	" ३.	३१६२१०
कम्प २.	३१८८९	" १.	३१९२३
कम्पिल्ल १ व.	३१३९५	" ३.	३१९९८
कम्प १. २. ३.	५१४७९	" ३.	४१४५२
कम्बर १. २. ३.	५१४७८	" १.	४१४७१
कम्बल १.	४१३१२९	" ३.	७१३९
कम्बु १.	३१७६२	करणीपरिवर्तन ३.	
" १. २. ३.	४११५५		३१९१४१
" १. २.	६१५९	करण्डी २.	३१९३३
कम्बुग्रीवा २.	४१४८४	करपत्र ३.	३१९३६
कम्बोज १.	३१३७०	करपोणि १.	४१४७१
कम् १. २. ३.	५१३३५	करभ १.	३१६६७
कर १.	३१७४५	" १.	३१६६७
" १.	३१८३३	" १.	४१४७५
" ३.	४१३७६	" १.	७१११९
" १.	४१४७३	करमर्द १.	३१३८३
" १.	६१११०	करमर्दिका २.	३१३८४
" १.	८१९१२	करम्ब १.	४१३१०६

[कर्कट]

शब्दानुक्रमणिका

[कलकण्ठ]

कर्कट १.	४११४६	कर्णिका २.	३१७७१	कर्मव्यवृत्त १. २. ३.	
कर्कटस्कन्ध १.	२१३३१	" २.	३१८६७	पाश्या २.	२१९६
कर्कटि १.	३१३१६६	" २.	३१९३०	कर्मदेव १.	१११६
कर्कटिनी २.	३१३२१३	" २.	४१२४६	कर्मन् ३.	३१३३७
कर्कट १. २.	७१३२७	" २.	४१३३३	(कर्मठ)	
कर्कट १.	४१३१०९	कर्णिकार १.	३१३७२	" ३.	३१९८
कर्कटाल १.	४१३१८	कर्णिकारल १.	३१३१८२	" ३.	५१२९
कर्कटी २.	४१३१७	कर्णिकारिथ १.	३१७१२६	" ३.	६१३४
कर्कश १.	३१३१९५	" ३.	३१७१२७	" १. ३.	८१९३१
" १.	३१३१६५	कर्णजप १. २. ३.	५१३२५	कर्मन्दिन् १.	३१६१६०
" १.	५१३३	कर्तन ३.	३१७१११	कर्मफल १.	३१३३७
" १. २. ३.	७१४८	" ३.	३१९१०	कर्मसेव १.	५१३९
कर्कशिन १.	३१३७४	" १.	३१९३६	कर्मरङ्ग १.	३३३७
कर्कशी २.	३१३८९	कर्तनभाण्ड ३.	३१९९	कर्मयत् १. २. ३.	५१४७४
कर्कश १.	३१३१६८	कर्तनी २.	३१९२६	कर्मवाटी २.	२१९३९
" १.	३१३१६९	कर्तरी २.	३१७१८५	कर्मशाला २.	४१३२३
कर्कोट १.	३१३१६४	" २.	३१९३७	कर्मशील १. २. ३.	
कर्कोटकी २.	३१३१६१	" २.	४१३१०८	पाश्या २.	२१९६
कर्ण १. २. ३.	३१३५९	" २.	७१३३	कर्मशूर १. २. ३.	५१४७२
" ३.	४१२१७	कर्तृ १.	३१३३७	कर्मसाक्षिन् १.	२१११३
" ३.	४१३९२	कर्त्रिका २.	३१९२६	कर्दार १.	३१३२१४
कर्णजमल १.	४१३९२	कर्दम ३.	२१३८	" १.	२१९१६
कर्णजलका २.	४१३३३	कर्दम १.	३१८२५	कर्दारिणी २.	२१९३३१
कर्णजाह ३.	८१९१६	कर्पट १.	४१३१३०	कर्मिन् १. २. ३.	५१४७४
कर्णधार १.	४१२१९	कर्पर १.	४१३५६	कर्मी २.	६१२७
कर्णपूर १.	३१३७०	" १.	४१३५९	कर्वेट १. ३.	४१३३
" १.	५१३३४	" १.	४१३१५	कर्वेट ३.	४१३३
" १. ३.	८१५६	" १.	७१११९	कर्प १. ३.	५१३४९
कर्णपूरक १.	३१३४०	कर्पराल १.	३१३४६	कर्पक १.	२१३३२
" १.	३१३१००	कर्परी २.	३१३४३	" १.	३१७११७
कर्णभूषण ३.	४१२३४	" २.	४१३१००	" १. २. ३.	३१८८
" ३.	४१३१३३	कर्पूर १.	३१८१०५	कर्पफल १.	३१३१७६
कर्णमोटी २.	११३६४	कर्तुर ३.	३१२२०	कर्पफला २.	३१३१७७
कर्णललिका २.	४१३९३	" १.	५१३२४	कर्पण १.	३१८१५
कर्णविहीन १. २. ३.		कर्मकर १. २. ३.	२१५५	कर्पू १. २.	४१२२९
		" १. २. ३.	५१४७३	" १. २.	६१५१८
कर्णवष्टन ३.	३१७८७	कर्मकार १. २. ३.	५१४७३	कल १. २. ३.	२१३१३
कर्णशङ्कुली २.	४१३९३	कर्मक्षम १. २. ३.	५१४७२	" १.	३१९१२१
कर्णाक १.	४१३१३४	कर्मठ १. २. ३.	५१४७२	" १. २. ३.	५१४१४
कर्णाक ३.	३१६२१			कलकण्ठ १.	२१३२७
" ३.	४१२४६				

[कलकल]

कलकल १.	२१४२७
कलकल १.	८११२०
कलकल १.	७१११७
कलकल २.	४४४३५
" २.	४४४६४
" २.	७३३६
कलधौत २. २.	८११५५
कलपाठक १.	२११२३
(कलपाठक)	
कलभ १.	२१७६६
कलम १.	२१८३४
" १.	७१११८
कलम्ब १.	२१७१७९
" १. २. ३.	८११२६
कलम्बी २.	२१३१४९
कलम्बू २.	२१३१४९
कलरव १.	२१३१४
कलल २.	४३३६२
" १. २.	४४११८
" २.	४४११०८
कलविक्र १.	२१३१८
" १.	२१३१९
कलश १.	२१५२६
" १.	२१५३३
" १. २. ३.	४३३५८
" १.	५११५५
" १. २. ३.	८११३७
कलशि २.	२१३१३६
कलशी २.	४३३५८
कलशीनक १.	२१३२४
कलशीपुत्र १.	२१६१५१
कलशीमुख १.	२१५१२४
कलशोदक १.	२१३१८९
कलशोदधि १.	२११११
कलह १.	७१११७
कलहंस १.	२१३१८
" १.	८११२०
कलहप्रिय १.	११३१७
कला २.	२११५३
" २.	२१२१२
" २.	२१८१५

वैजयन्तीकोषः

कला २.	२१९१८
" २.	४३३३८
" २.	४३३५५
" २.	५११३६
" २.	५२१७
" २.	६२११०
कलाद १.	२१९१६
कलानिधि १.	२११२६
कलाप १.	७१११५
कलापक १.	२१३३९
" १.	२१७१३
" १.	२१८३४
" १.	२१८७६
" १.	५३३४१
कलापिन् १.	२१३२८
कलापिनी २.	१११६०
कलाय १.	२१८३३
कलावती २.	२१९११९
कलाह १.	२१७१०३
कलि १.	२१२१२
" १.	२१३१७५
" १.	२१७२०४
" १.	२१९६२
" १.	६१११७
कलिका २.	२१३१९
कलिकारक १.	२१३६२
कलिङ्ग १.	२१३२७
" १ ब.	२११४०
" १.	७१५३३
कलिङ्गक १ ब.	२११२६
कलित १. २. ३.	७१४१९
कलिदुम १.	२१३१७५
कलिल १. २. ३.	७१५३१
कलुष १.	२१४१९
" १.	२१५१४
" ३.	४३३४
" १.	५३३३४
" १.	५३३३९
कलुषी २.	२१८१८
कलेवर २.	४३३५२
कलेवरा २.	११३४९

[कविका]

कलक १. ३.	६१५१०
कलकत्व ३.	२१९१८५
कलिकन् १.	१११३१
कल्प १.	२११२३
" १.	२३३१९१
" १.	२३३२८
" १.	२३३१३३
" १.	६१११६
कल्पन ३.	२१११०
" १.	४३३४६
कल्पना २.	२१७१०
" २.	७३३४
कल्पवृक्ष १.	१३३१४
कल्पपाणि १.	२१९१४
कल्पान्त १.	२११९४
कल्पम ३.	२३३१६८
कल्पमाष १.	५३३२४
" १. २. ३.	७३३१०
कल्प्य १. २. ३.	४३३४३
" १. २. ३.	६३३३
कल्या २.	२३३१८
" २.	२३३४५
कल्याण ३.	२३३६२
" १. २. ३.	५३३४२
" २. ३.	७५३२१
कल्यापाल १.	२१९४४
कल्लोल १.	४३३१४
कलह १. २. ३.	२३३१५
कलहार ३.	४३३३५
कव १.	२३३१
कवक १.	२३३१५२
कवच १. ३.	२३३१५२
कवचित १. २. ३.	
	२३३१४२
कवट १.	२३३२४
कवाट ३.	४३३४३
" १. ३. ३.	४३३४६
कवि १.	२३३३४
" १.	२३३५३
" १.	६३३१२
कविका २.	२३३१३

[कविय]

कविय १. ३.	२३३११३
कवी २.	२३३११३
कवोष्ण ३.	५३३९
कव्यवाहन १.	१३३२२
कश १.	२५३२०
" १.	४३३२७
कशप १.	४३३५०
कशा २.	२३३११४
कशिपु २.	५३३१६
" १. ३.	७५३२०
कशेरु ३.	४३३४७
" २. ३.	४३३१५५
कश्मल ३.	२३३२००
कश्य ३.	२३३११०
" ३.	२३३१४५
" ३.	६३३१२
कष १.	२३३१९
कषाय १.	२३३२१७
" १.	४३३१४१
" १. ३.	५३३२७
" १. ३.	७५३२२
कषायक १.	५३३४७
कषायतिलवण १.	
	५३३३६
कषायिका २.	२३३४६
कषिका २.	७३३४
कष्ट १. २. ३.	१३३३९
" १. २. ३.	६३३३
कस्तभिन् १. ३.	
	२३३१३१
कस्तूरि ३.	२३३३२
कस्तूरिका २.	२३३१०४
कस्तूरी २.	२३३३५
" २.	२३३३६
कहाला २.	२३३१२६
कह्ल १.	२३३१०
कांस्य ३.	२३३२८
कांस्यताली २.	२३३१२४
कांस्यपात्रक ३.	४३३६१
काक १.	२३३१५

शब्दानुक्रमिका

काककञ्ज २.	२३३५९
काकचिञ्जा २.	२३३१८०
काकजञ्जा २.	२३३१११
" २.	२३३१८०
काकजम्बू २.	२३३१९३
काकणी २.	७३३६
काकतित्ता २.	२३३१८०
काकतिन्दुक १.	२३३११
काकतुण्ड १.	२३३१०८
काकतुण्डिका २.	२३३१८७
काकदन्ता २.	२३३१८०
काकनखी २.	२३३१८०
काकनासा २.	२३३११२
" २.	२३३१९३
काकपक्ष १.	५३३१०२
काकपीथी २.	२३३१८०
काकपीलु १.	२३३१५१
" २.	२३३१८०
काकपुष्ट १.	२३३२६
काकमर्दक १.	२३३१८०
काकमाची २.	२३३११२
काकमाली २.	२३३१८४
काकर्द १.	२३३१५०
काकली २.	२३३११४
काकशीर्ष १.	२३३१९३
काकाङ्गी २.	२३३११२
काकाणती २.	२३३१८०
काकाणन्ती २.	२३३१८०
काकाण्ड १.	२३३१४७
काकादनी २.	२३३१८०
काकारि १.	२३३२२
काकी २.	२३३११२
काकु २.	२३३१७
काकुद ३.	४३३८९
काकुन्दी २.	४३३९
काकेन्दु १.	२३३१५१
काकोदर १.	४३३१२
काकोदुम्बरिका २.	
	२३३१११
काकोल १.	२३३११७
" १.	४३३२४

[कानना]

काकोली २.	२३३११२
" २.	२३३१५०
काकोलूकिका २.	८३३१७
काकी २.	२३३१६
काकीव १.	२३३१५६
काङ्गा २.	२३३१७९
काच १.	२३३१७
" १.	५३३२२
" १.	६३३१५
काचमालिका २.	२३३१४६
काचर १.	५३३२२
काचस्थाली २.	२३३१९०
काचित १. २. ३.	
	५३३११६
काचिम ३.	४३३१४
काञ्चन ३.	२३३१९
काञ्चनार १.	२३३१४८
काञ्चना १.	२३३१७७
काञ्चनी २.	२३३२७
" २.	२३३२११
काञ्चिक ३.	४३३८१
काञ्ची २.	४३३१४६
काञ्चीपद ३.	४३३१४४
काटिका २.	२३३११
काण १. २. ३.	५३३१३
काणमारिष १.	२३३१५१
काणा २.	२३३१७
काण्ड १. ३.	२३३१६३
" ३.	४३३३१
" १. २. ३.	६३३११
काण्डपट १.	४३३१२४
काण्डपृष्ठ १. २. ३.	
	२३३१४३
" १. २. ३.	८३३१६
काण्डवीणा २.	२३३१२८
काण्डी २.	२३३१७८
काण्डीर १. २. ३.	
	२३३१४४
" १.	२३३१७८
कण्डेचु १.	२३३१०१
कातना २ ब.	२३३११९

[कातर]

कातर १. २. ३.	५४११८
„ १. २. ३.	७५३२
कातुलक १.	३३१८५
कात्यायन १.	३३१५८
कात्यायनी २.	१११६२
„ २.	४३११४
कादम्ब १.	३३१८
„ १.	७१११९
कादम्बरी २.	३११४६
कादम्बिनी २.	२१२२
कान ३.	२१४२
कानन ३.	३३११
कानीन १.	४३१४३
कान्त १.	३३१८२
„ १.	३३१८५
„ ३.	३३१२३
„ १. २. ३.	५४१७०
कान्तनाला २.	३३१८७
कान्ता २.	४३१५
कान्तार १.	३३१२६
„ १. ३.	७५३२
कान्तारवासिनी २.	१११६६
कान्ति २.	६१२८
कान्दविक १. २. ३.	४३१९२
कान्दशीक १. २. ३.	३३१९७
कापटिक १.	३३१२७
„ १. २. ३.	५४१२३
कापथ १.	३११५०
कापिशायन ३.	३११४४
कापिशेय १.	१३१४
कापोत १.	३३१२५
„ ३.	५११६
कापोताञ्जन ३.	३२१४२
काम १.	१११२७
„ १.	३३१५४
„ १.	३३१७९
„ १.	६१११७
कामकेलि २.	४३१७०

वैजयन्तीकोषः

कामध्वज १.	२१११३७
„ १.	४३१६९
कामन १. २. ३.	५४३३४
कामपद ३.	४३१६१
कामपाल १.	१११२४
कामम् ४.	४३१६०४
कामयितृ १. २. ३.	५१३५
कामरूप १ ब.	३११२९
कामरूपिणी २.	३११२३
कामरूपिन् १.	३३१५
कामल १. २. ३.	४३१३२
कामचक्रिया २.	४३१६९
कामाङ्ग १.	३३१२५
कामारि १.	१११४१
कामिक १.	३३३३२
„ १.	३३१९८
कामिकान्त ३.	३११४८
कामिन् १.	३३१६६
कामिनी २.	४३१५
कामुक १. २. ३.	५४३३५
कामुका २.	४३१५१
कामुकी २.	४३१११
कामोत्सव १.	४३१६७
काम्बल १. २. ३.	३३१२९
काम्बविक १.	२१११७
काम्बोज १.	३३१९५
काम्बोजी २.	३३११०७
काम्य ३.	३३२२५
काम्यदान ३.	३३१२०
काम्रा २.	३३११४
काय १.	४३१५३
„ १. २. ३.	६१११७
कायमान ३.	४३३३३
कायस्थ १.	३३२२३
कायाङ्ग ३.	३३२०४
कयिका २.	३३१५
कारक ३.	७३१७
कारकुत्सीय १ ब.	३३१३८

[कार्पासी]

कारण ३.	३३११६
„ ३.	७३१७
कारणा २.	११२३९
कारणिक १. २. ३.	५४३३०
कारणध्व १.	२३३११
कारम्भा २.	३३३६६
कारवाही २.	३३३११०
कारवी २.	३३१८५
„ २.	३३१९०२
„ २.	३३१३२२
„ २.	३३१३२९
कारवेष्ट १.	३३३६३
कारा २. १.	६५१०
कारावर १.	३३५४२
„ १.	३३५४३
कारि २.	८११५
कारिका ३.	१३३३२
„ २.	३३८६
„ २.	८१२५
कारिष ३.	५११३३
कारु १.	१३३४
„ १.	३३५५८
„ १.	३३१७
„ १.	६११५५
कारुज १.	७१११८
कारुण १. २. ३.	५४३३८
कारुणिक १. २. ३.	५४३३८
कारुण्य ३.	३३३९२
कारुबिन्द १.	३३५७
कारोत्तर १.	३३१५२
कार्तस्वर ३.	३३११८
कार्तान्तिक १.	३३२२५
कार्तिक १.	२११६६
कार्तिकिक १.	२११६६
कार्तिकी २.	२११७७
कार्तिकेय १.	१११५६
कार्पास १.	३३१०६
„ १. २. ३.	४३३१७
कार्पासतूल १.	३३१९
कार्पासी २.	३३३९९

[कर्म]

कर्म १. २. ३.	५४३७२
कर्मण ३.	३३११७
कर्मुक ३.	३३१७२
„ ३.	७३३६
कार्य ४.	३३३२३६
कार्वट ३.	४३३३
कार्वटिक ३.	४३३३
कार्पाण १.	५१३९
„ १.	५१३८
कार्पिक १.	५१३९
„ १.	५१३९
„ १.	५१३९
कार्पा ३.	३३१९०
(कर्पा)	
कार्पासी २.	३३३५७
कार्पास्य १.	३३३५७
कर्पास्य १.	३३३३८
काल १.	१३३३५
„ १.	२११५२
„ ३.	३३३३३
„ १.	५३३११
„ १.	६१११५
कालक १.	४३३९७
कालकण्डक १.	३३३३६
कालका २.	३३३२०
(कालिका)	
कालकिञ्च १.	३३५८
कालकुण्डक १.	३३५२९
कालकुन्ध १.	११११४
„ १.	११३३५
कालकूट १.	४३३२२
„ १.	४३३२३
„ १.	८१३३१
कालकूणिका २.	३३३१७८
कालकण्ड ३.	४३३१३
कालधर्म १.	३३३२०१
कालनिर्यास १.	३३३५३
कालपर्णी २.	३३३२२
कालपुच्छ १.	३३३२९
कालपूर १.	३३३३३
कालपूरक १.	३३३३३

शब्दानुक्रमणिका

कालभाग १.	३३७८
कालमालक १.	३३३२२
कालमेषिका २.	३३३१८१
कालमेषी २.	३३३१०८
कालरात्री २.	११३६१
कालवृन्ती २.	३३३१७९
कालशीनक १.	३३३२५
कालशेय ३.	३३३४८
कालस्कन्ध १.	३३३५१
„ १.	३३३८७
काला २.	३३३१२
„ २.	३३३३८
„ २.	३३३८५
कालाग्रह ३.	३३३०८
कालाची २.	३३३२०९
कालानुसार्य ३.	३३३९६
„ ३.	४३३१५४
कालायस ३.	३३३३४
कालावलोलक १. २. ३.	३३३३५
कालिक १.	३३३२२
कालिका २.	३३३३६
„ २.	३३३४९
„ २.	३३३११
„ २.	३३३८५
„ २.	३३३८१
कालिङ्ग १.	३३३६२
„ १.	३३३६९
कालिङ्गी २.	३३३६९
कालिनी २.	२१३४०
„ २.	४३३९९
कालिन्दी २.	४३३२५
कालिन्दीकर्षण १. ११३३३	
काली २.	११३४९
„ २.	१३३३०
„ २.	२३३२
„ २.	३३३१७
„ २.	३३३१०४
„ २.	३३३२७
„ २.	३३३७७

[काष्ठीला]

काली २.	३३३९१
कालीची २.	१३३३६
कालेय २.	३३३१७६
„ २.	३३३२३३
„ ३.	४३३१५४
कालोच्चिन् १.	२१३८९
कालोदक १.	३३३१५
कालिक १.	३३३७३
काल्य ३.	२३३६९
काल्यक १.	३३३१७
कावचिक ३.	५१३११
कावाट १.	३३३१९९
कावातायनिका २.	४३३३८
कावेर ३.	३३३८०
कावेरी २.	४३३२८
काव्य ३.	२३३४२
काश १. ३.	३३३२७
काशशाकट १. २. ३.	३३३२०
काशशाकिन् १. २. ३.	३३३२०
काशि १ ब.	३३३४०
„ १.	३३३२७
काशिका ३.	४३३७
काश्मीर १ ब.	३३३२७
„ ३.	३३३८८
काश्मीरज ३.	३३३१७
काश्मीरी २.	३३३९८
काश्यप ३.	४३३१०६
काश्यपसुत १.	११३३७
काश्यपी २.	३३३१४
काष्ठ ३.	३३३३३
काष्ठतलू १.	३३३३४
काष्ठा २.	२३३३३
„ ३.	६३३८
काष्ठाशुवाहिनी २.	४३३१५
काष्ठी २.	३३३१७५
काष्ठीला २.	३३३९१
„ २.	३३३१७३

काष्ठेयधन]

काष्ठेयधन ३.	३१६१७
काष्मरी २.	३१६१७
कासनुद् १.	३१६१२७
कासमर्दक १.	३१६१५४
कासर १.	३१६१९
कासार १.	३१६१९
कासू २.	३१७१६६
" २.	३१७१८
काहला २.	३१९१२६
किंवदन्ती २.	२१७१३९
किशारू १.	७१११९
किशुक १.	३१३२९
" १.	३१३७८
" १.	४१११४
किक्कीदिवि १.	२१३२९
किक्कीसाद १.	४१११५
किखि २.	३१४३९
किङ्कर १.	३१९३३
किङ्किणी २.	४१३१४५
किङ्किराट १.	३१३१८९
किङ्किरात १.	३१३१८९
किङ्किर १.	२१९१२९
" १.	७१३२२
किञ्चन ४.	८१८१२
किञ्चित् ३. ४.	३१६१६
" ३.	५१४१३६
" ४.	८१८१२
किञ्जलुक १.	४१११५९
किञ्जोल १.	४१२४६
किञ्ज १ ब.	३११२८
किञ्जलुक १.	४१२४५
" १. ३.	७१५३१
किट १.	३१५२१
किटि १.	३१४६
किट्ट १. ३.	४१४१२०
किट्टिभ ३.	४२३
किण १.	३१६२२१
" १.	३१७२१७
किणिही २.	३१३११५
" २.	३१३१३३
किण्व ३.	३१९५०

वैजयन्तीकोषः

किण्व ३.	३१३१५
कितव १.	३१३१७६
" १.	३१९१५८
किदिर १.	३१३१७०
किनाटक ३.	३१३१४
किन्नर १.	१३३३
किन्नरी २.	३१९१२८
किन्नरेश्वर १.	१३३१५५
किम् १. २. ३.	८१४१६
" ४.	८१७३३
" ४.	८१८१२
किमिला २.	४१४२०
किमु ४.	८१८१२
किमुत ४.	८१८१४
किम्पचान १. २. ३.	
किम्पाक १.	५१४१५९
किम्पुरुष १.	३१३१८०
" १.	१३३३
" १.	३११६
कियदेतिका २.	३१६१६६
(कियदेहिका)	
कियाह १.	३१७१०१
किरण १.	२१३१६
किरात १.	३१५४६
" १. २. ३.	५१४१५
किरातज ३.	३१८११४
किरि १.	३१४६
" २.	३१७१७८
किरिभ १. २. ३.	५१४१९
किरीट ३.	४३३१३५
किरीटिन् १.	३१७३२
किर्मीर १.	५३३२३
किल ४.	८१७१९
किलास १. २. ३.	
किलासधन १.	५१४१४४
किलासिन् १. २. ३.	३१३१६४
किलासिन् १. २. ३.	४१४१४६
किलिकिञ्चित ३.	३१९१९४
किलिञ्ज १.	४३३१६६
किलिञ्ज ३.	८१४१६

[कुकर

किह्ली २.	३१७१८०
किशालिन् १.	१२१५७
किशोर १.	३१७१०७
किण्कु १.	३११५४
" १.	३११५६
" १. २.	६१५१९
किसल १.	३१३१७
किसलय ३.	३१३१७
किसिट्टक १.	३१७१०९
कीकट १ ब.	३१३३१
कीकस १.	४१३३९
" ३.	४१४१०८
कीचक १ ब.	३१३२१५
कीट १.	४१३३९
कीन ३.	४१४१०७
कीनाश १.	१२३३५
" १.	५३३२१
" १. २. ३.	७१५२३
कीर १.	२३३२५
" १ ब.	३१३२७
कीर्ण १.	४२३७
कीर्णजल १.	४२३८
कीर्ण २.	६२३६
कीर्ति २.	२१४३६
" २.	६२३६
कीर्त्ता २.	२३३२४
कील १. २.	१२३२९
" १.	३१७८५
" १. ३.	३१७१३१
" १. २. ३.	
कीलक १.	४१४१२३
कीला २.	१२३२९
कीलाल ३.	७३३७
कीलित १. २. ३.	५१४१७
कीलिनी २.	३११४
कीलुष १.	३१५१४
कीश १.	३१४३९
कु २.	३१११
" ४.	८१७३३
कुकर १. २. ३.	५१४१४

कुकुण्ड]

कुकुण्ड १.	३१३१५२
कुकुन्दर ३.	४१४६५
कुकुल १. ३.	७१५२४
कुक्कुट १.	२३३१३
" १.	२३३३२
" १.	२३३४०
" १.	३१३१४९
" १.	३१५२३
" १.	३१५५५
" १.	३१५९६
" १.	३१५९६
" १.	४१४१३४
कुक्कुटध्वज १.	१२१५७
कुक्कुटाक्ष १.	३३३१६८
कुक्कुटि २.	३१६१९६
कुक्कुर १.	३१४६९
" ३.	३१८१२
कुक्किक १.	४१४६७
कुक्किकृजित ३.	२१४८
कुक्किभरि १. २. ३.	
कुक्क्यगिनि १.	१२३२१
कुक्कण १.	३१५४३
कुक्कुम ३.	३१८११६
कुङ्कुणी २.	२१९१२८
कुच १.	४१४६८
कुचन्दन ३.	३१८११४
" ३.	३१८११५
कुचर १. २. ३.	५१४४८
कुचार १.	३१४७२
कुज १.	२१३३१
" १ ब.	३१३२९
" १.	३१३१५
कुञ्जिका २.	४१३४९
कुञ्जित १. २. ३.	५१४१२३
कुञ्ज १.	३१२१०
" १. ३.	६१५२३
कुञ्जना २.	२१४२७
कुञ्जर १.	३१७६१
कुञ्जल ३.	४१३८२
कुञ्जिका २.	३१९१३५

शब्दानुक्रमणिका

कुट १.	३१५१३
" ३.	३१८११९
" १.	४३३१०८
कुटच १.	३३३७३
कुटज १.	३३३७३
कुटन्नट १.	३३३६८
" ३.	३३३२०१
कुटपुरि १.	२३३३२
कुटर १.	३३३२
कुटि २.	३३३३४
" १. २. ३.	६१५२४
" १. २. ३.	८१९२६
कुटिल १. २. ३.	५१४१२१
" १. २. ३.	८१९२४
कु. टीर	४३३२७
" २.	८१९२६
कुटीर १.	४३३२७
" १.	७१३२०
कुटुम्ब ३.	४१४११
कुटुम्बध्यापृत १. २. ३.	
कुटुम्बिका २.	३३३१८७
कुटुम्बिनी २.	४१४२१
कुटुम्बन्ती २.	३१७१६४
कुटुम्बित ३.	३१९१५
कुट्टार १.	३२३१
कुट्टिनी २.	४१४२५
कुट्टिम १. २.	४३३३२
कुट्टीर १.	३२३१
कुट्टमल १. ३.	३३३१९
" ३.	३३३२१५
कुठ १.	३३३१५
कुठरुणा २.	३३३१३८
कुठार १.	३१९३२
" १. २. ३.	३१९३६
कुठेरक १.	३३३११८
कुड १.	१२३१५८
कुडङ्ग १. ३.	३२३१०
कुडप १.	५११५३
कुडुम्बिनी २.	४१४२१
कुड्य १. ३.	४३३३७

[कुदर

कुड्यमश्या २.	४१३३१
कुण १.	३३३१५
कुणप १.	३३३२१६
" ३.	४३३११८
कुणि १.	३३३८५
" १. २. ३.	५१४१४
कुण्ट १. २. ३.	५१४७४
कुण्ड १.	३१५६०
" ३.	३३३२०९
" ३.	४३३८१
" ३.	६३३१५
कुण्डगोलक १.	३१५६१
कुण्डधान्य १.	३३३४१
कुण्डनी २.	४३३२५
कुण्डल १.	३३३१६३
" ३.	४३३१३५
कुण्डलिन् १.	४११५
" १. २. ३.	७१५२५
कुण्डली २.	३३३१३१
कुण्डिका २.	३३३१२४
कुण्डिन् १.	३३३९०
कुण्डणाची २.	३३३२६
" २.	४१३३१
कुतनु १.	१२३१५५
कुतप १.	३१९१४०
" १.	७१५२९
कुतपविन्यास १.	
	३१९१४०
कुतुप १.	४३३३०
कुतूर २.	४३३६०
कुतूहल ३.	३३३१८७
कुत्रफला २.	३३३६०
कुत्स १.	३११५५
कुत्सना २.	२१४३३
कुत्सा २.	३३३१९३
कुत्सित १. २. ३.	५१४७५
कुत्सिता २.	३३३१५०
कुथ १.	३३३२२७
" १.	३१५२३
" १. २. ३.	४३३१६६
कुदर १.	३३३११

[कुदानव]

कुदानव ३.	३१३२३२
कुधान्य ३.	३१८६३
कुध १.	३१२२
कुनटी २.	३१२११
” २.	३१२१७
कुनालिका २.	३१३२१
कुनाशक १.	३१३१२६
कुन्त १.	३१७१६५
कुन्तल १ व.	३१३३३
” १ व.	३११४०
” १	३१४१९८
कुन्ति २.	३१८८७
कुन्द १.	१३१६१
” १.	३३ ९१
” १.	३१९१८
कुन्दाल ३.	३१८२९
कुन्दिल ३.	३१३१
कुन्दोपराल १.	३१३५३
कुन्नान ३.	७३१८
कुपूय १. २. ३.	३१४७६
कुप्य ३.	३१८७४
” ३.	३१८१२२
कुप्यप्रस्थ १.	३११५३
कुप्यमाष १.	३११४४
कुप्यशाला २.	३१३२१
कुबेर १.	१२१५५
” १.	८६३
कुबेराक्षी २.	३१३९०
कुब्जक १. २. ३.	३१४११
कुब्जा २.	३१६४९
कुमार १.	१११५४
” १.	३१७२०
” १.	३१९१०५
” १. २. ३.	३१४२
” १. २. ३.	३१४२८
” १.	८६११
कुमारी २.	३१११०
” २.	३१३१७८
” २.	३१४२६
” २.	३१८५०
” २.	३१४६

वैजयन्तीकोषः

कुमालक १ व.	३११२८
कुमुख १.	३१४६
कुमुद १.	२११८
” ३.	४२१४१
कुमुदबान्धव १.	२११२५
कुमुदा २.	३१३५८
” २.	३१३५८
कुमुदिनी २.	४२१४४
कुमुद्वत् १. २. ३.	३११४३
कुमुद्वती २.	४२१४४
कुमुद्वतीशत्रु १.	२११२२
कुम्बा २.	३१६१०५
कुम्भ १.	४३१५८
” १.	४३३९
” १.	४३१३२
” १.	५११५६
” १.	६१३८
” १.	८६१५५
कुम्भकर्णारि १.	१११२१
कुम्भकार १.	३१५५
” १.	३१५६७
” १.	३१९२७
कुम्भकारी २.	३१२४४
कुम्भधारिका १.	४३२६
कुम्भफल १.	३१३८२
कुम्भयोनि १.	३१६१५१
कुम्भशाला २.	४३२३
कुम्भित २.	४३१५५
कुम्भिन् १.	३१७६०
” १.	४११५३
कुम्भी २.	३१३५८
” २.	४२१४६
कुम्भीनस १.	४१११२
कुम्भीर १.	४११५३
कुम्भीरमत्तिका २.	२१४४६
कुम्भील १.	७११२०
कुम्भोलखलक ३.	३१३५४
कुरङ्ग १.	३१४१४
” १.	३१४४०
कुरण्ड १.	३१३९०
” १.	४१४१३१

[कुलिक]

कुरण्ड १.	७१११९
कुरण्डक १.	३१३१८८
कुरर १.	२१३३४
कुररी २.	३१४६५
कुरवक १.	३१३६१
” १.	३१३६१
” १.	३१३१८९
” १.	३१३१९०
” १.	३१३१९१
कुरिन् १.	३१६४३
कुरीर ३.	७३१८
कुर १.	३१६७८
कुरुकुशिका २.	२१४२३
कुरुल १.	४१४९९
कुरुवर्ष ३.	३११९
कुरुविन्द १.	३१२४०
” ३.	३१२४५
” १.	८११२१
कुरुविस्त १.	५११५२
कुरुवत्र १.	३१३१३३
कुरुन ३.	३१९८७
कुल ३.	४३११५
” ३.	४३४४९
” ३.	५११६
” १.	५३१५४
कुलक १.	३१३५१
कुलकालक १ व.	३१३३४
कुलचर १.	३१३३४
कुलज १. २. ३.	५१४६१
कुलटा २.	४१४९
कुलपालिका २.	४१४७
कुलस्त्री २.	४१४७
कुलस्थक १.	३१८४७
” १.	४१११२
कुलाय १.	२१३४९
” १.	८१५३६
कुलाल १.	२१९२७
कुलालकुट्ट १.	२१३२१
कुलालिका २.	३१२४४
कुलिक १.	३१७१८५
” १.	२१९१७

कुलिङ्गाटी]

कुलिङ्गाटी २.	३१८३५
कुलिश १. २.	११२१३
कुली २.	३१३१०४
” २.	४१४२८
कुलीन १.	३१७९४
” १. २. ३.	५१६१
लीनस ३.	४२११
कुलीनक १.	३१८३८
कुलीर १.	४२१४६
” १.	८६१४४
कुलिस्थिका २.	३१२४४
” २.	३१८४८
कुल्माष १.	३१२४०
” १.	२१८५३
” १.	४३१७२
” ३.	४३१८२
कुल्य १ व.	३१३२८
” १ व.	३१३३४
” १ व.	३१३४०
” ३.	४३१०९
कुल्यष्टशी २.	३१३१०५
कुल्या २.	३१३१०५
” २.	४३४२२
” २.	४३२२९
” २.	४३४७
” २.	५३३३०
कुव ३.	४३३३४
कुवक १.	३१३६१

(कुरुवक)

कुवद १. २. ३.	५१४४८
कुवल ३.	४३३३४
” १. २. ३.	८१९३८
कुवल्य ३.	४३३३४
कुवलायिक १.	२३३९
कुवली २.	३१३८७
” २.	८१९३८
कुवाट १. २. ३.	४३३४६
कुवादुष्क १.	३१२२५
कुविन्दक १.	११५९
” १.	२१९८
कुविलीन ३.	४३३३६

शब्दानुक्रमिका

कुवीणा २.	२१९१२८
कुवेणी २.	२१९४२
कुवेल ३.	४३३३४
” १.	५३३३२
कुश १.	३१३२२७
” १. ३.	६१५२४
कुशद्वीप ३.	३१११४
” ३.	३१११७
कुशल १. २. ३.	५१११४३
” १. २. ३.	७१२४४
कुशवट १.	३१३१४९
कुशस्थली २.	४३३६
कुशा २.	३१६१०८
” २.	३१७११४
कुशाश्रीयधी १. २. ३.	५३२२९
कुशापीड १.	३१६१४९
कुशारणि १.	३१६१५६
कुशिन् १.	३१६१५३
कुशी २.	३१३३५
” २.	४११३९९
कुशीलव १.	३१५९८
” १.	३१९११४
” ३.	३१६१९५
” १. ३.	३१७१८४
” १. ३.	३१९२२
” १. ३.	५११३
” १. ३.	६१५१३
कूटयन्त्रक ३.	३१९४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	३१३९१
कूटसाक्षिन् १. २. ३.	३१८१०
कूटस्थ १. २. ३.	५३४७९
कूटगार ३.	४३३३१
कूणिका २.	२१९१२०
कूप १.	४३३७
” १.	४३३१७
” १.	६११११
कूपक १.	४३३३१
कूपेपिशाचक १.	४३३४९
कूबर १. ३.	३१७१२७

[कूबर]

कुसुम्भ ३.	३१८९१
” १.	७१५२५
कुसूल १.	४३३६४
कुसुम्बरी २.	३१८४९
कुसुम्बुरु ३.	३१८५१
कुहक १.	३१७१३
” १. २. ३.	५३३२३
” १. २. ३.	७३११०
कुहन १. २. ३.	७१२३
कुहर ३.	४१३२
” ३.	७३३७
कुहलि २.	३१६५९
कुहिठ १. ३.	२१२१०
कुहू २.	२११७१
कुहडि २.	२१२१०
कुहलि २.	२१२१०
कुहरी २.	३१३४
कुजन ३.	२१३३
कूजित ३.	२१३३
कूट १. ३.	३१३८
” १. २. ३.	३१४५६
” १.	३१५९९
” ३.	३१६१९५
” १. ३.	३१७१८४
” १. ३.	३१९२२
” १. ३.	५११३
” १. ३.	६१५१३
कूटयन्त्रक ३.	३१९४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	३१३९१
कूटसाक्षिन् १. २. ३.	३१८१०
कूटस्थ १. २. ३.	५३४७९
कूटगार ३.	४३३३१
कूणिका २.	२१९१२०
कूप १.	४३३७
” १.	४३३१७
” १.	६११११
कूपक १.	४३३३१
कूपेपिशाचक १.	४३३४९
कूबर १. ३.	३१७१२७

[कृवर]

कृवर १.	३७१३२
कृर ३.	४३१७५
कृरदूषक १.	३८१५४
कृच १.	४३१५७
” १. ३.	६१५२०
चकेसर १.	३३१२२०
कृचाल १.	३६११२
कृचिका २.	३८११४८
” २.	७२१५
कृची २.	३९११३
कृपीर १.	४३१७२
कृपास १.	४३१२८
कृर्म १.	३७१७६
” १.	३७१७९
” १.	४११५०
” १.	८६११३
कृल ३.	४२१३२
” ३.	६३१५
कृलङ्का २.	४३१२३
कृलमण्डक १	४११४८
(स्थूलमण्डक)	
कृली २.	३३१८७
कृरमाण्डक १.	१११५१
” १.	३३१७०
कृकण १.	२३१३६
कृकणपत्रिका २.	३३१२३०
कृकर १.	२३१३६
कृकलास १.	४११२८
कृकवाकु १.	२३११३
” १.	३३१७९
कृकाटिका २.	४३१८४
कृच्छ १ २. ३.	१२१३९
” १. ३.	३६१३६
कृच्छक ३.	३६१३६
कृच्छातिकृच्छ १.	३६१३८
कृच्छातिकृच्छक ३.	३६१४१
कृत ३.	२११९१
” ३.	३६१९८

वैजयन्तीकोषः

कृत ३.	३९१६२
” १. २. ३.	६१५२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५३११९
कृतकोटिकवि १.	३६१७९
कृतज्ञ १.	३३१७०
कृतपुङ्गव १. २. ३.	३७१४९
कृतभी २.	४११४८
कृतमाल १.	३३१४८
” १.	३३१२८
कृतमालक १.	२३१२३
” १.	४३१०६
कृतमुख १. २. ३.	५३११९
कृतवेधन १.	३३१५९
” १.	३३१६०
कृतहस्त १. २. ३.	३७१४८
कृताकृत ३.	३६१९७
कृतान्त १.	१२१३५
” १.	७१११६
कृतारु १.	३३१२७
कृतालक १.	१११५७
कृतास्त्र १. २. ३.	३७१४९
कृति २.	४३१३६
कृतिन् १.	३३१२९
” १. २. ३.	५३११९
कृतोद्वाह १.	३६१८
कृत् १. २. ३.	५३१०२
कृत्ति २.	३६१२१
” २.	४३१६०
” २.	४३१०३
कृत्तिका २ ब.	२११४३
कृत्तिकापिञ्जर १.	३६१९८
कृत्तिवासस् १.	१११४२
कृत्य ३.	३६१२३६
” १. २. ३.	६१५२०
” २. ३.	८११३३

[कृष्णधूमल]

कृत्रिम ३.	३२१२८
” १.	३८११०
” १.	३८१११
” १.	३८११२४
कृत्रिमाचारी २.	२११७६
कृस्न १. २. ३.	५३१८६
कृपण १. २. ३.	५३१५९
कृपा २.	३६१९२
कृपाण १.	३७१५९
कृपाणी २.	३९१३७
कृपीट ३.	७११८
कृपीटयोनि १.	१२११६
कृमि १.	३५१३३
” १.	४३१३४
कृमिकोशोत्थ १. २. ३.	४३११८
कृमिज ३.	३८१०७
कृवी १.	३९१२६
कृश १ ब.	२११३७
” १.	५३१७
” १. २. ३.	५३१५
कृशानु १.	१२११७
कृशानुरेतम् १.	१११४५
कृशारिवन् १.	२९१६३
कृपक १.	३८१२८
” १. २. ३.	७५१३१
कृपि २.	२८१३
कृपीबल १.	३७१२७
” १. २. ३.	३८१७
कृष्टक १. २. ३.	३८१२२
कृष्टि २.	६५१२४
कृष्ण १.	११११५
” १.	१११२५
” १.	३३१८३
” १.	५३१११
” १.	६५१५४
कृष्णकाक १.	२३११७
कृष्णकोहल १.	३९१५८
कृष्णद्वैपायन १.	१११३२
कृष्णधूमल १.	५३११३
” १.	५३१२२

[कृष्णनवाग्रह]

कृष्णनवाग्रह १.	२२१२२
कृष्णपाक १.	३३१८३
कृष्णपाकफल १.	३३१८३
कृष्णपिङ्गल १.	५३१२४
कृष्णपीत १.	५३१२२
कृष्णफल १.	३३१८३
कृष्णफला २.	३३११०८
कृष्णभगिनी २.	१११६२
कृष्णभूम १. २. ३.	३११४५
कृष्णभेदी २.	३८१८६
कृष्णरक्तसित १.	५३१२५
कृष्णला २.	३३११७९
कृष्णलोहित १.	५२११
कृष्णवर्ण १.	३८१४३
कृष्णवर्णा २.	४२१२९
कृष्णवर्मन् १.	१२११४
कृष्णविषाणा २.	३६११०९
कृष्णवृन्त १.	३८१४७
कृष्णवृन्ता २.	३३१९०
” २.	८२११५
कृष्णवृन्तिका २.	३३१५७
कृष्णशालि १.	३८१३३
कृष्णशिम्बि २.	३८१४७
कृष्णशृङ्गक १.	३३१४९
कृष्णसर्प १.	४१११२
” १.	४१११३
कृष्णसार १.	३३११२
कृष्णस्वसृ २.	१११६२
कृष्णाजिन ३.	३६१२१
कृष्णायस ३.	३२१३३
कृष्णिका २.	३३११८१
कृसर १.	३३१७८
” ३.	४३१४७
” १. २. ३.	४३१७९
केकर १. २. ३.	५३११३
केका २.	२३१३९
केकालि १.	२३१३८
केकिन् १.	२३१३७
केणिका २.	४३११२५

शब्दानुक्रमणिका

केण्डुक १.	४११४७
केतक १. २. ३.	३३१२२३
केतन ३.	३७१७६
” ३.	४३११९
” ३.	७३१२२
केतर २.	४३११९
केतु १ ब.	१३१३७
” १.	६१११६
” १.	८११६०
केतुमाल ३.	३११७
केदर १.	३८११७
केदार १.	३८११७
केनिपात १.	४२११६
केयूर ३.	४३११४३
केरल १ ब.	३११३४
केलक १.	३९१६४
केलि १. ३.	३९१८८
केलिकिल १.	१११५१
” १.	३७११७
” १.	३९१६७
केलिकुञ्जिका २.	४३१२८
केलिसहायक १.	३७११७
केवल १. २. ३.	७५१२६
केवलिन १.	१११३५
केश १.	४३१९७
” १.	८६१११
केशकार १.	३७११७
केशकूट १.	४३११००
केशघ्न ३.	४३१२६
केशपञ्च १.	५३११८
केशपञ्चति २.	४३१००
केशपाश १.	५३११८
केशपाशी २.	४३११०२
केशव १.	११११४
” १. २. ३.	५३१८
केशवप्रिय १.	३२१५
केणवायुध ३.	३७१३४
केशहस्त १.	५३११८
केशिक १. २. ३.	५३१८
केशिका २.	३३१३७
केशिन् १. २. ३.	५३१८

[कोकिल]

केशिनी २.	३३११६
केशी २.	४३११०२
केशर १.	३२१५
” १.	३३१२६
” १.	४३१४५
” १.	४३१३२
” १. ३.	७५१३०
केशरा २.	३३१९९
केशरिन् १.	३३३३३
” १.	७५१२१
कैकसेय १.	१२१४१
कैटभारि १.	११११५
कैटभी २.	१११६२
कैडर्य १.	३३१५०
” १.	३३१५८
कैडर्यद्वेषिन् १.	३३१७५
कैतव १.	५३१८
कैदारक ३.	५३११२
कैदारिक ३.	५३११२
कैदार्य ३.	५३११२
कैरव ३.	४२१४१
कैराती २.	३७११२
कैलास १.	३२१५
कैलासनाथ १.	१२१५६
कैवर्त १.	३५१३२
” १.	३५१९१
” १.	३९१४२
कैवर्तीमुस्तक १.	३३११९९
कैवल्य ३.	३६१२८
कैशिक ३.	५३११२
कैशिकी २.	२९११०१
कैश्य ३.	५३११२
कोक १.	२३१९
” १.	३३१८
कोकनद ३.	४२१४०
” ३.	४२१४२
कोकहित १.	२९१५६
कोकाह १.	३७१९९
कोकिल १.	२३१२६
” १.	७५१२०

कोकिलाच]

कोकिलाच १.	३३१०१
कोकुन्द १.	४३१७२
कोकुराह १.	३३१०५
कोटर १. ३.	३३११४
कोटि २.	४३१५२
" २.	५११२९
" २.	५११३१
" २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिवर्ष ३.	४३१९
कोटिश १.	३३१२९
कोटी २.	३३११७८
कोटीर १.	४३१३५
कोटुवी २.	४३११०
कोठ १.	४३१२४
कोण १.	२११३५
" १. २. ३.	२११२९
" १. २. ३.	२११३६
" १.	४३१५२
" १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन् ३.	४३१४१
कोणेशिचक १. २.	४११४८
कोण्ट १.	२३१२२
कोतना २ व.	२१११९
कोटङ्क ३.	३३११७२
" ३.	३३११७३
" ३.	७३११२
कोटङ्ग १.	३३१३४
कोटङ्ग १.	४३१३२
कोटव १.	३३१५४
कोप १.	३३११८३
कोपन १. २. ३.	५३१३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२३१२
कोरदूषक १. ३.	३३१५४
कोराङ्गी २.	३३१८८
कोल १.	२११३६
" ३.	३३१८०

वैजयन्तीकोषः

कोल ३.	५११४८
" १.	५३१३४
" १.	५३१०५
" १. २. ३.	५३११४
" १. २. ३.	६१११६
" १.	६१११७
कोलक ३.	३३११०५
" १.	४१११८
कोलदल ३.	३३११०१
कोलस्वक १.	२१११२५
कोलवल्ली २.	३३१७८
कोला २.	३३१८१
" २.	६१११७
कोलाक १. २. ३.	२११२३
कोलाङ्गक १.	३३१३३
कोलाहल १.	२३१२७
कोलि २.	३३१८७
" १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३३१६६
कोविद १.	३३१२३४
कोविदार १.	३३१३७
कोश १.	२३१५०
" १.	३३१३
" १.	३३१४४
" १.	३३१६८
" १. ३.	३३१७४
" १.	४३१६१
" १. ३.	४३१६३
" १. २. २.	६१११५
कोशफल ३.	२३११०५
" १.	३३११०५
कोशफला २.	३३११५८
" २.	३३११६१
" २.	३३११६१
कोशातकी २.	३३११५८
कोशिका २.	३३११७
" २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ठ १. ३.	३३१२२
कोष्ठकारी २.	२३११७

[कौलटिनेय

कोष्ण ३.	५३१९
कोसल १ व.	३११३७
" १ व.	३११४०
" ३.	३३११७४
" १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३३१२७
" १.	३३११८
कोहली २.	३३१४९
कोकुट ३.	३३११९२
" १. २. ३.	५३१२४
कोकुटिक १. २. ३.	३३११७
" १. २. ३.	८३१६
कौन्तेलेयक १.	३३११५९
कौट १.	३३१८०
कौटतत्त १.	३३१३४
कौटिक १.	३३१३७
कौटिल्य १.	३३११५९
कौतुक ३.	६३१८७
" ३.	७३११०
कौतूल १.	४३१३८
कौतूलहल ३.	३३११८७
कौटवीण १. २. ३.	३३११९
कौटिक १. २. ३.	५३१२२
कौन्तिक १. २. ३.	३३११४४
कौन्ती २.	३३११५
कौपीन ३.	४३१२९
" ३.	७३१३३
कौबेरी २.	२१११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३३११३८
कौम्भक्या २.	२३१२८
कौलकुल्य ३.	४३१११५
कौलटिनेय १.	४३१४४

कौलटेय]

कौलटेय १.	४३१४४
" १.	४३१४४
कौलटेर १.	४३१४४
कौलीन ३.	७३१३३
कौल्यक १.	३३१७०
" १. २. २.	५३१६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४३११०
(कौशिक)	
" १.	७३११७
कौशिकी २.	८३११४
कौशेय १. २. ३.	४३११८
कौपीतकी २.	३३११५३
कौसल्यानन्दवर्धन १.	१११२१
कौसीय ३.	३३११७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३३११८२
क्रकच १.	३३११५६
" १. ३.	३३१३६
क्रकचिक १.	३३११५३
क्रतु १.	५३११४
क्रतुभुज १.	१११३३
क्रत्वन्नि १.	११२३३
क्रथन ३.	४३१२७
क्रन्दन ३.	२३११०
" ३.	७३१३६
क्रन्दित ३.	३३११८७
क्रपुक १.	३३१६९
क्रम १.	३३११३३
" १.	३३११३३
" १.	४३१३१
क्रमण १.	३३१११
" ३.	४३१५६
क्रमुक १.	११२३२
" १.	३३१२१७
क्रमेलक १.	३३१६७
" १.	३३१४५
क्रय १.	३३१६९
क्रयविक्रयिक १.	३३१७२

शब्दानुक्रमणिका

क्रयिक १. २. ३.	३३१६८
क्रय १. २. ३.	३३१६८
क्रय ३.	४३११०६
क्रय्याद् १.	११२२२
" १.	११२४०
क्रय्याद् १.	११२४०
क्राकचिक १.	३३११५६
क्राथ १.	४३१२७
क्रान्ति २.	५३११६
क्रामणक १.	३३११३०
क्रायिक १. २. ३.	३३१८८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३११५३
क्रिमिज ३.	३३११७
क्रिमिपर्वत १.	३३११४८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३३१२६
क्रिया २.	३३११२३
" २.	५३११
" २.	६३११९
क्रियावत् १. २. ३.	५३१७४
क्रीडा २.	३३१८७
" २.	२३१८८
क्रुञ्च १.	२३१३४
क्रुध् २.	३३११८३
क्रुधा २.	३३११८३
क्रुष्ट ३.	२३१८७
क्रूर १.	३३१२१७
" ३.	४३११०८
" ३.	५३११५
" ३.	५३१३७
" १. २. ३.	५३१२४
" १. २. ३.	५३१६०
" १. २. ३.	६३१४३
क्रुरा २.	३३१८७
क्रुणी २.	३३१६९
क्रुतव्य १. २. ३.	३३१६८
क्रुतृ १. २. ३.	३३१६८
क्रुय १. २. ३.	३३१६८
क्रुड १.	२३१३५

[क्राथन

क्रोड ३.	५३१४९
" १. २. ३.	६३१२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३३११८३
" १.	६३१७६
क्रोधन १.	३३१६९
" १. २. ३.	५३१३२
क्रोधविवशा २.	३३१४७
क्रोश १.	२३१३३
" १.	३३१६२
क्रोष्टु १.	३३१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
" १.	२३१३४
क्रौञ्चारि १.	१११५७
कलम १.	५३१२८
कलमथ १.	५३१२८
कलान्ति २.	५३१२८
किलन्न १. २. ३.	५३११३३
किलष्ट १. २. ३.	५३११३३
कलीतक ३.	३३११०३
कलीतकी २.	३३१११०
कलीब १. २. ३.	३३११४७
" १.	४३१३३
कलेदन् १.	६३११६
कलेदु १.	२३१२६
कलेश १.	३३११९३
कलेशित १. २. ३.	
	५३११३३
कलोमन् ३.	४३१११२
कण १.	२३१११
कणक १.	४३११३५
कणन ३.	२३१११
कणित ३.	२३१११
कथन ३.	५३११३
कथित २.	५३१११५
काण १.	२३१११
काथ १.	४३११४१
काथन ३.	३३१२१५
" ३.	५३११३

[काथसम्भव]

काथसम्भव ३.	३२१४३
काथि १.	३२१५२
क्षण १.	२११५४
” १.	३२१६२
” ३.	४११२७
” १.	५२१७
” ३.	५४१११
क्षणदा २.	२११५६
क्षणन ३.	३२१२४
क्षणा २.	४३१२६
(कणा)	
क्षणांशु २.	२२१४
क्षणिका २.	२२१४
क्षणितु १.	३२१२७
क्षत ३.	३२१२७
क्षतज ३.	४११०५
क्षतव्रत १. २. ३.	३२१३३
क्षत् १.	३२१८५
” १.	३२११६
” १.	३२१२४
” १.	३२१३७
क्षत्र १.	३२११
क्षत्रकुण्ड १.	३२१६२
क्षत्रिय १.	२५१२
” १.	३२११
क्षत्रियगोलक १.	३२१६२
क्षत्रिया २.	४११२३
क्षत्रियाणी २.	४११२३
क्षत्रियी २.	४११२२
क्षपण १. २. ३.	५४११५
क्षपा २.	२११५६
क्षम १. २. ३.	६४१३
क्षमा २.	१११४७
” २.	३१११
” २.	३२१८४
क्षमित् १. २. ३.	५४१३३
क्षमिन् १. २. ३.	५४१३३
क्षय १.	३२१७५
” १.	४३१९९
” १.	४४१२४

वैजयन्तीकोषः

क्षय १.	५२१३२
” १.	५४११४
क्षयि १.	५३१९
क्षरि २.	३१११
क्षरिन् १.	२११८८
क्षव १.	४११२१
क्षवधु १.	७१११८
क्षणिन् १.	३२१२२
क्षणिनी २.	२१११
(क्षणिनी)	
क्षणी २.	२११५७
क्षान्त १. २. ३.	५४१२१५
क्षान्ति २.	३१११
क्षाम १.	१२१२१
” १. २. ३.	५४१८४
क्षार १.	३२१२७
” १.	३२१२९
” १.	५३१३०
” १.	५४११३
क्षारक १.	७१११६
क्षारण ३.	२४१३३
क्षारपत्रक १.	३२११५४
क्षारमृत्तिका २.	३२१२५
क्षालन २.	३२१६७
क्षिति २.	६२१८
क्षितिसम्भवा २.	३४१४२
क्षिपण १.	७११२१
क्षिपणु १.	७११२१
क्षिपा २.	५२१३३
क्षिस १. २. ३.	५४१६७
” १. २. ३.	५४१९७
क्षिप्नु १. २. ३.	५४१४०
क्षिप्र १.	२३११९
” ३.	४४११०८
” १. २. ३.	५४१२४
क्षिप्रा २.	५४१८४
क्षीब १. २. ३.	५४१३७
क्षीर ३.	३२१४५
” ३.	६३१४
क्षीरक १.	४११२०
क्षीरज ३.	३२१३९

[क्षुर]

क्षीरबीज १.	४२१४८
क्षीरविदारी २.	३२१९९
क्षीरशर १.	३२१९८
” १.	३२१९७
क्षीरशुक्ल १.	४२१४८
क्षीरशुक्ला २.	३२१९९
क्षीराब्धि १.	३११११
क्षीराश १.	२३१७
क्षीराहार १. २. ३.	३२१३४
क्षीरिका २.	३२१८०
क्षीरान्द १.	३११११
क्षीरोदसुता २.	१११३६
क्षुण्ण १. २. ३.	५४१४९
क्षुण्णक ३.	३२११३९
क्षुत् २.	४४१२१
क्षुत १.	४४१२१
क्षुद्र १.	३२१२६
क्षुद्र १.	४११३९
” १. २. ३.	५४११०९
” १. २. ३.	६५११३
क्षुद्रक ३.	३२११२२
” ३.	३२११३४
क्षुद्रघण्टा २.	४३१४५
क्षुद्रनासिक १. २. ३.	५४१११
क्षुद्रनीवृत् १ ब.	३११४१
क्षुद्रपक्षिन् १.	२३१४१
” १.	२३१४८
क्षुद्रहंस १.	२३१९
क्षुद्राण्ड १.	४११४५
क्षुद्रोपाय १.	३२११२
क्षुध् २.	३२१८२
क्षुधा २.	३२१४२
क्षुधाभिजनन १.	३२१४२
क्षुधित १. २. ३.	५४१३६
क्षुप १.	३३१६
” १.	३२१६३
क्षुमा २.	३२१४५
क्षुर १.	३२११०१
” १.	३२१४१

[क्षुर]

क्षुर १.	३२१२६
क्षुरक १.	३२१०१
क्षुरकर्मन् ३.	३२१४
क्षुरप्र १.	३२१८२
क्षुरमर्दिन् १.	३२१२६
क्षुरसमुद्र ३.	४३१०८
क्षुरिका २.	३२१६३
क्षुल्लक १. २. ३.	७४१९
क्षुल्लतात १.	३२११०८
” १.	४४१३२
क्षुव १.	४४१९९
क्षेत्र ३.	३२११७
” ३.	४४१३५
” ३.	४२१५२
” ३.	६३१६
क्षेत्रज्ञ १.	३२११६१
” १. २. ३.	७५१३२
क्षेत्राजीव १. २. ३.	३२१४
क्षेत्रिक १.	३२१११०
क्षेत्रिय १. २. ३.	७५११०
क्षेत्रिया २.	३२१६०
क्षेप १.	५२१२२
क्षेपण १.	४४१५८
” ३.	५२१३३
” ३.	५२१४०
क्षेपणी २.	४२११७
क्षेपणीय १.	३२१६६
क्षेम १.	६५१२२
क्षेमङ्कर १. २. ३.	५४१५५
क्षेत्र ३.	५१११२
क्षैर्यी २.	४३१७७
क्षोड १.	३२११६२
क्षोणी २.	३१११
” २.	३२११७
क्षोद १.	६१११३
क्षोभ्य ३.	३२१३१
क्षौद्र ३.	३२११३५
क्षौम १. ३.	४३१३३
” १. २. ३.	४३११७

शब्दानुक्रमिका

क्षौम ३.	४३१२२
क्षौरकार १.	३२११७
क्षणुत १. २. ३.	३२११७
क्षणू २.	३२१२९
क्षमा २.	३२१११
क्षमाभृत् १.	३२१११
क्षिवङ्क १.	३२१४१
क्षवेड १.	२४११
” १. २. ३.	६५१२१
” १. ३.	८११३१
क्ष्वेल १.	४११२२
” १.	४११२२
ख	
ख ३.	२११११
” ३.	८३११९
” ३.	८६१४
खग १.	२१११४
” १.	२३१३३
” १.	२३१३२
” १.	३२११७८
” १.	६१११६
खगच्छाय ३.	८१११९
खचित १. २. ३.	५४१७८
खजक १.	३२१३१
खजाका २.	४३११६३
खज्ज १.	३२१२०८
” १.	३२१६
” १. २. ३.	५४११४
खज्जल १.	२३१२३
खज्जरीट १.	२३१२३
खज्जरीटी २.	२३१३४
खट १.	५३१३४
खटी २.	३२११६
खट्टास १.	३४१३५
खट्टासिका २.	३४१३५
खट्वा १.	४३११६४
खट्वाङ्ग १.	१११५९
खट्वाङ्गिन् १.	१११४६
खड्गिका २.	४३१४२
खड्ग १.	३२१७७
” १.	३२११५८

[खर]

खड्गनामान् १.	४११५१
खड्गपत्र १.	३४१२२६
खड्गपुच्छ १.	४११५१
खड्गाङ्ग १.	१२१३१
खड्गाङ्गु ३.	३२११६१
खड्गिन् १.	३२१७
खण्ड ३.	३२१११९
” १. ३.	३२११३४
” १. ३.	४३१५६
” १. २. ३.	५४१८६
” १. २. ३.	६५१२५
खण्डना २.	६६१५३
खण्डपरशु १.	१११४३
खण्डपर्कट ३.	४३११०६
खण्डल १. ३.	४३११३०
खण्डशर्करा २.	३२११३३
खण्डिक १.	३२१४३
खण्डिका २.	३२१३२
खण्डित १. २. ३.	२४१२०
खण्डिता २.	२११६०
खण्डिन् १.	३२१३८
खण्डीर १.	३२१३६
खण्डिलक १.	१२११४
खदरी २.	३२११४८
(खद्विरी)	
खद्विका २.	४३१६७
खद्विर १.	१२१६
” १.	३३१६३
खद्योत १.	२३१४७
खनक १.	३२१४०
” १.	४११३१
” १. २. ३.	७५१३३
खनि २.	३२११८
खनित्र ३.	३२१२८
खनित्री २.	३२११२३
खपुट १. २. ३.	३२११३२
खपुर १.	३२१११
” १.	३२१२२२
” १.	७११२२
खर १.	३२१३९

[खर]

खर ३.	३१३२१८	खल १.	३१८३१
" १.	३१३२२८	" १. २. ३.	३१८१४२
" १.	३१४६५	" १.	५१४२५
" १.	५३३३	खलकुल ३.	३१८४७
" १.	५३३५	खलति १. २. ३.	
" १.	५३३७		४१४१४७
" १.	५३३४२	खलधान ३.	३१८३१
" ३.	८६६६	खलपू १. २. ३.	३१८६७
खरक १.	२१४१०	खला २.	६१५२५
खरकुटी २.	४३३२५	खलि २.	३१९२७
खरकोमल १.	२११८४	" २.	४३३८१
खरकाण १.	२३३३५	खलिनी २.	५१११२
खरच्छुद १.	३१४२२९	खलीन १. ३.	३१७११३
खरट १.	५३३४	खलु ४.	८१७२०
खरटी २.	३११२६	खलुकी २.	३३३८८
खरणस् १. २. ३.		खलुष १.	५३३३४
	५१४१२	खलुरिका २.	३१७१९४
खरणस १. २. ३.		खलेपाली २.	३१८३१
	५१४१२	खल्या २.	५१११२
खरमञ्जरी २.	३३३११५	खल्व १.	३१८४६
खरमुख ३.	३१९१२५	" ३.	४३३६०
खरम्भर १ व.	३११२३	खलवाट १. २. ३.	
खरागरी २.	३३३८६		४१४१४७
(खरा, गरी)		खलुक १.	५३३५३
खरारि १.	१११२१	खष १.	३१५४९
खराशवा २.	३१८१०२	" १.	३१५५६
खर १. २. ३.	३६६१२	" १.	५१४५२
" १.	६१११८	खस १.	४१४१२३
खरञ्जक १. ३.	३१५१०	खसुम ३.	३१७४७
खरहा २.	३३३१३२	खाङ्क १.	२१११४
खरुल १.	४१४७६	खाटि १.	३१७२१६
खर्जनी २.	३६६१०९	खाङ्गिक १. २. ३.	
खर्जू २.	४१४१२४		३१७१४४
खर्जूर ३.	३३३१३	खाण्डवप्रस्थ १. ३.	
" ३.	३३३२४		४३३८
" १.	३३३२२२	खातक ३.	४३२५
" १.	४१३३३	खादन ३.	४३१०४
खर्जुरिका २.	३३३२२२	" १	४३३८८
खर्व ३.	५११२८	खादित १. २. ३.	
" १. २. ३.	५१४८१		५११०७
		खाद्य ३.	४३३९१

वैजयन्तीकोषः

[खोड]

खाध्वनीन १.	२१११४
खारी २.	५११५७
" २.	५११५७
" २.	५११६३
खारीक १. २. ३.	
	३१८२२
खाषेय १.	१३३१
खिल ३.	३६३३३
" १. २. ३.	३१८१८
खिलखिल १.	२३३४०
खुडार १.	३१८४४
खुडुक १.	३३३२२१
(खुडुक)	
खुर १.	३१४७४
" १.	३१८१०१
खुरणस् १. २. ३.	
	५१४११
खुरणस १. २. ३.	
	५१४११
खुरुराह १.	३१७१०५
खेचर १.	१३३३
" १.	७११२२
खेट १. ३.	४३३१
" १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	६१४२४
खेटक ३.	३१७१९७
" ३.	४३३३३
" १.	४१४८०
" १.	४१४१३१
खेटन ३.	३१९४०
खेटिन् १. २. ३.	
	४१४१४६
खेद १.	५२३३२
खेय ३.	४३३३३
खेल १.	३३३२१५
खेला २.	३१९८७
खेलि १.	३१८४४
खेलाह १.	३१७१०३
खोङ्गाह १.	३१७१९
खोड १.	२१३३५
" १. २. ३.	५१४१४

[खोरण]

खोरण १.	५३३३
खोलक १.	७११२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	
	३६६११
ख्याति २.	२१४३६
" २.	३६६१६३
ग	
गगन ३.	२११११
गङ्गा २.	४३२२४
गङ्गाधर १.	१११४२
गङ्गेष्टि २.	४११५७
गच्छ १.	५११३७
गज १.	३१७६०
गजचिह्निका ३३३१७२	
गजच्छाया २.	२१३३१
गजजीवन १.	३१७८८
गजना २.	५११९
गजमण्डन १.	३१७८६
गजवीथिका २.	२११४८
गजानन १.	१११५३
गजाराति १.	३१४३२
गज १. २. ३.	६१४२६
गज्ज ३.	२१४२
गज्जाः २.	३२११०
गड्ड १.	४१४३३
" १. २. ३.	६१४२९
गड्डल १. २. ३.	५१४११
गड्डची २.	३१८४५
गडोल १.	४३३१०१
गण १.	३१७५८
" १.	५११११
" १.	६१११९
" १	८६६१३
गणक १.	३१७२५
गणतिथ १. २. ३.	
	५१११९
गणन ३.	५१३३६
गणपतिप्रिय १.	१११५१
गणपूरण १. २. ३.	
	५१११९
गणरात्र ३.	२११५९

शब्दानुक्रमिका

गणाधिप १.	१११५४
गणि १.	३६६८२
गणिका २.	३१७३३
" २.	४१४२४
" २.	७२१७
गणिकागण १.	५११८
गणिकारी २.	३३३८६
गणोत्साह १.	३१४८
गण्ड १.	३१७७५
" १.	४१४९०
" १.	४१४१२३
" १.	५११३७
" १.	६११२०
गण्डक १.	३१४७
" १.	३१७११६
" १.	४१४४५
गण्डकली २.	३३३१४८
गण्डफली २.	८२१५
गण्डमाल १	४१४१२९
गण्डमालहन् १.	३३३७७
गण्डरी २.	३३३९८
गण्डशैल १.	३३२९
गण्डरी २.	३१८७८
गण्डुक १.	४३३६२
गण्डूपद १.	४११५९
गण्डूष १.	४१४७८
" १. ३.	७१३४
गण्डूषक १.	३१७००
गण्डोर १.	४३३१०१
गण्डोली २.	२३३४६
गति २.	३६६२३६
" २.	४१४३३३
" २.	५२११०
" २.	६२१११
" २.	८११५
गद १. २.	६१४२९
गदाग्रज १.	१११२५
गदापाणि १.	१११३३
गद्वद १. २. ३.	२१४१५
गद्वदस्वर १.	३१४८
गद्यपद्यमयी २.	२१४४२

[गमन]

गन्त्री २.	३१७१२७
" २.	४३३१०८
गन्ध १.	५३३२
" १.	५३३५४
" १.	६११२२
गन्धक १.	३२३१४
(गन्धिक)	
गन्धकुटी २.	३१८१८
गन्धचेलिका २.	३१४३६
गन्धन ३.	७३३३३
गन्धनाकुला २.	३१८१७
गन्धमुण्डक १.	३३३५९
गन्धमृग १.	३१४३५
गन्धरस १.	३२३१५
गन्धर्व १.	१३३३८
" १.	१३३२
" १.	३१४३२
" १.	७३३२४
गन्धर्वगण १.	१३३११
गन्धर्वहस्त १.	३३३६५
गन्धर्वह १.	१३३४७
" १. २.	८१५७
गन्धवाह १.	१३३४७
गन्धसार १.	३१८११३
गन्धसारण १.	५३३४९
गन्धसोम ३.	४३३४१
गन्धाखु २.	४१३३२
गन्धाश्मन् १.	३२३१४
गन्धाहिक १.	४१११८
गन्धिक १.	५३३५१
" १.	५३३५४
गन्धिघना २. १. ३.	
	२१३३९
गन्धिनी २.	३१८१८
गभस्ति १.	२१३३३
" १.	२१३३६
" १. २.	८१३२५
गभीरक १. २. ३.	४३३१९
गम १.	५२३१०
गमन ३.	५२३१९
" ३	५२३१०

[गमि]

गमि १.	३१६२०१
(निमि १)	
गम्भीरी २.	३३३५८
गम्भीरी १. २. ३.	४१२२०
" ३	८३११७
गर १.	४११२२
" १.	४११८३
गरल १.	३३३५०
" १.	४११२२
गरवायु १.	१२१५३
गरह ३.	३३३५७
गरी २.	३३३८६
गरुड १.	१११३७
गरुडध्वज १.	११११४
गरुडा २.	४१११०१
गरुत् १.	२३३४८
गरुत्मत १.	१११३७
" १.	७११२४
गरुल १.	४२१४७
गरोलिका २.	४२१४८
गर्गर १.	३५३३४
गर्गरी २.	३५३३२
" २.	४३३२७
गर्ज १.	२१३३
" १.	३७३६०
गर्जन ३.	२१३३
" ३.	३३३२०६
गर्जना २.	२१३३
गर्जा २.	२१३३
गर्जित २.	२१३५
" १.	७५३३४
गर्त २.	४१३३
गर्तकुङ्कुट १.	२३३२१
गर्तिका २.	४३३२२
गर्वनक १.	३१३६६
गर्वभ १.	३१३६५
गर्वभाण्ड १.	३३३५९
गर्वभाह्वय ३.	४२३४१
गर्वन १. २. ३.	५४३३५
गर्वना २.	३३३१८०
गर्म १.	३८३१४१

वैजयन्तीकोषः

गर्भ १	४११४०
" १.	३११२१
गर्भक ३.	२११५८
(गर्भित)	
" ३.	४३१५५
गर्भपाकिन्	३८३३४
गर्भसम्पुट १.	४१११३
गर्भागार १.	४३१५१
गर्भाजि १.	३३३१५७
गर्भाधान ३.	३३३२
गर्भाशय १.	४१११८
गर्भणी २.	४१११६
गर्भोपघातिनी २.	३११४७
गर्मुट १.	३५३३०
गर्मुटिका २.	३८३५९
गर्मुत् २.	३८३५९
" २.	६१११८
गर्व १.	३३३१६९
गर्वहारिका २.	२१३२८
गर्वि २.	३३३१६९
गर्वित १. २. ३.	५४३२०
गर्वण ३.	२१३३३
गर्वणा २.	३३३१९३
गर्वी २.	३३३१९३
गर्व्य १. २. ३.	५४३७५
गर्व्यादिन् १. २. ३.	५४३७७
गल १. २. ३.	४११८३
गलकम्बल १.	३१३६०
गलगण्ड १.	४११२९
गलन्ती २.	४३३५७
गलस्तनी २.	३१३६२
गलाङ्कुर १.	४११२९
गलित १. २. ३.	५४११०२
गलेवाल १.	४११४२
गल्या २.	५१११४
गल्ल १.	४११९०
गल्वर्त १.	३११५३
गवय १.	३१३३३
गवल १.	३१३११

[गान्धर्व]

गवल ३.	३८३११८
गवसी २.	३३३१२३
गवाक्ष १.	४३३५४
गवाक्षक ३.	४३३५३
गवाक्षी २.	३३३१२४
" २.	३३३१७३
" २.	३३३१८३
गवादिनी २.	३२३१४९
गवीधुका २.	३८३५९
गवेधु २.	३८३६१
गवेधुका २.	३८३६१
गवेधुणा २.	३३३१२१
गवेधित १. २. ३.	५४३९८
गव्य ३.	३८३१४५
गव्या २.	३१३६२
" २.	५१११३
" २. ३.	६५३२६
गव्यूत ३.	३१३६२
गव्यूति २.	३१३६२
गहन ३.	३३३१
" ३.	८३३१७
गह्वर ३.	७३३१५
" ३.	८३३१७
गाङ्गी २.	२११७६
गाङ्गेय १.	१११५६
" १. ३.	७५३३५
गाङ्गेरुकी २.	३८३६१
गाङ्ग १. २. ३.	५४३१३२
गाढास्य ३.	३८३१४१
गाणिक्य ३.	५११८
गाण्डव १. ३.	३१७१७४
" १. ३.	७५३३५
गाण्डवीव १.	७५३३५
गातु १.	२१३२
गात्र ३.	३१७७५
" ३.	४१३५२
" ३.	४१३५५
गात्रसङ्कोचिन् १.	३१३७२
गान ३.	२१३२
" ३.	३१११०९
गान्धर्व १.	१३३२

धर्व]

गान्धर्व ३.	३३३२९
" ३.	३११११०
गान्धार १ ब.	३११२४
" १.	३१११३२
गायत्र १.	३३३८
" ३.	३३३३४
गायत्री २.	३३३३४
गारुड ३.	३२३१९
गारुत्मत् ३.	३२३३८
गार्भिण ३.	३३३३
" ३.	५११८
गार्हपत्य १.	१२३२४
गालव १.	३३३३९
" १.	३३३५२
गालि २.	२१३३३
गिरि २.	१११९
गिरि १.	३२३११
" ३.	३८३९६
" १.	४३३१६१
गिरिकर्णिका २.	३१११
गिरिकर्णी २.	३३३१३४
गिरिका २.	४१३३२
गिरिकोलि २.	३३३७८
गिरिजा २.	४२३२२
गिरिप्रिया २.	३३३१०५
गिरिमल्लिका २.	३३३७३
गिरिलक्ष्मण १.	३३३२८
गिरिश १.	११३३९
गिरिसार १.	३२३३४
गिरिस्तनी २.	३१३३
गिरीयक १.	४३३१६२
गिरीश १.	११३३९
गिल १.	३५३१५
गीत ३.	३१११०९
गीतिशासन ३.	३३३२९
गीत्युपक्रम १.	३१११४०
गीर्ण १. २. ३.	५४३१०६
गीर्वाण १.	११३२
गीर्षपति १.	२१३३३
गुम्गुल १.	३३३५३
गुच १.	२८३६३

शब्दानुक्रमिका

गुच्छ १.	३३३२०
" १.	४३३१४०
गुच्छा २.	३८३३५
" २.	३८३६०
गुच्छार्ध १.	४३३१४०
गुञ्ज १.	३३३२०६
गुञ्जन ३.	२१३२
गुञ्जा २.	३३३१७९
" २.	५११४४
" २.	६२३११
गुड १.	३३३२७
" १.	४३३१०१
" १.	४३३१६१
" १.	४३३६२
" १.	४३३१३३
" १. २.	६५३२७
" ३. २.	८१३३२
गुडक १.	४३३४७
गुडजूष १.	४३३९६
गुडपुष्प १.	३३३४४
गुडफल १.	३३३४५
गुडा २.	६५३२७
" २.	८१३३३
गुडाका २.	३३३१९७
गुड्वीर २.	३३३१३१
गुडेरक १.	४३३१०१
गुण १.	३३३१६२
" १.	३१३३०
" १. २. ३.	४३३१३
" १.	५३३१
" १.	५४३६४
" १.	६१३२०
गुणग्राम १.	५१३६७
गुणलयनी २.	४३३१२५
गुणवृक्ष १.	८३३२०
गुणवृक्षक १.	४२३१७
गुणसामान्य ३.	३३३१६२
गुणावली २.	३३३३६
(गुणापणी)	
गुणित १. २. ३.	२१३२२
गुणोत्कर्ष १.	५३३३

[गुहाशय]

गुण्डा २.	३३३१५
गुण्डित १. २. ३.	५४३१३
गुद ३.	४३३६०
गुदग्रह १.	४३३३३
गुदानिल १.	३३३२०५
गुध १.	३८३३३
गुन्दिल १.	२१३१०
गुन्द्र १.	३३३२२८
गुन्द्रा २.	३३३६६
" २.	३३३१९९
" २.	३८३६०
गुप्त १. २. ३.	५४३१००
गुप्तराग १.	३३३२२५
गुप्ति २.	६२३११
गुम्फ १.	५३३३९
गुरण ३.	५३३३४
गुरु १.	११३३४
" ३.	३३३२८
" १.	३३३२२
" १.	३८३५३
" ३.	३८३३९
" १. २. ३.	६५३२७
गुरुपत्र ३.	[३३३३२]
गुरुवस्तुत् १. २. ३.	
गुला २५	५४३२५
गुलिन् १.	५३३२५
गुलुल्ल १.	३३३२०
गुल्फ १.	४३३५७
गुल्फशीर्ष १.	४३३५७
गुल्म १.	३३३३७
" १.	५३३५८
" १.	४३३१३३
" १.	५४३३०
" १.	६१३१९
गुल्मिनी २.	३३३३७
गुवाक १.	३३३२१७
गुह १.	११३५५
गुहा २.	३३३३६
" २.	३३३३३६
गुहाख्य १.	३३३८०
गुहाशय १.	४३३५०

[गुहाशय]

गुहाशय १.	८११२१
गुह्य ३.	४१४६२
„ १. २. ३.	५१४१२०
„ १. २. ३.	५१४१२०
गुह्यक १.	११३३
„ १.	८११५६
गुह्यकेश्वर १.	११३५७
गुह्यधारा २.	४१४६३
गुह्यबन्ध १.	४१३१३१
गुह्यमध्य १.	४१४६२
गू १. २.	८१५३८
गूढकोश १.	११२६०
गूढपद ३.	३१६१७३
गूढपाद १.	४११६
गूढपुरुष १.	३१७२६
गूढवृत्त १.	३१३५५
गूध १.	४१४११९
गून १. २. ३.	५१४११३
गुञ्जन १.	३१३५७
„ १.	३१३२०४
„ १.	३१३२०६
„ १.	३१३२०७
गुण्डिव २.	३१३३९
गुप्ति १. २. ३.	५१४३५
गुध्र १.	२१३३०
गुष्टि २.	३१३५८
„ २.	३१४४८
गुह ३.	४१३१९
„ १ व.	४१४३५
गुहकाण्ड १.	३१८७८
गुहकारिका २.	२१३४६
गुहगोधिका २.	४११३०
गुहगौलिका २.	४११३०
गुहजालक १. २. ३.	३१९८६
गुहद्रुम १.	३१३५४
गुहपति १.	११२२४
„ १.	३१७२७
गुहमणि १. २.	४१३१६१
गुहसृग १.	३१४६९
गुहमेधिन् १.	३१६४०

वैजयन्तीकोषः

गुहयालु १. २. ३.	५१४३८
गुहश्रेणी २.	४१३४६
गुहस्थ १.	३१६४०
गुहस्थूण ३.	४१३३९
„ ३.	८१९२२
गुहान्तर ३.	३११५२
गुहावग्रहणी २.	४१३४४
गुहिणी २.	२१३४६
„ २.	४१४२१
„ २.	७१२१७
गुहिन १.	३१६४०
गुहीति २.	३१६१६५
गुहडिका २.	४११३६
गुहेश्वर १.	५१४७०
गुहोच्छिष्ट १.	३१३२०४
गुहोदक ३.	४१३८१
गुह्य १.	२१३५
„ १. २. ३.	६१४५
गुह्यक १.	५१४२८
गुह्य ३.	११९१०९
गुह १. ३.	४१३१९
गुहेनदिन् १. २. ३.	५१४७०
गैरिक ३.	३१२११
„ ३.	३१२२०
गैरुष १.	३१५३३
गैरेय ३.	३१२१६
गैरेयक ३.	३१३२१९
गौ १.	१११२
„ २.	१११९
„ २.	३१३४१
„ १.	३१४५२
„ २.	३१४५२
„ १. २.	८१५३७
गोकण्टक १.	३१३१४१
गोकरीषेन्धन ३.	३१६९७
गोकर्ण १.	३१४१५
„ १.	५११८०
गोकर्णी २.	३१३११४
गोकुल ३.	३१४६१
गोकृच्छ्र ३.	३१६१३९

[गोनस]

गोक्षुर १.	३१३१४१
गोगण १.	११११३
गोग्रन्थि १.	३१४६०
गोगन्धन १.	११२५४
गोचर १.	५१३२
गोजिह्वा २.	३१३११६
„ २.	३१८६०
गोडुम्बा १.	३१३१७३
गोणिका २.	५११५८
गोणी २.	४१३१३०
„ २.	५११५६
„ २.	५११६३
गोतम ३.	३१७१७४
गोत्र १.	३१२११
„ ३. २.	६१५२८
गोत्रभिद् १.	११२३
गोत्रा २.	५१११३
„ २.	६१५२८
गोदर्भ ३.	३१३२०१
(गोनर्द)	
गोदा २.	४१२२८
गोदारण ३.	३१८२७
„ ३.	३१८२९
गोदावरी २.	४१२२८
गोदुह १.	११३१२
„ १.	३१९२८
गोध १.	३१५१
„ २. ३.	३१७१५५
गोधन ३.	३१४६१
गोधा १.	३१५१
„ २.	३१७१५५
„ २.	४११२६
„ २.	४११२६
गोधामाली २.	४१११८४
गोधासन ३.	३१६२२०
गोधि २.	४१४९६
गोधूम १.	३१८५३
गोधूमचूर्ण ३.	४१३६८
गोनर्द १.	२१३३३
गोनर्दीय १.	३१६१५७
गोनस १.	४१११३
„ १.	४१११४

[गोनस]

गोनास १.	४१११४
गोनिषदन ३.	३१६२२५
गोप १.	३१७२२
„ १.	३१९२८
गोपघोष्ठा २.	३१३८८
गोपति १.	३१४५३
„ १.	७११२४
गोपभद्रा २.	३१३५७
गोपा २.	३१३१३९
गोपानसी २.	४१३३९
गोपायित १. २. ३.	५१११००
गोपाल १.	३१९२८
गोपाली २.	३१६५६
गोपुच्छ १.	४१३१४१
गोपुर ३.	३१३२०१
„ ३.	४१३१५
गोप्य १.	३१९३
„ १. २. ३.	६१५२९
गोमत् १. २. ३.	३१४५९
गोमत ३.	३१३६२
गोमतल्लिका २.	३१४४६
गोमती २.	४१२२९
गोमय १. ३.	३१४६०
गोमायु १.	३१४३८
गोमिन् १. २. ३.	३१४५९
गोमुख १.	४११५३
„ १. ३.	७१५३६
गोरक्षजम्बू २.	८१२११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८६२
गोरस १.	३१८१३९
„ १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३११६२
गोर्गल १.	३१३२३३
(होर्गल)	
गोर्द ३.	४१११२
गोल १.	३१२१५
„ ३.	४१३८२
गोलक १.	३१५६०
„ १.	३१५६२
„ १.	३१५६३

शब्दानुक्रमणिका

„ १.	३१५६३
„ १.	७१२२३
गोलका २.	७१२१७
गोलत्तिका २.	२१३२४
गोलपुस १.	३१४३२
गोला २.	३१२१७
गोलाङ्गूल १.	३१४४०
गोलोक १.	३१६२०७
गोलोमी २.	३१३१९७
„ २.	३१३२३३
गोवन्दिनी २.	३१३६६
गोवाहिन् १.	३१४३३
गोविन्द १.	११११५
„ १. २. ३.	२१४५९
गोवीथी २.	२११४७
गोवृष १.	३१४५४
गोव्रत ३.	३१६१४८
गोशकृत् ३.	३१४६०
गोशाल १. २. ३.	८१९३४
गोशाला २.	४१३२२
गोशीर्ष ३.	३१८११३
गोष्ठ १.	३१९३१
गोष्ठवातिङ्गन १.	३१३१०३
गोष्ठश्च १. २. ३.	५१४२६
गोष्ठी २.	३१८१३
गोष्पद १. २. ३.	७१५३७
गोसङ्ख्य १.	३१९२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसव्य ३.	४१३११३
गोस्तन १.	४१३१४१
गोस्तनी २.	३१३१८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	३१४५९
„ ३.	३१९१०५
गोहरीतकी २.	३१३३०
गौतम १.	१११३५
„ १.	३१६१५६
„ ३.	४१११०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४११२६
गौधेय १.	४११२७

[ग्रहराज]

गौधेर १.	४११२६
गौर १.	३१३९४
„ ३.	३१३२३२
„ ३.	५१३१०
„ ३.	५१३२०
„ १. २. ३.	६१४५५
गौरव ३.	३१८११६
„ ३.	५१२२०
गौरशाक १.	३१३४४
गौरसर्ज १.	३१३३९
गौरसर्षप १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४११२३
गौरावस्कन्दिन् १.	११२१७
गौरी २.	११२४६
„ २.	३१३१२१
„ २.	३१३२११
„ २.	८१६३
गौरेय १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३१९३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५१४११०
ग्रन्थ १.	६११२१
ग्रन्थन ३.	५१२३९
ग्रन्थि १.	३१३११
„ १.	३१९३१
ग्रन्थिक ३.	३१८९१
ग्रन्थिनी २.	३१८७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८९२
ग्रन्थिल १.	३१३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५१४१०८
ग्रह १.	११२३८
„ १.	२११३०
„ १.	२११५०
„ १.	३१६६३
„ १.	३१९५७
„ १.	६११२०
ग्रहकल्लोल १.	२११३६
ग्रहण ३.	७१३१४
ग्रहणी २.	४११२९
ग्रहभोजन १.	३१७९१
ग्रहराज १.	८११२१

[ग्रहि]

ग्रहि १.	८१११०
ग्रहीतृ १. २. ३.	३८८९
" १. २. ३.	५४३८
ग्राम १.	३१११०
" १.	४३२
ग्रामणी १. २. ३.	५४३६
" १. २. ३.	७५३६
ग्रामणीकुल ३.	३११२०
ग्रामतत्त्व १.	३११३४
ग्रामता २.	५११९
ग्रामधान्य ३.	४३१३३
ग्रामप्रेष्य १.	३१५६२
ग्रामसीमा २.	४३१११
ग्रामसूकर १.	३१४०१
ग्रामार्थ १.	४३१५
ग्रामीण १. २. ३.	४३१३३
ग्रामीणा २.	३३३११०
ग्रामेयक १. २. ३.	४३११२
ग्राम्य १.	२३३४१
" १. २. ३.	४३१३३
ग्राम्यधर्म १.	४३१३७०
ग्राम्या २.	३३३१६०
ग्रावन् १.	३३३१०२
" १.	६१११९
" १.	८६१४
ग्रास १.	३३३१५
" १.	४३१०१
ग्रासग्रह ३.	३३३१५०
ग्राह १.	४११५२
" १.	६१११९
ग्राहिन् १.	३३३३२
ग्रीषा २.	४११८३
ग्रीष्म १.	२११८८
ग्रीष्ममुन्दर १.	३३३१५७
ग्रीवेयक ३.	४३३१३७
ग्रीष्मिका २.	३३३१८६
ग्लवथु १.	४१११२२
ग्लस्त १. २. ३.	५४११०८
ग्लह १.	३११६०
ग्लान १. २. ३.	४४११४५
ग्लानि २.	४४११२२

वैजयन्तीकोषः

ग्लान्नु १. २. ३.	४४११४५
ग्लौ १.	२११२५
घ	
घङ्कोर १.	३३३१६९
घट १.	४३१५८
" १.	५११५५
घटना २.	५२३३४
घटा २.	३३७७०
" २.	३३८१४
" २.	५२३३४
घटिक १. ३.	५११६०
घटिका २.	२११५४
" २.	७२३८
घटिकालवण ३.	३३८१२४
घटी २.	४३१५९
घटीयन्त्र ३.	४३२२१
घट्ट १.	४३२२०
घण्टा २.	३३३१५८
" २.	४३१८०
घण्टाताड १.	४३३३०
घण्टापथ १.	४३३१६
घण्टारवा २.	३३३१९८
घण्टाला २.	४३३१५८
घण्टास्वन ३.	३३२२९
घन १.	२३२११
" ३.	३३२३२
" १.	३३३१५
" १.	३३३१०२
" १.	३३७१७१
" ३.	३३१११५
" ३.	३३१११६
" ३.	३३११२३
" ३.	४३१८६
" १.	५३१५५
" १. २. ३.	५४१२६
" १. २. ३.	६१३३०
घनगोलक १. ३.	३३२२३
घनधातु १.	४४११०४
घनपद ३.	४३२
घनरस १.	४३३
घनवासक १.	३३३१६९

[घृणा]

घनश्रेणी २.	३१११
घनसागर १.	३३८१०५
घनाघन १.	८११२२
घनागम १.	२११८९
घनात्यय १.	२११८९
घनाग्ला २.	४३१७८
घनोपल १.	२३२७
घरिन् १.	३३८३५
घर्घर १.	३३५१८
" १.	३३५३०
" ३.	३३३१९४
" १. ३.	४३१५०
घर्घरक १.	२३३२२
घर्घरिका २.	३३११३१
" २.	८३२५
घर्घरी २.	३३११३१
घर्म १.	३३१८१
" १.	८११५७
घस्मर १. २. ३.	५४१५०
घस्र १.	२११५५
घाटा २.	४३१८५
घाण्टिक १.	३३५३७
" १.	३३७३०
घात १.	३३७२११
घातुक १. २. ३.	५४१४२
घारि २.	२११५७
घास १.	३३१७४
घासहार १.	३३५६३
घासि १.	१३११४
घासिक १.	३३७११७
घर्मिण १.	३३५२१
घुटिक १.	३३७८६
" १.	४३१५७
घुण १.	४३१३६
" १.	५३१४९
घुणाभीष्टा २.	३३३१९८
घुलुञ्छ १.	३३८५९
घुसृण ३.	३३८११६
घूर्णन ३.	५३११०
घूर्णि २.	५३११०
घृणा २.	३३३१९२

[घृणा]

घृणा २.	३३३१९
(मृणा)	
" २.	६३२१२
घृणि १.	२११५५
" १.	६११२२
" १.	८१२२५
त ३.	३३८१३८
" ३.	६३३६
" १.	८१२२८
घृतपूर १.	४३३७४
घृतभुज १. २. ३.	३३३१३५
घृतलेखनी २.	३३३१०१
घृताञ्जन ३.	३३३१२
घृताशिन १. २. ३.	३३३१३५
घृतिन् १.	३३३१३५
(वृतिन्)	
घृषि १.	३३३१९
घृष्टि १.	२१११६
" १.	३३३३६
" १.	८१२२५
घृष्टव १.	३३३१९
घोटक १.	३३७९१
घोण १.	३३३५४
घोणस १.	४३११४
घोणा २.	२३३४६
" २.	४३१९१
" २.	६३२१२
घोणिन् १.	३३३५
घोण्टा २.	३३३२१७
घोर १.	३३३३८
" ३.	३३८११७
" १. २. ३.	३३१७९
घोरवाशिन ३.	२३३४
घोरित ३.	२३३५
घोल १.	३३५२१
" ३.	३३८१४८
" १.	३३८१४९
" ३.	३३८१५०
" १.	४३३५९

शब्दानुक्रमिका

घोष १.	२३३२
" १.	३३३१५८
" १.	३३३३२
घोषवती २.	३३३११६
घोषित १. २. ३.	२३३२२
घोष १.	४३१२५
घ्राण ३.	४३३९१
" १. २. ३.	६३५२९
च	
च ४.	८३७४
" ४.	८३७११
चकित १. २. ३.	५४३१८
चकोर १.	२३३३५
चक्र ३.	३३३२१८
चक्रण ३.	३३३२१८
चक्र १.	२३३९
" ३.	३३७५५
" ३.	३३७१३४
" ३.	४३३३०
" ३.	४३३१२५
" ३.	६३३७
चक्रकारक ३.	३३८९९
चक्रचर १.	३३६४२
चक्रधारण ३.	३३७१३१
चक्रपक्ष १.	२३३५
चक्रपाणि १.	१३३१०
चक्रपाद १.	८३३२२
चक्रप्रान्त १.	३३७१३५
चक्रभृत् १.	८३१५०
चक्रमर्दन १.	३३३१५८
चक्रलक्षणा २.	३३३१३२
चक्रवर्तिन् १.	३३७२
चक्रवर्तिनी २.	३३८८९
चक्रवाक १.	२३३९
चक्रवाल ३.	२३३६
" ३.	३३३३
" ३.	५३३३
चक्रवृत्ति २.	४३६
चक्रसंज्ञ ३.	३३२१५
चक्राङ्का २.	३३३१४३
चक्राङ्का २.	३३८८६

[चण्डातक]

चक्रावर्त १.	५३३१०
चक्राह्वयाह्वय १.	२३३९
चक्रिन् १.	१३३१२
" १.	३३३४०
" १.	४३३३
" १.	६३३२३
चक्रोवत् १.	३३३६५
चक्रोद्गी २.	३३३२१०
चक्रस् १.	२३३३३
चक्रुष्य १.	३३८३७
" १.	४३३७०
" १. २. ३.	५४३७०
" १. २. ३.	५४३११७
चक्रुष्या २.	३३३४४
" २.	३३३१२४
चक्रुस् ३.	४३३९४
चक्रुर १.	७३३२५
चक्रुटक १.	३३३१५२
चक्रुरीक १.	२३३४३
चक्रल १.	२३३२४
" १. २. ३.	५४३७८
चक्रला २.	२३३३
चक्रु २.	२३३५०
" १.	३३३६५
चटक १.	२३३१४
(पण्डक)	
" १.	२३३१८
चटिका २.	३३८९१
चटिकाशिर १	३३८९१
चट्ट १.	६३३२३
चट्टल १. २. ३.	५४३७९
चडक १.	२३३६
चण १.	३३८४३
चण्ड १.	५३३९
" १. २. ३.	५४३३२
चण्डकोलाहला २.	३३९१२६
चण्डमुण्डा २.	१३३६३
चण्डांशु १.	२३३१५
चण्डात १.	३३३१९२
चण्डातक ३.	४३३१२२

[चण्डाल]

वैजयन्तीकोषः

[चरणाग्रक]

चरम]

शब्दानुक्रमिका

[चिञ्चा]

चण्डाल १.	३१५२२	चतुष्पञ्च १. २. ३.	चन्द्रा २ व.	२११२०	चरम १. २. ३.	५४४७७	चल १. २. ३.	५४४७८	चान्द्री २.	२११२८
" १.	३१५८३		चन्द्रातप १.	४३१२३	" ४.	५४४१४०	चलच्चञ्च १.	२३३३५	" २.	२११७२
" १.	३१५१०७	चतुष्पथ १.	चन्द्रिक १.	५३१५१	चराचर १. २. ३.		चलदल १.	३३३२७	चाप १. ३.	३३३७२
" १.	३१५५४	चतुष्पाद् १.	चन्द्रिका २.	२११२८		५४४६२	चलन ३.	७३३१५	चामर ३.	३३३२०२
चण्डालवहली २.		" १.	" २.	४३१२७	चराशा २.	२११४	चला २.	२३३६	" ३.	३३३१५९
	३१५१२७	चतुष्प्रस्थ १.	चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३३५	चरि १.	३३३७२	" २.	४३३१०	चामरपुष्प १.	८११५१
चण्डिल १.	३१५२६	चतुष्टोम १.	चन्द्रिमा २.	२११२८	चरित्र ३.	३३३११५	चलाचल १. २. ३.		चामीकर ३.	३३३१८
चण्डी २.	१११६२	चतुस्स्नेह ३.	चन्द्रोदय १.	४३१२३	चरी २.	४३४८		५४४७८	चामुण्डा २.	१११६३
चतुर ३.	३१५९२	चत्वर १.	चप १.	३३३२१५	चरु १.	६३३२२	चलित ३.	३३३२०१	चाम्पेय १.	३३३८१
" ३.	४३३२१	चत्वरि २.	चपल १.	३३३३३	चक्ति २.	४३३१४७	" १. २. ३.	५४४९५	" १.	३३३८२
" १. २. ३.	५४४५४	" २.	" १.	३३८११०	चर्च १.	१३३६१	चविक ३.	३३८८१	चार १.	३३३२६
" ४.	५४४१३७	चत्वारिंशत् २.	" १. २. ३.	५४४७८	चर्चरी २.	२३३२७	चव्य ३.	३३८८१	" ३.	४३३३६
" १. २. ३.	७३३११	चन ४.	" १. २. ३.	५४४१२५	चर्चा २.	१३३६३	" ३.	३३८८१	चारटी २.	३३८८९
चतुरङ्गक ३.	३३७५९	चनका २.	" १. २. ३.	७३३३९	" २.	४३३१४७	चषक १. ३.	३३९५३	चारण १.	३३९६४
चतुरङ्गल १. २. ३.		चन्दन १. ३.	चपला २.	२३३३	" २.	४३३१०	चषाल १. ३.	३३३१०५	चारणी २.	३३३३३४
	३३३५२	" ३.	चपेट १.	४३३७६	" २.	६३३१२	चाक्रगिरि ३.	३३३१५	चारित्र ३.	३३३११५
" १.	३३३४८	चन्दनद्रवभाजन ३.	चलुक ३.	४३३८७	चचिक्य ३.	४३३१४७	चाक्रिक १.	३३३२३	चारी २.	३३३६७
चतुरा २.	३३३१९		चमक ३.	३३३२०२	चर्पट १.	४३३७७	" १.	३३३७८	चारु १.	२३३३३
चतुरूषण ३.	३३८८१	चन्द्र १.	चमर १.	३३३२९	चर्भटि २.	२३३२७	" १.	३३३२७	" १. २. ३.	५४३३५
चतुर्गति १.	४३३५०	" ३.	चमरिक १.	३३३४७	चर्मकार १.	३३३४०	" १.	७३३२५	" १. २. ३.	६३३६
चतुर्थ १. २. ३.	५३३२१	" १.	चमरी २.	३३३२९	" १.	३३३४०	चाङ्गेरी २.	३३३१६३	चारुक १.	३३३३०
चतुर्थक १. २. ३.		" १.	चमस १. ३.	३३३१०१	" १.	३३३४२	चाट १.	५३३१४	चारुनाल ३.	४३३४०
	५३३५१	" ३.	चमू २.	३३३१०२	" १.	३३३४३	चाटस १.	५३३२९	चार्वी २.	३३३११५
चतुर्थकालिक १. २. ३.		चन्द्रकान्त १.	" २.	३३३५५	चर्मकोश ३.	४३३६२	चाटु १.	६३३२३	चाल १.	३३३६९
	३३३१२६	चन्द्रकिन् १.	" २.	३३३५८	चर्मन् ३.	३३३२१	चाटुकार १.	४३३१४२	चालन ३. २.	८३३३२
चतुर्द्व १.	१३३१२	" १.	चमूपाणि १.	३३३५९	" ३.	३३३१९७	चाटुकार १.	४३३१४२	चालनी २.	४३३६५
चतुर्दशी २.	२३३७०	चन्द्रगोलिका २.	चमूरु १.	३३३२३	चर्मपर्णी २.	३३३१४४	चाणक्यमूलक ३.	३३३१५५	चाष १.	२३३२९
" २.	३३३११७	चन्द्रपाद १.	" १.	३३३२४	चर्मप्रसेदिनी २.	३३३१४३	चाण्डाल १.	३३३१५४	चिकित्सक १. २. ३.	
चतुर्धा ४.	८३३२०	चन्द्रवाला २.	चम्पक १.	३३३८१	चर्मप्रवेविका २.	३३३१७	चाण्डालिका २.	३३३१२७		४३३१४३
चतुर्भद्र १.	३३३२३६	चन्द्रभासा २.	चम्पकद्वीप ३.	३३३१७	चर्ममय ३.	३३३१९७	चातक १.	२३३३२	चिकित्सा २.	४३३१३९
चतुर्मुख १.	१३३१७	चन्द्रभीरु ३.	चम्पा २.	२३३४	चर्मिक १.	३३३४५	चातिक १.	३३३३०	चिकिर १.	७३३२५
चतुर्वर्ग १.	३३३२३५	चन्द्रमणि १.	चम्पुक १.	२३३४	चर्मिन् १.	१३३५२	चातुर १. २. ३.	७३३३८	चिकिल १.	३३३२६
चतुर्विधान ३.	४३३९१	चन्द्रमसू १.	चम्पू २.	२३३४२	" १.	३३३४५	चातुरीक १. २. ३.		(चिकिच्छल)	
चतुर्हस्त १.	३३३५७	चन्द्रमानु २.	चम्पोपलक्षण १ व.		" १. २. ३.	३३३१४४		४३३१०९	चिकुर १. २. ३.	५४३७९
चतुश्शख ३.	४३३५२	चन्द्रमौलि १.	चय १.	५३३१	चर्या २.	३३३११६	चातुर्जात ३.	४३३१५१	" १. २. ३.	७३३३९
चतुश्शाल ३.	४३३२६	चन्द्रव्रत ३.	चर १. २. ३.	५४३६१	चवर्ण ३.	४३३५१	चातुर्मास्य १.	३३३१४५	चिकण ३.	३३३१८
चतुष्क ३.	५३३५५	चन्द्रव्रतिक १. २. ३.	चरण ३.	३३३११५	चवर्णा २.	२३३४५	चात्वा १. ३.	३३३१११	" १.	५३३४
चतुष्की २.	४३३१२४	चन्द्रशाला २.	" १. ३.	४३३५६	चल १.	१३३४९	चान्द्रमसायनि १. २. ३.	२३३३२	चिकस १.	४३३६८
चतुष्कुवः(स्) ४. ८३३६		चन्द्रहास १.	" १. ३.	७३३३७	" ३.	३३३२०७	चान्द्रायण ३.	३३३१३६	चिकण ३.	३३३५५
		" १.	चरणाग्रक ३.	४३३५७	" १.	३३३११०	चान्द्रायणरत १. २. ३.	३३३१२७	चिक्रोड १.	४३३२७
					" १. २. ३.	५४३६८			चिञ्चा २.	३३३८१

चित्रालिक]

चित्रालिक १.	११२५१
चित्रोटिका २.	४१२४८
चित् २.	३१११६४
" ४.	८८११२
चितकावेर ३.	३१८११६
चितः २.	३१७२१६
चिति २.	३१६१६४
" २.	३१७२१६
चित्कृत ३.	२४१९
चित्त ३.	३१६१७२
चित्तविभ्रम १.	३१६१७७
चित्ताभोग १.	३१६१७४
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३१७२१६
चित्र १. २. ३.	३१७१७८
" १.	४११४३
" ३.	४१३१४८
" ३.	६१५३०
चित्रक १.	३१८१८२
" १.	४१११५
" १.	५१३१३३
चित्रकृत १.	३१२१२
चित्रकृत १.	३१३१४६
" १.	३१९११२
चित्रगुप्त १.	११२१३६
चित्रतण्डुला २.	३१८१९७
चित्रदण्ड १.	३१३२०८
चित्रपत्र १.	२१३१२०
चित्रपट १.	४१३११९
चित्रपत्रक १.	२१३१३७
चित्रपर्णिका २.	३१३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२१३१३७
चित्रपुङ्ख १.	३१७१८०
चित्रफलित् ४११४३	
चित्रभानु १.	८११२२
चित्ररथ १.	११२१५
चित्रल १.	३१३१६८
चित्रला २.	३१४१६३
चित्रवाज १.	३१३१२९
चित्रशाला २.	४१३१२३

वैजयन्तीकोषः

चित्रशिखण्डिज १.	२११३३
चित्रशिखण्डिन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
" २.	३१३११३
" २.	३१३१३८
" २.	३१३१७३
" २.	४११११७
" २.	६१५३०
चित्राङ्ग १.	३१४१४
चित्राङ्गि २.	३१३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३१६३५
चित्रोपपत्ता २.	२११६०
चित्रिट १.	३१३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५१४२७
चिपाट १.	३१७१३२
चिपिट १.	४१३१६८
" १. २. ३.	५१४८३
चिबुक ३.	४१४८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५१४७२
चिरजीविन् १.	११११७
" १.	२१३११५
चिरण्टी २.	४१४१९
चिरन्तन १. २. ३.	५१४८७
चिरम् ४.	८१८११
चिरमेहिन् १.	३१४१६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८१८११
चिरसूता २.	३१४१४८
चिराल ४.	८१८११
चिरि १.	११२११८
चिरिबिल्वक १.	३१३१६२
चिरेण ४.	८१८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८१२१२
चिल्ल १.	६१४१५
चिल्लाक १.	२१३१४

[चूचुक

चिल्लिक १.	२१३१२८
चिल्लव १.	३१३१५२
चिल्ल १.	५१३१५७
चिल्ल ३.	२११२९
" ३.	६१३१८
चीन १ ब.	३११२३
" ३.	३१२३३
" १.	३१३१५०
" १.	३१४२१
" १.	३१८३७
" १.	३१८५९
चीनक १.	३१४१३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३१२३०
चीनसी २.	३१४२१
चीना २.	३१६१५०
चीर ३.	४१३१३०
चीरिणी २.	४१४१८
चीरी २.	२१३१४८
चीवर ३.	४१३१२८
चुक्र ३.	३१८१३२
" १.	३१८१३३
चुक्रिका २.	३१३१६३
चुचुन्दरी २.	४११३२
चुण्डिन् १.	४१२१७
चुन्दी २.	४१४२५
चुप १.	५१३१७
चुबुक ३.	४१४८७
चुम्बक १.	३१२३८
चुम्बन ३.	४१३१७१
चुम्न १. २. ३.	६१५३१
चुल १.	४१४७८
चुलक १.	३१४३
" १.	४१४७८
चुलम्पा २.	३१४१३
चुल्ल १.	६१४१५
चुल्लि २.	४१३१५४
चूचु १.	३१५५१
" १.	३१५९३
चूचुक १.	३१५७४
" १.	३१५८१

चूचुक]

चूचुक ३.	४१४६८
चूचुक १.	३१८१४५
चूडा २.	४१४१०२
" २.	८१२१५
चूडाकरण ३.	३१६१४
चूडामणि २.	३१३१७९
" १. २. ३.	४१३१३६
चूत १.	३१३२५
चूतक १.	४१२१७
चूर्ण ३.	४१३१५७
चूर्णपूप ३.	४१३७२
चूर्णि २.	४११५८
" २.	६१२१२
चूलि २.	६१२१३
चूलिक १.	२१३१३
" १.	३१८३९
चूलिका २.	३१३२२२
" २.	३१७७३
चूषण ३.	४१३१०३
चूषा २.	३१७८४
चूष्य ३.	४१३१९
चैटक १.	३१९१२
चैटा २.	४१४२६
चैटिका २.	४१४२६
चैत् ४.	८१८१४
चैतकी २.	३१३१७८
चैतना २.	३१६१६३
चैतस् ३.	३१६१७२
चैदि १ ब.	३१३३६
चैन्नाल १.	३१६१६९
चैल ३.	४१३११७
" १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	६१५३१
चैल्लाण १.	३१३१६८
चैल्य ३.	३१६१९०
" ३.	४१३२८
" ३.	६१३१८
चैल्यवृक्ष १.	८१६२०
चैत्र १.	२११८३
चैत्ररथ ३.	११२१५९
चैत्रिक १.	२११८३

शब्दानुक्रमिका

चैत्री २.	२११७५
चैत्र १ ब.	३१३३६
चोक्ष १. २. ३.	६१५३१
चोच ३.	३१३१४
" ३.	३१८१०४
चोनु १.	४१४१००
चोट १.	४१४१०३
चोटलिङ्गक १.	३१७१८५
चोदनिका २.	३१८१४७
चोदनी २.	३१३१६७
चोद्य १. २. ३.	६१४१६
चोर १.	३१९५५
" १. ३.	४१३७६
चोरपुष्पी २.	३१३११६
चोरिक १.	३१७२०
चोल १ ब.	२१३३३
" १.	३१३८३
" १. ३.	४१३३७
" १.	४१३१२८
चोलक १. ३.	३१३१३
चोलान्त १.	४१३३७
चोली २.	४१३१२७
चौक्ष १. २. ३.	५१४१३५
चौण्ड १.	४१२१७
चौरिक १.	३१९५९
चौरिका ३.	३१९५८
चौर्य २.	३१९५८
चौल २.	३१६१४
व्यवन १.	३१६१५७
व्युति २.	४१४६०
" २.	४१४६१
व्युप १.	६११२३
छ	
छग १.	३१४६२
छगल १.	३१४६२
छगी २.	३१४६२
छण्डकष्ट १.	३१५३६
छत्त ३.	३१६१६
छत्त्रक १.	३१३१६९
छत्त्रधर १. २. ३.	३१७१४५

[छाग

छत्त्रा २.	३१३१२४
" २.	३१३१३४
" २.	३१८१४९
छत्त्राक १.	३१३१५३
छत्त्राकी २.	३१८१२४
छत्त्रिन् १.	३१७२८
छद १.	२११६२
" १.	२१३४९
" १.	३१३१६
छदन ३.	२१३४९
" ३.	३१३१६
छदावलि ३.	३१७१८५
छदिसू ३.	३१६१९
" २. ३.	४१३३७
" २.	४१४१०३
छदिस्तुण ३.	३१८६७
छदमन् ३.	३१६१९५
" ३.	६१३१८
छदमप्रधारवत् १.	३१७२८
छन्द १.	६११२४
छन्दना २.	३१६१९५
छन्दसू ३.	३१६२७
" ३.	३१६२८
" ३.	६१३१९
छन्दोभेद १.	३१६३४
छन्न १. २. ३.	५१४१२०
छन्नपथ ३.	३१७५४
छन्ना २.	३१३१३१
(छिन्ना)	
छर्दम १.	३१३५०
" १.	३१३७५
" १.	४१४१३५
छर्दनी २.	३१३१७१
छर्दि २.	६१२१३
छल ३.	३१६१९५
छलवाच् २.	२१४१९
छल्ली २.	३१३१३
छवि २.	४१३१५०
छाग १.	३१३३५
(भाग)	
" १.	३१४६२

[छागण]

छागण १.	२११२०
छागणक १	२११२७
छात १. २. ३.	५४११०२
छात्र १.	३१६२५
" १.	३१७२७
" ३.	३१८१३६
छादिषेय १. २. ३.	३१८१३६
छान्दस १.	३१६८१
छाया २.	२११२३
" २.	६१२१३
छायाकर १. २. ३.	३१७१४५
छायापुत्र १.	२११३५
छित १. २. ३.	५४११०२
छिद्र ३.	३१८१८
" ३.	४११२
" ३.	५४११४४
" ३.	६१३१९
छिद्रित १. २. ३.	५४११११
छिन्न ३.	३१८१४२
" १. २. ३.	५४११०२
छिन्नपुच्छक १. २. ३.	३१४५९
छिन्नरुहा २.	३१३१३१
छेक १.	२१३१५
" १. २. ३.	५४१२०
" १. २. ३.	६१५३२
छोटिका २.	३१६२२९
(चोटिका)	
ज	
जसा २.	४१३१०४
जचित १. २. ३.	५४११०८
जगत १.	११२१४८
" १. २. ३.	५४१६१
जगती २.	७१२१९
जगत्तय १.	२११९४
जगत्पाण १.	११२१४७
जगल १.	३१९५१

वैजयन्तीकोषः

जगल १	५४१२७
जग्ध १. २. ३.	५४११०७
जग्धि २.	४१३१०२
जघन १.	४१४६४
" ३.	७३११५
जघनपिण्डिका २.	३१७७८
जघनभाग १.	३१७७६
जघनेफल १.	३१३१७४
जघनेफला २.	३१३१११
जघन्य ३.	३१८११५
" १. २. ३.	५४१७६
" १. २. ३.	५४१७७
" १. २. ३.	७४१११
जघन्यज १.	३१९११
" १. २. ३.	५४१४
जङ्गम १. २. ३.	५४१६१
जङ्गित १.	३१५३
जङ्गा २.	४१४५८
जङ्गात्राण ३.	३१७१५४
जङ्गापद १.	३११५२
जङ्गल १. २. ३.	३१७१५०
जटा २.	३१३१३२
" २.	३१३२०२
" २.	३१८१००
" २.	४१४१०१
" २.	५११३
जटाश्राट १.	१११४४
जटाटीर १.	१११४४
जटायु १.	३१३१५४
जटिन् १.	३१३२८
जटिल ३.	३१३२०२
" १. २. ३.	५४१९
जटिला २.	३१३१९७
" २.	३१८१००
जटी २.	३१३२०३
" २.	५११५८
जटुल १.	४१४९७
जठर ३.	४१४६७
जठरोत्सव १.	३१६६२
जड १.	५३१६

[जपा]

जड १. २. ३.	५४११४
" १. २. ३.	६१४६
जडा २.	३१६१९
जतु ३.	४३११५३
जतुक ३.	३१८१३१
जतुका २.	३१३१४४
जतुकाहला २.	३१९१२६
जतुकृत् २.	३१८१८९
जतुका २.	३१८१८९
जतु ३.	४१४६९
जन १.	३१६२०२
जनक १.	४१४२९
जनङ्गम १.	३१९५४
जनता २.	५११९
जनन ३.	४१४१८
" ३.	४१४४९
जननी २.	४१४२६
" २.	७१२८
जनपद १.	३११२१
" १.	८११२३
जनयितृ १.	४१४२९
जनयित्री २.	४१४२६
जनवाद १.	२१४३४
जनश्रुति २.	२१४३९
जनस १. ४.	३१६२०७
जनार्दन १.	११११०
जनाश्रय १.	४१३२८
जनि २.	३१११८
" २.	६१२१४
जनिमन् ३.	७१२७
जनी २.	३१३१२८
" २.	४१४३६
जनुस् ३.	४१४१८
जन्तु १.	४१४११
जन्तुघर १.	३१४३४
जन्तुफला २.	३१८६१
जन्मन् ३.	४१४१८
जन्य १. २. ३.	६१५३२
जन्या २.	३१८८९
जन्तु १.	४१४११
जपा २.	३१३१९५

जपापुष्प]

जपापुष्प ३.	३१८१६७
जम्पति १ द्वि.	४१४४८
जम्बाल १.	३१८२६
" १.	७१२२६
जम्बीर १.	३१३३५
" १.	३१३१२०
जम्बु ३.	३१३२२
जम्बुक १.	७१२२६
जम्बुल १.	३१३२२३
जम्बू २.	३१३२२
" २.	३१३१९२
जम्बुगर्त १.	३१७१६१
जम्बूट १.	३१३१९४
जम्बूद्वीप १.	३१११०
जम्बूलमालिका २.	३१६५०
जम्भ १.	४१४८९
जम्भक १.	३१३३५
" १.	३१५८५
जम्भरिपु १.	११२४
जम्भल १.	३१३३५
जम्भीर १.	३१३३५
जय १.	११२६
" १.	११२८
" १.	३१३८५
" १.	३१७२०९
" १.	३१८३६
" १.	८१९१२
जयदत्त १.	११२८
जयन्त १.	११२८
" १.	२११२६
जयन्ती २.	११२९
" २.	२११७८
" २.	३१३१९६
जयन्तीपुर ३.	४१३८
जयवाहिनी ३.	११२११
जया २.	३१३८९
" २.	३१३१९७
" २.	३१८८३
जयिन् १. २. ३.	३१७१४७
जयोदाहरण ३.	२१४३६
(जनोदाहरण)	

शब्दानुक्रमणिका

जय्य १. २. ३.	३१७१४८
जरठ १. २. ३.	७१४१२
जरत् १. २. ३.	५४१३
जरत्कार १.	३१६१५६
जरद्गाव १.	३१४५५
जरन्त १.	३१४९
जरा २.	४१४५४
जराभीरु १.	१११२९
जरायु १.	४१४१८
" १. ३.	७१५३९
जरायुज १. २. ३.	४१४२
जरुर्द १.	३१७९७
जर्जर १.	३१९१२९
" १.	५३१४१
जर्ण १.	२११२७
" १.	३१३५
जर्तिल १.	३१८३९
जल ३.	४१२२
" १. २. ३.	५४१४४
जलक १.	३१४३३
जलकण्टक १.	४१२४८
जलकरिन् १.	४११६०
जलकाक १.	२१३११
जलकोलि २.	३१३८९
जलचर १.	२१३४१
जलजन्तु १.	४११४०
जलजम्बुका २.	३१३१०३
जलजा २.	३१८५८
जलतस्कर १.	२१११२
जलद १.	२१२१
जलदा २.	२१२४
जलद्रोणि २.	४१३६१
जलनर १.	४११६०
जलनिधि १.	४१२११
जलनीली २.	४१२४९
जलपालिका २.	२१२४
जलपिप्पिक १.	४११४१
जलप्रिय १.	३१४५
जलवृंहण ३.	४१२३०
जलभूषण १.	११२४६
जलमार्जसि १.	४११५४

[जागर]

जलमुच १.	२१३११
जलमुस्त ३.	३१३२०१
जलरङ्ग १.	२१३१११
जलराशि १.	४१२१०
जललम्बिका २.	३१३१९८
जलवालक १.	३१२३
जलव्याल १.	४१११९
जलशीनक १.	५४१८
जलशूर १.	४१२४९
जलसम्भवा २.	३१४४३
जलाचार १. २. ३.	३१६१३१
जलात्मन् १.	३१४८
जलाधार १.	४१२५
जलालोका २.	४११५८
जलाशय १.	३१३२३१
" १.	४१२५
जलाश्व १.	४११६०
जलाहार १. २. ३.	३१६१३५
जलक १. २. ३.	८१२२६
जलका २.	४११५८
जलेशय १.	८१५८
जलोच्छ्वास १.	४१२३१
जलोद्गम १.	४१२८
जलोलक १.	५३१४१
जलौकस् १ ब.	४११५८
जलपाक १. २. ३.	५४१४६
जल १.	३१५५४
जव १.	११२५५
" १. २. ३.	३१७१५०
" १.	५१२३१
जवन १. २. ३.	३१७१५०
" ३.	५१२३१
जविन् १.	३१४१६
" १. २. ३.	३१७१५०
जसु १.	५३११
जसुरि १.	७१२५
जागर १. २. ३.	३१६१९६

जागर]	वैजयन्तीकोषः	[जीर्णक
जागर १. ३१७१५३	जानुभक्तिनी २. ३१७५२	जालिका २. ३१७५३
जागरण ३. ३१६१९६	जानुमात्र १. २. ३.	जालिन् १. ३१९४२
जागरित ३. ३१६१९६	४१४८२	जालिनी २. ३१८७७
जागरित् १. २. ३. ५१४४४	जानुमात्री २. ३१७५२	" २. ४३१२३
जागरुक १. २. ३. ५१४४४	जावाल १. ३. ३१९२९	" २. ४१४१०१
जागर्या २. ३१६१९६	जामदग्न्य १. १११२०	जाली २. ३१३१५९
जागृवि १. १२११८	जामातृ १. ४१४३८	जाहम १. २. ३. ६१४६
जाघनी २. ४१४५८	" १. ७११२६	जावक ३. ४१३१५४
जाङ्गल १. २. ३. २१४२०	जामि २. ६१२१४	जाहक १. ३१४७२
" १ ब. ३११४०	जामेय १. ४१४७१	जाह्वी २. ४२१२४
" १. २. ३. ३११४५	जाम्बव ३. ३१३२२	जिघत्सा २. ३१६१८२
" ३. ३१८१०७	जाम्बूनद ३. ३१२२०	जिघत्सु १. २. ३. ५१४३६
जाङ्गलिक १. ४११२५	जाया २. ४१४३४	जिघांसु १. ३१७४१
जाटलि २. ८१२२६	जायाजीव १. ३१९६२	जिङ्गी २. ३१३१३५
जाट्य १. ३१८४४	जायापति १ द्वि. ४१४४८	" २. ३१३१६०
जात ३. ५११३	जायु १. ४११४१	जित १. २. ३. ३१७१४८
जातरूप ३. ३१२१८	जार ३. ४१२४२	जितकाशिन् १. २. ३. ३१७२१८
जातवेदस् १. १२११४	" १. ४१४३८	जितरण १. २. ३. ३१७२१८
जातारणि १. ३१६७२	जारण ३. ३१८१२६	जित्वर १. २. ३. ३१७१४७
जाति २. ३१३१२३	जारद्वव ३. २११४९	जिन १. १११३३
" २ ३१३१८२	जारद्ववी २. २११४७	" १. १११३५
" २ ३१५१११	जारवायु १. ११२५४	जिष्णु १. ११२४
" २ ६१२१४	जारी २. १११५९	" १. २. ३. ३१७१४७
जातिकोश ३. ३१८१०६	" २. ३१६१८८	जिह्वा १. ४११५
जातु ४. ८१८७	जाल ३. ३१११३	" १. २. ३. ६१५३२
जातोक्ष १. ३१४५४	" ३. ३१५३३	जिह्वा २. ११२२९
जात्य १. २. ३. ५१४६१	" ३. ३१३१९	" २. ४१४९०
" १. २. ३. ५१४६४	जालक ३. ३१३१९	" २. ६१२१५
" १. ६१४७	" १. ३१८३९	जिह्वापान १. ३१४७०
जानकीकान्त १. १११२०	" ३. ५११३	जिह्वास्वाद १. ४१३१०३
जानु १. २. ४१४५९	जालकिनी २. ३१४६५	जीन १. २. ३. ५१४३
जानुक १. २. ३. ३१६१३३	जालन १. ५१३३९	जीमूत १. ७१२६
जानुदधन १. २. ३. ४१४८२	जालन्धर १ ब. ३१३२६	जीरक १. ३१८८३
जानुद्वयस १. २. ३. ४१४८२	जालपाद १. २१३१२	जीरण १. ३१८८३
जानुनिकुखन ३. ३१६२२२	जालपादक १. २१३१६	जीर्ण १. २. ३. ५१४३
	जालभूषण १. ३१५३६	" १. ६१५३४
	जालिक १. ३१९३८	" १. २. ३. ५१४२३
	" १. ३११३४	जीर्णक ३. ३१३२०५

जीर्णि]	शब्दानुक्रमणिका	[ज्योतिष्मती
जीर्णि २. ४१४५४	जीवितेश १. २. ३. ८१५८	जाति २. ४१४५०
जील ३. ६१३१०	जुगुप्सन ३. ३१९७६	ज्ञान ३. १११४७
जीव १. ३१६१६१	जुगुप्सा २. २१४३३	" ३. ३१६१६४
" १. २. ३. ३१७२२०	" २. ३१६१९३	ज्ञानिन् १. ३१७५०
" १. ३१७२२०	" २. ७१२१८	ज्या २. ३१७१७८
" १. ४१४१	" २. ८१९१४	" २. ८१२१७
" १. २. ३. ६१५३३	जुहुराण १. १२११९	ज्यानि २. ४१४५४
जीवक १. २. ३. ५१४१६	जुहू २. ३१६१००	ज्यानिवारण ३. ३१७१५५
" १. २. ३. ७१५४०	जृति २. ५१२३१	ज्यायस् १. २. ३. ५१४४
जीवजीव १. २१३४०	जूर्णा २. ३१३२३०	" १. २. ३. ६१४७
जीवत् १. २. ३. ३१७२२०	जूर्णाद्वय १. ३१८५७	ज्येष्ठ १. २१३६
जीवतोका २. ४१४१९	जूर्णि २. ६१२२४	" ३. ३१२२८
जीवथ १. ४११५०	जृम्भ १. २. ३. ८१९३८	" ३. ३१२३१
जीवधन ३. ३१४६१	जृम्भण १. २. ३. ३१९८८	" ३. ३१३२०२
जीवन ३. ३१८११	जृम्भा २. ३१९८८	" ३. ३१८१४५
" ३. ४१२१२	" २. ८१९३८	" १. ४१४३१
" ३. ४१३८५	जृम्भिका २. ३१९८८	" १. २. ३. ६१४७
जीवनी २. ११११६	जृम्भित १. २. ३. ७१५४०	ज्येष्ठानी २. २११४१
" २. ३१३१४३	जेतृ १. २. ३. ३१७१४८	ज्येष्ठतात १. ४१४३२
जीवनीय ३. ३१८१४६	जेमन ३. ४१३१०२	ज्येष्ठश्वश्रू २. ४१४२८
" ३. ४१२१२	जेय १. २. ३. ३१७१४८	ज्येष्ठा २. १११४९
जीवनीया २. ३१३११२	जेत्र १. २. ३. ३१७१२८	" २. ११२४२
" २. ३१३१४३	" १. २. ३. ३१७१४८	" २. ११३४१
जीवन्ती २. ३१३८४	जैत्री २. ३१३१३३	" २. ४११३०
" २. ३१३१३२	जैन १. २. ३. ५१४१६	" २. ४१४२७
" २. ३१३१४०	जैवातृक १. २. ३. ८१५९	" २. ४१४७४
" २. ३१३१४३	जोङ्गक ३. ३१७१०७	" २. ६१२१५
जीवपति २. ४१४१४	जोटिङ्ग १. १११४५	ज्येष्ठामूलीय १. २११८४
जीवबोधिनी २. ३१३१४५	जोड ३. ३१३२१८	ज्येष्ठाम्बु ३. ४१३६७
जीवलोक १. ३१६२०६	जोणाल १. ५१३१९	ज्येष्ठ १. २११८४
जीववृत्ति २. ३१८१४	जोनल १. ३१८१५६	ज्येष्ठी २. २११७५
जीवशाक १. ३१३१५०	जोन्नला २. ३१८१५७	ज्योक् ४. ८१८६
जीवसू २. ४१४१९	जोषम् ४. ८१७२०	ज्योतिरावृण्य ३. ३१६८७
जीवा २. ३१३१४३	ज १. २. ३. ८१५३९	ज्योतिरिङ्गण १. २१३४७
" २. ३१७१८८	" १. ८१९१४७	ज्योतिश्शास्त्र ३. २११५०
जीवातु १. ३१७२२१	जपित १. २. ३. ५१४११३	ज्योतिषामयन ३. २११५०
जीवान्तक १. ३१७३७	जप्त १. २. ३. ५१४११३	" ३. ३१६३३
जीविका २. ३१८११	जप्ति २. ३१६१६४	ज्योतिषाम्पति १. ८११५३
जीवित ३. ३१७२२०	" २. ३१६१६४	ज्योतिष्मती २. ३११३९
जीवितकाल १. ३१७२२१	ज्ञात १. २. ३. ५१४१०१	" २. ३१८६०
जीवितागद १. ३१७२२१		

ज्योतिषोम]

वैजयन्तीकोषः

[तथा

तथागत]

शब्दानुक्रमिका

[तर्क

ज्योतिषोम १.	३१६८६	क्षिलिका २.	४११९६	हारिका २.	४११३३	तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६१२१६	तमोनुद १.	७११२८
ज्योतिस् ३.	६३११०	क्षिप्ती २.	४३१७७	दौण्डिक १. २. ३.	५११२३	तथार्थवाच् १.	५१३३	तन्दन ३.	२११५	तमोनुद १.	८११२३
ज्योत्स्ना २.	२११२८	क्षीरिका २.	२३१४८	त		तथ्य ३.	५३३३	तन्दू २.	६१२१६	तमोपह १.	८११२३
ज्योत्स्नी २.	३३११६०	ट		तक्कोल ३.	३१८१०५	तद् १. २. ३.	५११२०	तन्द्र १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
ज्योतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७५१४१	तक्र ३.	३१८१४९	" ४.	८११११	तन्द्रा २.	३३११७८	तम्पा २.	३३१४२
ज्योतिषिक १.	३११२५	टङ्क १.	३१८१३१	तक्रज ३.	३१८१३६	तदा ४.	८१८१५	" २.	३३११७७	तम्बा २.	२११४२
ज्योत्स्नी २.	२११५८	" १.	३११२२	तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४	तदानीम् ४.	८१८१५	" २.	६१२१५	तम्बिका २.	३१११३
ज्वल १.	५३१७	" १.	६११२४	तक्रवासन १.	३३३३६	तनय १.	४३३३९	तन्मात्र ३.	३३३२०५	तरच्छु १.	३३१४
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०	तचक १.	७११२८	तनु १.	३३३८५	तन्वी २.	३१८७७	तरङ्ग १.	३३३१६२
ज्वलित १. २. ३.	८१११४	टट्टनी २.	४११३०	तचन् १.	३५३३९	" २.	४११५२	तपन १.	२११११	" १.	४१२१४
ज्वाल १.	११२१९	टट्टर १.	२११११	" १.	३५३८६	" २.	४११०३	" १.	३३३१५१	तरङ्गिणी २.	३३३२१२
ज्वाला २.	११२२९	टट्टरी २.	३१११३५	" १.	३११३४	" १. २. ३.	५१११५	" १.	७११२९	" २.	४१२३३
भ		टर्क १. २.	३११२७	" १	८१११२	" १. २. ३.	५११२५	तपनीय ३.	३३३१८	तरण ३.	५१२१२
क्षन्धानिल १.	११२५२	टिट्ठिभ १.	२३३३४	तत्तशिला २.	४३३९	" १. २. ३.	६११३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४३३८०
क्षटप्प १.	५१२१९	टिट्ठिभासन ३.	३३३१२५	तगर १.	३३३१९४	तनुकूबर ३.	३३३१३२	" १.	२११८२	तरणि १. २.	७११४२
क्षटा २.	३३३१७७	ड		तङ्क १. २.	३३३१८५	तनुत्र ३.	३३३१५२	" ३.	३३३१३६	तरणी २.	४३३१५
क्षटिति ४.	८१८११	डक्कन ३.	२३३१८	तट १.	३३३३६	तनुस् ३.	६३३१२	" ३.	३३३१०७	तरण्डक १.	४३३१६
क्षण्डाली २.	३३३१५९	डङ्क १.	३३३१५३	" १. २. ३.	४३३३२	तनुकृत १. २. ३.	५११११	" ३.	३३३१०९	तरत् १.	८११११
क्षम्प १.	५१२१९	डमर १.	३३३१९०	" १. २. ३.	८११३८	तनूनपात् १.	१३३१४	तपस १.	२११२६	तरस्सम १.	१३३२१
क्षम्पटि २.	४३३१९९	डमरु १.	३३३१३५	तटाक १. २.	४३३३६	तनूरुह ३.	२३३१४९	तपस्य १.	२११८३	तरपण्य ३.	४३३१८
क्षर १.	३३३२७	डयन ३.	२३३१५०	तटित् २.	२३३२४	" ३.	४३३१७७	तपस्विन् १. २. ३.	३३३१२६	" १.	४३३१४३
क्षरसी २.	३३३१५७	डहु १.	३३३१७५	तटित्पति १.	२३३२९	तन्तु १.	३३३१८७	" १. २. ३.	८११२८	" १.	५३३१५
क्षरा २.	३३३१५७	डिण्डिक १.	३३३११५	तटित्त्वत् १.	२३३२१	" १.	३३३१११	तपस्विनी २.	३३३१००	" १.	७११४४
क्षरुका २.	३३३१२५	डिण्डिम १.	३३३१३५	तटिनी २.	४३३२३	तन्तुक १.	४३३१५२	तपिनी २.	४३३२७	तरलित १. २. ३.	५३३१०३
क्षरुर् १.	३३३१३५	डिण्डीर १.	४३३१३३	तटी २.	८३३३८	तन्तुनाग १.	४३३१५२	तप्त १.	५३३८	तरवारि २.	३३३१६२
क्षरुर्क १.	२३३१९२	डिण्डीश १.	१३३१४५	तण्डुल १.	३३३१७७	तन्तुनाम १.	४३३१३४	" १. २. ३.	५३३९८	तरस् ३.	१३३१५
क्षलका २.	१३३२९	डिम १.	३३३१००	" १.	४३३३६	तन्तुवाय १.	३३३१७७	तप्तक १.	४३३३२	" ३.	३३३१०
क्षल्लरी २.	४३३१९	डिम्ब १.	२३३१५०	तण्डुला २.	३३३१७७	" १.	३३३१८	तप्तत १.	४३३३३	" ३.	६३३१३
" २.	७३३१९	" १.	३३३१९०	तण्डुलीयक १.	३३३१५०	" १.	४३३१३४	तप्तक ३.	३३३३२	तरस ३.	४३३१०६
क्षष १.	४३३१४१	" १.	४३३१३३	तत ३.	३३३११५	तन्तुसन्तत १. २. ३.	५३३११२	तप्तक ३.	३३३३२	तरि १.	१३३२८
" १.	४३३१५१	डिम्भ १. २. ३.	५३३२	" १. २. ३.	५३३११०	तन्त्र ३.	३३३११४	" ३.	३३३३२	" २.	४३३३३
" १. २.	६३३३४	" १. २. ३.	६३३७	तति २.	८३३१५	" १.	४३३१५२	" ३.	३३३३२	" १. २.	३३३३३
क्षषा २.	३३३६१	डुण्डुभ १.	३३३१९९	तत्क्रिय १. २. ३.	५३३७३	" ३.	४३३१४१	तमस्विनी २.	२३३१५७	तरीष १.	३३३३७
क्षषापर १.	३३३११४	डुण्डुर १.	४३३३२	तत्त्व ३.	३३३१२३	तन्त्रक १. २. ३.	४३३१२०	तमाल १. ३.	३३३३८	तरु १.	३३३३५
क्षट १.	३३३१८९	डुण्डु १.	४३३३२	" ३.	५३३२१	तन्त्रशाला २.	४३३२२	तमालपत्र ३.	४३३३८	" १. २. ३.	५३३३३
क्षण्ड १.	१३३१४६	डुण्डु १.	४३३३२	तत्त्वधी २.	३३३१६५	" ३.	४३३१४१	तमिन्ना २.	२३३१५७	तरुणी २.	३३३३८८
क्षिक्किल १.	३३३१२४	डुण्डु १.	४३३३२	तत्र ४.	३३३२१	तन्त्री २.	३३३३०	" २.	७३३३४	तर्क १. ३.	३३३३७६
क्षिणिका २.	४३३१२७	डुण्डु १.	४३३३२	तत्रभवत् १. २. ३.	८३३३६			तमी २.	२३३१५७	" १.	६३३२५
क्षिण्टी २.	३३३१९०	डुण्डु १.	४३३३२	तथा ४.	८३३३६						
क्षिण्टीकान्त १.	१३३१४४	डुण्डु १.	४३३३२	" ४.	८३३३०						
क्षिलिका २.	२३३१४८	डुण्डु १. २. ३.	५३३२३								

[तर्कविद्या]

तर्कविद्या २.	३१६३२
तर्कारी २.	३१६९६
(तर्कारी)	
तर्कु १.	३१९१९
तर्जनी २.	४१४७३
तर्ह २.	४३१६३
तर्णक १.	३१४५१
तर्पण १.	४३१३३
" ३.	४३१६९
" ३.	७३१६६
तर्मन् ३.	३१६५२
तर्ष १.	८१२२०
तर्षित १. २. ३.	५१४३७
तर्पु १.	२१११३
तर्हि ४.	८१७२०
" ४	८१८५
तल १.	३१३२१६
" १. २. ३.	३१७१५५
" १.	३१९१२२
" ३.	४१११
" १.	४१४७३
" १.	४१४७७
" ३.	५११५०
" ३.	५११६३
" १.	५३१६
" १. ३.	६१३५
तलपोट १.	३१३१०६
तलप्रोह १.	३१७७८
तलयन्त्र ३.	३१७५१
तलसारक ३.	३१७११४
तला २.	३१७१५५
तलिका २.	३१७११४
तलिन १. २. ३.	५१४१२५
" १. २. ३.	७१४१२
तलनी २.	४३३३३
तलिन ३.	७३१६६
तलुनी २.	४१४८
तलेक्षण १.	३१४५
तल्प ३.	६३११२
तल्पगृह ३.	४३१२०

वैजयन्तीकोषः

तल्लज १.	८१९१२
तविष १.	७१५४२
तष्ट १. २. ३.	६१११११
तस्कर १.	३१९१५६
" १.	८१६१७
तस्थिवस् १. २. ३.	५१४६२
ताटिक १.	३१३१५२
ताडङ्क १.	४३११३४
ताडन ३.	५११३६
ताडी २.	३३३२२४
ताण्डव १. ३.	३१९७३
तात १.	४१४२९
तातगु १. २. ३.	७१५४३
तातल १. २. ३.	७१५४४
तान १. ३.	३१९१११
तानित ३.	७३१६६
तान्त १.	२११८०
तापस १. २.	३१६१२४
" १. २. ३.	३१६१२६
तापिन्त्र १.	३३३८७
तापी २.	४३२२७
तामरस ३.	४३२३९
तामसी २.	२११६०
" २.	३१६१९७
तामिख ३.	२११६२
ताम्बूल ३.	४३११०६
ताम्बूलकरङ्गिका २.	३१७३८
ताम्बूलवल्गिका २.	८१५२८
ताम्बूली २.	८१५२८
ताम्र ३.	३३२२४
" १. २. ३.	६१३३७
ताम्रकर्ष १.	५११५२
ताम्रकुट्टक १.	३१९१५
ताम्रचूड १.	२३११३
ताम्रजीव १.	३१३३९
ताम्रधारण ३.	५११५९
ताम्रपर्णी २.	२११९
" २.	४३२२९
ताम्रपाकिन् १.	३३१५९

[तालपत्रिका]

ताम्रमूला २.	३३१२५
ताम्रवृन्त १.	३३८४७
ताम्रसार ३.	३३१११३
ताम्रा २.	३३११७९
ताम्राक्ष १.	२३३२६
तार १. २. ३.	२३४१३
" १.	३३३२३३
" १.	५३३२३
" १. २. ३.	६१३३६
तारक ३.	३३३२३३
" १. २. ३.	४१४९४
" १. २. ३.	७१५४४
तारकारि १.	१११५४
तारजीवन ३.	३३२१९
तारण १.	२११८०
तारणी २.	३३८१४
तारा २.	२११३८
तारावट १.	३३१९४
तारावर्मन् ३.	२११२
तारुण्य ३.	४१४५३
तार्य १.	१३११९
" १.	१११३७
" १.	३३७९१
" ३.	३३८१२५
तार्यशैल ३.	३३२४१
तार्यसन ३.	३३३२२८
तार्ण १.	१३२२१
" ३.	३११२०
तार्णसौम ३.	३११२०
ताल १.	३३२१४
" ३.	३३३२१६
" १.	३३७१८५
" १.	३३९१२३
" १.	४१४७७
" १.	४१४८०
तालक १.	४१२२७
" ३.	४३३४९
" ३.	४३१३४
" १.	५३३८
तालपत्र ३.	४३१३४
तालपत्रिका २.	३३१२४

तालपर्णी]

तालपर्णी २.	३३८१८
तालमूली २.	३३३२०३
तालवृन्त ३.	४३११५९
तालाङ्क १.	१११२३
" १ ब.	१३११३
ताली २.	३३३२०३
" २.	३३३२२४
" २.	३३११२४
" २.	४३३४९
तालु २.	३३११७१
" ३.	४३३८९
तालुजिह्वा १.	४११५३
तावन ४.	८१७२८
तावतिथ १. २. ३.	५११२०
तावत्कृति २.	५१३३६
तावत्कृत्वः (स) ४.	५१३३६
ताविष १. २.	७१५४२
तिक्त १.	३३३५३
" १.	३३३२२८
" १.	३३३१६६
" १.	५३३२६
" १.	५३३४७
तिक्तक १.	५३३५५
तिक्तकाषाय १.	५३३३१
तिक्तच्छदन १.	३३३१६३
तिक्तपटुस्वादुकाषाय १.	५३३४०
तिक्तपटोलिका २.	३३३१६१
तिक्तवल्का २.	३३३११४
तिक्तशाक १.	३३३४१
तिक्तसार १.	३३३६३
तिक्तिक १.	५३३३०
तिग्म १.	५३३७
" १.	६१३३७
तितउ १. ३.	४३३६५
तितित्ता २.	३३३१८४
तितित्ता १. २. ३.	५३३३३
तित्तिरि १.	२३३३५
" १.	३३१५१

शब्दानुक्रमणिका

तिक्तीक १.	३३३७७
तिथि १. २.	२११६९
तिन्तुडीक १.	३३३८१
तिन्तुणी २.	३३३८१
तिन्तुणीक ३.	३३१३२२
तिन्त्रिडीक ३.	८३३६
तिन्दुक १.	३३३५१
तिमि १.	४११४१
तिमित १. २. ३.	५३३१०७
तिमिर ३.	२११६४
तिमिङ्गिल १.	४११५१
तिमिला २.	३३१३५
तिमिश १.	३३३४६
तिमिशत्रु १.	४११५१
तिरश्चीन १. २. ३.	५३३९१
तिरस् ४.	८१७२१
तिरस्करिणी २.	४३३१२४
तिरस्कार १.	३३३७७
तिरित १. २. ३.	३३८११
तिरीट १.	३३३५२
तिरीटिका २.	३३३८७
तिरोधान ३.	२११६४
तिर्यग्गामिन् १.	२११३४
तिर्यच् ४.	५३३९१
तिल १.	३३३३९
तिलक १.	३३३६१
" १.	३३३६९
" ३.	३३३१२५
" १. ३.	४३३१४८
" १.	४३३९७
" ३.	४३३११२
" १. ३.	८१३३०
तिलककण्टक १.	२३३१८
तिलकालक १.	४३३९७
तिलखल १ ब.	३३३३९
तिलपर्णी २.	३३३११५
तिलपिञ्ज १.	३३३३९
तिलपुष्प ३.	३३३४०
तिलपेज १.	३३३३९

[तुङ्गता]

तिलाट १.	३३३१४८
(किलाट)	
तिलिस्स १.	४३३१४
तिलिस्सक १.	३३३४
तिल्य १. २. ३.	३३३२०
तिष्य १.	३३३१७५
" १.	६३३२५
तिष्या २.	३३३१७७
तीक्ष्ण ३.	३३३३४
" १.	३३३११९
" १.	३३३१२१
" १. २. ३.	३३३२८
" १.	५३३९
" १.	५३३२६
" १. २. ३.	६३३३७
तीक्ष्णगन्ध १.	३३३५६
" १.	३३३११९
तीक्ष्णच १.	५३३२९
तीक्ष्णतण्डुला २.	३३३७७
तीक्ष्णधूमा २.	३३३९१
तीक्ष्णरस १.	३३३१२७
तीक्ष्णा २.	३३३१९७
तीक्ष्णाग्र ३.	३३३६५
तीक्ष्णार्जक १.	३३३१२१
तीर ३.	४३३३२
तीरतरङ्गिका २.	३३३९१
तीरभुक्ति २.	३३३३०
तीरित १. २. ३.	२३३१९
तीरी २.	३३३१८३
तीर्थ १. ३.	४३३२०
" ३.	४३३७५
" ३.	६३३१३
तीर्थवाह १.	४३३९८
तीवर १.	३३३१२
तीव्र १. २. ३.	५३३३२
तीव्रकोपा २.	४३३१०
तु ४.	८३३४
" ४.	८३३११
तुक १.	३३३७५
तुङ्ग १. २. ३.	५३३८१
तुङ्गता २.	५३३२४

[तुङ्गभद्रा]

तुङ्गभद्रा २.	४२१२८
तुच्छ १. २. ३.	५४१८७
" १. २. ३.	६५१३६
तुटि २.	२११५२
" २	६२११६
तुण्ड ३.	४४१८६
तुण्डि १. २. ३.	५४१६
तुण्डिकेरी २.	३३१९९
" २.	३३१९४७
तुण्डिन् १.	२३१४
तुण्डिभ १. २. ३.	४४१९४६
तुण्डिल १. २. ३.	४४१९४६
तुत्थ ३.	३२१४३
तुत्वा २.	३३११०
" २.	३८१८७
तुत्थाञ्जन ३.	३२१४२
तुन्द ३.	४४१६७
तुन्दपरिमृज १. २. ३.	५४१५५
तुन्दिक १. २. ३.	५४१७
तुन्दिन् १. २. ३.	५४१७
तुन्दिल १. २. ३.	५४१७
तुन्न १. २. ३.	५४११५५
तुन्नवाय १.	३९१११
तुमुल १. २. ३.	२४११२
" १. २. ३.	३७२१७
तुमुलाक्षक १.	३३११७६
तुम्बा २.	३७११३५
तुम्बिका २.	४३११३२
तुम्बी २.	३३११६७
तुम्बुक १. २. ३.	२४११६
तुम्बुका २.	३३११६८
तुरग १.	३७१९०
तुरङ्ग १.	३७१९०
तुरङ्गम १.	३७१९०
तुरायण ३.	३३११४४
तुराषाह् १.	१११७
तुरीय १. २. ३.	५४१२१
तुरुष्क १ ब.	३११२७

वैजयन्तीकोषः

तुरुष्क १.	३८११११
तुर्य १. २. ३.	५४१२१
तुर्यकालभुज् १.	३६११२५
तुलसी २.	३३१११९
तुला २.	५४१६०
" २.	६२११७
" २.	८६११४
तुलाकोटि १.	४३११४५
तुलापुरुष १.	३६११४३
" १.	३६११४३
तुलिका २.	३९१६
तुल्य १. २. ३.	५४११२१
तुल्यविक्रम १.	३४११
तुवर १.	३३११५२
" १.	५३१२७
" १.	५३१४२
तुवरी २.	३२११७
" २.	३८१४८
तुष १.	३३११७६
" १.	४३१६६
तुपानल १.	१२१२०
तुषाम्बु ३.	४३१८३
तुषार १.	२२१९
" १.	५३१७
तुषित १ ब.	१३१८
तुष्ट १.	३३१८५
तुष्टि २.	३६११६६
तुहिन ३.	२२१९
तूण १.	३७११७८
" २. (आण)	३८११०
तूणी २.	३७११७८
तूणीर १.	३७११७८
तूपर ३.	३६११०५
" १. २. ३.	७४११२
तूबर १.	३४१७३
तूर १.	३९११३७
तूर्ण १. २. ३.	५४११२४
तूर्य १. २.	३९११३६
तूल १. २.	३९१९
तूलपुष्प १.	३३११९३

(स्थूलपुष्प)

(६६)

[वृष]

तूलफला २.	३३१९१
तूलिका २.	३३१२३५
" २.	३९११३
तूलिनी २.	३३१९१
तूली २.	६२११७
तूष्णीकाम् ४.	८८११५
तूष्णीम् ४.	८८११५
तूड्घ्नी २.	३३१११२
तृण ३.	३३११८४
" ३.	३३१२२५
" २.	३३१२३३
" २.	३३१२३५
तृणकोल १.	३८११५
तृणजलायुका २.	४११५९
तृणता २.	७२११०
तृणद्रुम १.	३३१२२४
तृणधान्यक ३.	३८१५८
तृणध्वज १.	३३१२१४
तृणपञ्चिका २.	३८१६४
तृणराज १.	३३१२१६
" १.	३३१२२०
तृणशय्य १. २. ३.	३६११३१
तृणशून्यक ३.	३३११८३
तृणशोणक १.	५३१५०
तृणसंवर १.	३४११२
तृणसञ्चय १.	३८१६५
तृणसिंह १.	३९१२
तृणस्तम्ब १.	३३१२३५
तृणाटवी २.	३३१२
तृणेन्धन ३.	३६१९६
तृण्या २.	५१११४
तृतीय १. २. ३.	५११२१
तृतीयाकृत १. २. ३.	३८१२२
तृतीयाप्रकृति १.	४४१३
तृपत् १.	२११२७
तृपि १.	२११२७
तृप्त १. २. ३.	४३११०५
" १. २. ३.	५४१९९

[वृषि]

वृषि २.	३६११८८
" २.	४३११०५
वृषक १.	३६१९९
वृप् २.	८२११९
वृषि २.	३६११७९
वृषित १. २. ३.	५४१३७
वृष्णज् १. २. ३.	५४१३५
वृष्णा १.	८२११९
ते १. २. ३.	८५१३९
तेजन १.	३३१२१५
" २. ३.	३७११९१
तेजनक १.	३३१२२८
तेजनी २.	३३१११४
तेजस् ३.	१२११९
" ३.	६३११४
तेजस्विन् १.	४४१११०
तेजित १. २. ३.	३७११९७
तेम १.	५२१२९
तेमन ३.	४३१८५
" ३.	७३११७
तेर १.	३३१४२
" ३.	४४१८६
तैतुल १ ब.	३३१२६
तैल ३.	३८११३७
तैलपर्णिक ३.	२८१११४
तैलपर्णी २.	८२१६
तैलपायिका २.	२३१४४
तैलित्स १.	५३१३२
तैलिन् १.	३९१२७
तैलिशाला २.	४३१२४
तैलीन १. २. ३.	३८१२०
तैष १.	२११८२
तोक ३.	४४१४१
तोकम १.	६५१३८
तोच्चार १ ब.	३११२५
तोटक १.	३८१४१
तोडभी २.	३९११२६
तोड ३.	३६१५
तोत्र ३.	३७१८२
" ३.	३८१२९
तोदन ३.	७३११७

शब्दानुक्रमणिका

तोमर १. ३.	३७१६६
तोय ३.	४२११
तोयपर्णिका २.	३८१५३
तोयपिप्पली २.	३३११९७
तोयप्रवाह १.	३२१७
तोयप्रसादन १.	३३१४२
तोरण १. ३.	४३१४२
तोरणस्तम्भ १.	३६१५८
तोषणी २.	३३१२१२
तौर्यत्रिक ३.	३९१७१
त्यक्त १. २. ३.	५४११०१
त्यक्तभर्तृका २.	३६१४५
त्यक्तसंवास १. २. ३.	३६११३
त्यक्तात्मन् १. २. ३.	३६११३
त्याग १.	३६१११८
" १.	५२१४०
त्रपा २.	३६११९७
त्रपु ३.	३२१३०
" ३.	३२१३१
" ३.	६३११३
त्रपुष १. २. ३.	३३११७१
त्रय ३.	५१११६
त्रयी २.	३६१२६
त्रयीतनु १.	२१११३
त्रयीपुष १.	३६११
त्रयोदशी २.	३९१११८
त्रस १. २. ३.	५४१६१
त्रसर १.	३९१९
" १.	४३११३२
त्रसरेणु २.	२११२३
" १. २.	५११४२
त्रस्त ३.	३६११६८
" १. २. ३.	५४११८
त्रस्तु १. २. ३.	५४११८
त्राण १. २. ३.	५४११००
त्रात १. २. ३.	५४११००
त्रापुष ३.	३२१२३
त्रायन्ती २.	३३११०९
त्रायमाणा २.	३३११०९

(६७)

[त्रिधात्मन्]

त्रास १.	६११२५
त्रिंशत् २.	५११२६
त्रिः(स्) ४.	८८१३
त्रिक ३.	४४१६६
" १. २.	८९१२७
त्रिकुट्ट १.	११११०
" १.	३२१२
त्रिकुट्ट ३.	३८१८०
त्रिकण्टक १.	३३१९८
" १	३३११४१
" १.	३६११६५
" १.	४२१४७
त्रिकल १.	३२१३
त्रिकालदर्शिन् १.	३६११५०
त्रिकालदृश् १.	१११३५
त्रिकुट ३.	३८१११९
त्रिकूट १.	३२१२
" ३.	३६१११०
" ३.	३८१११९
त्रिकेतु १.	२३१२५
त्रिकोणक १.	४३११३६
त्रिखट्व १. २.	८९१३६
त्रिखर १.	५३१३४
त्रिगन्ध ३.	४३११५०
त्रिगर्त १ ब.	३३१२६
त्रिगुणाकृत १. २. ३.	३८१२२
त्रिचतुर १. २. ३.	५११२५
त्रिजातक ३.	४३११५०
" १. २. ३.	८९१३९
त्रितत्त्व २. ३.	८९१३६
त्रितय ३.	५१११६
त्रिदश १.	११११४
त्रिदिव १.	१११२
" १.	७३१२९
त्रिदिवा २.	३८१८७
त्रिधा ४.	८८१२०
त्रिधात्मन् १.	१२११५
" १.	७३१२९

[त्रिपक्षी]

त्रिपक्षी २.	३१६६
त्रिपदी २.	३१७८३
त्रिपणक १.	३१३२९
” ३.	८३१९
त्रिपात्र ३.	८११८
त्रिपाद १.	३११५२
त्रिपुट १.	३१८४४
त्रिपुटा २.	३३११३७
” २.	३१८८७
त्रिपुटी २.	३३११३७
त्रिपुर १.	३३३७७
त्रिपुरारि १.	१११४३
त्रिफला २.	३१८८२
त्रिमार्गगा २.	४२२२४
त्रिमार्गा २.	४२२२५
त्रियामा २.	२११५६
त्रियुग ३.	२११९२
” ३.	८११८
त्रियूह १.	३१७१००
त्रिरसा २.	४३३७९
त्रिरेख १.	४११५६
त्रिलोकी १.	८११८
त्रिलोचन १.	१११४२
त्रिवर्ग १.	३१६२३५
” १.	७११२८
त्रिवलीक ३.	४१४६०
त्रिविक्रम १.	११११९
त्रिविक्रमासन १.	३१६२२८
त्रिविष्टप ३.	१११११
त्रिवीथिका २.	२११४५
त्रिवृत् २.	३३११३७
” १. २. ३.	३१११०
त्रिवृत् १. २. ३.	३१११०
त्रिशङ्कु १.	७११२९
त्रिशिरस् १.	१२१४४
” १.	१२१५६
त्रिपृष्ठ १. २. ३.	३१८२३
त्रिपुट १.	३१८४१
त्रिपुटभा २.	३१८४२
त्रिसन्ध्य ३.	२११६७

वैजयन्तीकोषः

त्रिसर १. २. ३.	८१२२५
त्रिसरा २.	४३३७९
त्रिसारा २.	३३३२२
त्रिसीत्य १. २. ३.	३१८२२
त्रिसुगन्ध ३.	४३३१५०
त्रिस्नेह ३.	४३३९९
त्रिस्रोतस २.	४३३२४
त्रिहल्य १. २. ३.	३१८२२
त्रुटि २.	२११५२
” २.	३१८८७
” २.	६२१७७
त्रेता २.	२११९१
” २.	३११६२
” २.	६२१७७
त्रेधा ४.	८१८२०
त्रेधस् ४.	८१८२०
त्रैपुर १ ब.	३११३६
त्रैवृत् ३.	४३३९९
त्रैपुट ३.	८११६६
त्रैहोत्र ३.	३१६९१
त्रोटि २.	२३३५०
त्र्यश्रा २.	३३३१३७
त्र्यूषण ३.	३१८८०
त्वक्क्षीरा २.	३१८१०
त्वक्त्र ३.	३१७१५२
त्वक्पत्र ३.	३१८१०४
त्वक्सार १.	३३३२२५
त्वग्गन्ध १.	३३३३६
त्वग्ज ३.	४३३११७
त्वग्बल व १.	३१७१८३
त्वच् २.	३३३१३
” २.	४३३१०३
” २.	८२२२०
” २.	८१६१२
त्वच १. २.	३३३१३
” ३.	३१८१०४
त्वचिसार १.	३३३२१५
त्वरा १.	३१९८९
त्वरित १. २. ३.	५३३१२४

[दक्षिणाशारत]

त्वरी २.	३१९८९
त्वष्ट १. २. ३.	५३३१११
त्वष्टृ १.	१३३७
” १.	३१९३४
” १.	६३३२५
त्वाष्ट १.	३१६१०८
त्वाष्टक १.	३१८४२
त्वाष्ट्री २.	२११२३
त्विष् २.	४३३१५०
” २.	८२११८
त्विषाम्पति १.	२१११२
त्सस् १.	३१७१६८
द	
दंश १.	२३३४५
” १.	४३३९०
दंशन ३.	३१७१५२
दंशबन्धन ३.	४३३३९
दंशालिक १.	३३३१०
दंशित १. २. ३.	३१७१४२
दंशी २.	२३३४५
दंष्ट्रा २.	४३३८९
दंष्ट्रिन् १.	६३३४०
दक ३.	४३३२
दक्ष १.	२३३१३
” १. २. ३.	५३३१९
” १. २. ३.	५३३५४
” १. २. ३.	५३३३७
दक्षकन्या २.	८२२३७
दक्षवाच् १. २. ३.	५३३४५
दक्षा २.	३१११
दक्षाध्वराराति १.	१११४१
दक्षिण १. २. ३.	५३३२०
” १. २. ३.	७३३४५
दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
दक्षिणाधिप १.	१२३३५
दक्षिणानल १.	१२३२३
दक्षिणापथ १.	३१३३२
दक्षिणायन ३.	२११८९
दक्षिणाशारत १.	३३३१५२

[दक्षिणैर्मन्]

दक्षिणैर्मन् १.	३११४०
दक्षिणैस्थ १.	११११३८
दग्धान्न ३.	४३३७६
दण्ड १.	३१६१८
” १.	३१७४६
” १.	६३३८
दण्डक ३.	२३३४२
” १ ब.	३११३३
दण्डधर १.	१२३३३
दण्डनीति २.	३३३३०
दण्डपद्मासन १.	३३३२८
दण्डपाल १.	३१७२१
दण्डपाशिक १.	३१७२०
दण्डवत् १. २. ३.	५३३११८
दण्डाजिन ३.	३३३१९५
दण्डासन ३.	३३३२२६
” १.	३१७१८१
दण्डाहत ३.	३१८१४८
दण्डिक १.	३१७१८१
” १. २. ३.	५३३११८
दण्डिका २.	३१९१२९
दण्डिन् १.	२३३२५
” १. २. ३.	५३३११८
” १.	६३३२६
दण्डोत्पल १.	३३३१०६
दत्तात्रेय १.	१११३१
दद २.	४३३२२५
ददुघ्न १.	३३३१५८
ददुज ३.	३१८१३५
ददुण १. २. ३.	४३३१४५
ददुनाशिनी २.	३३३१०३
ददुमत् १.	४३३१४५
दधि ३.	३१८१०९
” ३.	३१८१३९
दधिहीर ३.	३३३१९
दधित्थ १.	३३३३२
दधिकल १.	३३३३२
दधिबुस ३.	३१८१४२

शब्दानुक्रमिका

दधिमण्डक ३.	३१८१४४
दधिसुख १.	३३३४०
दधिसक्तु १.	४३३७१
दध्यमल १.	४३३९७
दध्यज्य ३.	३३३९९
दध्याली २.	३३३१४३
दन्त १.	४३३८८
” १.	६३३२६
दन्तच्छद १.	४३३८७
” १.	८११३३
दन्तधावन १.	३३३३३
दन्तबीज १.	४३३४७
दन्तभाग १.	३१७८१
दन्तवस्त्र ३.	४३३८८
दन्तवेष्ट १.	३१७११०
दन्तशठ १.	३३३३२
” १.	३३३३५
” १.	३३३३७
” १. २. ३.	८११५९
दन्तशठा २.	३३३१६३
दन्ताली २.	३१७११२
दन्तावल १.	३१७६१
दन्तिका २.	४३३५३
दन्तिन् १.	३१७६०
दन्तुर १. २. ३.	५३३१९
दन्तोलखलक १. २. ३.	३३३३२२
दन्त्य १. २. ३.	५३३११७
दन्दशूक १.	४३३१४
” १.	४३३४०
दध्र १. २. ३.	५३३१३६
दम १.	३१७४६
” १.	५३३२७
दमण्डक १.	३३३५९
दमथ १.	५३३२७
दमनक ३.	३३३१२३
दमयन्तिका २.	३३३१८
दमित १. २. ३.	५३३११४
दमुनस् १.	१२३१८
दम्पति १ द्वि.	४३३४८

[दलकूर्चिका]

दम्भ १.	३३३१९५
दम्भोलि १.	१२३१३
दम्य १.	३३३५४
दया २.	३३३१९२
दयालु १. २. ३.	५३३३९
दयित १. २. ३.	५३३७०
दूर १. ३.	६३३३९
” १. २. ३.	८११३७
दरण १.	२३३२५
दरथ १.	७३३३१
दरद २.	६२३१८
दरिणि १. २.	३१८२४
दरित १. २. ३.	५३३१८
दरिद्र १. २. ३.	५३३५९
दरी २.	३२३३६
” २.	८११३४
दर्वर १.	३१७७४
” १.	३१९१२४
दर्वुरीक १.	८३३२४
दर्पक १.	१११२७
दर्पण १.	४३३१६२
दर्भ १.	३३३२२७
” १.	३३३२२७
” १.	३३३२२९
दर्व १.	१३३३३
दर्वि १.	२३३१०
” २.	४३३१६३
दर्वितुण्ड १.	२३३१०
दर्विदा २.	२३३१०
दर्वी २.	३३३१०१
दर्वीकर १.	४३३१७
” १.	४३३१८
” १.	४३३१०
” १.	४३३१११
दर्श १.	२३३१७०
दर्शक १.	३१७२४
दर्शन ३.	३१७१७
दर्शनी २.	४३३१६
दल ३.	३३३१६
” १.	६३३३९
दलकूर्चिका २.	३३३१२०८

[दलत्]

वैजयन्तीकोषः

[दिग्वासस्]

दिङ्मण्डल]

शब्दानुक्रमणिका

[दुर्ग]

दलत् १.	४११४६	दाक्षिणात्य १.	३३३२२०	दारु ३.	३३३७१	दिङ्मण्डल ३.	२११६	दिष्टि २.	३११५३	दीर्घपत्री २.	३३३१९६
दली २.	८११७	दाक्षी २.	३३३४३	दारुक १.	१११२६	दिङ्मध्य ३.	२११७	" २.	३११९९	दीर्घपर्णी २.	३३३१७४
दव १.	११२२१	दाक्षीपुत्र १.	३३३५४	दारुकण्टक ३.	२१२२७	दिङ्मार्ग १.	४३३१७	दिष्ट्या ४.	८१७२१	दीर्घपाद १.	२३३३१
" १.	६११२७	दाक्षिम १. २. ३.	३३३७२	दारुण १. २. ३.	३११७९	दिधिषु १. २.	७१५४७	" ४.	८१८१७	दीर्घपृष्ठ १.	४११६
दवधु १.	४११२२	" १. २. ३.	८११३८	" ३.	५३३५	दिधिषूपति १.	३१६४३	दिहण्ड १ ब.	३११२४	दीर्घफला २.	३३३१६०
दश १ २. ३. ४.	४३३१३१	दाण्डपाता २.	२११७५	दारुतक्षणी २.	३११३६	दिन ३.	२११५६	दीक्षणीयेष्टि २.	३१६८७	दीर्घरोमक ३.	३३३२०२
दशन १.	४३३८८	" २.	८११६	दारुफला २.	३३३१८१	दिनत्रयिन् १.	३१६४१	दीक्षा १.	३१६८७	दीर्घरोमन् १.	३३३१७
दशनोच्छिष्ट १.	८११५२	दाण्डाजिनिक १. २. ३.		दारुहरिद्रा २.	३३३२१२	दिनप्रणी १.	२१११०	दीदिवि १.	२११३४	दीर्घवल्ली २.	३३३१३३
दशपुर ३.	३३३२०१		५३३२३	दारुहस्तक १.	४३३१६३	दिनम्मन्या २.	२११५८	" १. २.	४३३७६	दीर्घवाच् १.	२३३१३
दशबल १.	१११३३	दात १. २. ३.	५३३१०२	दारुर्दर ३.	३१११६	दिनादि १.	२११६४	दीधिति २.	२११२२	दीर्घवृन्त १.	३३३१६८
दशबाहु १.	१११४७	दात्यूह १.	२३३१२	दारुवर्ण्ड १.	२३३३८	दिव २.	११११	दीन १.	३३३७०	" १.	३३३२१८
दशम १. २. ३.	५३३२०	" १.	२३३३६	दारुवाघाट १.	२३३३३	" २.	८११७७	" १.	३३३२२३	दीर्घशूक १.	३३३१६१
दशमिन् १. २. ३.	५३३४४	दात्र ३.	३३३३०	दारुविका २.	३३३४३	दिवस १. ३.	२११५५	" १. २. ३.	५३३६०	दीर्घसूत्र १. २. ३.	५३३७२
दशमीस्थ १. २. ३.		दाधिक १. २. ३.	४३३१५	" २.	३३३११६	दिवस्पति १.	१३३१	दीनवादिन् १. २. ३.	५३३४७	दीधिका २.	४३३१६
	८११७	दान ३.	३३३६३	दार्वा २.	३३३२१२	दिवा ४.	८१८७	दीनार १.	५३३४१	दीर्णाङ्ग १.	२३३२०
दशरथात्मज १	१११२२	" ३.	३३३११८	दाल ३.	३३३१३५	दिवाकर १.	२१११०	दीप १.	४३३१६१	दीर्णी २.	२३३१२
दशा १ ब.	४३३१६१	" ३.	६३३१५	दालिम १.	१३३१६	दिवाकीर्ति १.	८११२४	दीपक १.	३३३११	दुःख १. २. ३.	१३३३९
" २.	४३३५३	दानव १.	१३३१९	दाव १.	६३३२७	दिवाचर १.	२१११०	" १. २. ३.	७३३४७	" ३.	३३३१८७
" २.	५३३२२	दानवाञ्जन ३	३३३१२२	दाश १.	३३३१३२	दिवाटन १.	२३३१५	दीपन १.	३३३१०	" १. २. ३.	५३३१४४
दशाङ्गुल १. २. ३.		दान्त ३.	३३३१२३	दाशरथि १.	१३३२०	दिवाभीत १.	८११२४	दीपवल्ली २.	४३३१६०	दुःखदोहा २.	३३३४९
	३३३५३	" १. २. ३.	५३३११४	दाशार्ह १.	१३३२५	दिविषद् १.	१३३३	दीपवृत्त १.	४३३१६१	दुःकूल ३.	४३३१२२
दशानाह १.	३३३६१	दान्ति २.	५३३२७	दाशेरक १.	३३३१६७	दिवौकस् १.	१३३३	" १.	८३३२०	" ३.	७३३१८
दशार्ण १ ब.	३३३३७	दामन् २. ३.	३३३२९	दास १.	३३३१२	" १.	७३३३०	दीपिका २.	४३३१६०	दुग्ध ३.	३३३१४५
दशान्वय १.	१३३४७	" २. ३.	८३३३२	दासमोचित १.	३३३१४	दिव्य ३.	२३३११	दीस १. २. ३.	८३३१४	दुग्धतालीय ३.	८३३१४
दशारव १.	१३३४२	दामनी २.	३३३२९	दाससूनु १.	३३३१३	" ३.	३३३२०४	दीसा २.	२३३१४	दुद्रुम १.	३३३२०५
दशास्य १.	१३३४२	दामा २.	३३३२९	दासी २.	३३३१११	" ३.	३३३१२	दीसि २.	२३३२२	दुध १.	१३३२३
दशेरक १ ब.	३३३३८	दामाञ्जन ३.	३३३११२	" २.	३३३१९०	" ३.	३३३११०	दीप्य १.	३३३१८३	दुन्दु १.	१३३२६
दस्यु १.	३३३११२	दामोदर १.	१३३२५	" २.	४३३२६	" ३.	८३३१८	दीप्यका २.	३३३१०२	दुन्दुभ ३.	३३३२००
" १.	३३३२१५	दाय १.	६३३२६	दासीसभ ३.	८३३२०	दिव्यकालिनी २.	४३३१७	दीर्घ १. २. ३.	५३३८१	दुन्दुभि १.	१३३४५
" १.	३३३४०	दायाद १.	७३३३०	दासेय १.	४३३४३	दिव्येलक १.	४३३१५	दीर्घकोशिका २.	४३३१५८	" १.	३३३१३३
" १.	३३३५६	दार ३.	४३३३९	दासेर १.	४३३४३	दिव्येलक १.	४३३१७	दीर्घदण्ड १.	३३३१५९	" १. २.	७३३४८
दस्युजाति २.	३३३२०८	" १ ब.	४३३३५	दिक्करी २.	४३३४८	दिश २.	२३३१२	(दिव्यदण्ड)		दुर् ४.	८३३४४
दत्त १ द्वि.	१३३३६	दारक १. २. ३.	५३३२	दिगन्त १.	२३३१६	" २.	४३३१५	दीर्घदर्शिन १.	३३३२३५	दुर्ध्व १.	३३३१५०
दहन १.	१३३१५	दारद १ ब.	३३३२७	दिग्गज १.	२३३१६	दिशान १.	३३३२२	दीर्घदृष्टि १. २. ३.		दुराचार १. २. ३.	
" १.	५३३३८	" १.	३३३४४	दिग्ध १.	६३३४१	दिश्य १. २. ३.	५३३१६		५३३५३		३३३१२
दहर १. २. ३.	५३३१३६	दारपत्र १.	४३३७१	दिग्भ १. २. ३.	४३३११६	दिष्ट १.	२३३५२	दीर्घनादिन् १.	३३३६९	दुरालभा २.	३३३१२५
दह १. २. ३.	५३३१३६	दारसङ्ग्रह १.	३३३५४	दिग्भव १. २. ३.	४३३११६	" ३.	२३३२५	(रतिकील)		दुरासद १.	१३३१६
दा २.	३३३५२	दारित १. २. ३.		दियुग्म ३.	२३३१७	" ३.	३३३१८९	दीर्घनिद्रा २.	३३३२०१	दुरित ३.	३३३१६८
दाक्षायण ३.	३३३१९		५३३१११	दिग्वासस् १.	१३३४६	" ३.	४३३११५	दीर्घनिर्वश १.	३३३१६३	दुरोदर १.	८३३१०
दाक्षायणी २.	८३३३६	दारिपत् १.	३३३२६			दिष्टान्त १.	३३३२०१	दीर्घपत्र ३.	३३३२०६	दुर्ग ३.	३३३१६
दाक्षाय्य १.	३३३३०	दारु ३.	३३३१३								

[दुर्ग]

दुर्ग ३.	३।७।४९
" १. २. ३.	६।५।४१
दुर्गात १. २. ३.	५।४।६०
दुर्गाति २.	१।२।३७
" २.	७।२।१०
दुर्गन्ध ३.	३।८।१२५
" १.	५।३।५५
दुर्गम १.	३।२।१
दुर्गा २.	१।१।६२
दुर्जन १.	५।४।२५
दुर्दर्शा २.	३।६।४९
दुर्दिन ३.	२।२।८
दुर्नामन् २.	४।१।५८
" ३.	४।४।१३१
दुर्बल १. २. ३.	५।४।५
दुर्बाल १. २. ३.	५।४।५५
दुर्भग १. २. ३.	५।४।६९
दुर्मनस् १. २. ३.	५।४।३४
दुर्मुख १. २. ३.	५।४।४६
दुर्योधनासन ३.	३।६।२२७
दुर्वर्ण १. २. ३.	७।५।४५
दुर्वासस् १.	३।६।१५६
दुर्विध १. २. ३.	५।४।६०
" १. १. ३.	७।४।१३
दुर्विनीतक १. २. ३.	३।७।१०७
दुर्हृद १.	३।७।४२
दुर्ल १.	५।३।५३
दुर्ली २.	४।१।५१
दुश्चर्मन् १. २. ३.	५।४।५५
दुश्चयवन १.	१।२।१
दुष्कृत ३.	३।३।१६८
दुष्टसान्नि १. २. ३.	३।८।९
दुष्ट ४.	८।८।१३
(दुष्ट)	
दुष्प्रधर्षिणी २.	३।३।१०२
दुष्पम ४.	८।८।१३
दुस्पर्श १.	३।३।१२६
दुस्पर्शा २.	३।३।१०६

वैजयन्तीकोषः

दुहितृ २.	४।४।४०
दूत १.	२।१।३४
" १.	३।७।२९
दूती २.	४।४।२४
दून १. २. ३.	५।४।९८
दूर ३.	५।४।१४२
दूरदर्शिन १.	२।३।३०
" १.	३।६।२३५
दूर्वा २.	३।३।२३२
दूषक १.	३।७।४१
दूषणारि १.	१।१।२१
दूषिका २.	३।६।४७
" २.	४।४।९५
दूष्य ३.	४।३।१२५
" ३.	४।४।११८
दूष्याङ्गी २.	३।३।३४
दृक्छन्द १.	४।४।९५
दृक्श्रवस् १.	४।१।६
दृगध्यक्ष १.	२।१।१३
दृगायुध १.	१।१।४३
दृग्लोमन् ३.	४।४।९५
दृढ ३.	३।२।३३
" ३.	३।३।२३२
" १.	५।३।५
" १. २. ३.	५।४।८४
" १. २. ३.	५।४।३२
" १. २. ३.	५।४।३७
" १. २. ३.	६।४।८
दृढच्युत् १.	३।६।१५७
दृढदला २.	३।३।२२४
" २.	३।३।२३०
दृढा २.	३।३।१७७
दृति १.	४।३।५९
दृब्ध १. २. ३.	५।४।११०
दृश् २.	४।४।९४
" २.	८।५।३७
" २.	८।९।२
दृशान १.	२।१।१४
दृशीकु १.	३।६।८१
दृश्य १. २. ३.	६।५।४२
दृष्टपुत्र १.	४।३।१६३

[देवभिन्न]

दृष्ट २.	३।२।८
" २.	४।३।१६३
दृष्ट ३.	३।७।१४
दृष्टान्त १.	७।१।३२
दृष्टि २.	४।४।९४
" २.	६।२।१८
दृष्टिवन्ध १.	४।४।९२
देव १.	१।१।२
" १.	३।७।१५८
" १.	३।९।१०३
" १. २. ३.	८।९।४६
देवकुसुम ३.	३।८।१०३
देवखात ३.	४।२।५
देवगिरि १.	१।३।१२
देवच्छन्द १.	४।३।१३८
देवजगध ३.	३।३।२३४
देवजन १.	१।३।३
देवतरु १.	१।३।१४
देवता २.	१।१।५
देवतागण १.	१।३।८
देवताड १.	३।३।८६
देवतायतन ३.	४।३।२८
देवतार्चनतूर्य १. ३.	३।९।१३८
देवदारु ३.	३।३।७१
देवदाली २.	३।३।१६२
देवदण्ड १.	३।७।१७१
देवदुन्दुभि १.	१।२।७
" १	३।३।१२१
" २.	३।३।१९८
देवद्रीचीन १. २. ३.	५।४।९३
देवद्रव्य (द्रु) १. २. ३.	५।४।९३
देवधान्य ३.	३।८।५७
देवधूप १.	३।३।५३
देवन् १.	४।४।३३
देवन १.	३।९।६०
देवनन्दिन् १.	१।२।९
देवप्रेष्य १.	३।५।६२
देवभिन्न १.	४।१।१४

देवभूय]

देवभूय ३.	३।६।२३७
देवमणि १. ३.	३।७।११०
देवमातृक १. २. ३.	३।१।४६
देवमारिष १.	३।३।१५१
देवमाली २.	३।३।१८४
देवयज्ञ १.	३।६।६३
देवयान १.	२।१।४५
देवयु १.	३।६।७८
देवयोनि १.	१।३।५
देवर १.	४।४।३३
देवरथ १.	३।७।१२६
" १.	३।९।६६
देवल १. २. ३.	३।६।११
देवधूर २.	२।१।२
देवचक्ष १ द्वि.	१।३।६
देवसभा २.	१।३।११
देवसिन्धु २.	४।२।२४
देवा २.	३।३।१०६
देवाग्नि १.	१।२।२२
देवाज १.	१।१।५३
देवाजीव १. २. ३.	३।६।११
देवार्ह ३.	३।२।२२
देवानामिप्रथ १. २. ३.	५।४।२२
देविका २.	३।३।३४
देवी २.	३।३।११४
" २.	३।३।१३२
" २.	३।७।३१
" २.	३।९।४५
" २.	३।९।१०४
देवीकोट १.	४।३।९
देष्ट १.	४।४।३३
देश १.	३।१।२१
देशनिक ३.	४।३।११५
देशरूप ३.	३।७।४८
(देशरूप)	
देशिक १.	३।८।१३
देश १. ३.	४।४।५२
देशमर्दन १.	४।४।१३८

शब्दानुक्रमणिका

देहलक्षण ३.	४।४।५४
देहलि १.	५।३।५६
देहली २.	४।३।४४
देहवारि ३.	४।४।१२०
दैतेय १.	१।३।९
दैत्य १.	१।३।९
" १.	३।३।१७६
" ३.	३।३।२३२
दैत्यक्षय १.	४।१।१
दैत्यदेव १.	१।२।१८
दैत्यमदन १.	३।३।२०८
दैत्या २.	३।८।९८
दैत्यारि १.	१।१।१०
दैत्य ३.	३।६।१८३
दैर्घ्य ३.	५।२।५
दैव ३.	३।६।१८९
दैवज्ञ १.	३।७।२५
दैवज्ञा २.	४।१।३०
" २.	४।४।११
दैवत ३.	१।१।५
दैवपर १. २. ३.	५।४।३०
दैविक ३.	३।८।१२
दैष्ट ३.	३।६।८९
(दैष्ट)	
दोलक ३.	४।२।३९
दोला २.	३।७।३३६
" २.	३।७।३३७
दोलिका २.	३।७।३३७
दोशिशखर १.	४।४।७१
दोष १.	३।६।१९३
दोषग्रह १.	३।३।४२
दोषज्ञ १. २. ३.	४।४।१४४
" १.	७।१।३२
दोषदर्शिन १. २. ३.	५।४।३४
दोषप्रणालिका २.	५।४।११६
दोषा ४.	८।८।७
दोस् १. ३.	४।४।०१
" १. ३.	८।९।३१
दोहल ३.	३।४।६१

दोहल ३.	३।६।१८०
दोन्दुभि २.	३।६।१९५
दोन्दुभी २.	३।६।५६
दौर्मत्य ३.	५।२।४
दौवारिक १.	३।७।२४
दौष्यन्त १.	३।५।६७
" १.	३।५।७२
दौहित्र १.	४।४।४५
दौहद ३.	३।६।१८०
द्यावापृथिवी २.	३।१।५
द्यु १.	२।१।५६
" १.	८।१।६०
द्युचर १.	१।३।४
द्युमणि १.	२।१।११
द्युमत् १.	२।१।१२
द्युमयी २.	२।१।२३
द्युमन ३.	३।८।७३
" ३.	८।३।१५
द्युवन् १.	६।१।२७
द्युवर्धकि १.	१।३।६
द्युत १. ३.	३।९।५९
द्युतकारक १.	३।९।५९
द्युतकृत् १.	३।१।५८
द्यो २.	१।१।१
" २.	८।२।१७
द्योत १.	१।२।३१
द्योतन ३.	७।३।१८
द्योता २.	३।६।५१
द्रक्ष्ण ३.	५।१।४८
द्रङ्ग ३.	४।३।४
द्रप्स १.	२।२।८
" ३.	३।८।१४२
द्रमिड १.	३।५।५६
द्रमिल १.	३।५।१०२
(द्रविड)	
द्रव १.	३।६।१२६
द्रवक्षेप १.	५।२।४०
द्रवण ३.	५।३।१
द्रवन्ती २.	३।३।११३
द्रविण ३.	३।८।७३
" ३.	८।३।१५

[द्रविण]

[द्रव्य]

द्रव्य ३.	६३११५
द्रव्यपद १.	५३११
द्राक् ४.	८१८११
द्राक्षा २.	३३३१८१
द्राक्षाफल १.	३३३२७
द्रागभृत ३.	४२१४
द्रावण १.	३३३४२
" १.	३१८१२४
द्राविडक १.	३३३१६७
द्राविल १.	३३३१५९
द्रु १.	३३३१४
द्रुकिलिम ३.	३३३७१
द्रुघण १.	११११९
" १.	३१७१७१
" १.	७११३०
द्रुण ३.	३१७१७२
द्रुणा २.	३१७१७८
द्रुणी २.	४११५१
द्रुत ३.	३१९१२३
" १. २. ३.	४३३९५
" १. २. ३.	५३३१२४
" १. २. ३.	६३३८
द्रुति २.	५३३११
द्रुम १.	३३३१४
" १.	३३३८५
द्रुमश १.	४३३१७७
द्रुमामय १.	४३३१५३
द्रुवय ३.	५३३१६४
द्रुह १.	३३३२६
द्रुहिण १.	११११७
" १.	७११३२
द्रुण १.	४११३२
द्रुकाण १.	२११५१
द्रुण १.	२३३१७
" १. ३.	५३३१५५
" १.	५३३१६३
" १. ३.	६३३१४०
द्रुणक्षीरा २.	३३३१५०
द्रुणदुग्धा २.	३३३१५०
द्रुणपुष्पिका २.	३३३१२४
द्रुणमुख ३.	४३३३

वैजयन्तीकोषः

द्रोणिका २.	३३३१२४
द्रोणी २.	४३३१५
" २.	६३३१८
द्रोह १.	३३३१५
द्रोणिक १. २. ३.	३३३१२१
द्रुद्ध ३.	५३३१५५
" ३.	६३३१६
द्रुय ३.	५३३१५५
द्रादश १. २. ३.	५३३१२१
द्रादशात्मन् १.	२३३१५०
द्रादशाह १.	३३३१४४
द्राप १.	२३३१९२
" ३.	३३३१६२
" १.	७३३३०
द्रार् २.	४३३१४२
" २.	८३३१६
द्रार ३.	४३३१४२
द्रारका २.	४३३१६
द्रारपटल ३.	४३३१५०
द्रारपाल १.	३३३१२४
द्रारबन्ध १.	४३३१४३
द्रारयन्त्र ३.	४३३१४९
द्रारवती २.	४३३१६
द्रारवतीपद ३.	३३३११९
द्रास्थ १.	३३३१२४
द्रिः(-स्) ४.	८३३१६
द्रिक १.	२३३१५५
" ३.	३३३११०
द्रिकालिक १. २. ३.	३३३१२८
द्रिखण्डक १.	४३३१२७
द्रिगुणाकृत १. २. ३.	३३३१२३
द्रिज १.	३३३१३
" १.	४३३१७८
द्रिजकुत्सित १.	३३३१५५
द्रिजन्मन् ३.	३३३१५७
(विजन्मन्)	
" १.	७३३१३१
द्रिजपोत १.	३३३११
द्रिजाति १.	७३३१३१

[द्वैगुणिक]

द्विजायनी २.	३३३१२०
द्विजालय ३.	४३३१८६
द्विजिह्व १. २. ३.	७३३१४५
द्वितय ३.	५३३१५५
द्वितीय १. २. ३.	५३३१२०
द्वितीया २.	२३३१७०
" २.	४३३१३४
द्वितीयाकृत १. २. ३.	३३३१२३
द्वित्र १. २. ३.	५३३१२५
द्विधा ४.	८३३१२०
द्विधागति १.	४३३१४७
द्विनग्ननक १. २. ३.	५३३१५५
द्विप १.	३३३१६०
" १.	८३३१५५
द्विपद १.	१३३११९
द्विपाद् १.	३३३११
द्विसुखी २.	४३३१२०
द्विसुष्टिक १.	५३३१५२
द्विरद १.	३३३१६०
द्विरसन १.	४३३१४
द्विरेफ १.	२३३१४२
द्विवेदिनी २.	२३३१७६
द्विष् १.	३३३१४१
द्विषत् १.	३३३१४०
द्विषन्तप १. २. ३.	५३३१६९
द्विकृष्ट १. २. ३.	३३३१२३
द्विसीत्य १. २. ३.	३३३१२३
द्विहव्य १. २. ३.	३३३१४५
द्विहायनी २.	३३३१४५
द्वीप १. ३.	४३३१३३
द्वीपवत् १. २.	८३३१२९
द्वीपिन् १.	३३३१३
द्वेधा ४.	८३३१२०
द्वेषण १.	३३३१४१
द्वेषिन् १.	३३३१४१
द्वेष्य १. २. ३.	५३३१६९
द्वैगुणिक १. २. ३.	३३३१८८

[द्वैत]

द्वैत ३.	५३३१५५
द्वैध ३.	३३३१६
द्वैधम ४.	५३३१२०
द्वैप १. २. ३.	३३३१२८
द्वैपायन १.	१३३१३२
द्वैमातुर १.	१३३१५४
द्वैयाचित ३.	५३३१६२
द्वैयाढक १. ३.	५३३१५५
द्वैयायोग ३.	२३३१९२
ध	
धटिक १. ३.	५३३१६०
धटिनी २.	३३३११८
धन ३.	३३३१७३
धनजय १.	८३३१२४
धनद १.	१३३१५६
धनवत् १. २. ३.	५३३१५७
धनाध्यक्ष १.	१३३१५६
धनाया २.	३३३१८०
धनिन् १.	१३३१५६
" १. २. ३.	५३३१५७
धनिष्ठा २ ब.	२३३१४१
धनीयिका २.	३३३१४९
धनु (धनुःपट) १.	३३३१५७
" १. २.	३३३१७२
" २.	६३३१९
धनुर्ग्रह १.	३३३१५३
धनुर्दण्ड १.	३३३१५७
धनुर्धर १. २. ३.	३३३१४३
धनुर्वेद १.	३३३१३०
धनुश्श्रेणी २.	३३३११४
धनुष्पाणि १.	१३३१२२
धनुष्मत् १. २. ३.	३३३१४३
धनुस् ३.	३३३१५५
" ३.	३३३१५७
" १. ३.	३३३१७२
" १.	८३३१५५
धनोत्पत्ति २.	३३३१४४
धन्य १. २. ३.	५३३१५६
धन्या २.	३३३१०४

शब्दानुक्रमणिका

धन्या २.	३३३१४९
धन्याक ३.	३३३१५०
धन्येय ३.	३३३१५०
धन्वन् १.	३३३१४२
" ३.	३३३१७२
धन्वन्तर ३.	३३३१५७
धन्वन्तरसहस्र ३.	३३३१६२
धन्वन्तरि १.	८३३१२५
धन्वयास १.	३३३१२६
धन्ववन १.	३३३१३३
धन्विन् १. २. ३.	३३३१४३
धमन १.	३३३१२८
" १.	४३३१९१
धमनी २.	३३३१०१
" २.	४३३११६
धम्मिल्ल १.	४३३१००
धयन ३.	४३३१०४
धर १.	३३३१९
धरण ३.	५३३१४४
धरणी २.	३३३१२
धरणीधर १.	१३३११३
धरा २.	३३३१२
" २.	३३३१३१
धरासुत १.	२३३१३१
धरित्री २.	३३३१२
धरीक १.	४३३१२८
धरुण १.	७३३१३२
" ३.	८३३११८
धर्म १. ३.	३३३१६८
" १.	३३३१५८
" १.	५३३११
" १. २. ३.	६३३१४२
धर्मद्वी २.	४३३१२५
धर्मपत्तन ३.	३३३१७९
धर्मपाल १.	३३३१५८
धर्मभ्रातृ १.	३३३१२४
धर्ममाणव १.	३३३१२३
धर्मराज १.	१३३१३३
" १.	१३३१३५
धर्मर्षण ३. २.	७३३१४८

[धारण]

धर्षणी २.	३३३१४६
" २.	७३३१४८
धव १.	३३३१९७
" १.	४३३१३७
" १.	६३३१२७
धवल ३.	५३३११०
" १. २. ३.	७३३१४९
धवला २.	३३३१४३
धवित्र ३.	४३३१५९
धातकि २.	३३३१९७
धातु १.	४३३१११
" १.	६३३१२८
धातु १.	१३३१६
" १.	८३३११
धातुपुष्पिका २	३३३१९७
धात्री २.	३३३१२
" २.	३३३१७७
" २.	६३३११९
धानका २.	५३३१४०
धाना २.	३३३१४९
" १ ब.	४३३१७१
" २.	६३३११९
धानी २.	३३३१६०
धानुष्क १. २. ३.	३३३१४३
धान्य ३.	३३३१३१
" ३.	३३३१५१
धान्यकोष्ठ १.	४३३१६४
धान्यमञ्जरी २.	३३३१६४
धान्यराशि १.	३३३१६५
धान्यवृद्धि २.	३३३१५
धान्या २.	३३३१४९
धान्यामल ३.	४३३१८३
धान्योत्क्षेपण ३.	५३३१६१
धामन ३.	४३३१७७
" ३.	६३३११६
धामार्गव १.	३३३११५
" १.	३३३१६२
धारकदाह ३.	४३३१४०
धारका २.	४३३१६३
धारण ३.	५३३१५९

[धारणा]

धारणा २.	३१६२३१
" २.	३१८१५
" २.	४३१४०
धारणी २.	३३३१७८
धारभार ३.	५११६१
धारा २.	३१७११८
" २.	३१७१८६
" २.	४२३३०
" २.	६२३२०
धाराग्र ३.	७३३१८
धाराट १.	७१३३३
धाराधर १.	२३२११
धारिका २.	२११५४
धारोष्ण ३.	३१८१४६
धार्तराष्ट्र १.	२३३१७
धार्मिक १.	३१६२३
" १.	३१७२०
धावन २. ३.	७५४४९
धावनी २.	३३३१३६
धिक् ४.	८१७५
धिवृत्त १. २. ३.	५४४७१
" १. २. ३.	५४४११०
धिविक्रया २.	५२३२१
धिग्वन १.	३१५९७
धिग्वनक १.	३१५६
(धिश्चनक)	
धिषण १. २.	७५५५०
धिष्य ३.	२११३८
" १. ३.	६५४३३
धी २.	३१६१६३
धीकर १.	३१९६
(अधीङ्गर)	
धीकर्मिक १.	३१७२०
धीता २.	६२३२०
धीति २.	४३३१०४
धीमक ३.	३२३३३
धीमत् १.	३१६२३४
धीमती २.	४४३२१
धीर १. २. ३.	३१७१५०
" १. २. ३.	५४३२०

वैजयन्तीकोषः

धीर १. २. ३.	५४५२
" १. २. ३.	६५४४
धीरा २.	३३३१३१
धीवर ३.	३२३३३
" १.	३१५२६
" १.	३१५८२
" १.	३१९४२
धुत्तिम ३.	३१८१४५
धुत १. २. ३.	५४४५५
धुत्तर १.	३३३७६
धुनी २.	४२३२३
धुर् २.	३१७१३०
" २.	८२३१७
धुरण १.	५११४३
धुरन्वर १.	३३३९४
" १. २. ३.	३४३६७
धुरीण १. २. ३.	३४३६७
धुर्धर १.	३३३७७
धुर्य १. २. ३.	३४३६७
धुर्यावकर्तिक १. २. ३.	३३३१३३
धुर्वी २.	३१७१३०
धुस्तूर १.	३३३७६
(धुत्तर)	
धुङ्कणा २.	२३३१८
धूत १. २. ३.	५४४१०१
" १. २. ३.	६४४८
धूप १.	१२३२८
धूपायित १. २. ३.	५४४९८
धूपित १. २. ३.	५४४९८
धूम १.	१२३२८
" १.	८१६५
धूमक १. २. ३.	२२३१०
धूमकेतु १.	१२३१६
" १.	८१२५
धूमज १ ब.	२११३७
धूमयोनि १.	२२३११
धूमल १. ३.	३१९१३८
" १.	५४३२१
धूमवर्णा २.	१२३३०

[धैवत]

धूमिका २.	२२३१०
धूमोर्णा २.	१२३३६
धूम्या २.	५१११४
धूम्र १.	५३३८
" १.	५३३२१
धूम्रकर्ण १.	३१६६६
धूम्राट १.	२३३२७
धूर्जटि १.	१११४०
धूर्त ३.	३२३३६
" १.	३३३६०
" १.	३३३६१
" १.	३३३७६
" ३.	३१८११५
" १.	३१९५८
" १. २. ३.	५४३२४
धूर्तार १.	३३३३०
धूलि २.	३१८२५
" २.	८६१७
" १. २.	८९२६६
धूलिजङ्घ १.	२३३१६
धूलिध्वज १.	१२३४९
धूलिभक्त ३.	३३३५६
धूलिलुटित ३.	३१७१११
धूलीकदम्ब १.	८११५३
धूसर १.	३१२२७
" १.	५३३१४
धृति २.	१११४७
" २.	३३३१६६
" २.	३१७२०८
" २.	६२३२०
धृष्ट १. २. ३.	५४४१७
धृष्टा २.	३३३५०
धृष्टु १. २. ३.	५४४१७
" १. २. ३.	६४४९
धेनु २.	३३३५०
" २.	३१७७०
धेनुप्या २.	३३३५०
धेनुक ३.	५१११०
धेनुकी २.	२११७७
धैर्य ३.	३१७२०८
धैवत १.	३१९१३२

धारण]

धोरण १.	२३३६
" ३.	३१७१२३
धोरी २.	३३३५७
धौत १. २. ३.	३१७१९७
धौतकौशेय ३.	४३३११८
धौतयुग्म ३.	४३३१२०
धौरण १. २. ३.	३१७१२१
धौरित १. २. ३.	३१७१२१
धौरितक १. २. ३.	३१७११८
" १. २. ३.	३१७१२१
धौर्य १. २. ३.	३१७१५७
धौर्य १. २. ३.	३१७१२१
ध्यान ३.	३३३२२२
ध्यामक ३.	३३३२३४
ध्रुव १.	३१७१३१
" १. २. ३.	६५४४४
ध्रुवा २.	३३३१६६
" २.	३३३१००
" २.	३३३१००
ध्रुणा २.	२३३२
ध्रुज १. ३.	३१७१३३
" १. ३.	६५४४३
" १. ३.	८१६५
ध्रुजप्रहरण ३.	१२३४८
ध्रुजिन् १.	३१९४४
ध्रुजिनी २.	३१७५५
ध्रुवि १.	२३३११
ध्रुवस्त १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	५४४१०२
ध्रुवाङ्ग १.	२३३१७
" १.	६११२७
ध्रुवाङ्गी २.	२३३१४
ध्रुवान १.	२३३११
ध्रुवानका २.	५११४९
ध्रुवान्त ३.	२११६४
ध्रुवान्तमणि १.	२३३४७
न	
न ४.	८१७५
नःकुद्र १. २. ३.	५४४११

शब्दानुक्रमणिका

नकुटक ३.	४११९१
नकुल १.	४११२७
नक्तक १.	२३३२३
" १.	५३३१३०
नक्तखर १.	२३३२२
नक्तम् ४.	८१८७
नक्तमाल १.	३३३६२
नक्त १.	४११५३
नक्तत्र ३.	२१३३८
नक्तत्रकालिक १. २. ३.	३३३१२७
नक्तत्रनेमि १. २.	८१५२६
नक्तत्रमाला २.	३१७८७
" २.	४३३१४२
नख ३.	३१८१०१
" १. ३.	४३३७५
नखर १. ३.	४३३७५
नखरायुध १.	४३३७२
नखशस्त्र १.	८६३२३
नखायुध १.	४३३७२
नखारुस ३.	४३३११७
नगा १.	३३३५
" १.	३१८१०४
" १.	८११५८
नगर ३.	४३३११
नगरद्वारकुट्टक १.	४३३१५
नगरी २.	४३३११
नगाधारा २.	३१३३
नगन १.	३३३७३
" १. २. ३.	५४४१५
" १.	६१३३१
नगनह १.	३१९५०
नगना २.	४३३१०
नगनाट १. २. ३.	५४४१५
नचक्र १.	३३३१९९
नट १.	३३३६९
" १.	३१५५५
" १.	३१५१०३
" १.	३३३६२
नटन ३.	३३३७८

[नन्दिकेश्वर]

नटभूषण ३.	३३३१३३
नटिति २.	३३३१०८
नटी २.	३३३१००
नटोत्साहन ३.	३३३१३९
नट्या २.	५१११४
नटवत् १. २. ३.	३३३१४४
नटवल १. २. ३.	३३३१४४
नण्ड १.	३३३१६३
नत १. २. ३.	५४४८३
" १. २. ३.	५४४१२३
" १. २. ३.	६४४९
नतजालु २.	३३३१४७
नतनास १. २. ३.	५४४१२
नद १.	४२३२९
नदनु १.	२३३२
नदी २.	२३३२२
" २.	८१९३
नदीभव ३.	३३३१२०
नदीमातृक १. २. ३.	३३३१४७
नद्व १. २. ३.	५४४९७
नद्वी २.	३३३१४४
ननन्द २.	४३३२७
ननान्द २.	४३३२७
ननु ४.	८१७२२
" ४.	८१८२
नन्दक १.	११११७
नन्दधु १.	३३३१८८
नन्दन ३.	१२३१०
" १.	३३३१०२
" १.	४३३३९
" १.	८१९१४
नन्दनीनन्दन १.	३३३१५८
नन्दयन्त्री २.	१११६०
नन्दा २.	१११६०
" २.	३३३१९७
नन्दि २.	३३३१८८
नन्दिक १.	३३३१५८
नन्दिका २.	१२३११
नन्दिकेश्वर १.	१११५१

[नन्दिन्]

नन्दिन् १.	१११५१
" १.	३१८३५
नन्दिनी २.	१११६०
" २.	३३१७८
" २.	३८८८८
" २.	४३१११
" २.	४४२२७
नन्दिवर्धन १.	१११४४
" १.	२११७३
नन्दिस्वरस् ३.	२११११
नन्दीचारी २.	३१११४२
नन्दीमुखी २.	३६१२००
नन्दावर्त १.	३३११९४
" १.	४३३३०
नपुंसक ३.	४४३३
नष्ट १.	४४४४५
नप्र १.	३११६३
नभःप्राण १.	११२४८
नभस् ३.	२११११
" ३.	२११८४
नभस १.	७११३३
नभसङ्गम १.	२३३२
नभस्य १.	२११८५
नभस्वत् १.	११२५०
नभोज्जण १.	३३३१९४
नभोजात १.	११२५०
नभ्राज १.	२१२११
नमः (नस्) ४.	८८११४
नमत ३.	४३११६६
" १.	७११३५
नमसित १. २. ३.	५४११०५
नमस्कार १.	३६३३९
नमस्कारी २.	३३३१४८
नमस्या २.	३६३३९
" २.	३६३३९
नमस्थित १. २. ३.	५४११०५
नम्र १. २. ३.	५४१८३
नय १.	५२३३२
नयन ३.	४४१९४

[वैजयन्तीकोषः]

नयनोदक ३.	३११८७
नर १.	३१५११
" १.	६११२९
नरक १.	११२३७
नरकाराति १.	१११२५
नरकीलक १. २. ३.	३६११२
नरकोलि २.	३३१८९
नरदेव १.	३७१२
नरनारायण १.	१११३०
नरवाहन १.	१२१५७
नरेन्द्र १.	३७१२
" १.	७११३७
नर्तक १.	३११६३
नर्तन ३.	३११७३
नर्तनप्रिय १.	२३३३८
नर्मदा २.	४२१२६
नर्मन् ३.	३११८८
नल १.	३३३२२८
नलक ३.	४३३१२५
" ३.	४४१११६
नलकुवर १.	१२१५९
नलतीर ३.	४४१५९
नलद ३.	३३३२३१
नलमीन १.	४११४५
नलान्तर १.	३११६१
नलिक ३.	४३३१२५
नलिन ३.	४२३३८
नलिनी २.	४२३३३
" २.	७२११०
नलिवाह १.	३७११७
नली २.	३८११००
नल्व १.	३११६०
नल्वल ३.	५११५६
नल्विक १.	३११६०
नव १. २. ३.	५४१८८
नवति २.	५११२७
नवनीत ३.	३८११३८
नवम् १. २. ३.	५११२०
नवमालिका २.	३३३१८६
नवश्री १. २. ३.	४३३११९

[नागवारिक]

नवांशुक ३.	४३३१२०
नवीन १. २. ३.	५४१८८
नव्य १. २. ३.	५४१८८
नसिक १.	४३३३८
नश्यत्प्रसूति ४.	४३३२०
नश्वर १. २. ३.	२३३१९
नष्टा २.	३६१४८
नस २.	३१५२३
नस्त ३.	४४११४०
नस्तित १. २. ३.	३३३५७
नस्य ३.	४४११४०
नस्योत १. २. ३.	३३३५७
नहुष १.	३१५११
नाक १.	१११११
" १.	६११२९
नाकु १.	३११४८
नाकुल ३.	३६१२१८
नाकुली २.	३८१९८
नाकुसुमन् १.	४१११६
नाग ३.	३२३३०
" ३.	३२३३२
" १.	४१११४
" १.	६११३०
नागकेसर १.	३३३८२
नागजिह्वा २.	३२३१२
" २.	३३३३९
नागजीवन ३.	३२३३१
नागदन्त १.	४३३५३
नागदन्तक ३.	३६१२१४
नागदन्ती २.	३३३१०९
नागपाश १.	३७११९६
नागबला २.	३८१६१
नागमातृ २.	३२३१२
नागर १.	३३३६१
" १. २. ३.	७५५५०
नागरङ्ग १.	३३३३६
नागराज १.	४१३३
नागरी २.	३३३१३७
नागलोक १.	४११११
नागवल्ली २.	३३३१४०
नागवारिक १.	८११५३

[नागवीथिका]

नागवीथिका २.	२११४६
नागवृन्तिका २.	३३३१२६
नागाङ्क ३.	४३३८
नागी २.	२११६
नागोदरी २.	३७१५४
नागोज्ज्व ३.	३८१११८
नाटक ३.	३९११००
नाटकी २.	३९१७३
नाटिका २.	३९११००
नाट्य ३.	३२३२८
" ३.	३९१७१
" ३.	६३३१७
नाट्यधर्मिका २.	३९१७२
नाट्योक्त ३.	३९१७२
नाडिजङ्घ १.	२३३१६
नाडिन्धम १.	३९११६
नाडी २.	२११५४
नाडीव्रण १.	३८११३३
नाथ १. २.	६५१४५
नाद १.	२४११
नादेय ३.	३८११२०
नादेयी २.	३३३९६
" २.	३३३१९९
नाना ४.	८७२२२
" ४.	८८१४
नानीकर १. २. ३.	५४१४८
नानीकवाच् १. २. ३.	५४१४८
नानीपात १.	४११२०
नान्दी २.	३९१६९
" २.	३९११३३
नापित १.	३९१२६
नापितकोलिका २.	४४१९६
नाभि २.	४४१६६
" १.	६१३३०
नाभिका २.	३७१३५
नाभिज १.	१११९
नाभिनाला २.	४४१९
नाभी २.	४४१६६

[शब्दानुक्रमिका]

नाभीद ३.	३११५
नाभील ३.	७३११९
नाम ४.	८७२२३
नामकर्मन् ३.	३६३३
नामधेय ३.	३११३१
नामन् ३.	३११३१
नामवर्जित १. २. ३.	५४१२१
नामशास्त्र ३.	३६३३१
नाय १.	३२३३२
नायक १.	४३३१४३
" १. २. ३.	५४१५७
नार ३.	३१११३
नारक १.	१२३३७
" १.	१२३३८
नारकी २.	२११६
नारङ्ग १.	३३३३६
नारद १.	३३३७
नारसिंही २.	१११६४
नाराच १.	३७१८०
नाराची २.	३९११९
नारायण १.	११११०
" १. २.	८५११०
नारी २.	३३३८१
" २.	४४१४
नार्यङ्ग १.	३३३३६
नाल १. २. ३.	३८११८
" १. २. ३.	३८१६३
" १. २. ३.	४२३४२
" ३.	६३३१७
" १. २. ३.	८९३३८
नालक ३.	४३३१२५
नाला २.	४२३४२
नालिका २.	३११५८
" २.	३११५८
" २.	३६३९५
" २.	३७११०
" २.	३७११७
" २.	३९११७२
" २.	७२१११
नालिकेर १.	३३३२२०

[निकाय]

नाली २.	३८१६३
" २.	४४१११६
" २.	८९३३८
नालीकर १. २. ३.	५४१४८
नालीकवाच् १. २. ३.	५४१४८
नावन ३.	४४११४०
नावारोह १. २. ३.	४२३१९
नाविक १.	३५३३८
" १.	३५३३०
" १. २. ३.	४२३१९
नाव्य १. २. ३.	४२३२०
नाश १.	३७२१०
" १.	६१३३१
नासत्य १ द्वि.	१३३५
नासत्यद्वय १ द्वि.	१३३५
नासा २.	४३३४०
" २.	४३३४५
" २.	४४१९१
नासाग्र ३.	४४१९२
नासारज्जु २.	३७११२
नासिका २.	४४१९१
नासिकापुट १.	४४१९१
नासिकामल १.	४४१९२
नासिक्य १ द्वि.	१३३६
नासिर १. ३.	३७२०३
नासू २.	३९११३३
नास्तिक १. २. ३.	५४३३८
नि ४.	८७१५
निसन ३.	४३३१७१
निकट ३.	५४११४०
निकर १.	५११२
निकर्षण ३.	४३३३१
निकष १.	३९११९
निकषा ४.	८८११५
निकामम् ४.	४३३१०४
निकाय १.	५१११४
निकाय्य १.	४३३१८

[निकार]

निकार १.	७११३७
निकारण ३.	३७१२१२
निकार्य १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४१२२२
निकुञ्जिन् ३.	३६१५१
निकुञ्ज १. ३.	३२१२०
निकुरुम्ब ३.	५११२
निकुष्ट १. २. ३.	५४१७५
निकेतन ३.	४२११७
निकण १.	२११११
निकण १.	२११११
निक्षेप १.	३८११२
निखर्व ३.	५११२८
” ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३६१९५
निगम १.	७११३५
निगारण १. २. ३.	४११८३
निगल १.	३७१८३
निगाल १.	३७१९०९
निगूढक १.	३८१३८
निगूढचरण ३.	३६१२२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३९११८
निघण्टु १.	३६१३१
निघस १.	४३१०२
निघानका २.	३९१२०
निघृष्टा २.	३६१५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निचित १. २. ३.	५४११५
निचुल १.	३३१६७
निचोट १.	३७१८४
निचोल १.	३३१४१
” १.	४३१२६
” १.	४३१२८
निज १. २. ३.	३७१४३
” ३.	५२११

वैजयन्तीकोपः

निज १. २. ३.	६११९
नितम्ब १.	३२१८
” १.	४११६४
” १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४११४
नितान्त १. २. ३.	५४१३२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
” १. २. ३.	५४१३०
नित्यशक्तिन् १.	३११२
नित्यहोम १.	३६१७०
निदाघ १.	३९१८१
” १.	८११५७
निदान ३.	७३१२०
निदानज्ञ १.	४११४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४१०८
निदिग्धिका २.	३३१०५
” २.	३३१०६
निदेश १.	३७१४७
” १.	७११३४
निदेशक १.	३११५९
निद्रा २.	३६१९७
निद्राण १. २. ३.	५४१३९
निद्रालु १.	३३११५०
” १. २. ३.	५४१३९
निधन १. ३.	७११५१
निधान ३.	१२१६०
” ३.	५२१४०
निधि १.	१२१६०
निधिपाल १.	१२१५७
निधुवन ३.	३११३४
(विधुवन)	
” १.	४३१७०
निन्दा २.	३११३३
” २.	६२१२१
निप १.	४११५८
निपक्षति २.	२११७०
निपात १.	३६१२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३८१२७

[निरञ्जना]

निबर्हण ३.	३७१२१२
निबड १. २. ३.	५४१२६
निबिरीस १. २. ३.	५४१२६
निभ ३.	३६१९५
” १. २. ३.	३९१२१
” १. २. ३.	५४१२२
निभृत १. २. ३.	५४१३२
निमय १.	३८१७१
निमित्त ३.	७३११८
” १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३७१२०
निमिष ३.	३९१९०
निमीलन ३.	३३१२०१
” १.	३९१९०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३११३६
निम्नगा २.	४२१२२
निम्ना २.	३३१७८
निम्ब १.	३३१७५
नियति २.	७२१२
नियन्तृ १.	२७१३८
नियम १.	३६११४
” १.	३६१२०९
” १.	५२१३७
” १.	७११४०
नियमोज्झति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३३१२३२
” ३.	५११२८
” ३.	५११३०
” ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३७१२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३९१२
निर् (निस्) ४.	८७१५
निरञ्जन १.	३११२
निरञ्जना २.	११११६
” २.	२११७२

[निरन्तर]

निरन्तर १. २. ३.	५४१२६
निरय १.	१२१३७
निरर्थक ३.	५२१६
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७
निरसन ३.	३११२१
निरस्त १. २. ३.	७४१३३
निराकरिण्यु १. २. ३.	५४१४०
निराकार १.	५२१२३
निराकृति २.	३६१९
निरामय १. २. ३.	४११४३
निरायस १.	३११६३
निरास १.	५२१२३
निरिणा २.	३६१४६
निरीष १.	३८१२८
निरुक्त ३.	३६१२८
” ३.	३६१३१
निरूपण १. २. ३.	८५१२
निरोध १.	७११३३
निर्भृति २.	१२१४२
निर्गमन ३.	५२११३
निर्गीत ३.	३९११०
निर्गण्डी २.	३३११८
” २.	३३११८६
निर्ग्रन्थ १. २. ३.	५४११६
” १. २. ३.	७४११३
निर्ग्रन्थन ३.	३७१२३
निर्घात १.	२२१६
निर्जर १.	१११३
निर्हर १.	३२१७
निर्णय १.	३६१७६
निर्णिक १. २. ३.	५४१६६
निर्णेक्यु १.	३११४५
निर्दय १. २. ३.	७४११५
निर्देश १.	३७१४७
निबन्ध १.	५२११४

शब्दानुक्रमणिका

निर्भर १. २. ३.	५४१३१
निर्भर्त्सन ३.	८३१८
निर्मद १.	३७१६८
निर्माल्य ३.	४३११५६
निर्मुक्त १.	४११२०
निर्माक १.	४११२१
निर्याण ३.	५२१३३
” ३.	७३११९
निर्यातन ३.	८३१७
निर्याम १.	४२११९
निर्यास १.	३३१११
निर्यूह १.	४३१३१
” १.	४११४१
” १.	७११३८
निरलज्जा २.	३६१४६
निरलङ्ग ३.	८७११
निरलप ३.	४२१३८
निर्वपण ३.	३६११८
निर्वहण ३.	३९१०९
निर्वाण ३.	७३१२०
निर्वाद १.	२४१३३
निर्वापण ३.	३७१२३
निर्वार्य १. २. ३.	५४१७३
निर्वासन ३.	३७१२२
निर्विष १.	४११११
निर्विषा २.	४१११७
निर्वीरा २.	४३१२८
निर्वृति २.	७२११०
निर्वृत्त १. २. ३.	५४१११
निर्वेद १.	३६११६७
” १.	५२१३४
निर्वेश १.	७११३९
निर्व्यथन ३.	४११२
निर्हरण २.	३७१९२
निर्हार १.	५२११७
निर्हाद १.	२४११
निलय १.	४३११८
निलम्प १.	१११२
निलम्पिका २.	३४१४२
निलम्बनी २.	४११२१
निवर्तन ३.	३११६०

[निश्शलाक]

निवर्तना २.	५२११७
निवसथ १.	४३१२
निवसन ३.	४३११८
” ३.	४३११६
निवह १.	५११२
” १.	७११३४
निवहा २.	३३११८६
निवात १. २. ३.	७४११४
निवाप १.	३३१६४
निवीत ३.	३३१२१
” १. २. ३.	४३१२२०
निवृत्त १. २. ३.	५४१०८
निवृत्ति २.	७२१११
निवेश १.	५२११४
” १.	७११३३
निशरण ३.	३७१२१२
निशा २.	२११५७
निशाकर १.	२११२४
निशाकेतु १.	२११२५
निशाचर १. २.	८५११२
निशात १. २. ३.	३७१९७
निशादक्षिन् १.	२३१२२
निशानाथ १.	२११२४
निशान्त १. २. ३.	७५१५१
निशामणि १.	२३१४७
निशार १.	४३११२७
निशित १. २. ३.	३७१९७
निशीथ १.	२११६६
तिशित्थिनी २.	२११५८
निशित्था २.	२११५८
निशुम्भन ३.	३७१२२
निश्रय १.	३६१७६
निश्वारक १. २. ३.	८५१११
निश्रेणि २.	४३१५१
निश्वास १.	३६१२०४
निश्शलाक १. २. ३.	५४११६०

निशेष]	वैजयन्तीकोषः	[नीलवृष
निशेष १. २. ३.	निष्ठा २. ६।२।२१	निस्स्पृहा २. ३।६।५०
५।४।८६	निष्ठान ३. ४।३।८५	निस्त्वाव १. ४।३।७९
निशेष्य १. २. ३.	" ३. ४।३।१०	निस्स्वाध्याय १. २. ३.
५।४।६६	निष्ठीव १. ३. ५।२।३६	३।६।९
निश्रेयस ३. ८।३।८	निष्ठीवन ३. ५।२।३६	निहत १. २. ३. ३।६।३७
निश्वास १. ३।६।२०४	निष्ठुर १. २. ३. २।४।२१	" १. २. ३. ७।४।१३
निषङ्ग १. ३।७।१७८	" ३. ३।२।२७	निहनन ३. ३।७।२१२
" १. ७।१।३४	" १. ५।३।५	निहित १. २. ३.
निषङ्गिन् १. २. ३.	निष्ठेवन ३. ५।२।३६	५।४।१०४
३।७।१४३	निष्ठ्या २. २।१।४०	निह्व १. ७।१।३९
निषद्या २. ४।३।३४	निष्ठ्यूत १. २. ३.	नीच १. २. ३. ३।६।३७
निषद्वर १. ३।८।२६	७।४।१४	" १. २. ३. ५।४।२२
" १. २. ८।५।११	निष्ठ्यूति २. ५।२।३६	" १. २. ३. ५।४।६०
निषध ७।१।३८	निष्णात १. २. ३.	" १. २. ३. ५।४।८१
निषाद १. ३।५।४	५।४।१९	" १. २. ३. ६।४।२०
" १. ३।५।६९	निष्पक्क १. २. ३.	नीचुदार १. ३।३।५४
" १. ३।५।७०	५।४।११५	नीचैः (-स्) ४. ८।८।१९
" १. ३।५।७२	निष्पतिसुता २. ४।४।२०	नीड १. ३. २।३।४९
" १. ३।५।८४	निष्पत्राकृति २. ५।२।३८	" १. ३. ८।५।३६
" १. ३।९।१३२	निष्पन्न १. २. ३.	नीडज १. २।३।४
निषादिन् १. ३।७।८७	५।४।४६	नीडिन् १. २।३।२
निषिद्धैकरुचि १. २. ३.	निष्पाव १. ४।२।४६	नीडोद्भव १. २।३।२
३।६।१२	" १. ४।२।४६	नीप १. ३।३।६०
निषूदन ३. ३।७।२१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	नीर ३. ४।२।१
निष्क १. ५।१।४१	४।३।१२०	नील १. १।२।६१
" १. ३. ५।१।४६	निष्प्रभ ४. ८।८।१३	" १. ३।४।१७
" १. ३. ६।५।२०	निसर्ग १. ५।२।१	" १. ५।३।११
निष्कला २. ४।४।१६	" १. ८।५।३५	नीलक १. १।२।२९
निष्कासित १. २. ३.	निस्पृष्ट १. २. ३.	नीलकण्ठ १. ३।३।१५५
५।४।७१	५।४।११६	" १. ८।६।२२
निष्कुट १. ३।३।३	निस्तरुण ३. ५।१।२१२	नीलकेशी २. ३।३।११०
" १. ३।३।१४	निस्तल १. २. ३.	नीलग्रीव १. १।१।४२
निष्कुटी २. ३।८।८७	५।४।८२	" १. ८।६।२२
निष्कोटित १. ३.	निष्पिंश १. ३।७।१६०	नीलजम्बूर १. ३।३।१५४
३।९।१२२	" १. २. ३. ७।५।५१	नीलदंष्ट्र १. १।१।६७
निष्कोश १. ३।७।७७	निस्वन १. २।४।१	नीलपीतल १. ५।३।२१
निष्क्रम १. ७।१।३६	निस्वान १. २।४।१	नीलपुष्प १. ३।८।५८
निष्ठङ्क १. ३।३।६२	निस्सङ्ग १. २. ३.	नीललोहित १. १।१।४०
निष्ठय १. ३।५।४६	३।४।२०	" १. ५।३।१९
निष्ठयान्ता २. ३।३।१३५	निस्सङ्गजा २. ३।३।१८७	नीलवासस् २।१।३६
निष्ठा २. ३।९।१०९	निस्सारण ३. ३।५।४१	नीलवृष १. ३।६।१२३

नीलशीर्ष]	शब्दानुक्रमणिका	[पञ्चक
नीलशीर्ष १. ३।४।४१	नृपति १. ३।७।१	नौ २. ४।२।१५
नीलसितश्याम १. ५।३।१३	नृपलक्ष्मन् ३. ३।७।१६	" २. ८।२।१७
नीला १. २।३।५	नृपात्मज १. ३।३।१७०	नौजीविन् १. ३।९।४२
नीलाङ्गा २. ४।१।३९	नृपात्मजा २. ३।३।१६७	नौतार्य १. २. ३. ४।२।२०
नीलाब्ज ३. ४।२।३५	नृपार्हक ३. ३।८।१५६	नौशिरस् ३. ४।२।१७
नीलाम्बर १. १।१।२४	नृलिङ्गक १. ३।९।११२	नौस १. २. ३. ३।६।१२७
नीलिक १. ३।५।१९	नृशंस १. २. ३. ५।४।२४	न्यक्ष १. २. ३. ६।४।९
नीलिका २. ३।३।१८६	नृसिंह १. १।१।१८	न्यग्रोध १. ३।३।२७
नीलिङ्गी २. ३।१।४२	नृसेन २. ३. ८।९।३४	" १. ४।४।८२
नीलिनी २. ३।३।११०	" २. ३. ८।९।३५	न्यग्रोधी २. ३।३।११३
नीली २. ३।३।११०	नेतृ १. ३।३।३७	न्यङ्कु १. ३।४।१५
नीलीराग १. २. ३.	" १. २. ३. ५।४।५७	" १. ६।१।३३
४।२।३४	नेत्र ३. ६।३।१७	न्यच् १. २. ३. ५।४।८५
नीलोत्पल ३. ४।२।३४	नेत्रपिण्ड १. ४।४।९५	" १. २. ३. ५।४।९३
नीवलक १. ३।५।२४	नेत्ररुज्ज २. ४।४।३२	न्यर्बुद ३. ५।१।२८
नीवाक १. ३।८।६६	नेम १. २. ३. ५।४।८६	न्यस्त १. २. ३.
नीवार १. ३।८।५७	" १. २. ३. ६।५।४७	५।४।१०४
नीवि २. ४।३।१३०	नेमि १. ३।४।६६	न्यस्तक १. ३. ३।८।१२
नीवी २. ३।८।७०	" २. ३।७।३५	न्याद १. ४।३।१०२
नीघृत् १. ३।१।२१	" २. ४।२।८	न्याय १. ३।७।४८
नीम ३. ४।३।३७	" २. ६।२।२१	" १. ३।८।१५
नीहार १. २।२।९	नेनिन् १. ३।३।४७	न्यायगण १. ३।३।२९
नु ४. ८।७।६	नेमीय १. ३।३।४७	न्याय्य १. २. ३.
नुत १. २. ३. ५।४।१०६	नेरिन् १. १।२।५२	५।४।१०३
नुति २. ३।१।३५	नैकृत १. २. ३. ५।४।२२	न्यास १. ३।८।१२
नुत्त १. २. ३. ५।४।९७	नैकृतिक १. २. ३.	न्युङ्क्त १. २. ३. ५।४।३५
नुन्न १. २. ३. ५।४।९७	५।४।२२	न्युञ्ज १. ३।३।३७
नूतन १. २. ३. ५।३।८६	नैगम २. ३।८।७२	" १. २. ३. ५।४।११
नूतना २ ब. २।१।१८	" १. ७।१।३७	" १. २. ३. ५।४।९०
नून १. २. ३. ५।४।८६	नैगमेय १. १।१।५७	" १. २. ३. ६।५।४६
नूनम् ४. ८।७।२२	नैचिकी २. ३।४।४६	प
नूपुर १. ३. ४।३।१४५	" २. ३।४।६०	पक्ति २. ६।२।२२
नृ १. ३।५।१	नैपथ्य ३. ४।३।१३२	पक्तिका २. ३।८।४२
" १. ४।४।३	नैपाली २. ३।२।१७	पक्ष ३. ३।८।१४३
नृगालिक १ ब. ३।१।२८	नैयग्रोध १. ३।३।२२	" १. २. ३. ४।३।९३
नृङ्ग ३. ४।३।३	नैर्द्धत १. १।२।४०	" १. २. ३. ४।३।९५
" ३. ४।३।४	नैर्द्धती २. २।१।४	पक्षण १. ३. ३।९।३२
नृतु १. ३।९।६३	नैल ३. ३।१।८	पक्ष १. २।१।७९
नृत्त ३. ३।९।७३	नैषध ३. ३।१।६	" १. २।३।४९
नृप १. ३।७।१	नैषिक १. ३।७।२१	" १. ६।१।३५
	नैष्ठिक १. ३।७।२१	पञ्चक १. ४।३।२४

[पञ्चक]

पञ्चक ३.	४३३४२
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३
पञ्चति २.	२११७०
” २.	७२११३
पञ्चद्वार ३.	४३३४२
पञ्चभाग १.	३७७८१
पञ्चरचना २.	३७११८६
पञ्चशाला २.	४३३२४
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५
पञ्चान्त १.	३११७३
पञ्चिका २.	८११३
पञ्चिणी २.	२११५९
पञ्चिन् १.	२३३१
पञ्चिपोत १.	२३३४
पञ्चिबन्धन ३.	३११४२
पञ्चिल १.	३१११५९
पञ्चिशाला २.	४३३२१
पञ्चमन् ३.	४३३४५
” ३.	४३३५५
” ३.	६३३१९
पञ्च १.	३१८२६
” १.	६१५४८
पञ्चक्रीडनक १.	३१४६
पञ्चज ३.	४३३३७
” ३.	८११४०
पञ्चरस १.	३११४७
पञ्चिल १. २. ३.	३११४३
पञ्चरुह ३.	४३३३९
पञ्चि २.	५११२४
” २.	५११२६
” ३.	५११३३
” २.	६३३२२
पञ्चु १. २. ३.	५११४४
पञ्चुल १.	३७१०४
पञ्चन ३.	३१२२७
” ३.	५३३३२
पञ्चपञ्च १.	३३३८२
पञ्चपञ्चा २.	३३३२३
पञ्चा २.	५३३३२
” २.	८११४

वैजयन्तीकोषः

पञ्चि २.	१३३१८
” २.	२३३१८२
पञ्च १.	३१११
पञ्चक ३.	३७१०
पञ्चकृत्वः (-स्) ४.	८१८६
पञ्चकोल ३.	३७८३
पञ्चखार १. २. ३.	८११५४
पञ्चगृह १.	४११६
पञ्चचीरोद्धित ३.	३६१५
पञ्चचूड १. २. ३.	३६१२
पञ्चजन १.	३१११
पञ्चजनीन १.	३७३३
(पञ्चजनिनः)	
पञ्चत्व ३.	३६३०२
पञ्चदशी २.	२११७३
पञ्चभद्र १.	३७१३
पञ्चम १.	३११३२
” १. २. ३.	५११२०
पञ्चलक्षण ३.	३७३८
पञ्चलोह ३.	३३३८
पञ्चवक्त्र ३.	८६३२
पञ्चबायु १. २. ३.	३६३०३
पञ्चशाख १.	४३३७३
पञ्चष १. २. ३.	५११२६
पञ्चसुगन्ध ३.	४३३५२
पञ्चहस्त १.	३११५८
पञ्चाङ्गी २.	३७३३
पञ्चाङ्गुल १.	३३३६५
पञ्चामृत ३.	४३३९१
पञ्चाशत् ५११२६	
पञ्चास्य १.	३७११
पञ्चिका २.	३११५९
पञ्चेषु १.	१११२८
पञ्चोषण ३.	३७८८१
पञ्चर ३.	२३३४९
पञ्चिका २.	१३३३६
पट १.	३३३५७
” १. ३.	४३३१६
” १. २. ३.	८११३७

[पणव]

पटकुटी २.	४३३१२५
पटचर १ व.	३११४१
” १.	३११५७
” ३.	४३३२७
पटचोर १.	३११५७
पटल ४.	४३३३७
” १.	७५५२
पटली २. ३.	५११६
पटवासक १.	४३३१५७
पटह १. ३.	३११३४
” १.	३११३८
पटी २.	८११३७
पटु १.	३३३१६५
” १. २. ३.	३७१४७
” ३.	३८१२०
” ३.	३८१२३
” १. २. ३.	४३३४३
” १.	५३३२६
” १. २. ३.	५३३५४
पटुच्छद १.	३३३१६४
पटुञ्जिका २.	३३३४९
पटोलक १.	३३३१६५
पटोली २.	३३३१५९
पट्ट १.	३७१५४
” १.	४३३४०
” १.	६१३४
पट्टन ३.	४३३३
” ३.	४३३३
पटबन्ध १.	३१५६२
पट्टस १.	३७१६४
पठि १.	३६३२३
पट्वीश १.	३७८६
पण १.	३८६९
” १.	३१६०
” १.	५१३८
” १.	५१३८
” १.	५१३९
” १.	५१४५
” १.	६१३४
पणव १.	३११३४
” १.	७१५२

पणिक]

पणिक ३.	३६८८
” १.	४३३३४
पणित १. २. ३.	५३१०६
पणितव्य १. २. ३.	३८६९
पणायित १. २. ३.	५३१०६
पण्ड १. २. ३.	३४५९
” १.	४३३३
पण्डा २.	३६१६४
” २.	३६१६५
पण्डित १.	३६१३४
पण्य १. २. ३.	३८६९
पण्यभू २.	४३३३५
पण्यवीथी २.	४३३३५
पण्यस्त्री २.	४३३२४
पण्याजीव १.	३८७२
पतग १.	२३३१
पतङ्ग १.	२३३१
” १.	२३३४३
” १.	४१४०
” १.	७१४०
पतङ्गना २.	३८४९
पतङ्गी २.	२३३४८
पतञ्जलि १.	३६१५७
पतत् १.	२३३१
पतत्र ३.	२३३४९
” ३.	३३३१७
” ३.	७३३२२
पतत्रि १.	२३३१
पतत्रिन् १.	२३३१
पतद्ग्रह १.	४३३६०
पतन ३.	३३३१६
” ३.	३६११६
पतयालु १. २. ३.	५३३८
पताक १.	४३३७९
पताका २.	३७१३३
” २.	३७१९३
पताकिन् १. २. ३.	३७१४५

शब्दानुक्रमणिका

पताकिनी २.	३७५५
पति १.	४३३३७
” १.	५३५८
पतिवरा २.	४३३७
पतिघ्नी २.	३६१३३
पतित १. २. ३.	३७३९९
पतितोत्पन्ना २.	३६४९
पतिवन्नी २.	४३३४
पतिव्रता २.	४३३७
पतेर १.	४३३३
पत्तन ३.	४३३४
पत्ति २.	३७५७
” १.	३७३३९
” २.	४३३४९
पत्तिच्छेद १.	४३३४८
पत्तर १.	३३३५६
पत्नी २.	४३३२५
पत्नीसङ्ग्रहण ३.	३६८९
पत्र १.	३३३१६
” १.	६३३२०
” १. २. ३.	८१३३२
पत्रक ३.	३८१२८
” ३.	४३३४९
पत्रकूट १.	३८१८४
पत्रणा २.	३७१८६
पत्रताली २.	३३३२४
पत्रपरशु १.	३१३३५
पत्रपाश्या २.	४३३३६
पत्रफला २.	३७१६४
पत्रमध्यसिरा २.	३३३४३
पत्ररथ १.	२३३१
पत्ररेखा २.	४३३४९
पत्रल ३.	३८१४३
पत्रला २.	३३३२४
पत्रसारक १.	३८१२८
पत्राङ्ग ३.	३८११५
पत्राङ्गुलि २.	४३३४९
पत्रिणी २.	४३३२८
पत्रिन् १.	२३३१
” १.	३७१७९
” १.	६१३३२

[पञ्चाख]

पञ्ची २.	८१३३२
पञ्चोर्ण १.	३३३६८
” १.	४३३११८
पथिकृत् १.	१३३२५
पथिन् १.	३१३४९
पथ्या २.	३३३१७८
पद् १.	४३३५६
पद् ३.	२११७
” ३.	४३३५६
” ३.	६३३१८
पदपणिका २.	३३३३६
पदभञ्जना २.	३६३३१
पदवल्मीक १.	४३३३३
पदवी २.	३६३४९
पदाजि १.	३७१३९
” १.	७१५४
पदाति १.	३७१३९
पदातिक १.	३७१३९
पदिक १.	३११५१
पद्म १.	३७१४०
पद्मति २.	५१३२४
” २.	७३१५५
पद्म १.	१३३६०
” १. ३.	३३३१९५
” ३.	३७८८२
” १. ३.	४३३३६
” ३.	५१३३२
” ३.	५३३१२
” १. २. ३.	६१५४८
” १.	८६३३२
पद्मकर्कटी २.	४३३४६
पद्मकासनिन् १.	३६३२११
पद्मचारिणी १.	३८८८९
पद्मनाभ १.	११११५
पद्मपत्र ३.	३८८८८
पद्मबन्धु १.	२११११
” १.	२११५६
पद्मा २.	३३३१००
” २.	३८८८१
” २.	३८८८९
पद्माक्ष ३.	४३३४६

[पञ्चालया]

पञ्चालया २.	१२३६
पञ्चामन ३.	१११७
" ३.	३६२०५
पञ्चासनिन् १. २. ३.	३६२३४
पञ्चिन् १.	४२३३
पञ्चोत्तर ३.	३६१९१
पद्य १. २. ३.	३११४७
" १.	३९११
पद्यमात्रिका २.	२४१४२
पद्या २.	३११४९
पनस १.	३३३७४
पनायित १. २. ३.	४११०६
पनित १. २. ३.	४११०६
पन्न १. २. ३.	४११०२
" १. २. ३.	४१११५
पन्नग १.	४११६
पन्नगारि १.	१११३८
पपा २.	४११३६
पय १.	३९१२४
पयस् ३.	३६१४५
" ३.	४२३२
" ३.	६३२०
पयस्या २.	३६१९८
पयस्विनी २.	४२३२२
पयोगर्भ १.	२२३२
पयोण्ड १.	३३३७४
पयोधर १.	८११२७
पयोवहा २.	४२३२०
पयोव्रत ३.	३६१४७
पर १.	३६१६१
" १.	३७४१
" ३.	३६१०५
" ३.	४११२९
" १. २. ३.	४११४२
" १. २. ३.	६१४९
परकुल १.	४११५४
परच्छन्द १. २. ३.	४१२७

वैजयन्तीकोषः

परजात १	३९१२
" १. १. ३.	४१४९
परतन्त्रक १. २. ३.	४१४२८
परन्तप १. २. ३.	४१६९
परपिण्डाद १. २. ३.	४१४९
परभाग १.	४२३३
परभृत १.	२३३१६
परमन्थु १.	१२३५
परमम् ४.	८८११७
परमात्मन् १.	३६१६१
परमान्न ३.	४३३७७
परमेश्वर १.	१११४१
परमेष्ठिन् १.	१११८
परमेष्ठिनी १.	१११६०
परम्पर १.	३११५५
" १.	४१४४६
" १.	४१४४६
परम्परा २.	४२३२९
परम्पराक २.	३६१९४
परम्परावाहन ३.	३७१३७
परवत् १. २. ३.	४१२८
परशु १.	३६१३१
" १.	३९३५
परशुभृत् १.	१११५४
परश्वः (-स्) ४.	८८१९
परश्वध १.	३९३५
परस्पर १. २. ३.	४११२३
परस्वत् १.	३१११
परा २.	३३३३४
" २.	३३३२१
" ४.	८७२६
पराक १.	३६१४४
पराकार १.	४२३२१
पराक्रम १.	३७२०९
" १.	८११५०
पराग १.	७१४२
पराच् ४.	४११९१

[परिचित]

पराचल १.	३२३३
पराचीन १. २. ३.	४१४९१
पराजक १.	३१४६
पराजित १. २. ३.	३७२१९
पराजन १.	४३३४
पराधीन १. २. ३.	४१२८
पराज्ज १. २. ३.	४१४९
पराभव १.	८१२६
पराभूत १. २. ३.	३७२१९
परायण ३.	३६१४५
" ३.	८११३
परारि ४.	८८११०
परारिका २.	३३३०७
पराधीन २.	३१३७
पराध्य १. २. ३.	४१६४
पराध १. २. ३.	४१२९
परालिनी २.	४३३४४
परावसु ३.	३६१४५
पराविद्ध १.	१२३५७
" १.	३१५१८
" १.	४३३६
पराशक १.	३३३३०
पराशर १.	३६१५५
परास ३.	३२३३१
परासन ३.	३७२१४
परासु १. २. ३.	३७२२०
परास्कन्दिन् १.	३९१५६
परि ४.	८७२५
परिकर १.	८१३३
परिकर्मन् ३.	४३३१२
परिकर्मिन् १.	३९३३
परिकर्ष १.	३७७२
परिकल्पना २.	३६१९६
परिक्रम १.	४२३८
परिक्रूरा २.	३३३०५
परिक्रोणा २.	३३३२१
परिचित १. २. ३.	४११०८

[परिचय]

परिचय १.	८११३०
परिखा २.	४३३१३
परिगत १. २. ३.	८१४७
परिग्रह १.	२१३३०
" १.	४१५१
" १.	८१३३०
परिघ १.	३७१७१
" १.	७१४१
परिघातन १.	३७१७१
परिचय १.	३७१९५
" १.	४२३१
परिचर १. २. ३.	३७१४१
परिचर्या २.	३६३८
परिचारक २.	३९३२
परिचारिका २.	३७३६
परिच्छद १.	३५८
" १.	४३१५८
परिजन १.	४१५१
परिजम् १.	२१३२४
परिणत १.	३७७८
परिणय १.	३६१४४
परिणाम १.	४२३४
परिणाय १.	३९६१
परिणाह १.	४२३५
परितः (-स्) ४.	८७३२
" ४.	८८३३
परिताप १.	४११२२
परित्राण ३.	४३१०५
परित्राणी २.	३३१०९
परिदेवन ३.	२४२९
परिधान ३.	४३१२१
परिधि १.	३४१९
" १.	७१४१
परिधिस्थ १. २. ३.	३७१४१
परिपण ३.	३८७०
परिपत् १.	३८२६
परिपत्र ३.	४३१०३
परिपन्थिन् १.	३७४२
परिपाटी २.	३६११४

शब्दानुक्रमिका

परिपेलव ३.	३३३२०१
परिप्लव १.	२३३२२
" १. २. ३.	४१७६
परिप्लविन् १.	२३३६
परिवर्ह १.	४३१५८
" १.	८१२८
परिवृत् १. २. ३.	४१५८
परिभव १.	३६१७१
परिभाषण ३.	८३१५
परिभोक्तृ १. २. ३.	४१२५
परिमण्डल १.	३७१९९
" १. २. ३.	४१८२
परिमल १.	४३५२
" १.	८१२८
परिमोचिन् १.	३९५५
परियट्ट १.	३६७४
परिरम्भ १.	४३१९४
परिवत्सर १.	२११९०
परिवर्जन ३.	३७११४
परिवर्त १.	३८७१
" १.	८१२९
परिवसथ १.	४३२
परिवसित १. २. ३.	४११०५
परिवाच् २.	२४३५
परिवाद १.	२४३२
" १.	३९१२१
परिवादिनी २.	३९११७
परिवापण ३.	३६३४
परिवार १.	४१५१
" १.	८१२८
परिवारक १.	४३३६
परिवित्त १.	३६३३
परिवित्ति १.	३६३३
परिवी २.	३९६०
परिवृत्ति २.	३७३१
परिवेत् १.	३१४२
परिवेष १.	३१५९
परिवेषक १.	२१३१
परिवेषण ३.	४३१००

[परेत]

परिव्याण ३.	३६१०५
परिव्याध १.	३३३३०
" १.	३३३७२
परिवाज १.	३६१६०
परिशाय १.	४३१६८
परिशुक्क ३.	४३३८८
परिषद् २.	३८१३
परिष्कार १.	४३१३३
परिष्वङ्ग १.	४३१६९
परिसर १.	४३१२
परिसर्प १.	४२३८
परिसर्पा २.	४२३८
परिस्कन्द १.	३९३२
परिस्कन्ध ३.	४३१५८
परिस्तोम ३.	४३१६६
परिस्पन्द १.	४१५१
परिस्त्रावी २.	४१३३१
परिस्तुत २.	३९३५
परिस्तुता २.	३९३५
परिहार १.	४२३७
परिचक्र १. २. ३.	४१३३०
परिच्छा १.	३६१२२
परितत् १. ३.	४१११३
" १. ३.	८९३१
परिवाप १.	८१२९
परिवार १.	३७१६८
परिवाह १.	४२३३१
परिष्ट १.	३६३७४
परिष्टि २.	७२१५
परिसार १.	४२३८
परिहास १.	३९३८
परु १.	३४२९
परुका २.	३३३०३
परुत् ४.	८८१०
परुल १.	३७९१
परुष १. २. ३.	२४२१
" १.	३३३२२
" १.	४३३३
" १. २. ३.	७४२०
परुस् १.	३३३११
परेत १.	१२३३८

[परेत]

परेत १. २. ३.	६।५।५२
परेतराज १.	१।२।३४
परेशवि ४.	८।८।९
परेशुका २.	३।५।४९
परैधित १.	३।९।२
" १. २. ३.	५।४।४९
परोक्ष १. २. ३.	५।४।३३
परोवण्ट १.	३।७।१९८
परोष्णी २.	२।३।४४
पर्कट १.	२।३।३१
" ३.	३।३।२७
पर्कटिन् १.	३।३।२८
पर्जन्य २.	३।३।२२
पर्जन्य १.	७।१।४२
पर्ण ३.	३।३।१७
" १.	३।३।२९
" १.	८।६।१२
पर्णश १. २. ३.	३।६।१३१
पर्णशबर १.	३।५।४७
पर्णशाला २.	४।३।२६
पर्णादा २.	३।४।६३
पर्णास १.	३।३।११९
पर्णिका २.	३।३।१२४
पर्दन ३.	२।४।८
पर्पट १.	२।४।१२८
पर्पटी २.	३।२।४१
" २.	३।३।२१३
पर्पण १.	३।३।१०७
पर्परा २.	३।३।२१३
पर्परी २.	४।४।९९
पर्परीक १.	८।१।२५
पर्यङ्क १.	३।६।२१३
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५२
पर्यटन ३.	५।२।११
पर्यतुयोग १.	२।४।३७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।७
पर्यन्तशू २.	४।३।१२
पर्यव १.	३।६।११४

वजयन्तीकोषः

पर्यवस्था २.	५।२।३०
पर्यवस्थातृ १.	३।७।४२
पर्यस्ति २.	३।६।१५०
पर्याण ३.	३।७।११४
पर्याधातृ १.	३।६।७४
पर्यास ३.	४।३।१०५
" १. २. ३.	७।५।५३
पर्यासम् ४.	४।३।१०४
पर्याय १.	३।६।११३
" १.	७।१।५५
पर्याहार १.	३।७।४५
पर्याहित १.	३।६।७४
पर्युद्वञ्चन ३.	३।८।४
पर्येषणा २.	३।६।१२१
पर्वत १.	३।२।१
पर्वन् ३.	२।१।७३
" ३.	३।३।११
" ३.	३।६।६२
" ३.	६।३।१९
" १. ३.	८।९।३१
पशु १. ३.	४।४।११५
पल ३.	४।४।१०६
" ३.	५।१।४५
" ३.	५।१।४६
" ३.	५।१।५१
पलगण्ड १.	३।९।१४
पलगण्डक १.	३।५।४८
पलङ्कष १.	३।८।११२
पलङ्कषा २.	३।३।१४१
पलतेजस् ३.	४।४।१०७
पलल १.	३।३।६९
" ३.	४।४।१०६
" ३.	७।३।२१
पलशत ३.	५।३।६०
पलशीनक १.	५।३।५०
पलाण्डु १.	३।३।२०५
" १.	३।३।२०७
पलाण्डुक १.	३।३।१५३
पलायन ३.	३।७।२१०
पलाल १. ३.	३।८।६४

[पवित्र]

पलाश ३.	३।३।१६
" १.	३।३।२९
" १.	३।३।२०३
पलाशिका २.	३।३।१९५
पलाशिन १.	७।१।५४
पलिकिनी २.	३।४।६३
पलिकनी २.	३।४।४६
" २.	४।४।२१
पलित ३.	३।८।७९
" ३.	५।४।१४४
" १. ३.	७।५।५२
पलिन १.	३।५।१९
पलिपादक ३.	३।७।७५
पलुष १.	५।३।४२
पलोद्भव ३.	४।४।१०७
पल्यङ्क १.	४।३।१६५
पल्ययन ३.	३।७।११४
" १.	४।४।४६
पल्ल १.	३।५।१४
पल्लव १. ३.	३।३।१७
" १.	४।४।३९
" १. ३.	७।५।५८
पल्लवाङ्कुर १.	३।३।१५
पल्ली २.	४।१।३०
" २.	४।३।२७
" २.	६।२।२३
पव १.	३।८।४६
(पल)	
" १.	५।२।३१
पवन १.	१।२।४९
" १.	१।२।५३
" ३.	४।३।६६
" ३.	५।२।३१
पवमान १.	१।२।२४
" १.	१।२।४८
" १.	८।१।२७
पवि १.	१।२।१३
" १.	६।१।३३
पवित्र ३.	३।२।२२
" ३.	३।६।२०
" १.	३।८।५३

पवित्र]

पवित्र ३.	४।२।४०
" १. २. ३.	५।४।६५
" १. २. ३.	७।५।५८
पशु १.	३।४।३०
" १.	३।४।६२
" १.	३।४।७२
" १.	३।६।८४
" १.	३।६।११२
" ४.	८।८।२१
पशुगोयुग १.	५।१।१८
पशुपति १.	१।१।३८
" १.	८।१।२६
पशुबन्ध १.	३।६।८४
पशुसंस्कार १.	३।६।९३
पश्चात्ताप १.	३।६।१८५
पश्चात्सुन्दर १.	३।३।१५७
पश्चिम १. २. ३.	५।४।७७
पश्चिमाङ्ग ३.	४।४।६९
पश्यतोहर १.	३।९।५७
पशौही २.	३।४।४७
पांसु १.	३।८।२५
पांसुचन्दन १.	१।१।३८
पांसुज ३.	३।८।२३
पांसुलवण ३.	३।८।२२
पांसुला २.	४।४।१०
पाक १.	३।३।८३
" १.	३।८।४५
" ३.	५।२।४१
" १.	६।१।३३
" १.	८।९।१४
पाककृष्ण १.	३।३।८३
पाककृष्णफल १.	३।३।८३
पाकपुटी २.	४।३।२३
पाकफल १.	३।३।८३
पाकफलकृष्ण १.	३।३।८३
पाकमण्डल ३.	३।९।२७
पाकयज्ञ १.	३।६।८३
पाकयज्ञिक १.	१।२।२७
पाकल १.	३।७।९१
" ३.	३।८।९९
पाकवर्तन ३.	५।२।४१

शब्दानुक्रमणिका

पाकशासन १.	१।२।३
पाकशुक्ला २.	३।२।१३
पाकु २.	८।९।३
पाक्य ३.	३।८।२२
" ३.	३।८।२४
पागल १.	३।५।१५
पाचन १.	५।३।२६
पाज १.	४।३।७६
पाञ्चजन्य १.	१।१।१७
पाञ्चमिक १.	५।१।५९
पाञ्चालिका २	३।९।१४
पाट ४.	८।८।२
पाटल १.	५।३।१७
" १. २. ३.	७।५।५६
पाटला १. २. ३.	३।३।२३
पाटलि १. २.	३।३।९०
पाटलिङ्गिका २.	३।८।४९
पाटली २.	३।६।६२
पाटव ३.	४।४।१४२
पाटूर १.	२।१।७०
पाठक १.	३।३।२३
पाठा २.	३।३।१३१
पाठीन १.	४।१।४२
पाणि १.	४।४।७३
" १.	५।१।४९
" १.	८।६।९
पाणिक १.	५।१।३८
पाणिगृहीती २.	४।४।३५
पाणिग्रह १.	३।६।५५
पाणिघ १.	३।७।१
पाणिनि १.	३।६।१५४
पाणिन्युपज्ञ ३.	३।९।२१
पाणिपात्र १. २. ३.	३।६।१३२
पाणिमुक्त ३.	३।७।१९५
पाणिमूल ३.	४।४।७३
पाणिरुह १.	८।५।७६
पाणिवाद १.	३।९।७१
पाणिश १.	३।५।२०
पाण्डर १.	५।३।१०
" १.	५।३।१२

[पाद]

पाण्डिय १ ब.	२।१।३३
पाण्डु १.	३।३।२२२
" १.	५।३।१२
पाण्डुक १.	३।५।२७
पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३।७।१२९
पाण्डुभूम १. २. ३.	३।१।४५
पाण्डुल १.	५।३।१४
पाण्डुवर्णक १.	४।४।१३७
पाण्डुसोपाक १.	३।५।४३
" १.	३।५।१०६
पाण्ड्य १ ब.	३।१।३३
पातृ २.	४।४।५४
पातक ३.	३।६।१६८
पातन ३.	३।७।१७४
पाताल ३.	४।१।१
" ३.	७।४।२२
" ३.	८।३।१८
पातालमूलिक १. २. ३.	३।६।१२९
पाताली २.	७।२।१७
पातिक १.	३।७।१४०
पातुक १. २. ३.	५।४।३८
पात्म १.	२।१।८८
पात्र ३.	२।३।२६
" ३.	३।६।१४६
" ३.	३।९।६८
" ३.	४।२।३२
" ३.	५।१।५५
" ३.	६।३।२१
" १. २. ३.	८।९।३८
पाथस ३.	४।२।२१
" ३.	६।३।२०
पाथि १.	२।१।१३
पाथिस ३.	६।३।२१
पाथेय ३.	३।९।७
पाथोवका २.	३।३।२१९
पाद १.	२।१।१६
" १.	३।२।७
" १.	४।४।५६

पाद]

वैजयन्तीकोषः

[शालग्र

पाद १.	५२१७	पाप्मन् १.	३१६१७८
पाददण्ड १.	३१७१८३	पाप्मन् १.	४१७१२३
पादप १.	७११४५	पाप्मन् १. २. ३.	४१७१४५
पादपच्छाय १. २. ३.	८११३४	पाप्मन् १.	३१५५०
पादपाश १.	३१७११२	" १. २. ३.	५१४२२
पादपुटी २.	३१७११५	" १. २. ३.	७१४२०
पादप्रसार १.	३१६१२७	पामा २.	४१७१२३
पादफली २.	३१७११५	पामारि १.	३१२१४
पादरक्षणी २.	३१७१५५	पायस ३.	३१८१०९
पादरक्षणी २.	४१३१६२	" ३.	४१३७७
पादवाहिक १.	४१११८	पायु १.	४१४६०
पादस्फोट १.	४१११२२	पाय्य १.	५११३४
(पादः, स्फोटः)		पार १.	४१२३२
पादात १.	३१७१३९	पारत १.	३१२४४
" ३.	५११११	पारद १ ब.	३११२८
पादायुध १.	२३११४	पारधेनुक १.	३१५२२
पादावर्त १.	४१२२१	" १.	३१५८४
पादिक ३.	३१७१४०	पाररक्षिक १.	३१६१६०
" १.	५११३८	पारशव १.	३१२३४
" ३.	५११५२	" १.	३१५४
पादिका २.	४१३३९	" १.	३१५६८
(पालिका)		" १.	३१५७३
पादिकाशीर्ष ३.	४१३४०	" १.	३१५७६
(पालिकाशीर्ष)		" १.	८११३२
पादुका २.	३१७१५०	पारश्वधिक १. २. ३.	३१७१४४
" २.	४१३१६२	पारसीक १.	३१७१४
पादू २.	६१२२४	" १.	३१७१४
पादूकृत १.	३१९१३	पारसीककुल ३.	३१११९
पादोपवेश १.	३१६१२२	पारायण १.	३१६१४५
पान १.	३१६१०४	" १.	८१३१९
" ३.	४१३१०	पारावत १.	२३११४
पानगोष्ठिका २.	३१९१५०	" १.	३१५१०
पानीय ३.	४१२२	" १. २. ३.	८१५१५
पानीयशालिकार.	४१३२३	पारावतपदी २.	३१३१४०
पानीयसम्भव ३.	३१८१२२	पारावर १.	३१५१४
पाप १.	३१३१७७	पारावार १.	४१२१२
" १.	३१६१६८	पाराशरिन् १.	३१६१६०
" १. २. ३.	६१५५०	पाराशर्य १.	१११३२
पापचेली २.	३१३१३०		

पालन]

शब्दानुक्रमणिका

[पितृव्य

पालन १.	४११४६	पिङ्गल १.	४११२७	पिण्ड १.	३१२१५
पालाश १.	५१३२२	" १.	५१३१८	" १.	४१३१०१
पालि १.	३१६१५०	पिङ्गलकेशाक्षी २.	३१६१५२	" १.	६१३३१
" २.	३१८२६	पिङ्गला १.	२११९	पिण्डक १.	१३३४
" २.	४१४२३	" २.	२३३२१	" १.	३१८११०
" २.	६१२२२	पिङ्गाण १.	५१३१३	" १.	४१३४५
पालिकाष्ट ३.	४१३१०	पिच्छण्ड १.	७११५७	पिण्डफला २.	३१३१६७
पाली २.	३१६४९	पिच्छिण्ड १. २. ३.	५१४७	पिण्डा २.	३१३२११
" २.	३१९१२६	पिच्छिण्ड १.	४१३८९	पिण्डारक १.	३१३७८
पालुखञ्जन १.	३१५१०	पिच्छिण्डिका २.	३१९१५८	" १.	३१४४
पालुषी २.	४१४३५	पिच्छु १.	३१९१९	पिण्डि १.	४१३७०
पालक १.	३१९१५	" १.	५११४९	" १.	६१३३४
पाल्लवा २.	८१९१६	पिच्छुमन्द १.	३१३७५	पिण्डिका २.	४१३५८
पावक १.	११२१५	पिच्छुल १.	३१३५०	" २.	७१२१४
" १.	३१३८६	" १.	३१३७६	पिण्डित १. २. ३.	७१३१९
" १.	३१६१२	पिच्छुल ३.	५११४७	पिण्डिल १. २. ३.	७१३१७
पावन १.	३१८१११	पिच्छुल ३.	३१३३०	पिण्डीक १.	३१३७८
पावनक १.	३१८१३०	पिच्छुनद्ध १.	३१३२०६	पिण्डीतक १.	३१३४९
पावनी २.	३१६१५	पिच्छुन्दका २.	४१३३१	पिण्डीशूर १. २. ३.	५१३७०
पाश ३.	३१९३०	पिच्छा २.	४१३८०	पिण्डूष १.	४१३९२
" १.	६१३३७	पिच्छित १. २. ३.	५१३८३	पिण्या २.	३१३१४०
पाशक १.	३१९६०	पिच्छिल १. २. ३.	५१३४	पिण्याक १.	३१९२७
पाशबन्धन २.	३१४६१	पिच्छिला २.	३१३९२	" १.	७१३४६
(पादबन्धन)		पिच्छीला २.	३१९१२६	पितामह १.	४१३२९
पाशिन १.	११२४५	पिच्छु ३.	२३३३९	" १.	८१३२८
पाशुपत १.	३१३१९४	" ३.	६१३२१	पितृ १.	४१३२९
पाशुपाक्य ३.	३१७४	पिञ्ज १.	५१३१३	" १.	४१३४७
पाशुबन्धिक १.	११२२५	पिञ्जा २.	३१३२११	" १ ब.	४१३४९
पाश्चात्य १ ब.	३१३३	पिञ्जप १.	५१३२४	पितृकार्य ३.	३१६६६
" १. २. ३.	५१३७६	पिट १.	४१३६४	पितृज्येष्ठ १.	४१३३२
पाश्या २.	५१११४	पिटक १.	४१३६३	पितृदान ३.	३१६६४
पाषण्ड १.	३१६२३८	" १.	४१३६४	पितृनख १.	३११५९
" १.	३१६२३९	" १. २. ३.	४१३२३	पितृपति १.	११३३३
पाषाण १.	३१२८	" १. २. ३.	८१३३७	पितृपितृ १.	४१३२९
पाषाणदारक १.	३१९२२	पिटका २.	४१३२३	पितृप्रपा २.	३१६६७
पाषाणपुष्प १.	३१८१६	" २.	८१३३७	पितृप्रसू २.	२१३६९
पासि १.	२१११४	पिठर १.	४१३५५	पितृभोजन ३.	३१६६४
पिक १.	२३३२६			पितृयाण १.	२१३४६
पिङ्ग १.	४१११४			पितृवन ३.	३१३४८
" १.	५१३१८			पितृव्य १.	४१३३१
पिङ्गल ३.	३१३२०२				

[पितृवस्त्रीय]

पितृवस्त्रीय १.	४४४४२	पीठर ३.	३३३२००
पित ३.	४४४१२१	पीठीव ३.	४४४६०
पित्तल ३.	३३३२६	पीडन ३.	३३३२०७
पित्या २.	२११७२	पीडा २.	३३३१८७
पित्सत् १.	२३३१	" २.	६३३२५
पिधान ३.	२११६४	पीडित १. २. ३.	
" ३.	४३३५५		५४३११५
पिनद्ध १. २. ३.	३३३१४२	पीत १.	३३३११४
पिनाक १.	१११५०	" १.	५३३१११
" १. ३.	७५५५७	पीतकङ्कु २	३३३१५६
पिनाकिन् १.	११३३९	पीतघोषा २.	३३३१६२
पिपतिपत् १.	२३३१	पीतचन्दन ३.	३३३११३
पिपासा २.	३३३१८१	पीततण्डुला २.	३३३१५५
पिपासित १. २. ३.		पीतदारु ३.	३३३१७१
	५४३३७	" १.	३३३१२२
पिपासु १. २. ३.	५४३३७	" ३.	३३३११४
पिपीलिका २.	४१३३६	पीतधातु १.	३३३१११
पिप्पल ३.	३३३२०	पीतधूमल १.	५३३२०
" १.	३३३२७	पीतन ३.	३३३११४
" ३.	४४३६८	" १.	३३३३१
पिप्पलक १.	३३३१२	" ३.	३३३११७
पिप्पली २.	३३३७३	पीतपुष्प १.	३३३१७०
" "	३३३७६	पीतमुण्ड १.	२३३१९
पिप्पलीमूल ३.	३३३९१	पीतरक्त १.	५३३१७
पिप्पिका २.	२३३२४	पीतरसा १.	३३३१३९
पिप्पु १.	४४३९७	पीतल ३.	५३३११
पिलाट १.	३३३७३	पीतलिका २.	३३३७३
पिल्ल १.	६३३५	पीतलोह ३.	३३३२५
पिशङ्ग १.	५३३१८	पीतलोहित १.	५३३२०
पिशाच १.	१३३३४	पीतश्यामल १.	५३३२०
" १.	७३३१७	पीतसागर १.	३३३१५१
पिशित ३.	४४३१०७	पीतशाल १.	३३३३९
पिशुन १. २. ३.	५४३२५	पीतसितासित १.	५३३१२
पिष्ट १.	५३३५५	पीतहरित १.	५३३२१
पिष्टक १.	४३३७२	पीता २.	३३३२११
पिष्टपचन ३.	४३३५७	पीताम्बर ३.	१३३११
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२	पीताम्लान १.	३३३१८८
पिष्टात १.	४३३१५७	पीति १.	३३३९१
पीठ ३.	४४३६४	" १. २.	६३३५१
पीठबन्धन १.	४४३८०	पीतु १.	२३३३
पीठमर्द १.	३३३७०	पीथ १.	१३३१९

वैजयन्तीकोषः

[पुञ्जील]

पीथ ३.	३३३१३८	पीथ ३.	३३३१३८
" ३.	३३३१४५	" ३.	३३३१४५
" ३.	६३३२२	" ३.	६३३२२
पीन १. २. ३.	५४३६	पीनकोशी २.	३३३१६५
पीनस १.	४३३१४	पीनस १.	४३३१४
" १.	४४३१२१	पीनस्कन्ध १.	३३३१५
पीनस्तनी २.	३३३१४९	पीनस्तनी २.	३३३१४९
पीनाह १.	४३३२८	पीनोष्णी २.	३३३१४९
पीनोष्णी २.	३३३१४९	पीयु १.	६३३३२
पीयु १.	६३३३२	पीयूष ३.	३३३१४६
पीयूष ३.	३३३१४६	" ३.	७३३२३
" ३.	७३३२३	पीलु १.	३३३१४५
पीलु १.	३३३१४५	" १.	६३३३२
" १.	६३३३२	पीलुक १.	२३३३४
पीलुक १.	२३३३४	पीलुकुण १.	८३३१४
पीलुकुण १.	८३३१४	पीलुनी २.	३३३११४
पीलुनी २.	३३३११४	पीलुपर्णिका २.	३३३११४
पीलुपर्णिका २.	३३३११४	पीलुपर्णी २.	३३३११७
पीलुपर्णी २.	३३३११७	पीवन् १. २. ३.	५४३६
पीवन् १. २. ३.	५४३६	पीवर १.	३३३३९
पीवर १.	३३३३९	" १.	५४३६
" १.	५४३६	पीवरी २	३३३१४२
पीवरी २	३३३१४२	पुञ्जली २.	४४३९
पुञ्जली २.	४४३९	पुंस् १.	४४३२
पुंस् १.	४४३२	" १.	८३३६१
" १.	८३३६१	पुंसवन ३.	३३३३
पुंसवन ३.	३३३३	" ३.	३३३१४५
" ३.	३३३१४५	पुंहुल १.	४४३२५
पुंहुल १.	४४३२५	पुङ्ग १.	३३३१८५
पुङ्ग १.	३३३१८५	" १.	६३३३३
" १.	६३३३३	पुङ्गर्भः १.	४४३९
पुङ्गर्भः १.	४४३९	पुङ्गव १.	७३३५७
पुङ्गव १.	७३३५७	पुङ्गाह १.	३३३१००
पुङ्गाह १.	३३३१००	पुच्छ १. ३.	३३३७४
पुच्छ १. ३.	३३३७४	पुच्छभाग १.	३३३८१
पुच्छभाग १.	३३३८१	पुञ्ज १.	५३३३
पुञ्ज १.	५३३३	पुञ्जिका २.	२३३७
पुञ्जिका २.	२३३७	पुञ्जील १.	३३३३३
पुञ्जील १.	३३३३३		

[पुट]

पुट २.	३५३२८	पुनरुद्धा २.	३३३४५
" १. २. ३.	३३३३३	पुनर्नव १.	४४३७६
" १.	४३३१	पुनर्नवा २.	३३३१४६
" १.	४३३१४	पुनर्भव १.	४४३७६
" १. २. ३.	८३३३७	पुनर्भू २.	३३३४५
पुटकिनी २.	४३३४४	पुनर्भूज १.	४४३४५
पुटभेद १.	४३३३०	पुनर्भुवन् १.	२३३२५
पुटभेद ३.	४३३३	पुनर्वसु १.	२३३३९
पुटानिल १.	१३३५३	" १.	३३३५८
पुटी २.	३३३३३	पुत्राग १.	३३३७०
" २.	८३३३७	पुष्पिका २.	४४३३३
पुष्ट १.	६३३३२	पुर् २.	३३३३३
पुष्टक १.	५३३१०	" २.	४३३१
पुष्टरीक १.	२३३१८	" २.	८३३३६
" ३.	३३३३३	पुर् १.	३३३५४
" १.	४३३१५	" ३.	३३३३३
" १.	४३३१९	" १.	३३३२७
" ३.	४३३२३	" ३. २.	४३३१
" ३.	४३३४०	पुर्ः(-स्) ४.	८३३११
" १.	८३३३६	पुर्क्षक १ ब.	३३३३०
पुष्टरीका १.	१३३१०	पुर्तः(-स्) ४.	८३३११
पुष्ट १ ब.	३३३३०	पुर्द्वार ३.	४३३१५
" १.	३३३२२६	पुर्न्दर १.	१३३२
पुष्टलक्षण २.	३३३३०	पुर्न्ध्री २.	४४३२१
पुष्टा २.	३३३४३	पुर्मद १.	३३३१०८
पुष्ट ३.	३३३१६८	पुर्रक्षिन् १.	३३३१८
" १. २. ३.	६३३५०	पुर्स्कृत १. २. ३.	८३३१९
पुष्टगन्धिक ३.	४३३४०	पुर्स्तात् ४.	८३३३३
पुष्टजन १.	८३३२६	पुर्स्सर १. २. ३.	
पुष्टजनेश्वर	१३३५८		३३३१४५
पुष्टाह ३.	२३३६७	पुरा ४.	८३३२३
" ३.	८३३२२	पुराज १.	१३३८
पुत्तिका २.	२३३४८	पुराण ३.	३३३३८
पुत्र १.	४४३३९	" ३.	३३३२९
" १.	४४३४८	" १. २. ३.	५४३८७
" १.	८३३३३	पुराणान्त १.	१३३३५
पुम्जीव १.	३३३७९	पुरातन १. २. ३.	५४३८७
पुद्गल १.	८३३३३	पुरावृत्त ३.	२३३३८
पुनःपुनः (रू) ४.	८३३११	पुरी २.	४३३१७
	८३३२४	" २.	४३३११
पुनर् ४.	८३३२४	पुरीष ३.	३३३२४

शब्दानुक्रमणिका

पुनरुद्धा २.	३३३४५	पुरीष ३.	४४३१८
पुनर्नव १.	४४३७६	पुरु १. २. ३.	५४३८५
पुनर्नवा २.	३३३१४६	पुरुष १.	१३३१८
पुनर्भव १.	४४३७६	" १.	४४३२
पुनर्भू २.	३३३४५	" १.	७३३४६
पुनर्भूज १.	४४३४५	पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०
पुनर्भुवन् १.	२३३२५	पुरुषाद १.	१३३४१
पुनर्वसु १.	२३३३९	पुरुषोत्तम १.	१३३१२
" १.	३३३५८	पुरुह १. २. ३.	५४३८५
पुत्राग १.	३३३७०	प्ररुह १.	१३३२
पुष्पिका २.	४४३३३	पुरोग १. २. ३.	३३३१४५
पुर् २.	३३३३३	पुरोगम १. २. ३.	
" २.	४३३१		३३३१४६
" २.	८३३३६	पुरोगामिन् १.	३३३७०
पुर् १.	३३३५४	" १. २. ३.	३३३१४६
" ३.	३३३३३	पुरोडाश १.	३३३९९
" १.	३३३२७	पुरोधस् १.	३३३२४
" ३. २.	४३३१	पुरोनुवाक्या २.	३३३१२
पुर्ः(-स्) ४.	८३३११	पुरोभागिन् १. २. ३.	
पुर्क्षक १ ब.	३३३३०		५४३३४
पुर्तः(-स्) ४.	८३३११	पुरोवचस् ३.	२३३४१
पुर्द्वार ३.	४३३१५	पुरोवात १.	१३३५४
पुर्न्दर १.	१३३२	पुरोहित १.	३३३२४
पुर्न्ध्री २.	४४३२१	पुरोहिन् १.	३३३३४
पुर्मद १.	३३३१०८	पुलक १.	३३३३१
पुर्रक्षिन् १.	३३३१८	" १.	३३३३३
पुर्स्कृत १. २. ३.	८३३१९	" १.	७३३४७
पुर्स्तात् ४.	८३३३३	पुलकिन् १.	३३३३०
पुर्स्सर १. २. ३.		पुलाक १.	७३३४७
	३३३१४५	पुलाकिन् १.	३३३३५
पुरा ४.	८३३२३	पुलिन ३.	४३३३३
पुराज १.	१३३८	पुलिन्द १.	३३३४७
पुराण ३.	३३३३८	" १.	३३३४७
" ३.	३३३२९	" १.	३३३८३
" १. २. ३.	५४३८७	पुलिन्दक १.	४३३१६
पुराणान्त १.	१३३३५	पुलोमजा २.	१३३११
पुरातन १. २. ३.	५४३८७	पुलोमशु १.	१३३३
पुरावृत्त ३.	२३३३८	पुलकस १.	३३३४८
पुरी २.	४३३१७	" १.	३३३८२
" २.	४३३११	" १.	३३३८५
पुरीष ३.	३३३२४	" १.	३३३८८

[पुलकस]

पुरीष ३.	४४३१८	पुलकस १.	३३३४८
पुरु १. २. ३.	५४३८५	" १.	३३३८२
पुरुष १.	१३३१८	" १.	३३३८५
" १.	४४३२	" १.	३३३८८
" १.	७३३४६		
पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०		
पुरुषाद १.	१३३४१		
पुरुषोत्तम १.	१३३१२		
पुरुह १. २. ३.	५४३८५		
प्ररुह १.	१३३२		
पुरोग १. २. ३.	३३३१४५		
पुरोगम १. २. ३.			
	३३३१४६		
पुरोगामिन् १.	३३३७०		
" १. २. ३.	३३३१४६		
पुरोडाश १.	३३३९९		
पुरोधस् १.	३३३२४		
पुरोनुवाक्या २.	३३३१२		
पुरोभागिन् १. २. ३.			
	५४३३४		
पुरोवचस् ३.	२३३४१		
पुरोवात १.	१३३५४		
पुरोहित १.	३३३२४		
पुरोहिन् १.	३३३३४		
पुलक १.	३३३३१		
" १.	३३३३३		
" १.	७३३४७		
पुलकिन् १.	३३३३०		
पुलाक १.	७३३४७		
पुलाकिन् १.	३३३३५		
पुलिन ३.	४३३३३		
पुलिन्द १.	३३३४७		
" १.	३३३४७		
" १.	३३३८३		
पुलिन्दक १.	४३३१६		
पुलोमजा २.	१३३११		
पुलोमशु १.	१३३३		
पुलकस १.	३३३४८		
" १.	३३३८२		
" १.	३३३८५		
" १.	३३३८८		

[पुष्कस]

पुष्कस १.	३१५८९
" १.	३१५९१
पुष्प १.	४१४६१
पुष्पित १. २. ३.	५४१११४
पुष्कर १.	३१८८८
" ३.	७३१२४
पुष्करसार १.	४१११६
पुष्कराह्वय १.	२३३३३
पुष्करिणी २.	४२१५
पुष्कल १.	३१६१५
" ३.	३१६१६
" १.	४३११२
" १. २. ३.	७४११९
पुष्ट १. २. ३.	५४१११४
पुष्टि २.	११११६
पुष्टिवर्धन १.	२३३२८
पुष्प १.	३३३१८
" ३.	४१११६
" ३.	८१११५
पुष्पक १. ३.	३१५५४
" १.	४१११८
पुष्पकाल १.	२१११८
पुष्पकेतु १.	३३३३३
पुष्पदन्त १.	२१११८
पुष्पधन्वन् १.	१११२८
पुष्पफल १.	३३३३२
पुष्पफलित् १.	३३३३६
पुष्परजस् ३.	३१८११७
पुष्पलोलुप १.	२३३३२
पुष्पव १.	३१५५४
" १.	३१५१०१
पुष्पवत् १.	२११२९
पुष्पवती २.	४१११५
पुष्पवाटी २.	३३३३४
पुष्पवीर्या २.	३३३१२८
(पुष्पी, वीर्या)	
पुष्पसारण १.	२१११८
पुष्पाब्ज १. २. ३.	३३३१२८
पुष्पाभिकीर्णक १.	४११११

वैजयन्तीकोषः

पुष्पाभिकीर्णक १.	४११११
पुष्पिका २.	३१९१२७
पुष्पित १. २. ३.	३३३१८
पुष्प्य १.	२११३९
" १.	२११२९
पुष्पफल १.	३३३१७०
पुष्पस्थ १.	३१७१२६
पुष्पल १.	३१८८५
पुस्त ३.	३१९१६
पुस्तक ३.	४३३१०९
पू २.	३३३१६३
पूग १.	३३३११७
" १.	५११११
पूगतिथ १. २. ३.	
पूगपट्ट १.	५१११९
पूगपुष्पिका २.	३३३१२२
पूगावपनी २.	४३३१०८
पूजा २.	३३३३९
पूजित १. २. ३.	
पूज्य १. २. ३.	६१५५१
पूज्यपाद १. २. ३.	
पूत १. २. ३.	३१८६७
" १. २. ३.	५११६५
पूतना २.	२१११८
पूति १. २.	३१५३५
" १.	५३३१५७
पूतिक १.	३३३३२
पूतिकरज १.	३३३३२
पूतिकाष्ठ ३.	३३३७१
पूतिकाष्ठक ३.	३३३७४
पूतिपुष्पी २.	३३३३४
पूतिफली २.	३३३१०८
पूत्यण्ड १.	२३३४८
पूप १.	४३३७२
पूय ३.	४११११८
पूर १.	४२३३०
पूरक १.	३३३३३
" १.	३३३४४

[पृतना]

पूरक १.	३१९१६४
पूरणा २.	३३३१४५
पूरणी २.	३३३१९०
" २.	३३३१४७
पूरित १. २. ३.	५४१८६
पूरी २.	३३३१४५
" २.	३३३१२५
पूरुष १.	४११३
पूरुष ३.	३१७१२१
" १. २. ३.	५४१८६
" १. २. ३.	५४१८६
पूरुणकलश १. ३.	३३३१८
पूरुणकुम्भ १.	४३३६१
पूरुणकूट १.	२१३३२
पूरुणकूटक १.	२१३३२
पूरुणपात्र ३.	३३३६१
पूरुणपात्रक ३.	३३३१७
पूरुणमासी २.	२११७२
पूरुणा २.	२११७२
पूरुणनिक ३.	३३३६१
पूरुणि २.	४२११३
पूरुणिका २.	२११७२
पूरुणिमा ३.	२११७२
पूरुत ३.	३३३११५
पूरुव १. २. ३.	५४१४०
" १. २. ३.	६१५४७
पूरुवगन्धिक १.	३११८
पूरुवज १.	४११३१
" १. २. ३.	५४१४
पूरुवद्विपाल १.	११२२
पूरुवदेव १.	१३३१०
पूरुवर्द्ध १.	३१९१३९
पूरुवार्द्ध १.	२११६४
पूरुवैद्युः (-स्) ४.	८१७३२
" ४.	८११८
पूल १. ३.	३१८६४
पूलक १.	४११११५
पूलन् १.	२१११०
पूकथ ३.	३१८७३
पूच्छा २.	२१३३७
पृतना २.	३१७५५

[पृतना]

पृतना २.	३१७५८
पृतनासाह १.	१२२२
पृथक् ४.	८१८४
पृथविक्रया २.	२१४४०
पृथक्पर्णी २.	३३३१३६
पृथग्जन १.	८११२६
पृथक् १ ब.	३११४०
पृथिवी २.	३११३
पृथिवीपति १.	८११५३
पृथु १.	३१४४०
" २.	३१८८५
" २.	३१८१३२
" १. २. ३.	५४१८०
पृथुक् १.	४३३६८
" १.	७११५८
पृथुचित्र १.	३३३४१
पृथुच्छुद १.	३३३७६
पृथुरोमन् १.	४११४१
पृथुल १. २. ३.	५४१८०
पृथुशालिका २.	३१८८५
पृथुसूय १.	३१८४०
पृथुहस्त १.	३१७५१
पृथ्विका २.	३१८८५
" २.	३१८१३२
पृथ्वी २.	३११३
" २.	३१८८५
पृथ्वीका २.	३१८८७
पृदाकु १.	७११५८
पृश्नि १. २. ३.	४१५५
पृश्निपर्णी २.	३३३१३६
पृषत् २. ३.	२१२८
पृषत १.	२१२८
" १.	३१४१३
" १.	३१६९९
पृषता २.	३३३४७
पृषत्क १.	३१७१७९
पृषदंशक १.	३१४७१
पृषदश्च १.	१२१५०
पृषदाज्य ३.	३३३९९
पृष्ट ३.	४११६९
पृष्टग्रन्थि १.	४११३३

शब्दानुक्रमिका

पृष्ठचक्रस् १.	४११४६
पृष्ठमध्यास्थि ३.	४१४९१
पृष्ठमासादन ३.	५२२८
पृष्ठवाह्य १. २. ३.	३३३५६
पृष्ठस्थ १. २. ३.	३१७१४१
पृष्ठ्य १. २. ३.	३३३५६
" ३.	५१११४
पेचक १.	२३३२२
" १.	७११५३
पेचिका २.	२३३३१
पेट १. २. ३.	८१९३७
पेटक १.	४३३६३
" ३.	५११३
पेटा २.	४३३६३
पेटी २.	८१९३७
पेत्व १.	३३३६४
पेय ३.	४३३९१
पेरा २.	३११४
पेराल १.	५३३२०
पेरु १.	२११३३
" १.	५३३१२
पेलव १.	३१५८५
" ३.	३१८७९
" १. २. ३.	५४१३६
पेशल १. २. ३.	५४१५४
" १. २. ३.	५४१३७
" १. २. ३.	७४१९९
पेशि २.	३३३८९
" २.	४३११२
पेशी १.	२३३५०
पैङ्गराज १.	४१११७
पैठर १. २. ३.	४३३९४
पैङ्गुष १. ३.	४३३९३
पैतृष्वसेय १.	४३३४२
पैष्टिकी २.	३१९५०
पोगण्ड १. २. ३.	५४१११
पोटकी २.	४३३२४
पोटगल १.	४११३६
" १.	८११२७
पोटना २.	२३३२६
पोटरूप १.	३३३१५

[पौष]

पोटा २.	४३३३
पोत १.	३१७६६
" १.	४३३४०
" १.	४३३३५
" १.	६३३३३
पोतकी २.	२३३१९
पोतवणिज् १.	४२३१८
पोतवाह १.	४२३१८
पोताधान ३.	४३३४५
पोत्र ३.	६३३२२
पोत्रिन् १.	३३३६
" १.	३३३९
पोथ १.	४२३१५
पोलिक १.	४३३७१
पोलिन्द १.	४२३१६
पोषी २ ब.	२१११२
पोहित्थ ३.	४२३१५
पौश्चलेय १.	४३३४३
पौस्न ३.	३३३३
" १. २. ३.	५४११८
पौष्ट १.	३३३५०
पौतव १.	५३३६४
पौत्तिक ३.	३१८१३५
पौत्र १.	४३३४५
पौनर्भव १.	४३३४५
पौषिक १. २. ३.	४३३९२
पौर १.	१११२२
पौरस्थ १. २. ३.	५४३६
पौरुष १. २. ३.	४३३८३
" ३.	४३३११
" ३.	७१५५८
पौरुषेय १. २. ३.	८३३१०
पौरैन्द्र १.	२३३३२
पौरोगव १.	३१७२१
पौरहित ३.	३३३२७
पौरुणमासी २.	२११७२
पौरुपथ ३.	३३३१३३
पौलस्थ १.	१२३५६
" १.	७१५५९
पौलोमी २.	१२३११
पौष १.	२३३८२

[पौषी]

पौषी २.	२११७४
पौष्टिक ३.	३१६११९
पौष्पक ३.	३१२४३
पौष्यक ३.	३१२४१
सा २.	४४११०१
प्याट ४.	८८८२
प्र ४.	८१७६
प्रकट १.	३१९१३७
" १. २. ३.	५४११३४
प्रकरपन १.	११२५०
प्रकर ३.	३१८१०७
" १.	५१११
प्रकरण ३.	३१९१००
प्रकाण्ड ३.	८१९४२
प्रकाण्डकम् ३.	३३३१२
प्रकामम् ४.	४३३१०४
प्रकार १.	५२२२३
" १. २. ३.	५४११२२
" १.	७११५६
प्रकाश १.	१२३३१
" १. २. ३.	५३१३३४
" १. २. ३.	७५५४४
प्रकीर्णक १.	३१७९०
" ३.	४३१५९
प्रकीर्य १.	३३३६२
प्रकुञ्ज ३.	५११५१
प्रकृति २.	३१६१६१
" २.	३७३
" २.	५२२२
" २.	७२१२२
प्रकोटी २.	३३३११३
प्रकोष्ठ १.	४४४७२
" १.	७११५२
प्रक्रम १.	५२११५
प्रक्रय १.	३१८६९
प्रक्रिया २.	७२११४
प्रक्षण १.	२४११२
प्रकाण १.	२४११२
प्रचुर १.	३१७११५
प्रचुराङ्गी २.	३१४४४
प्रचवेलन १.	३१७१८०

[वैजयन्तीकोषः]

प्रखर १. ३.	३१७११५
प्रख्य १. २. ३.	५४११२२
प्रयणिका २.	४३३३३
(प्रगणिता)	
प्रगण्ड १.	४४१७२
प्रगतजानुक १. २. ३.	५४११०
प्रगल्भ १. २. ३.	५४११७
प्रगाल १. २. ३.	७४२२०
प्रगुण १. २. ३.	५४११२४
प्रगो ४.	८८११०
प्रग्रह १.	२११४८
" १.	३१९५७
" १.	७११४९
प्रग्राह १.	७११४९
प्रग्रीव १. ३.	७५५५६
प्रघण १.	४३३४५
" १.	७११५२
प्रघाण १.	३३३१५
" १.	४३३४५
प्रघात १.	३१७२०५
प्रघार १.	५२३३४
प्रचक्र ३.	३१७२०१
प्रचक्षस् १.	२११३४
प्रचल १. २. ३.	५४११८
प्रचालक १.	२३३३९
प्रचार १.	३१७१५८
प्रचुर १. २. ३.	५४१८४
प्रचूडक १.	३१८१४८
प्रचेतस् १.	१२१४६
" १.	७११५६
प्रच्छदपट १.	४३३१६६
प्रच्छन्नद्वार ३.	४३३१२६
प्रच्छदिका २.	४३३४२
" २.	८१९५
प्रजनन ३.	४४१६२
प्रजनिष्णु १. २. ३.	५४११४
प्रजल्पन ३.	२४३३९
प्रजा २.	४४१४१
" २.	६२२३३

[प्रति]

प्रजागम १.	३१६८६
प्रजागर १.	३१७१५८
प्रजाता २.	४४१४२
प्रजानुक १.	४४१५३
प्रजापति १.	१११६
" १.	८११३४
प्रजापतिहस्तक १.	३११५५
प्रजावती २.	४४३३६
प्रज्ञा २.	४४२२१
" २.	६२२३३
प्रज्ञान ३.	७३२२२
प्रज्ञु १. २. ३.	५४११०
प्रज्वलित १. २. ३.	८११४४
प्रणय १.	३१८७०
" १.	७११४४
प्रणव १.	३१६२३३
प्रणष्ट १. २. ३.	३१७२१९
प्रणाद १.	२४१९
प्रणाम १.	५२२२४
प्रणाय १. २. ३.	७४११५
प्रणाल १. २. ३.	४२२२०
प्रणिधि १.	७११५५
प्रणिपात १.	५२२४८
प्रणिहित १. २. ३.	५४११०९
" १. २. ३.	८१४९
प्रणीत ३.	४३३९४
प्रणीति २.	४३३३८
प्रणेत्य १. २. ३.	५४३३२
प्रतति २.	७२१५५
प्रतल १.	४४१७७
प्रतानिनी २.	३३३७
प्रताप १.	७११५४
प्रतापन ३.	५३३८
प्रतापस १.	३१४१४
प्रतारण ३.	५२३३५
प्रतारिका २.	४४३६६
प्रति ४.	८१७२५

[प्रतिकर्मन्]

प्रतिकर्मन् ३.	४३३१३२
प्रतिकूल १. २. ३.	५४१२७
प्रतिकृति २.	३१९२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
प्रतिनिध १. २. ३.	८१४८
प्रतिख्याति २.	५२२२९
प्रतिग्रह १.	८१३३९
प्रतिग्राह १.	४३३१६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३१७२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५११२०
प्रतिजागर १.	५२२२९
प्रतिज्ञा २.	५२३३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	५४११०६
प्रतिर्जन ३.	२४३३९
प्रतिताली २.	४३३४९
प्रतिदान ३.	८३३९
प्रतिध्वान १.	२४३१२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	२४३१४
प्रतिनप्त १.	४४३४५
प्रतिनिधि १.	३१९२१
प्रतिपक्ष १.	३१७४२
प्रतिपत्ति २.	८२३७
प्रतिपद २.	२११६९
" २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३१६११८
प्रतिबन्ध १.	५२१३३
प्रतिबिम्ब ३.	३१९२१
प्रतिभ १.	३१९६९
प्रतिभय १. २. ३.	३१९७८
" १. २. ३.	८१५१७
प्रतिभा २.	३१६१७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	५४३४७

(प्रतिभासवाच्)

[शब्दानुक्रमणिका]

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	५४११७
प्रतिभास १.	३१६१७६
प्रतिभू १. २. ३.	३१८१०
प्रतिम १. २. ३.	५४१२१
प्रतिमा २.	३१९२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	३१७१४२
प्रतियज १.	८१३३१
प्रतियातना २.	३१९२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३१९२१
प्रतिरोधक १.	३१९५६
प्रतिरोधिन् १.	३१९५६
प्रतिलम्भ १.	५२२२०
प्रतिलोम १.	३१५११८
" १.	३१५११९
" १. २. ३.	५४१२७
प्रतिलोमज १.	३१५८९
" १.	३१५१०९
प्रतिवसथ १.	४३३२
प्रतिवाक्य ३.	२४३३७
प्रतिविषा २.	३१८१०
प्रतिशासन ३.	५२३३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३.	८१४८
प्रतिश्रय १.	४४१२१
प्रतिश्रय १.	८१३३१
प्रतिश्रव १.	५२२२९
" १.	५२३३७
प्रतिश्रुत् २.	२४३१२
प्रतिष्कश १. २. ३.	८१५१४
प्रतिष्टम्भ १.	५२२३३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसञ्चर १.	२११९५
प्रतिसर १.	३१६५९
" १. २. ३.	८१५१४
प्रतिसर्ग १.	२११९५
प्रतिसारण ३.	४४११४०
प्रतिसारा २.	४३३१२४

(९७)

[प्रत्यादेश]

प्रतिहत १. २. ३.	८१४८
प्रतिहारी २.	३१७३८
प्रतिहास १.	३३३१९२
प्रतीक १.	४४१५५
" १. २. ३.	७१५५४
प्रतीकार १.	३१७२०९
प्रतीक्ष्य १. २. ३.	७४११७
प्रतीच १.	३१८१७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३३१००
प्रतीत १. २. ३.	७४११६
प्रतीप १. २. ३.	५४११२७
प्रतीपदर्शिनी २.	४४१५
प्रतीवाप १.	३१८१४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद १.	३१८२९
प्रतोली २.	४३३१६
प्रतन १. २. ३.	५४१८७
प्रत्यक्च्छेणी २.	३३३११३
" २.	३३३१३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३३११५
प्रत्यक्ष १. २. ३.	५४११३३
प्रत्यगाशापति १.	१२१४६
प्रत्यगृष्टि २.	३१६१७५
प्रत्यग्र १. २. ३.	५४१८९
प्रत्यग्रथ १ ब.	३११२६
प्रत्यच् १. २. ३.	५४१९१
प्रत्यनीक १.	३१७४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३.	३८८९
(प्रत्ययिक)	
प्रत्यर्थिन् १.	३१७४२
प्रत्यवसान ३.	४३३१०२
प्रत्यवसित १. २. ३.	५४११०७
प्रत्यवस्कन्द १.	३१८१६६
प्रत्याकार १.	३१७१६८
प्रत्याख्यान ३.	५२२३३
प्रत्यादेश १.	५२२३३

[प्रत्यालीढ]

प्रत्यालीढ ३.	३१७१८८
प्रत्यासार १.	३१७५९
प्रत्याहार १.	३१६१२१
" १.	३१९१४०
" १.	५२११८
प्रत्युत्क्रम १.	५२११५
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५४३११
प्रत्युष १.	२११६८
प्रत्युष ३.	२११६८
प्रत्युषडम्बर १.	२१११५
प्रत्युह १.	५२१४
प्रथन ३.	३१७२०४
" १. ८.	३१८३६
" ३.	५२१३४
प्रथम १. २. ३.	५११२१
" १. २. ३.	५४३७६
" १. २. ३.	५४१४०
" १. २. ३.	७४११७
प्रथा २.	५२१३४
प्रथिक ३.	३१६१८
प्रथिमन् १.	८१९१४
प्रदर १.	४२१९
" १.	७११५७
प्रदीप्त १. २. ३.	८१४१४
प्रदेशन ३.	३१७४६
(प्रदर्शन)	
प्रदेशिनी २.	४१४७३
प्रदेष्टृ १.	३१७२३
प्रदोष १. ३.	२११६५
" १.	७११५५
प्रद्युम्न १.	१११२७
प्रद्योतन १. ३.	८१५१७
प्रद्राव १.	३१७२११
प्रधान १. ३.	५४३६२
प्रधानधातु १.	४४११११
प्रधि १.	३१७१३५
" १.	८१९१३
प्रपञ्च १.	७११५६
प्रपतित १. २. ३.	५४११५

वैजयन्तीकोषः

प्रपद ३.	४१४५७
प्रपद्व्यापिन् १. २. ३.	४३१२२१
प्रपा २.	४३१२३
प्रपाठक १.	३१६३२
प्रपात १.	३१२१६
" १.	४२१३२
" १.	७११५३
प्रपातिन् १.	३१२१२
प्रपितामह १.	४४१२९
प्रपुञ्जाट १.	३१३१५८
प्रपौत्रक १.	४४१४५
प्रफुल्ल १. २. ३.	३१३१९
प्रबर्ह १. २. ३.	५४३६२
प्रबल १. २. ३.	३१७१५१
" १. २. ३.	५४३६
प्रबोधन ३.	४३११४७
प्रभ १. २. ३.	५४११२१
प्रभञ्जन १.	११२१४९
प्रभव १.	७११५०
प्रभवन्ती २.	५२१२
प्रभविविणुता २.	५२१२
प्रभा २.	२११२२
" २.	२११२३
" २.	६१२२३
प्रभाकर १.	२१११४
प्रभात ३.	२११६९
प्रभाव १.	५२१२
" १.	७११५६
प्रभावती २.	३१९१२०
प्रभास ३.	३१२१८
प्रभिन्न १.	३१७६८
प्रभु १. २. ३.	५४१५७
" १. २. ३.	६१४१०
प्रभुता २.	५२१२
प्रभूत १. २. ३.	५४१८४
प्रभृष्टक ३.	४३१५५
प्रमथ १.	१११५१
" १.	३१७२११
प्रमथन ३.	३१७२१३
प्रमथाधिपति १.	१११४१

[प्रलम्बाण्ड]

प्रमदा २.	४१४५
प्रमदावन ३.	३१३३३
प्रमनस् १. २. ३.	५४३३३
प्रमा २.	५२१३३
प्रमाण ३.	७३१२३
प्रमातामह १.	४४३३०
प्रमाथ १.	३१७१८९
प्रमाथित ३.	३१८१४३
प्रमाद १.	३१६१७८
प्रमापण ३.	३१७२१३
प्रमिति २.	५२१३३
प्रमीत १. २. ३.	३१७२२०
प्रमीला २.	३१६१९७
प्रमुख १. २. ३.	५४३६२
" १. २. ३.	५४३७६
प्रमृत ३.	३१८३३
प्रमेह १.	४४१२८
प्रमेहनुद् १.	३१३१०६
प्रमोद १.	३१६१८८
प्रयत १. २. ३.	५४३६५
" १. २. ३.	७४११८
प्रयत्त १. २. ३.	५४३९९
प्रयत्नवत् १. २. ३.	५४११४
प्रयम १.	३१६१४
प्रयस्त १. २. ३.	४३१९४
प्रयाण ३.	७३१२१
प्रयाम १.	३१८६६
प्रयुत ३.	५११२८
" ३.	५११२९
प्रयोक्तृ १. २. ३.	३१८१८
प्रयोग १.	५२११५
" १.	७११४४
प्रयोजन ३.	३१६२३६
" ३.	८३१८
प्ररूढ १.	३१८५२
प्ररोचना २.	३१९१४२
प्ररोह १.	३३१११
प्ररोहक १.	३१७११५
प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	५४३८

[प्रलम्बारि]

प्रलम्बारि १.	१११२३
प्रलय १.	२११९५
" १.	३१९८९
" १.	७११४३
प्रलाप १.	२१४३०
प्रलोभिन् १.	३३११८९
प्रलोभ्य ३.	४४१०१
प्रवक १.	३१९६४
प्रवण १. २. ३.	७५५५३
प्रवयस् १. २. ३.	५४३३
प्रवर १.	३१८३४
" १.	३१८३७
" ३.	३१८११९
" १. २. ३.	५४३६२
" १. २. ३.	८१९५३
प्रवर्ग्य १.	११२१९
प्रवर्हिता २.	२१४३९
प्रवह १.	७११४३
प्रवहण ३.	३१७१२७
" ३.	४२११५
प्रवापण ३.	३१६१२०
प्रवाल १. ३.	३२१३९
" १.	३३११५
" १.	३३११४
" १. ३.	७५५५५
प्रवासन ३.	३१७२१३
प्रवाह १.	४२१३०
" १.	५२१३९
" १.	७११४५
प्रवाहि १.	३१७१२५
प्रवाहिक १.	११२१४१
प्रवाहिका २.	४४१२९
प्रविदारण ३.	३१७२०४
प्रविसर १.	२११६८
प्रविसारण ३.	३१७२१५
प्रवीण १. २. ३.	५४३१९
प्रवीरा २.	४३१११
प्रवृत्ति २.	३१७८२
" २.	३१८४८
" २.	७२११६
प्रवृद्ध १. २. ३.	७४११८

शब्दानुक्रमणिका

प्रवेक १. २. ३.	५४३६३
प्रवेणी २.	७२११६
प्रवेल् १.	३१८३६
प्रवेश १.	५२११४
प्रवेष्ट १.	३१७७२
" १.	४४३७२
प्रव्याल १.	२११३२
प्रवजित १.	३१६१६०
प्रशंसा २.	२१४३५
प्रशसन ३.	३१७२१४
प्रशस्तमृद् २.	३१८२४
प्रशान्ताचिस् १.	११२३२
प्रशान्तिक ३.	३१६१८२
प्रश्न १.	२१४३७
" १.	८१९१४
प्रश्नवादिनी २.	४४३११
प्रश्नय १.	५२१३८
प्रश्नित १. २. ३.	५४३३२
प्रष्ट १. २. ३.	३१७१४५
प्रष्टवाह १. २. ३.	३१४५६
प्रसञ्चा २.	३१९१४५
प्रसम्भ १.	११२१५५
" १. ३.	३१७२०९
प्रसम्भा २.	३१६१६
प्रसरणी २.	३१७२०१
प्रसर्पक १.	३१६१८१
प्रसव १.	२११८७
" १.	३३१२०
" १.	४४३४०
" १.	७११४८
प्रसव्य १. २. ३.	५४३२८
" १. २. ३.	७४११८
प्रसहनी २.	३३११०४
प्रसहा २.	३३११०४
प्रसह्य ४.	८१८१८
प्रसाद १.	७११५५
प्रसादन १.	३३३३८
(प्रसाधन)	
" १.	४३३२९
" ३.	४३३७५
प्रसाधन १.	४३३११२

[प्रस्नाव]

प्रसाधन ३.	४३३११२
" ३.	४३३१३२
प्रसित १. २. ३.	५४३३०
प्रसिति २.	५२२२८
प्रसिद्ध १. २. ३.	७४३१९
प्रसू २.	६२२२४
प्रसूता २.	४४३१७
प्रसूताता १ द्वि.	४४३४७
प्रसूति २.	४४३४१
" २.	७२११६
प्रसूतिका २.	४४३१७
प्रसूतिज ३.	११२३९
प्रसून ३.	३३३१८
" ३.	७३३२४
" १. २. ३.	७५५५५
प्रसूत १.	४४३७७
" १. ३.	५११५२
प्रसूता २.	४४३५८
प्रसूत्वन् १. २.	८१५२९
प्रसेवक १.	३१९१२०
" १.	४३३६४
प्रस्कन्न १. २. ३.	३१७२१९
प्रस्तर १.	३१२१८
" १.	३३३९१
" १.	४३३१६५
" १.	७११५१
प्रस्तार १.	३३३२
प्रस्ताव १.	२१४४१
प्रस्तुता २.	३१४४९
प्रस्थ १.	५११५३
" १.	५११६३
" १.	६१५४६
प्रस्थान ३.	५२११०
प्रस्फोटन ३.	४३३६५
" ३.	४३३६६
प्रस्मरण ३.	३३३१७७
प्रस्वण १.	३३३४
" ३.	३३३७
प्रस्नाव १.	४३३७८

प्रस्ताव]	वैजयन्तीकोषः	[प्रासाद	प्रास्थित]	शब्दानुक्रमिका	[फलिनी
प्रस्ताव १. ४१११२०	प्राच्छ १. ३१६२४	प्रान्तर ३. ३११५०	प्रास्थित १. २३३६	प्रेत्य ४. ८८१५	प्लुन १. २. ३. ३१७१२३
प्रहत १. २. ३. ३१८१८	प्राच्य १. ३११२२	" ३. ४३११२	प्राहुण १. ३१६६८	प्रेमन् १. ३. ३१६१८६	प्लुषि १. २३३४८
" १. २. ३. ५१४१९	प्राजन ३. ३१८२९	प्रापणिक १. ३१८७२	प्राहु १. २११६४	" १. २. ५१५५१	प्लुसत १. २. ३. ५१४१०७
" १. २. ३. ७१४१८	प्राजापत्य ३. ३१६१२	प्रापणिका २. ३१६५०	प्रिय १. ३३३३१	प्रेष्य १. ३१९१२	फ
प्रहर १. २११६७	" १. ३१६१८	प्राप्त १. २. ३. ५१४१९९	" १. २. ३. ३१७४३	प्रेष १. ६११३३	फक्किका १. ३१६३३
प्रहरण ३. ८३१८	" ३. ३१६१३६	" १. २. ३. ५१४१०३	" १. ३१७३७	प्रोक्षण ३. ३१६९४	(पक्षिका)
प्रहसन ३. ३१९१००	" १. ३१६१२०७	" १. २. ३. ५१४१०९	" १. २. ३. ५१४७०	प्रोक्षणासादन ३. ३१६८४	फण १. २. ४११२१
प्रहसन्ती २. ३३३१८७	प्राजितृ १. ३१७१३८	" १. २. ३. ६१४१०	" १. २. ३. ५१११३५	प्रोन १. २. ३. ३१९१२	फणिन् १. ३३३४९
(प्रसहन्ती)	प्राज्ञ १. ३१६१२३४	प्रासरूप १. २. ३. ८१५१५	प्रियंवद १. २. ३. ५१४४४	प्रोथ १. ३. ३१७१०९	" १. ४११५
प्रहस्त १. ११२४४	प्राज्ञा २. ४१४२१	प्रास्तु २. ४१४८	प्रियक १. ३३३३९	प्रोथिन् २. ३१७९०	फणिर्जक १. ३३३१२०
" १. ४१४७७	प्राज्ञी २. ४१४२१	प्रासार्थ १. २. ३. ३१९५३	" १. ३३३६६	प्रोन्द् १. ५३१९	फरुण्ड १. ३३३२०५
प्रहार १. ५१२१९	प्राज्य १. २. ३. ५१४८४	प्रासि २. ५१२१३	" १. ३३३१७	प्रोष्टपद १. २. ३. २११४१	" १. ३३३२०७
प्रहासिन् १. ३१९१६९	प्राड्विपाक १. ३१८१४	" २. ६१२२४	" १. ७११५३	प्रोष्टपदा २. ४. ८११५७	फल ३. ३३३२०
प्रहि १. ४१२१७	प्राण १. ११२४८	प्राभृत ३. ३१७४६	प्रियङ्गु २. ३१८५५	प्रोष्ठी २. ४११४४	" १. ३३३८३
" १. ८१९१०	" १. ३१२१५	प्राय १. ४१४५३	" ३. ३१८११७	प्रोह १. ३१७७६	" ३. ३१७१८६
प्रहित ३. ४३१८६	" १. ३१६१२०३	" १. ६११३६	प्रियङ्गुवाख्या २. ३३३६६	प्रौढ १. २. ३. ५१४१७	" १. ३१७१९२
" १. २. ३. ५१४९७	" १. ३. ५१४६१	प्रायः (-स्) ४. ८१८१६	प्रियनादिका २. ३१९१३८	प्रौढि २. ३१६१६६	" १. ३१८१७०
प्रहृष्ट १. २. ३. ८१४१३	" १. ३. ६११३८	प्रायण ३. ७३३३४	प्रियापत्य १. २३३३१	प्रौष्टपद १. २११८५	" ३. २. ६१५५२
प्रहेलिका २. २३३३९	प्राणद १. १११९	प्रायणीय १. २. ३. ३१६८८	प्रियाला २. ३३३१८१	प्रौष्टपदी २. २११७६	" ३. २. ६१५५३
प्राशु १. २. ३. ५१४८१	" ३. ४१४१०६	प्रार्थित १. २. ३. ५१४११२	प्रियाला १. ३३३१५७	प्लक्ष १. ३३३२७	फलक ३. २. ३१७१९७
प्राकार १. ४३३१४	प्राणदा २. ३१८८३	" १. २. ३. ७३११६	प्रियैलिका २. ३१८४६	" १. ३३३२८	" १. ३१८४५
प्राकारमूलिक १. ४३३१३	प्राणनाथ १. २. ३. ८१५१६	प्रालम्ब ३. ४३११५५	प्रीत १. २. ३. ५१४१९	प्लक्षक १. ३३३५९	" १. २. ७१५६०
प्राक्तन १. २. ३. ५१४८७	प्राणयम १. ३३३२२९	प्रालम्बिका २. ४३११३७	प्रीति २. ५३१८	प्लक्षद्वीप १. ३३३११	" १. २. ८१२२७
प्राक्पादरज्जु २. ३१७११३	प्राणायाम १. ३३३२२९	प्रालेय ३. २३३१९	प्रुव १. ५३१८	प्लव १. २३३१३	फलकिन् १. ४११४३
प्राग्जालिक १. ३. ३११२९	प्राणिक ३. ३३३९२	प्राचार १. ४३३१२३	प्रुव २. ६३२२५	" ३. ३३३२०१	फलकी २. ८१२२७
प्राग्योतिष १. ३. ३११२९	प्राणिद्युत ३. ८३३१०	मावृत १. २. ३. ४३३१२०	प्रुव ३. ५३३१८	" १. ३३३१५४	फलकृष्ण १. ३३३८३
प्राग्मार १. ५३३३	प्राणिन् १. ४३३११	प्रावृष २. २३३१८९	प्रुव ४. ५३३१८	" १. ४३३१४७	फलपाककृष्ण १. ३३३८३
प्राग्र १. २. ३. ५३३६३	प्राणिफल १. ३३३२८	प्रावृषायणी २. ३३३१२९	प्रुव ५. ५३३१८	" १. ४३३१६	फलपाकान्ता २. ३३३२२४
प्राग्रहर १. २. ३. ५३३६३	प्राणिस्वन १. २३३३	" २. ८३३१३	प्रुव ६. ५३३१८	" १. ४३३१७	फलस १. ५३३४०
प्रागाढ ३. ३१८१४४	प्रातिहारिक १. ३३३३३	प्रावृषेण्य १. ३३३३०	प्रुव ७. ५३३१८	" १. ६३३३७	फला २. ३३३२६
प्राग्वंश १. ३३३१५१	" १. २. ३. ५३३२४	प्रावेशनिक १. ३३३१५९	प्रुव ८. ५३३१८	" १. ८३३३२	" २. ३३३१६१
प्राच १. २. ३. ५३३१९	प्राथमकल्पिक १. ३३३२४	प्राशिक १. २. ३. ३३३१९	प्रुव ९. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलाङ्कुरा २. ३३३३५
प्राचिका २. २३३२०	प्राहु (-स्) ४. ८१८१८	प्रास १. ३३३१६५	प्रुव १०. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलाध्यक्ष १. ३३३४३
प्राची २. २३३१५	प्रादेश १. ४३३८०	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव ११. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलाशन १. २३३२५
प्राचीन १. २. ३. ५३३१९	प्रादेशन ३. ३३३१९९	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव १२. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलिक १. ३३३२२
प्राचीनतिलक १. २३३२७	प्राध्व १. २. ३. ६३३४७	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव १३. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीनवर्हिष १. ८३३१५४	प्राध्वम् ४. ८१८१६	प्रासङ्ग १. ३३३१३३	प्रुव १४. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीना २. ३३३१३१	प्रान्त १. ४३३१३२	प्रासाद १. ४३३२९	प्रुव १५. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीनावीत ३. ३३३२१			प्रुव १६. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचीर ३. ४३३१४			प्रुव १७. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलित १. २. ३. ३३३८
प्राचेतस १. ३३३१५३			प्रुव १८. ५३३१८	" १. ८३३३२	फलित १. २. ३. ३३३८

[फलिनी]

वैजयन्तीकोषः

[बलयु]

बलरिपु]

शब्दानुक्रमिका

[बाला]

फलिनी २.	३३१५८	फेरुण्ड १.	३३१३८	बन्धुता २.	५११९
" २.	३३१२०३	फेरुविज्ञा २.	३३११३७	बन्धुर १. २. ३.	५११८३
फली २.	३३१६६	फेला २.	३३११०६	" १. २. ३.	७११२१
" २.	३३११५८	फेलुक १.	३३१६३	बन्धुरा २.	३३११३२
" २.	३३११९८			बन्धुल १.	३३११४४
" २.	३३१५५३	ब		बन्धूक १.	३३११८५
फलीकृत १.	३३१६६	बक १.	२३११०	बन्धु १.	११११०
फलीहस्त १.	३३१७१	" १.	३३११३	" १.	३३११२८
फलेग्राहि १. २. ३.	३३१३८	" १. २. ३.	३३११३३	" १. २. ३.	३३११७७
फलेपाकिन् १.	३३१५९	बकपुष्प १.	३३११९३	" १.	५३११८
फलेरुह १.	३३१२१६	बकोट १.	२३११०	बर्कर १.	३३१७३
फलेरुहा २.	३३१९०	वडवा २.	३३११७७	बर्बर १.	३३१५०
फलोदय २.	१११११	वडवागण १.	५१११९	" १.	३३१९८
फल्गु २.	३३११११	वडवापति १.	३३१६६	" १. २. ३.	५११२२
" १. २. ३.	५११७६	वडवामुख १.	८११५५	बर्ह १.	२३१३९
फल्गुनाल १.	२११८३	वत ४.	८११२६	" ३.	३३११७
फल्गुनी २.	२११४३	बदर १.	३३१९९	" ३.	६३१२२
फाणित ३.	३३११३४	बदरी १.	३३१८७	बर्हचन्द्रक १.	२३१३९
फाण्ट १.	३३११४१	" २.	३३११४८	बर्हिण १.	२३१३६
" ३.	५११४	बद्ध ३.	५११३०	" ३.	३३११९
फारी ३.	३३१८५	" १. २. ३.	५११६७	बर्हिध्वजा २.	१११६०
फाल १.	३३१२८	" १. २. ३.	५११९७	बर्हिन् १.	२३१३६
" ३.	३३११०६	बद्धदर्भ १.	३३१२४	बर्हिपुष्प ३.	३३१२२
" १. २. ३.	३३१११७	बद्धभूमि २.	३३१३२	बर्हिमुख १.	१११४
" १.	६११३९	बद्धम्बु ३.	३३१२९	बर्हिष्ठ ३.	३३१२०२
फालगलालेप १.	३३१६७	बन्दी २.	३३१५७	बर्हिस् १.	६१५५३
फालाकली २.	३३१३२	बन्ध १.	३३१७०	बल १.	१११२४
फाल्गुन १.	२११८२	" १.	३३१३१	" ३.	३३१३
फाल्गुनिक १.	२११८२	" १.	३३१५३	" ३.	३३१५५
फाल्गुनी २.	२११७५	" १.	५११२८	" ३.	३३१२१०
कुल्ल १. २. ३.	३३११९	" १.	६११३९	" १.	३३१५३
" १. २. ३.	३३१७८	बन्धकी २.	३३१३५	" ३.	३३१११४
" १.	३३१११	" २.	३३११०	" ३.	३३११०९
कुल्लक १.	३३१३९	" २.	७१११७	" १. २. ३.	६११५४
कुल्लरीक १.	३३१५	बन्धन ३.	३३१२०	बलक १.	३३११९९
फेन १.	३३११३	" ३.	३३११२१	" ३.	३३१९९
फेनक १.	३३१७४	बन्धनी २.	३३१३०	बलकाली २.	३३१८२
फेनिल १.	३३१३२	बन्धाकि १.	३३११२	बलदेव १.	१११२२
" १. २. ३.	७११६०	बन्धु १.	१११२९	बलभद्र १.	१११२३
फेरव १.	३३१३८	" १.	३३१५१	बलभद्रिका २.	३३११०९
फेरु १.	३३१३८	बन्धुजीव १.	३३११८५	बलयु २.	३३१११

बलरिपु १.	११२२	बहिर्गीत ३.	३३१११०	बाडब ३.	५११९
बलवत् ४.	८१८४	बहिर्द्वार ३.	३३१४२	बाडबेय १.	३३१५३
बला २.	३३१६६	बहिर्द्वारप्रकोष्ठ १.		बाडबेय ३.	५११७
" २.	३३११२७			बाड १. २. ३.	५११३२
" २.	३३१७६	बहिर्कर्ष १.	३३१७०	" १. २. ३.	६११५५
" २.	३३१११४	" १.	३३१७८	बाडम् ४.	८११२६
" २.	३३११०७	बहु १.	११२२७	बाण १.	१११५२
बलाका २.	२३११०	" १. २. ३.	५११८०	" १.	३३३३९
बलाङ्ग १.	३३१३६	" १. २. ३.	५११८४	" १.	३३११७९
बलाङ्कार १.	३३१२०९	" १. २. ३.	६१११०	" १.	३३११८३
बलारोहा २.	३३१८२	बहुकर १. २. ३.	३३१६७	बाणाभ्यास १.	३३११५५
बलास १.	३३११२१	बहुवीरा २.	३३१४५	बादर १.	३३११७७
बलि १.	३३१४५	बहुगर्हर्वाच १. २. ३.		बाधा ३.	६१२२५
" १. २.	३३११३८			बान्धकिनेय १.	३३१४४
" १.	६११३९	बहुजाली २.	३३१६१	बान्धव	३३१५१
बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५१११९	बाभ्रवी २.	१११५९
बलिकण्टक १.	११११९	बहुपाद् १.	३३१२७	बाहृत ३.	३३१२२
बलिन् १.	१११२२	बहुप्रज १.	३३१६	बाल ३.	३३१२०२
" १.	१११२३	बहुरूप १.	१११७७	" १.	३३१६६
" १.	३३११६५	" १.	३३११११	" १.	५३१३७
" १.	३३११८९	बहुल ३.	३३११२४	" १. २. ३.	५३१२
" १.	३३१२२१	" १. २. ३.	५३१८०	" १. २. ३.	६३१११
" १. २. ३.		" १. २. ३.	५३१८४	" १. २. ३.	६३१५७
		" १. २. ३.	७३१६१	बालक १.	३३१३३
		बहुला २.	३३१५२	" ३.	३३११४०
" १.	३३१३५	बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्भिणी २.	३३१४६
" १.	३३११०			बालचूतक १.	५३३३५
बलिपुष्ट १.	२३११६			बालजात ३.	३३११४०
बलिभुज १.	२३११८	बहुवक्र १.	३३१५४	बालतृण ३.	३३१२३५
बलिश ३.	३३१६०	बहुवार १.	३३१५५	बालनायिका २.	३३१६०
" ३.	३३१४२	बहुव्यय १. २. ३.		बालपत्र १.	३३१६३
बलिसदमन् ३.	३३१११			बालपुष्कल १.	३३१८०
बलीवर्द १.	३३१५३	बहुसारक १.	३३१२८	बालभीरु १.	३३१३०
बलबज १ ब.	३३१२३०	बहुसुता २.	३३१२४	बालमूषिका २.	३३१३२
बलकयणी २.	३३१४८	बहुसुति २.	३३१५०	बालवत्स १.	२३१२३
बलस्त १.	३३१६२	बहुसूतिका २.	३३१२०	बालशाकट १. २. ३.	
बलह १. २. ३.	५३१८४	बहुसूदन ३.	३३१२४		३३१२१
" १. २. ३.	५३१८४	बहुस्वन १.	२३१२२	बालशाकिन १. २. ३.	
" १. २. ३.	७३१२१	बहुदित ३.	२३१३९		३३१२१
बहिः-(स्) ४.	८१८१४	बहेटक १.	३३११७६	बालहस्त १.	३३१७४
बहिर्ग १.	३३१५७	बाडब १.	११२२१	बाला २.	३३११८५
		" १.	३३११९		

[बाला]

बाला २.	३१३२१२
बालागल १.	५३३३५
बालिश १. २. ३.	७४३२०
बालेय १.	३१४६५
बाल्य ३.	४१४५४
बाष्प १.	६११४०
बाष्पी १.	३१८१३२
बाह १. २. ३.	५१४२०
बाहा २.	४१४७१
बाहु १. २.	४१४७१
बाहुज १.	३१७११
बाहुदन्तेय १.	११२१७
बाहुदा २.	४१२२६
बाहुमूल ३.	४१४६९
बाहुयुद्ध ३.	३१७२०७
बाहुरक्षा २.	३१७१५५
बाहुल १.	२११८६
" ३.	३१७१५५
बाहुलेय १.	८११३५
बाह्यनृत्त ३.	३१७७३
बाह्यलिङ्गिन् १.	३१६२३८
बाह्यिक १ व.	३११२७
बाह्यिक १ व.	३११२७
" १.	३१७१५५
" ३.	३१८११३
" ३.	७३३२६
बिडाल १.	३१४७१
बिडालक १.	४१४९५
बिडौजस् १.	११२१४
बिन्दु १.	२१२८
" २.	४१४२०
" १.	८१११०
बिन्दुक १.	५११३८
" ३.	५११४९
बिन्दुभेद १.	३१६२२३
बिम्बोक १.	३१९९४
बिम्बेण १.	३१५४९
बिम्ब १.	४११२९
" १. ३.	६१५५५
बिम्बसारक ३.	३१७१७५

वैजयन्तीकोषः

बिम्बसारक १. ३१७१८५	(बिम्बसारक)
बिम्बोष्ठी २.	३३३१४७
बिल ३.	४११२
बिलेशय १.	८१५१८
बिलेशया २.	३१४२६
बिलौकस् १.	४११६
बिल्व १.	३३३३०
" १.	५११५१
बिल्वक १.	४११४७
बिस ३.	४१२४३
बिसकण्टिका २.	२३३१०
बिसखण्ड ३.	४१२३९
बिसनाभिज ३.	४१२३८
बिसप्रसून ३.	४१२३८
बिसिनी २.	४१२४३
बिसिर ३.	३१८१२०
बीज ३.	२११८६
" ३.	४१४१११
" ३.	६३३२३
बीजकोश १.	४१२४५
बीजपुष्पिका २.	३१८१७
बीजपूर १.	३३३३३
बीजवर १.	३१८३५
बीजसू २.	३११४
बीजाकृत १. २. ३.	३१८२३
बीजिन् १.	४१४२९
बीज्य १.	४१४५०
बीभत्स १.	३१९७५
" १.	३१९७७
" १. २. ३.	३१९७८
" १. २. ३.	७३३२१
बुक्कन ३.	२१४६
बुद्ध १.	१११३१
" १.	१११३२
" १. २. ३.	५१४१०१
बुद्धि २.	३१६१६३
बुद्धिमत १.	२३३२७
बुद्धुद १.	४१२१३
बुध १.	२११३२

[बृहन्नायु]

बुध १.	३१६२३२
बुधा २.	३३३१२५
" २.	३१६१६३
" २.	३१८१९४
बुधित १. २. ३.	५१४१०१
बुधन १.	३३३१२
बुन्दिर ३.	४३३१८
बुभुक्षा २.	३१६१८२
बुभुक्षु १. २. ३.	५१४३६
बुम्बिका २.	४३३७०
बुम्बी २.	४३३७०
बुरुल १.	३१५३०
बुलि २.	४१४६०
" २.	४१४६१
बुलकी २.	४११५५
बुशाली २.	४३३२६
(बुशाली)	
बुषा २.	३१९१७
बुस १.	३१८६४
" ३.	३१८१४२
बुसा २.	३१६९७
" २.	३१९१०७
बुस्तक १. २. ३.	३३३१५५
बृंहित ३.	२१४७
बृन्द ३.	५११३
" ३.	५११२८
" ३.	५११३०
" ३.	५११३१
बृन्दाक १.	११११३
बृन्दारक १. २. ३.	८१५१८
बृहच्छुद १.	३३३२०९
बृहत् १. २. ३.	५१४८०
बृहत्तिका २.	४३३१२३
बृहती २.	३३३१०४
" २.	३१९११९
" २.	७२१७
बृहत्कर्कोटक १.	३३३१६५
बृहद्गृह १ व.	३१३३६
बृहन्नायु १.	११२१४

[बृहस्पति]

बृहस्पति १.	२११३३
बृहाणक १.	५११५४
बेन १.	३१५३४
बेर ३.	३१९२१
बोक्काण १.	३१७११५
बोध १. २. ३.	५१४१०१
बोधकर १.	३१७३०
बोधन ३.	३१६१६४
बोधनीया २.	३१८१९४
बोधान १.	३१६२२
बोधि १.	६१५५७
" २.	८११५
बोधिसत्त्व १.	१११३२
बोधी २.	५११३७
बोल १.	३१२१५
" १.	५३३१६
" १. २. ३.	६१५५६
बोसर १.	५३३३४
बसी २.	३१६१४९
ब्रह्मगर्भ ९.	१११५६
ब्रह्मघोष १.	४११२३
ब्रह्मचर्य ३.	३१६१४
" ३.	३१६२०९
ब्रह्मचारिणी २.	८१५३०
ब्रह्मचारिन् १.	१११५६
" १.	३१६१७
" १.	८१५३०
ब्रह्मजटा २.	३३३१२२
ब्रह्मदण्ड ३.	३१७१७५
ब्रह्मदण्डी २.	३३३१००
ब्रह्मदर्भा २.	३१८१०२
ब्रह्मधारा २.	४३३१०
ब्रह्मन् १.	१११६
" १.	३१५३
" ३.	३१६२७
" १.	३१६७९
" ३.	३१६१६१
" १.	३१६१६३
" १.	६१५१०३
" १.	८१९३०
ब्रह्मनाभ १.	११११५

शब्दानुक्रमणिका

ब्रह्मपुत्र १ व.	२३३३७
" १.	४११२४
" १.	८११३५
ब्रह्मबन्धु १. २. ३.	८१४१०
ब्रह्मबिन्दु ३.	३१६२६
ब्रह्मभाव १.	३१६२३७
ब्रह्मभूय ३.	३१६२३७
ब्रह्ममेखल १.	३३३२२९
ब्रह्मरात्रिक १.	३१६१५५
ब्रह्मरीति २.	३२२२६
ब्रह्मलोक १.	३१६२०८
ब्रह्मवर्चस् ३.	३१६११६
ब्रह्मवालुक ३.	४११२३
ब्रह्मविष्णुमहेश्वर १ व.	१११५
ब्रह्मवृत्त १.	३३३२९
" १.	८१६१९
ब्रह्मवेदि २.	३११२३
ब्रह्मसंज्ञ १.	३३३८०
ब्रह्मसू १.	१११२९
ब्रह्मसूत्र ३.	३१६२०
ब्रह्मस्थली २.	४३३१०
ब्रह्महत्या २.	८१९१७
ब्रह्माञ्जलि १.	३१६२६
ब्रह्मी २.	३३३१४४
ब्रह्मोद्य ३.	८१९१६
ब्रह्मौदनाभि १.	११२२६
ब्राह्म १.	२११६७
ब्राह्मण १.	३१६११
" १.	३१६३३
" १. २. ३.	७१५६०
ब्राह्मणब्रूव १. २. ३.	३१६१०
ब्राह्मणयष्टिका २.	३३३१००
ब्राह्मणी २.	३२२२७
" २.	४११२९
" २.	४११३६
ब्राह्मण्य ३.	७३३२५
ब्राह्मिक १.	३१६२२

[भट]

ब्राह्मी २.	११११९
" २.	१११६४
" २.	२११६
" २.	३३३१४४
भ	
भ ३.	२११३८
भक्त ३.	४३३७५
" १. २. ३.	६१५६०
भक्तमण्डक १. ३.	४३३७८
भक्ति २.	३१६३८
" २.	६२२२६
भक्तक १. २. ३.	५१४५०
भक्तकार १. २. ३.	४३३९२
भक्तन ३.	३१९५२
" ३.	४३३१०४
भक्तणी ३.	३१६१०
भक्तित १. २. ३.	५१४१०८
भग ३.	४१४६१
" १. ३.	६१५५८
भगनेत्रान्तक १.	१११३३
भगन्दर १.	४१४१३०
भगवत् १. २. ३.	८१५३१
" १. २. ३.	८१९१६
भगिनी २.	४१४२६
भगिनीपति १.	४१४३८
भगिनीआत् १.	४१४४७
भग्न १. २. ३.	३१७१४८
भग्नस्थित्यन्ध १.	४१४३९
भग्न १.	४१४३९
भग्न २.	५२२३४
भग्न १. २. ३.	७३३२१
भग्न १. २. ३.	३१८२०
भजमान १. २. ३.	३१४१०३
भजना २.	२१४२६
भजिका ३.	३३३१००
भट १.	३१५९
(नट)	

[भट]

वैजयन्तीकोषः

[भाण]

भाण्ड]

शब्दानुक्रमणिका

[भुवन

भट १.	३१७१३९	भन्दना २.	२१११९	भव १.	६११४१
भट्टि १. २. ३.	४३१९४	भम्भराली २.	२३१४४	भवत् १. २. ३.	८११४६
भट्टोद्योग १.	३१७२०२	भम्भा २.	३१९१३३	भवन १.	३१४७०
भट्ट १. २. ३.	८१९४६	भय ३.	३६१८५	" ३.	४३१७७
भट्टरक १. २. ३.	८१९४६	भयङ्कर १. २. ३.	३१९७८	भविक १. २. ३.	पा४१४२
भट्टारक १.	३१९१०३	भयद्रुत १. २. ३.	३१७२१८	भवितव्यता २.	३६१८९
" १. २. ३.	८१९४६	भयन ३.	३६१८५	भवित् १. २. ३.	पा४४१
भट्टारिका २.	३१९१०४	भयानक १.	३१९७५	भविल १. २. ३.	पा४६२
भट्टिनी २.	३१९१०४	" १.	३१९७७	भविल्ल १. २. ३.	पा४४१
भण्डन ३.	७३२२६	" १. २. ३.	३१९७८	भव्य १.	३३३३७
भण्डाकी ३.	३३३१०२	भर १.	पा२३	" १. २. ३.	पा४१४२
भण्डिल १.	३३३७२	" १.	६११४१	" १. २. ३.	६११४१
भण्डिरी २.	३३३१४५	" १.	६११४२	भषण ३.	२१४६
भदन्त १.	३१९१०७	भरण ३.	३१९५	" १.	३३३६८
भद्र १.	३३३६२	भरणी २.	२११४१	भषित ३.	२१४६
" १. २. ३.	पा४१८०	भरण्य ३.	३१९५	भसत् १.	२३३२
" १. २. ३.	पा४१४३	भरत १.	१२२२६	भसद् २.	६२२२६
" १. २. ३.	६११६०	" १.	३३३७८	भसल १.	२३३४२
" ३.	८१९२४	" १.	३१९६२	भसित ३.	१२३३३
भद्रकाली २.	१११६१	भरथ १.	१२१९९	भस्त्रा २.	३१९१७
भद्रकुम्भ १.	४३३६१	भरद्वाज १.	२३३१९	भस्मगन्धिनी २.	३१९१५
भद्रदारु ३.	३३३७१	भरित १. २. ३.	पा४१८६	भस्मगर्भा २.	३३३९२
भद्रपदा १. २. ३.	२११४१	भरुज १.	३३३३७	भस्मन् ३.	१२३३३
भद्रपणिका २.	३३३५८	भरुटा २.	४३३८६	भा २.	२१२२२
भद्रमन्द १.	३३३५४	भर्ग १.	१११४०	भाग १.	४३१५५
भद्रमन्दमृग १.	३३३६४	भर्तृ १.	४३३३७	" १.	पा२३
भद्रमुज १.	३३३२२८	भर्तृदारक १.	३१९१०५	" १.	६११४१
भद्रमुस्तक १.	३३३१९९	भर्तृदारिका २.	३१९१०४	भागधेय १.	३३३४५
भद्रमृग १.	३३३६४	भर्त्सन ३.	२३३३४	" १. २. ३.	८१९१९
भद्रयव १. ३.	३३३७३	भर्मन् ३.	३१९५	भागवत १.	३३३१०५
भद्रलक्षण ३.	३३३६३	" ३.	६३३२३	" १.	३३३१०५
भद्रचन्दन १.	१११२४	भर्मिन् १.	३१९११	भागिनेय १.	४३३४१
भद्रश्री १.	३३३११२	भलुह १.	३३३७०	मागीरधी २.	४२३२४
भद्रसुत १.	३३३१५९	भल्ल १.	३३३१८२	भाग्य ३.	३३३१८९
भद्रा २.	३३३१३९	भल्लाट १.	३३३७	" ३.	६३३२४
भद्राकरण ३.	३३३१४	भल्लातक १. २. ३.	३३३१५	भाङ्गीन १. २. ३.	३३३२०
भद्राङ्ग १.	१११२४	भल्लुक १.	३३३४०	भाजन ३.	४३३६२
भद्राथ ३.	३३३१७	भल्लुक १.	३३३६८	भाङ्गी २.	३३३१००
भद्रासन ३.	३३३१५	" १.	३३३७	भाण १.	३३३१००
भद्रेश्वर १.	१११३९				

भाण्ड ३.	३३३४४	भावजा २.	३३३६७	भिन्नकृत ३.	३३३५६
" ३.	४३३६२	भावना २.	४३३१५८	भिया २.	३३३१८५
" ३.	६३३२३	" २.	८१९४	भिन्न १.	३३३४६
भाण्डागारिक १.	३३३२३	भावित १. २. ३.	पा४१९९	भिषज् १. २. ३.	४३३१४३
भाण्डी २.	३३३१४५	" १. २. ३.	८१९२२	भिस्सा २.	४३३७६
भातु १.	२१११०	भावुक १. २. ३.	पा४१४१	भिस्सिता २.	४३३७७
भानु १.	२१११०	भाषणी २.	२३३३५	भी २.	३३३१८५
" १.	२११५५	भाषा २.	१११९	भीत १. २. ३.	पा४१८
" १.	६११४०	" २.	३३३१६	भीति २.	३३३१८५
भाद्र १.	२११८५	" २.	३३३१०२	" २.	३३३७६
भाद्रपद १.	२११८५	भास १.	२३३३२	भीम १.	१११४३
भामिनी २.	४३३५	भासन्त १.	७११५८	" १. २. ३.	३३३७८
" २.	४३३१०	भासुर १. २. ३.	पा४१४२	भीमर १.	३३३२६
भार १.	पा१६१	भास्कर १.	२११२२	भीरु १.	३३३७८
" १.	६११४१	" १.	७११५८	" २.	३३३१६६
भारत ३.	३३३१५	भास्वत् १.	२११२२	" २.	४३३५
भारती २.	१११९	" १. २. ३.	६११५९	" १. २. ३.	पा४१८
" २.	३३३११९	भास्वर १ व.	१३३८	भीरुक १. २. ३.	पा४१८
" २.	३३३१०१	भिन्ना २.	३३३१५	भीरुचेतस् १.	३३३११
" २.	३३३१०२	" २.	३३३१२१	भीरुपर्णी २.	३३३१४२
भारद्वाज ३.	४३३१०९	" २.	६३३२६	भीरुवाल १.	३३३३०
भारद्वाजी २.	३३३१९	भिन्नाचार १. २. ३.	३३३१७	भीलुक १. २. ३.	पा४१८
भारयष्टि २.	३३३१६	भिन्न १. २. ३.	३३३१२६	भीषण १. २. ३.	३३३७९
भारवह १. २. ३.	३३३२२२	" १.	३३३१६०	भीष्म १. २. ३.	३३३७८
भारवाह १.	३३३१६	" १.	३३३१२७	भुक्त १. २. ३.	पा४१०८
भारसह १.	३३३१६	भिन्नकी २.	४३३१०	भुम्भ १. २. ३.	पा४१२४
भारिक १.	३३३१६	भिन्नलोचक ३.	३३३१५	भुज १.	३३३४५
भारित ३.	पा१६२	भिन्नसङ्घाटी २.	४३३१२८	" १.	३३३१९३
भारुष १.	३३३१५८	भिन्नपाल १.	३३३१६६	" १. २.	४३३७१
" १.	३३३१०३	भित्त ३.	४३३१५	भुजग १.	४३३१५
भार्गव १.	२३३३४	भित्तिका २.	४३३३७	भुजगाद्वय ३.	३३३२९
भार्गवी २.	१११३६	" २.	७२३१८	भुजङ्ग १.	४३३१५
" २.	३३३२३३	भिदा २.	पा२३१	" १.	४३३३९
भार्गी २.	३३३८१	भिदु १.	१२३३३	भुजङ्गम १.	४३३१५
भार्या २.	४३३३४	भिदुर १.	१२३३३	भुजङ्गारि १.	३३३३७
भालुक १.	३३३३३	" १.	३३३८३	भुजि १.	१२३१८
भाव १.	३३३१७४	भिद्य १.	४३३२९	भुजिष्य १.	३३३१२
" १.	३३३१८०	भिद्य १. २. ३.	पा४१११	" १.	३३३१४
" १.	३३३१९७	" १. २. ३.	६३३११	" १. २. ३.	७३३२२
" १.	६३३३३	भिद्यम्भ १.	३३३१४	भुरग्यु १.	७३३१५

[भुवन]

भुवन ३.	४११२
" ३.	४२१२
भुवन्य १.	७११५९
भुवस् १. ४.	३११२०६
भुसुण्डी १.	३१७१७०
(भुसुण्डी)	
भू २.	३११४
" २.	८२११६
" २.	८६१४
भूधन १.	४११५३
भूत १. ३.	१११२
" ३.	३११२०६
" ३.	४१११
" १. २. ३.	५११२९
" १. २. ३.	६११५९
" १. ३.	८११३०
भूतग्राम १.	५१११७
भूतग्री ३.	३१११२१
भूतदमनी २.	१११४९
भूतधात्री २.	३११२
भूतपुष्प १.	३११६९
भूतफल १.	३१११६६
भूतलोद्धव ३.	३१२३०
भूतवास १.	३१११७६
भूतसम्भव १.	२११९४
भूतसारी २.	३१८८२
भूतात्मन् १.	७११६०
भूतापुत्र १.	११३२
भूति २.	११२३३
" २.	४१३८७
" २.	६१२२७
" २.	८१२३४
भूतिक ३.	७१३२६
भूतेश १.	१११४३
भूतेश्वर २.	२११७०
" २.	२११८०
भूदार १.	३११६
भूदेष १.	३१६१
भूधर १.	३१२१
भूनामन् २.	३१११७
भूप १.	३१७१

वैजयन्तीकोषः

भूपदी २.	३१३१८३
भूपरा १.	३१३२१९
भूभुज् १.	३१७१
भूमृत्सभ ३.	८११२०
भूमि २.	३१११
" २.	६१२२७
भूमिकन्दर ३.	३१३१५३
(भूमिकन्दक)	
भूमिका २.	३११६८
भूमिकागत १.	३११६८
भूमिकूरमाण्ड १.	
" ३.	३१३१९५
भूमिमयी २.	२११२३
भूमिलाभ १.	३१३२०१
भूमिस्पृश १	३१८१
" १.	७११५९
भूमिष्ठ १. २. ३.	५११८५
भूरद १.	३१३१३३
भूरि १. ३.	३१२२०
" १. २. ३.	५११८५
भूरिमाय १.	३१३३८
भूरिलोह ३.	३१२२९
भूरिश्रवस् १.	११२५
भूरुह १.	३१३४
भूरुह १.	३१३४
भूर्ज १.	३१३४५
भूर्जषत्र १.	३१३४५
भूलता २.	४११५९
भूलवण २.	३१८१२२
भूवल्लर ३.	३१३१५३
भूशक्र १.	३१३१
भूश्वभ्र ३.	४११३
भूषण ३.	४१३३३
भूष्ण १. २. ३.	५११४१
भूस्तृण ३.	३१३२३४
भूस्पृश १.	६११४२
भूस्फोट ३.	३१३१५३
भूकुंस १.	३११६७
भूकुटि २.	३११९१
भूगु १.	३१२६
भृङ्ग १.	२१३२७

[भेल]

भृङ्ग १.	२१३४२
" ३.	३१८१०४
" ३.	३१८१०७
भृङ्गराज ३.	३१३१०७
" १.	८१३३६
भृङ्गरिडि १.	१११५२
भृङ्गा २.	३१८१५१
भृङ्गाण १.	३१३४२
भृङ्गार १.	४१३१०८
भृङ्गारी २.	२१३४७
भृङ्गिन् १.	१११५२
भृङ्गिरिडि १.	१११५२
भृङ्गकण्ठ १.	३१५५३
" १.	३१५६६
भृङ्गकण्ठक १.	३१५१००
भृत्क १. २. ३.	३१९५
भृत्ति १.	३१९५
भृत्तिभुज् १. २. ३.	३१९५
भृत्त्य १.	३१९२
भृत्त्या २.	३१९६
भृत्थ १.	४११५०
भृश १. २. ३.	५१३३१
भृशकोपन १. २. ३.	
" ५१३३२	
भृशङ्गत १. २. ३.	
" ३१७१४९	
भृष्ट १. २. ३.	४१३९३
भृष्टयव १.	४१३७१
भेक १.	३१५२९
" १.	४११४७
" १. २. ३.	६१५५९
भेटक १.	३१८६९
भेद १.	३१७१३
" १.	६११४२
भेदित १. २. ३.	५१३११
भेन १.	६११४२
भेय १.	५१३१२
भेरी २.	३१९१३३
भेरीनाद १.	२१३११
भेल १.	३१३३
" १.	४१३१६

[भेल]

भेल १. २. ३.	६१५५७
भेलन ३.	५१२१२
भेलुक १.	१११५२
भेषज ३.	४११४१
भेष ३.	३१८२
" ३.	५११३३
भैमरथी २.	२११६१
भैरव १. २. ३.	३१९७९
" १.	८११६०
भैषज्य ३.	४११४१
भोः (-स्) ४.	८१८२
भोग १.	४११२१
" १.	६११४४
भोगभूमि २.	११११
भोगवती २.	४११४
" २.	४१२२५
भोगिन् १. २. ३.	७१३१
भोगिनी २.	७१३२
भोज १ ब.	३१३७
" १.	३१५६२
भोजन ३.	४१३१०२
भोजनीय ३.	३१८११९
भोज्य ३.	३१३६२
भोल १.	३१२२१
भौम १.	११३३२
भौरिक १ ब.	३१३३१
" १.	३१७२१
भ्रकुंस १.	३१९६७
भ्रकुञ्ज १.	३१५५५
भ्रकुटि २.	३१९९१
भ्रम १.	३१६१७७
" १.	३१९१८
" १.	४१३११
" १.	५१३१०
भ्रमन्त १.	५१३५१
(गृहकोल्हक)	
भ्रमर १.	२१३४२
" १. २. ३.	७१५६२
भ्रमरक १.	३१८१३५
" १.	४११९९
भ्रमरालक १.	४११९९

शब्दानुक्रमणिका

भ्रमरेष्ट १.	८११५९
भ्रमि २.	५१२१०
भ्रष १.	५१११०२
भ्रष्ट १. २. ३.	५१११०२
भ्राज् १.	११३११
भ्राणञ्जक	३१५२५
भ्रातृ १.	४१३३१
" १.	४१३४७
भ्रातृव्य १.	७११५९
भ्रात्र १.	३१८४१
भ्रात्रीय १.	४१३४२
भ्रान्ति २.	५१२१०
भ्रामकादि १.	३१२३८
भ्रामर ३.	३१८१३५
भ्रामरी २.	१११५९
भ्राष्ट्र १.	५१२५६
भ्रुकुंस १.	३१९६७
भ्रुकुट १.	३१९१६७
भ्रुकुटि २.	३१९९१
भ्रू २.	४१३९६
" २.	८१९२
भ्रुकुंस १.	३१९६७
भ्रुकुटि २.	३१९९१
भ्रूण १.	६११४०
भ्रणि २.	४१२२१
भ्रेण १.	३१५१५
भ्रेणक १.	३१५३१
म	
मक १.	३१५२९
मकर १.	११२६०
" १.	४११५१
" १.	८१६१३
" १.	८१६१५
मकरध्वज १.	१११२७
मकरन्द १.	३१३१९
मकरवाहन १.	११२४५
मकरालय १.	४१२११
मकुट १. ३.	४१३१३५
मक्षण १.	३१७६७
मक्षिका २.	२१३४४
मक्षुण ३.	५११४८

[मञ्जूषा]

मख १.	३१६८२
मगध १ ब.	३११३१
मघवत् १.	११२२
मघा १ ब.	२११४३
मङ्क १.	४१३१२६
मङ्कश १.	३१५७०
मङ्कु ४.	८१८१
मङ्ग १. ३.	३१२१७
मङ्गल १.	२१३३१
" १.	५१३४८
मङ्गलध्वनि १.	३१६५७
मङ्गलमालिका २.	
" ३१६५७	
मङ्गलाल्लिक ३.	३१६५८
मङ्गल्य १.	३१३३०
" ३.	३१८४०
" ३.	३१८१४९
" ३.	४१३११४
मङ्गल्या २.	३१३१९८
" ३.	३१८१०८
" २.	५१३१८
मङ्गिनी २.	४१२१५
मचचिका २.	८१९४२
मज्ज १.	४१३११०
मज्जा २.	३१३१४
" २.	४१३११०
मज्जाकर ३.	४१३१०९
मञ्च १.	४१३३२
मञ्चक १.	४१३१६४
मञ्जन ३.	३१५२४
मञ्जरि २.	३१३२०
मञ्जरी २.	३१३११९
मञ्जरीक १.	३१३१२०
मञ्जिष्ठा २.	३१३१३५
मञ्जी २.	३१३२०
" २.	३१३६२
मञ्जीर १. ३.	४१३१४५
मञ्जु १. २. ३.	५१३१३४
मञ्जुल १. २. ३.	
" ५१३१३४	
मञ्जूषा २.	४१३६३

[मञ्जूषा]

मञ्जूषा २.	७२।१
मट १.	३।५।१८
मटची २.	२।२।७
मठ १.	४।३।२७
" १. २. ३.	८।१।३९
मठर १.	५।३।३
मठी २.	८।१।३९
मट्टिका २.	३।६।५१
(मट्टिका, मट्टिका)	
मट्टु १.	३।१।३५
मट्टुकैरिक १.	३।५।३१
मणि १. २.	३।२।३६
" १. २.	४।३।६२
" १. २.	४।३।७३
" १. २.	६।५।६२
मणिक १.	४।३।५६
मणिकण्ठ १.	२।३।२९
मणिकार १.	३।५।६३
" १.	३।९।१५
मणित ३.	२।४।७
मणिवन्ध १.	४।१।७३
मणिल १. २. ३.	५।४।८
मणिसानु १.	१।३।१२
मणिसोपान ३.	४।३।१४२
मणीच ३.	७।३।२७
मणीचक ३.	३।३।१८
मण्टप १. ३.	४।३।२८
मण्डजात ३.	३।८।१४०
मण्ड १. ३.	४।३।७७
" १.	५।१।४७
मण्डन ३.	४।३।१३३
" १. २. ३.	५।४।४१
मण्डपीठिका २.	२।१।७
मण्डल १.	३।४।६९
" ३.	३।७।४९
" ३.	३।७।१८७
" ३.	४।४।२४४
" १. २. ३.	७।५।६५
मण्डलपत्रिका २.	३।३।९२
मण्डलाग्र १.	३।७।१६०
मण्डलिन् १.	३।४।७२

वैजयन्तीकोषः

मण्डलिन् १.	४।१।७
" १.	४।१।८
" १.	४।१।१०
" १.	४।१।१३
" १.	७।१।६०
मण्डलेश्वर १.	३।७।२
मण्डहारक १.	३।५।४४
मण्डिका २.	४।३।७८
मण्डकी २.	३।७।७९
मण्डूक १.	३।७।५१
" १.	४।१।४८
मण्डूकपर्ण १.	३।३।६८
मण्डूकपर्णी २.	३।३।१४४
मण्डूर ३.	३।२।३६
मत ३.	३।६।१७४
" ३.	३।८।१०७
मतङ्ग १.	३।७।६०
मतल्लिका २.	८।१।४२
मति २.	३।६।२३३
" २.	६।२।२७
मत्कुण ३.	३।७।१५४
" १.	४।१।३५
मत्त ३.	३।७।६७
" १. २. ३.	५।४।३७
मत्तकाशिनी २.	४।४।१२
मत्तवारण ३.	४।३।३१
" ३.	४।३।१६४
मत्त ३.	३।८।३०
मत्सर १. २. ३.	७।५।६३
मत्स्य १.	१।१।१८
" १.	४।१।४१
मत्स्यगु १.	३।६।१५७
मत्स्यण्डी २.	३।८।१३३
मत्स्यधानी २.	२।९।४२
मत्स्यनाशन १.	२।३।३४
मत्स्यपित्ता २.	३।८।६८
मत्स्यराज १.	४।१।५१
मत्स्यवेधन ३.	३।९।४२
मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३।६।१३१
मत्स्यसङ्घात १.	४।१।४५

[मधु]

मत्स्याक्षी २.	३।३।१४४
" २.	३।३।१५६
मथित ३.	३।८।१००
मथिन् १.	३।९।३१
मथुरा २.	४।३।६
मद १.	३।३।१८८
" १.	३।७।८२
" १.	५।२।३२
" १.	८।५।३६
मदकल १.	३।७।६८
मदकोहल १.	३।४।५४
मदन १.	२।३।३
" १.	३।३।४९
" १.	३।३।६१
" १.	३।८।५५
" १.	३।८।१३७
" १.	७।१।६१
मदनध्वजा २.	२।१।७५
मदना २.	३।९।४६
मदनी २.	३।४।३६
मदवृन्द १.	३।७।६२
मदमत्तक १.	३।३।७७
मदयन्ती २.	३।३।१८३
मदस्थान ३.	३।९।७३
मदिरा २.	३।९।४५
मदिष्टा २.	३।९।४६
मदुर १.	३।३।३
मदोत्कट १.	२।३।१४
" ३.	३।९।४८
मदोदका २.	३।८।८२
मद्गु १.	२।३।११
" १.	३।५।५२
" १.	३।५।७१
" १.	३।५।८४
" १.	३।५।९३
मदलध्वनि १.	२।४।१०
मद्य ३.	३।९।४४
मद्यबीज ३.	३।९।५०
मद्यलालस १.	३।३।२६
मद्यसन्धान ३.	३।९।५१
मधु १.	२।१।८३

[मधु]

मधु १.	२।१।८७
" १.	३।३।६१
" २.	३।३।१४३
" १. ३.	३।८।१३४
" ३.	३।८।१४५
" १.	५।३।३३
" १.	६।५।६१
मधुक १.	३।५।३७
" १.	३।७।३०
" ३.	३।८।१३४
" १.	५।३।३२
मधुकर्ण १.	२।३।४३
मधुका २.	३।८।५६
मधुकुक्कुटी २.	३।३।३४
मधुकर्म १.	३।९।५२
मधुक्षीर १.	३।३।२२२
मधुच्छद १. २.	३।३।३८
मधुतृण १.	३।३।२२५
मधुप १.	२।३।४२
मधुपर्क १.	३।६।६२
मधुपर्णी २.	८।२।८
मधुपुष्प १.	३।३।४३
मधुबीज १.	३।३।७४
मधुबोल १.	५।३।३८
मधुमक्षिका २.	२।३।४५
मधुमद्य ३.	३।९।४८
मधुमालक १.	५।३।३७
मधुयष्टिका २.	३।८।१०३
मधुर ३.	३।८।१०३
" ३.	३।९।११२
" १. २. ३.	४।३।८२
" १.	५।४।२५
" १.	५।४।२७
" १. २. ३.	७।३।२२
मधुरवाच् १. २. ३.	५।४।४४
मधुरस १.	३।३।२१०
मधुरसा २.	८।२।८
मधुरस्वन १.	४।१।५५
मधुरा २.	३।१।२५
" २.	४।३।६

शब्दानुक्रमणिका

मधुराङ्गक १.	५।३।२७
मधुराम्लक ३.	३।८।१३६
मधुलिह १.	२।३।४२
मधुवाच् १.	२।३।२७
मधुवार १.	३।९।५२
मधुव्रत १.	२।३।४३
मधुशिष्ट १.	३।३।५६
मधुश्रेणि १.	३।५।४४
मधुष्टील १.	३।३।४३
मधुसख १.	१।१।२८
मधुसारथि १.	१।१।२९
मधुसूदन १.	१।१।१५
मधुस्रव १.	३।३।४३
मधुस्रवा २.	३।३।१८०
मधूक १.	३।३।४३
मधूच्छिष्ट ३.	३।८।१३७
मधूपद्मा २.	४।३।६
मधूल ३.	३।८।१३७
" १.	५।३।३३
मधूलक १.	३।३।४४
" १.	५।३।२५
" १. २. ३.	८।९।३३
मधूलिक १.	५।३।३३
मधूषिका २.	४।३।६
मध्य ३.	३।९।२३
" १. ३.	४।४।६७
" १. २. ३.	५।१।२९
" १. २. ३.	६।५।६३
मध्यदन्त १.	४।३।८९
मध्यदेश १.	३।१।२२
मध्यन्दिन १.	२।१।६५
मध्यम १.	३।९।३२
" १.	४।४।६७
" १. २. ३.	५।४।७७
मध्यमा २.	४।४।७४
मध्यमीय १. २. ३.	५।४।७७
मध्यमांखात १.	३।६।२३०
मध्यरात्र १.	२।१।६६
मध्यस्थ १. २. ३.	३।८।९
मध्याह्न १.	२।१।६५

[मन्थर]

मध्वालुक १.	३।३।२१०
मध्वासव १.	३।९।४९
मनश्शिला २.	३।२।११
" २.	३।३।२११
मनस् ३.	३।३।१७२
मनसिज १.	१।१।२७
मनस्कार १.	३।६।१७४
मनाक ४.	८।८।१२
मनाका २.	७।२।१९
मनित १. २. ३.	५।४।१०१
मनीषा २.	३।६।१६३
मनीषिन् १.	३।६।२३५
मनुज १.	३।५।१
मनुज्येष्ठ १.	३।७।१५८
मनुष्य १.	३।५।१
मनुष्यधर्मन् १.	१।२।५६
मनोजव १.	३।५।५
मनोजवा २.	१।२।३०
मनोज्ञ १. २. ३.	५।४।१३४
मनोज्वला २.	३।४।१८२
मनोभिधा २.	३।२।१२
मनोरथ २.	३।३।१७९
मनोरम १. २. ३.	५।४।१३५
मनोविकार १.	३।९।८०
मनोहर १. २. ३.	५।४।१३५
मनोहरी २.	३।८।७७
मन्तु १.	३।७।४७
मन्त्र १.	३।६।३३
" १.	६।१।४५
मन्त्रजिह्व १.	१।२।१७
मन्त्रज्ञ १.	३।७।२६
मन्त्रिन् १.	३।७।१८
" १.	३।७।१९
" १.	८।१।४५
मन्थ १.	३।९।३१
" १.	४।३।७१
मन्थपात्र ३.	३।९।३२
मन्थर १. २. ३.	३।७।१५०

मन्थर]	वैजयन्तीकोषः	[मलय	मलयज]	शब्दानुक्रमिका	[महाबुस
मन्थर १. २. ३. ७।५।६४	मयु १. १।३।३	मर्कट १. ३।४।३९	मलयज १. ३।८।११२	मविघटी २. ३।९।२५	महाग्राम १. ४।३।२
मन्थविष्कम्भ १. ३।९।३२	मयूक १. २।३।३७	” ३. ४।३।४८	मलयद्वीप ३. ३।९।१४	मसुर १. ३।८।४०	महाग्रीव १. ३।४।६७
मन्थान १. ३।९।३१	मयूख १. २।१।१६	मर्कटक १. ३।८।६२	” ३. ३।९।१६	मसूरक १. ३।८।४०	महाघोण्टा २. ३।३।७८
मन्थोदधि १. ३।१।११	” १. २. ३. ८।९।२५	” १. ४।१।३४	मलयवासिनी २. १।१।६३	मसूरिका २. ३।८।४०	महाचण्डी २. १।१।६४
मन्द १. १।२।३४	मयूर १. २।३।१४	मर्कटास्य ३. २।२।२४	मलयद्वाशस् २. ४।४।१५	मसुरी २. ४।४।३७	महाचारी २. ३।९।१४२
” १. २।१।३५	” १. २।३।३६	मर्कटी २. ४।३।४८	मलवारिन् १. २. ३.	मसृण १. ५।३।१४	महाजम्बू २. ३।३।९२
” ३. ३।८।१४०	मयूरक ३. ३।२।४२	मर्कस १. ३।९।५१	” ५।४।१६	मसृणत्व ३. ५।३।१	महाजाली २. ३।३।१६२
” १. २. ३. ५।४।५५	” १. ३।३।११५	मर्कटपिपीलिका २. ४।१।३७	मलयविष्टम्भ १. ४।४।१२८	मसृणी २. ३।८।४५	” २. ३।८।१२३
” १. २. ३. ६।५।६०	” १. ३।३।१२०	मर्त १. ३।६।२०६	मल्लुति २. ४।४।१२८	मस्कर १. ३।३।२१५	महाज्वाला २. १।२।२९
मन्दगामिन् १. २. ३.	मरकत ३. ३।२।३८	मर्त्य १. ३।५।१	मलहारक १. ३।७।८७	मस्करिन् १. ३।६।१६०	महाझष १. ४।१।५५
” ३।७।१५०	मरण ३. ३।६।२०२	मर्त्यलोक १. ३।६।२०६	मलिन ३. ४।२।१	मस्तक १. ३. ४।४।८६	महाटवी २. ३।३।२
मन्दर १. ४।३।१४०	मरणालस ३. ३।६।२१७	मर्द १. ३।६।१६७	” १. २. ३. ५।४।६६	मस्तिक १. ४।४।८५	महातेजस् १. १।१।५५
मन्दरमणि १. १।१।४६	मरन्द १. ३।३।१९	मर्दन ३. ५।२।३०	मलिना २. ४।४।१५	मस्तिक १. ४।४।११२	महात्मन् १. २. ३.
मन्दरवासिनी २. १।१।६३	मराल १. २।३।५	मर्दनी २. ३।७।१५५	मलिनाम्बु ३. ३।९।२५	मस्तु ३. ३।८।१४४	” ५।४।५६
मन्दाकिनी २. १।१।१३	” १. ३. ५।३।१७	मर्दल १. ३।९।१३४	मलिग्लुच १. ३।३।४४	मस्तुलङ्ग १. ३. ८।५।१९	महादंष्ट्र १. ३।४।४
मन्दाक्ष ३. ३।६।१९४	मरिच ३. ३।८।७९	मर्दलध्वनि १. २।४।१०	” १. ३।६।७७	मस्तुलङ्गक १. ४।४।११२	महादेव १. १।१।४१
मन्दागा २ ब. २।१।४१	मरिष्टक १. ३।२।३८	मर्मभेदन १. ३।७।१७९	” १. ३।९।५५	मह १. ३।६।६१	महादेवी २. १।१।५८
मन्दार १. १।३।१४	मरीच ३. ३।८।७९	मर्मर २. २।४।८	मलीमस १. २. ३.	महः ३. ३।६।२०७	” २. ३।७।३१
” १. ३।३।४४	मरीचि १. २. २।१।१६	” १. ५।४।१४४	” ५।४।६६	महत् १. ३।६।१६३	महाधन १. २. ३.
मन्दिर ३. ४।३।१८	मरीचिका २. २।१।२२	मर्मरा २. ४।३।७०	” ३. ३।६।७२	” ३. ३।६।२०७	” ४।३।११८
” ३. ७।३।२७	” २. ५।१।४२	मर्मस्पृश १. २. ३.	” १. ४।६।६७	” १. २. ३. ६।५।६३	महाधातु १. ४।४।१०४
मन्दुपाल २. ३।५।३१	” २. ५।१।४२	मर्म्यादा २. ३।९।१५	मलुक १. ३।३।२	” ३. ८।३।१८	महानट १. १।१।४४
मन्दुरा २. ४।३।२१	मरु १ ब. ३।१।३८	” २. ४।२।१३	” १. ४।३।६७	महती २. ३।३।१३८	महानर्मन् १. ३।५।७१
मन्दोत्खात १. ३।६।२३०	” १. ३।१।४२	” २. ४।३।११	” १. ४।४।८८	” २. ३।९।११९	महानस ३. ४।३।५४
मन्दोष्ण ३. ५।३।९	मरुक १. ३।४।११	” २. ७।२।१९	मल्लक १. २।३।३१	” ३. ३।६।७९	महानाद १. ३।४।१
मन्द्र १. २. ३. २।४।१३	मरुजा २. ३।४।२२	मर्ष १. ३।६।१८४	मल्लनाग १. ३।६।१५९	महत्तरी २. ३।७।३७	महानील ३. ३।२।४०
” १. ३।७।६२	मरुत् १. १।१।२	मल ३. ३।२।२९	मल्लि २. ६।२।२७	महर ३. ४. ३।६।२०७	महानेमि १. २।३।१५
मन्द्रभद्रमृग १. ३।७।६५	” १. १।२।३९	” १. ३।५।२४	” १. २. ८।९।२६	महत्विज १. ३।६।७९	महापत्त १. २।३।११
मन्द्रलक्षण ३. ३।७।६३	” २. ३।३।११७	” १. ४।१।३२	मल्लिका २. ३।३।१८३	महस् ३. ६।३।२४	महापत्ति १. २।३।२३
मन्मथ १. १।१।२७	मरुत्वत् १. १।२।४	(अल)	मल्लिकाकुसुमप्रिय १. ३।३।३५	महाकदम्बक १. ३।३।६०	महापत्र १. ३।३।२१६
” १. ३।३।३२	मरुद्रण १ ब. १।३।८	” १. ३. ४।४।११९	” १. ३।३।३५	महाकन्द ३. ३।३।२०४	महापद्म १. १।२।६०
मन्मथसख १. २।१।८३	” १ ब. १।३।१०	” १. ३. ४।४।१२०	” १. ४।४।८८	” ३. ३।८।७६	” १. ३।३।२०९
मन्या ३।७।८५	मरुन्धव १. ३।३।६३	” १. ३. ४।४।१२०	मल्लि २. ४।३।५७	महाकाय १. ३।७।६१	” १. ४।१।१२
” २. ४।४।११७	मरुन्माला २. ३।३।११७	” १. ५।४।१४४	” २. ८।९।२६	महाकार १ ब. ३।१।३९	” ३. ४।२।४०
मन्यु १. ३।६।१८३	मरुल १. ३।४।७३	” १. ६।५।६५	मल्ली २. ४।३।४४	महाकाल १. ८।१।३७	महाप्रलय १. २।१।९४
” १. ६।१।४५	” ३. ४।२।१	मलद १ ब. ३।१।३६	” २. ४।३।१४४	महाकाली २. १।१।६१	महाफला २. ३।३।८८
मन्वन्तर ३. २।१।९३	मरुवक ६. ३।३।४९	” १. ३।८।३५	मशक १. २।३।४४	महाकीर्तन ३. ४।३।१९	” २. ३।३।९२
मय १. १।३।७	मरुक १. ७।१।६२	मलना २. ३।३।१६०	मशकहरी २. ४।३।१२४	महाकोशातकी २. ३।३।१५९	” २. ३।३।१७०
” १. ३।४।६७	मरुद्धव १. ३।३।६४	मलय १. ३।२।३	मशकिन् १. ३।३।२८	महागण १. ५।१।३१	महाबल २. १।२।५०
मयष्टक १. ३।८।३८	मर्क १. १।२।४९	” १. ७।५।६३	” १. ३।३।२८	महागन्धा २. १।१।६४	” २. ३।८।३३१
	” १. ६।१।४७			महाग्रहायणी २. २।१।७८	महाबुस २. ३।८।३४

[महाबुस]

महाबुस २.	३८१५१
महाभूत ३.	३६१२०६
महामात्र १.	३७७८८
" १. २. ३.	५४१५६
महामुख १.	४११५३
महामुनि १.	३३३७९
महामूल्य १. २. ३.	४३११८
महामृग १.	३७६१
महामेरु १.	१३१२२
महाम्बुज ३.	५११३२
महायज्ञ १.	३६६३
महायव १.	३८१५२
महारजत ३.	३२११८
" ३.	३८१९१
महारण ३.	३७२०६
महारस १.	३३३२२२
" १.	३३३२२५
महारसा २.	३३३११०
" २.	३३३१२३
महाराज १.	३९११०३
" १.	४४१७६
" १.	८११२६
महारात्र १.	२११६६
महारात्री २.	१११६१
महाराष्ट्र १ ब.	३११३३
महालय १.	८११३६
महालोभ १.	३३३५२
महावस १.	४११५४
महाविड ३.	३८११२३
महाविष्णु १.	१११३१
महावीर १. २. ३.	८१५२०
महावृष १.	३८१३५
महावेग १.	३१५४०
महाव्यसनसप्तक ३.	३७१११
महाव्रत १.	१११४५
महाशय १. २. ३.	५४११६
महाशक्त १.	४११४४

वैजयन्तीकोषः

महाशक्त २.	३३३३४
महाशालि १.	३८१३२
महाशिला २.	३७१६९
महाशूद्र १.	३९१२८
महाश्रावणिका २.	३९१९४
महाश्वेता २.	३३३१३५
" २.	३३३१९६
महासना २.	३२१११
महासन्धा २.	३३३१०५
महासर्प १.	४११११
महासहा २.	३३३१०७
" २.	३३३१८८
" २.	८२११५
महासुप्ति २.	२११९४
महासेन १.	१११५५
महास्नायु २.	४४११७
महाहस १.	३९१८४
महित १.	३२१५
(महिक)	
महिमत १.	१२१२७
महिमन् १. ३.	८९१३१
महिला २.	४४१४
महिष १.	३४१८
" १.	३५१३३
महिषवाहन १.	१२१३३
महिषाक्ष १.	३८११२२
महिषी २.	२११७४
" २.	३७३१
" २.	७२११९
मही २.	३११३
महीपति १.	३३३३७
महेच्छ १. २. ३.	५४११६
महेन्द्र १.	१२१७
महेन्द्रजित् १.	१११३७
महेश्वर १.	१११३८
" १.	३३३५३
महेश्वरी २.	३२१२६
महोत्त १.	३४१५५
महोत्पल ३.	४२१३७
महोदधि १.	४२११२
महोदय १.	४३३७

[माणव्य]

महोदया २.	४४१६
महोदरी २.	३३३१९९
महोद्रेक १.	५११५४
महौजस् १.	१११५६
महौषध १.	३३३२०६
" ३.	८३३१०
मा २.	१११३६
" २.	८७११०
" २.	८९१२
मांस ३.	४४११०६
मांसकर ३.	४४११०५
मांसकील १.	४४११३३
मांसनिष्काथ १.	४३३८७
मांसल १. २. ३.	५४१६
मांसलता २.	४४१११२
मांसविक्रयिन् १.	३९१३७
मांसि १.	५३१५६
मांसिक १.	३९१३७
मांसी २.	३८११००
माकन्द १.	३३३२५
माक्षिक ३.	३२११५
" ३.	३८१३५
मागध १.	३५१६
" १.	३५७९
" १.	३५८०
" १.	३५८७
" १.	३७३०
" १.	३८१८४
मागधी २.	३३३१६०
" २.	३८१७६
मागवी २.	३८१५६
माघ १.	२११८२
माघी २.	२११७४
माघ्य १.	३३३१९१
माटङ्क १.	४३३३४
माठि २.	३७१५३
माठि २.	३३३१८
माण १.	३३३२०९
माणव १.	४३३१४०
माणवक १. २. ३.	५४३
माणव्य ३.	५११७

माणिक्य]

माणिक्य ३.	३२१४१
माणिक्या २.	४११३०
माणिचरि १.	१३३३
माणिमन्थ ३.	३८१२०
मातङ्ग १.	३७१५४
मातङ्गी २.	८२११४
मातरपितर १ द्वि.	४४१४७
मातरिश्चन १.	१२१४७
मातलि १.	१२१९
मातापितृ १ द्वि.	४४१४७
मातामह १.	४४३०
" १ ब.	४४१४९
मातुल १.	४४३३
" १.	७११६१
मातुलपुत्र १.	८११५४
मातुलानिका २.	३८१५१
मातुलानी २.	४४३६
मातुलाहि १.	४१११९
मातुली २.	४४३६
मातुलुङ्ग १.	३३३३३
" १.	३३३३३
मातुलुङ्गी २.	३३३३४
मातृ २.	२११७४
" २.	४३१६३
" २.	४४२६
" २.	६२१२८
" २.	८६१८
" २.	८९१४४
मातृका २.	४४२१
मातृमुख १. २. ३.	५४१६६
मातृशिष्ट १. २. ३.	५४२१
मातृष्वसेय १.	४४१४२
मातृष्वस्त्रीय १.	४४१४२
मात्र १. २. ३.	५४१३६
मात्रा २. ३.	६५१६२
" २. ३.	६५१६३
मात्सर्य ३.	३६१८४
माथ १.	४४१३८

शब्दानुक्रमणिका

माथिक १.	३३३७५
माद १.	५२३२
माधव १. ३.	३९१४९
" १.	७११६१
माधवी २.	३३३१८७
" २.	३९१४५
माधुर १.	३६११०८
" १.	५३३२
माधवी २ ब.	२११२१
माध्वी ३.	३९१४८
मानमन्दिर १.	१२१४२
(मानमन्दर)	
मानव १.	३५११
मानवी २.	३३३१८२
मानस ३.	३६१७२
मानसौकस् १.	२३३६
मानिन् १.	३३३१५०
मानी २.	५११५३
मानुष १.	३५११
मानुष्यक ३.	५११८
मान्दा २ ब.	२१११९
मान्द्य ३.	४४१३८
मान्धीर १.	२३३२८
मान्धीलव १.	२३३२८
माभीद १.	३३३७९
माया २.	११११६
" २.	३३३१३८
" २.	३६१६१
" २.	३७१२
मायाचिन् १. २. ३.	५४२४
मायिक १. २. ३.	५४२४
मायिन् १. २. ३.	५४२४
मायु १.	४४१२१
मायूरी २.	३९१३३
मार १.	१११२७
मारक १. ३.	३६२०२
(मरक)	
मारजित् १.	१११३३
मारण ३.	३७२१४
मारि २.	३६२०२

[मार्षक]

मारि २.	४४१३७
मारिष १.	३३३१५०
" १.	३९११०६
मारुङ्ग १.	५३३१
मारुत १.	१२१५०
मारुती २.	२११५
मार्कव १.	३३३१०७
मार्ग १.	३११४९
" १.	६११४६
मार्गण ३.	३७१७४
" १. २. ३.	५४१६०
" १.	७५१६४
मार्गणा २.	३६१२१
मार्गनिवेश १.	४३१५
मार्गर १.	३५३२
" १.	३५११००
" १.	३९१४२
मार्गशीर्ष १.	२११८१
मार्गायणी २.	२११३८
मार्गित १. २. ३.	५४१९८
मार्ज १.	५३३१
मार्जन १.	३३३५२
" १.	५३३१
मार्जना २.	२४११०
" २.	३९१३०
मार्जा ३.	४३१९९
मार्जारी १.	३३३१८
" १.	३३३१५६
" १.	३४१७१
मार्जारकण्ठ १.	२३३३८
मार्जारकणिका २.	
	१११६३
मार्जारिका २.	३४३३६
मार्जारी २.	३४३३४
मार्जालीय १. २. ३.	
	८१५२०
मार्जिता २.	४३१९८
मार्तण्ड १.	२१११३
मार्तण्ड १.	२१११०
मार्तण्डिक १.	३९१७०
मार्षक १.	३९११०६

[माष्टि]

माष्टि २.	४३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३१११२२
" १.	३११२५
मालती २.	३१११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३१८१३०
मालव ३.	३१११६
" १ ब.	३११३७
" १.	३१११०६
मालवक १.	३११६३
माला २.	४३११५४
मालाकार १.	३११३३
मालातृणक ३.	३३१२३४
मालिक १.	३११३३
मालिका २.	३३११८६
" २.	४३१२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२४१२०
" १.	३१११९
मालुधान १.	४१११९
मालुवा २.	३३१२१०
मालूर १.	३३१३०
मालोजर् १.	३३११२०
माल्य ३.	६३१२५
माल्यजीविन् १.	३११३३
माल्यवत् १.	३१२४
माष १.	३१८३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३३११०७
माषाश्विन् १.	३१७९१
माषीण १. २. ३.	३१८२०
माष्य १. २. ३.	३१८२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३११५१

वैजयन्तीकोषः

मासर १.	४३१७८
मासिक ३.	३१६६५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	११२६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाडुक १.	३१५४८
माहिष्मती २.	४३१९
माहिष्य १.	३१५१२
" १.	३१५६९
माहेन्द्री २.	३३११७५
माहेयी २.	३१४४२
माहेश्वरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५४१३६
मितद्रु १.	४२११२
मितम्पच १. २. ३.	५४१५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३१७३९
" ३.	३१७४३
" ३.	३१८१२
" ३.	८११४७
मिथस् ४.	८१७२७
मिथिला २.	४३१७
मिथुन ३.	४३११००
" ३.	४४१४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८१११४
मिथुनत्व ३.	४३११७१
मिथुनिन् १.	२३१२४
मिथ्या ४.	८१८१३
मिथ्याचर्या २.	३१६१९६
मिथ्याभियोग १.	३११३२
मिर्मिर १. २. ३.	५१११९
मिश्र १. २. ३.	५११०८
मिश्रक ३.	३१६१२
मिष १.	३१५१४
" ३.	३१६१९५
मिषत् १. २. ३.	५४१६१
मिहिका २.	२१११९

[मुखरा]

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३१४६४
" १. २. ३.	५४११३
मीढा २.	३१६१६
मीन १.	४११३१
" १.	८१११४
मीना २.	३१६१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३१६१२९
" २.	३१६१७५
मीलिका २.	३१२१७
(नीलिका)	
मुक १.	५३१५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२१६१
मुकुन्दक १.	३३१२०५
मुकुर १.	४३११६२
मुकुल १. ३.	३३११९
मुक्तकञ्चुक १.	४११२०
मुक्तबन्धना २.	३३११८३
मुक्ता २.	४११५६
" २.	६१२२९
मुक्ताफल ३.	४११५७
मुक्तामुक्त ३.	३१७१९६
मुक्तावली २.	४३१३८
मुक्तास्फोट १.	४११५६
मुक्ति २.	३१६२३८
मुख ३.	३१८१२१
" ३.	४३११५
" ३.	४४१८६
" ३.	६३१२५
मुखज १.	३१६११
मुखबन्धन ३.	३१८१४१
मुखभूषण ३.	३२१३१
" ३.	३३११०६
मुखभेद १.	३१९१८८
मुखमण्डन १.	३३१६९
मुखर १. २. ३.	५४१४६
मुखरज्जु २.	३१७११२
मुखरा २.	२३१२०

[मुखावास]

मुखावास १.	३१७१४८
मुखवासन १.	५३१५३
मुखशाला २.	४३१२४
मुखशोभा २.	३१६३५
मुख्य १. २. ३.	५४१६३
मुख्योपाय १.	३१७१२
मुग्ध १. २. ३.	६४११२
मुचिर १. २. ३.	७५१६६
मुचुटि १. २.	४४१७९
मुचुटी २.	३१७१९३
मुचुलिन्द १.	३३१३६
मुज १.	३३१२२८
" १.	३३१२२९
मुजकेशिन् १.	११११३
मुजन ३.	२४१२
मुण्ड १. २. ३.	३१६१६
" १. ३.	४४१८६
मुण्डन ३.	३१६१४
मुण्डा २.	३३११२५
" २.	४४११०
मुण्डित १. २. ३.	३१६१६
मुण्डितिका २.	३३११२५
मुण्डी २.	३३११२५
मुण्डीर १.	२१११३
मुद् २.	३१६१८८
मुदित १. २. ३.	५४१३३
" १. २. ३.	५४१९९
मुदिर १.	२१२१२
मुद्र १.	३१८३६
मुद्रर १.	३१६१०२
" १.	३१७१७१
मुद्ररक १ ब.	३११२९
मुद्रित १. २. ३.	५३१९७
" १. २. ३.	५४११०
मुधा ४.	८१८१२
मुनय १. ३.	३१६१६८
मुनि १.	१११३४
" १.	३३११२३
" १.	३३११५८
" १.	३३१२२७
" १.	३३११५०

शब्दानुक्रमणिका

मुनि १.	३१६१५२
मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.	३१६१३४
मुनिप्रिय १.	३१८१५८
मुनिवृक्ष १.	८१६१९
मुनिव्रतिन् १. २. ३.	३१६१३३
मुनिसेवित १.	३१८१५७
मुनीन्द्र १.	१११३४
मुर ३.	३१८१९८
मुरज १.	३१९१२९
मुरजध्वनि १.	२४११०
मुररिपु १.	११११३
मुरली २.	३१९१२५
" २.	३१९१२७
मुरङ्गी २.	३३१५६
(मरङ्गी)	
मुरण्ड १ ब.	३११२५
मुरुर १.	११२२०
" १.	५३१६
मुषित १. २. ३.	५४१११६
मुष्क १. ३.	४४१६३
मुष्कर १. २. ३.	५४१८
मुष्टि १.	३१७१६८
" १. २.	४४१७९
" १. २.	५११५१
" १. २.	५११६३
मुष्टिक १.	३११५४
मुष्टिमान्य ३.	३१७१९२
मुष्ट्यष्टक ३.	३१६१६
मुष्ट्यायोजन ३.	३१७१८९
मुसल १. ३.	४३१६५
मुसलयष्टिक १.	३१७१७१
मुसलिन् १.	१११२३
" १.	३१७१७७
मुसली २.	३३१२०३
" २.	३१८१५०
" २.	४११२६
" २.	४११३०
मुसल्य १. २. ३.	५४१७१
मुसुटी २.	३१८१५६

[मूल]

मुस्त १.	४११२५
" १. २. ३.	८१९३८
मुस्तक १. ३.	३३१२००
मुस्ता २.	३३१२००
" २.	८१९३८
मुस्तु १. २.	४४१७९
मुहुः (-र) ४.	८१७२७
" ४.	८१८११
मुहुःशोक्त १. २. ३.	२४१२२
मुहूर्त १. ३.	२११५४
मूक १.	३१७१०८
" १. २. ३.	५४११४
मूका २.	३१९१७
मूढ १. २. ३.	३१७२९९
" १. २. ३.	५४१२१
" १. २. ३.	६४११२
मूत १.	६११४६
मूतक ३.	३१८१४४
मूत्र ३.	४४११२०
मूत्रकृच्छ्र ३.	४४११२८
मूत्राशय १.	४४१६६
मूत्रित १. २. ३.	५४११३
मूर्ख १. २. ३.	५४१९१
मूर्च्छन १. २. ३.	३१९१३१
मूर्च्छना २.	३१६२००
" २.	३१९११०
मूर्च्छा २.	३१६२००
मूर्च्छाल १. २. ३.	३१७२१९
मूर्च्छित १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	७४१२२
मूर्ति २.	६१२२८
मूर्धन् १.	४४१८५
मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	८१५२७
मूर्धावसिक्त १.	३१५६५
मूर्धावसिक्तक १.	३१५३
मूर्वा २.	३३१११४
मूल ३.	२११४०

[मूल]

वैजयन्तीकोषः

[मेघवाहिन्]

मूल ३.	३१३१३	मृगया २.	३११३८
२.	३१३२६	मृगयु १.	३११३८
मूलक १. ३.	३१३१५५	मृगरिपु १.	३११३२
मूलकर्मन् ३.	३१३११७	मृगरोमज १. २. ३.	३१११८
मूलकशाकट १. २. ३.	३१३२१	मृगलक्ष्मन् १.	२११२५
मूलकशाकिन् १. २. ३.	३१३२१	मृगवीथी २.	२११३८
मूलकादिसुत १. २. ३.	३१३२३	मृगव्य ३.	३११३८
मूलकारण ३.	३१३१६१	मृगशिरस् ३.	२११३८
मूलकृच्छ्र ३.	३१३१४०	मृगशीर्ष ३.	२११३८
मूलधातु १.	४११०४	मृगसिंहक १.	३११३२
मूलपुष्पिका २.	३१३१२४	मृगाजीव १.	३११३४
मूलवर्हणी २.	२११४०	मृगाद् १.	३११३३
मूलरस १.	५१३२८	मृगादन १.	३११३४
मूलसस्य ३.	४१३१०	मृगादी २.	३१३१७२
मूलिक १. २. ३.	३१३१२९	मृगारि १.	३११३३
मूलिन् १. २. ३.	३१३१९	मृगित १. २. ३.	५११९८
मूल्य ३.	३१३१७०	मृगेन्द्र १.	३११३१
२.	६१३२५	१.	८११५
मूषिक १.	४११३१	मृड १.	१११४०
मूषिकपर्णी २.	३१३११३	मृणाल १. २. ३.	४११४३
मूषिका २.	४११३३	१. २. ३.	८११३८
मृग १.	३११११	मृणाली २.	४११४३
१.	३११३०	२.	८११३८
१.	३१३१२१	मृत १. २. ३.	३११२०
१.	३१३१६२	३.	३१३२
१.	३१३१६४	३.	५१११६
१.	६११४७	मृतस्नान ३.	३१३१६४
मृगणा २.	३१३१२१	मृतस्न ३.	३१३१११
मृगवृष्णा २.	२११२२	मृत्तिका २.	३१३१२४
मृगदंशक १.	३१३१६८	मृत्तिकाचूर्ण ३.	३१३१२४
मृगधूर्त १.	३१३१३८	मृत्यु १. २.	३१३१०२
मृगनाभि १.	३१३१०४	मृत्युञ्जय १.	१११४०
मृगपालिका २.	३१३१३५	मृत्युपुष्प १.	३१३१२४
मृगबन्धनी २.	३१३१३९	१.	३१३१२५
मृगमत्तक १.	३१३१३७	मृत्युसंयमन १.	३१३१२३
मृगमद १.	३१३१०४	२.	३१३१२७
मृगमात्रिका २.	३१३१२६	मृत्सा २.	३१३१२४
		मृत्सना २.	३१३१२४
		मृद् २.	३१३१२४
		मृदङ्ग १.	३१३१५९

(११८)

मृदङ्ग १.	३१३१६०	मृषासाक्षिन् १. २. ३.	३१३१०
१.	३१३१२९	मृष्ट १. २. ३.	५११९१
मृदाह्वया २.	३१३११७	मेकल १ ब.	३१३१३७
मृदु १.	५१३१५	१ ब.	३१३१४०
१. २. ३.	६१३१२	१.	५१३१६
मृदुकण्टक १.	४१३१४३	मेखलकन्यका २.	४१३१२६
मृदुत्वच् १.	३१३१४५	मेखला २.	३१३१३७
१.	३१३१२९	२.	४१३१४६
मृदुरोमन् १.	३१३१३१	२.	४१३११८
मृदुल ३.	३१३१०७	मेघ १.	२१३११
१.	५१३१५	१.	८१३१३
मृदुवात १.	११३१५१	मेघज ३.	४१३११
मृदङ्ग ३.	३१३१३१	मेघनाद १.	११३१४४
मृद्वीका २.	३१३१३८१	१.	३१३१५१
मृध ३.	३१३१२०३	मेघनादानुलासिन् १.	२१३१३८
मृषा ४.	८१३१३३	मेघपुष्प ३.	४१३११
मृषार्थक १. २. ३.	२१३१७	मेघमाला २.	२१३१२
		मेघवर्मन् ३.	२१३१२
		मेघवह्नि १.	११३१२०
		मेघवाहन १.	८१३१५४
		मेघवाहिन् १.	११३१२८

[मेघवाह्य]

मेघवाह्य ३.	३१३१५५	मेघशृङ्ग ३.	४१३१२५
मेघाभ १.	३१३१९३	मेघाण्ड १.	११३१६
मेघक १.	२१३१३९	मेघी २ ब.	२१३११९
३.	४१३१६८	२.	४१३१६५
१.	५१३१११	मेहन ३.	४१३१७१
मेघटिक १.	५१३१५७	(मोहन)	
मेघ १.	४१३१२९	२.	४१३१६१
मेघी २.	४१३१४०	मेहल १.	५१३१५७
मेह १.	४१३१६१	मेहिन् १.	३१३१३३
मेणक १.	३१३११९	मैत्र ३.	३१३१५७
मेथि १. ३.	३१३१३१	१.	३१३१३१
मेथिक १.	३१३१०६	मैत्रक १.	३१३१०४
मेद १.	३१३१३५	मैत्रावरुणि १.	३१३१५२
१.	३१३१२२	मैत्री २.	८१३१३५
१.	३१३१२३	मैत्रेय १.	३१३१३४
१.	३१३११७	मैत्रेयक १.	३१३१५४
मेदक १.	३१३१५०	मैत्रेय ३.	८१३१३५
मेदस् ३.	४१३१०७	मैथिल १.	२१३१६५
मेदस्कर ३.	४१३१०७	मैथुन ३.	७१३१२७
मेदस्तेजस् ३.	४१३१०९	मैथुनिन् १.	२१३१३३
मेदिनी २.	३१३१३३	मैन १.	३१३१३३
मेदुर १. २. ३.	५१३१४३	मैनाक १.	३१३१४३
मेदोभव १.	४१३१०९	मैनाकभगिनी २.	११३१६२
मेधजित् १.	३१३१५८	मैनाकस्वस् २.	११३१६२
मेधा २.	३१३१६५	मैरेय ३.	३१३१४९
मेधाविन् १.	२१३१२५	मोक १.	३१३१७२
१.	३१३१३४	१.	३१३१२५
मेध्य १.	३१३१२९	मोक्ष १.	३१३१३८
१. २. ३.	५१३१६५	१.	६१३१४७
मेघ्या २ ब.	२१३११८	मोक्षण ३.	३१३१९२
२ ब.	२१३१२०	मोक्षालम्बिन् १.	३१३१३८
मेनात्मजा २.	११३१५८	३.	३१३१३८
मेरु १.	११३१२२	मोघ १. २. ३.	५१३१२९
मेरुगण्ड १ ब.	११३१३३	मोच १. २. ३.	६१३१६४
मेलन ३.	५१३१२७	मोचक १.	३१३१५६
(मेलक)		मोचा २.	३१३१७५
मेलामणि १. २.	३१३१२५	मोक्षयित ३.	३१३१९५
मेलामन्द १.	३१३१२५	मोद १.	३१३१८८
मेलाम्बु ३.	३१३१२५	मोदक १. २. ३.	८१३१६६
मेघ १.	३१३१६४	मोरक ३.	३१३१४६
१.	८१३११४	मोरट ३.	३१३१४६

शब्दानुक्रमणिका

[यत्]

मोरट १.	३१३१४९	यत् ३.	४१३११३
१.	७१३१६५	यत् १.	११३१५५
मोरटा २.	३१३१२४	१.	११३११
मोषक १.	३१३१५६	१.	३१३१६९
मोह १.	३१३१०९	१.	३१३१८१
१.	३१३१८१	१.	६१३१४५
१.	६१३१४५	मोहकालिका २.	३१३१४६
मोहकालिका २.	३१३१४६	मोहनी २.	११३११६
मोहनी २.	११३११६	मौकलि १.	३१३१५५
मौकलि १.	३१३१५५	मौकल्य १.	३१३१५९
मौकल्य १.	३१३१५९	मौक्तिक ३.	३१३१४०
मौक्तिक ३.	३१३१४०	३.	४१३१५६
३.	४१३१५६	मौजी २.	३१३१४२
मौजी २.	३१३१४२	मौडी २.	४१३१७०
मौडी २.	४१३१७०	मौढय ३.	३१३१२००
मौढय ३.	३१३१२००	मौण्डिक २.	३१३१४४
मौण्डिक २.	३१३१४४	मौद्गिन १. २. ३.	३१३१९९
मौद्गिन १. २. ३.	३१३१९९	मौनिन् १.	३१३१५०
मौनिन् १.	३१३१५०	मौरजिक १.	३१३१७०
मौरजिक १.	३१३१७०	मौर्विका २.	३१३१७८
मौर्विका २.	३१३१७८	मौर्वी २.	३१३१७७
मौर्वी २.	३१३१७७	मौलि १. २.	४१३१३५
मौलि १. २.	४१३१३५	१. २.	६१३१६४
१. २.	६१३१६४	मौलिक ३.	३१३१६२
मौलिक ३.	३१३१६२	मौष्टिक १.	३१३११६
मौष्टिक १.	३१३११६	मौहिनिक १.	२१३१८३
मौहिनिक १.	२१३१८३	मौहूर्त १.	३१३१७५
मौहूर्त १.	३१३१७५	मौहूर्तिक १.	३१३१२५
मौहूर्तिक १.	३१३१२५	म्लान १.	४१३१४८
म्लान १.	४१३१४८	म्लिष्ट १. २. ३.	६१३१११
म्लिष्ट १. २. ३.	६१३१११	म्लेच्छ ३.	३१३१२५
म्लेच्छ ३.	३१३१२५	१.	३१३११५
१.	३१३११५	१.	३१३११६
१.	३१३११६	म्लेच्छभोज्य १.	३१३१५३
म्लेच्छभोज्य १.	३१३१५३	म्लेच्छास्य ३.	११३१२५
म्लेच्छास्य ३.	११३१२५	य	

(११९)

[यत्]

वैजयन्तीकोषः

[यव्य]

यवःपटह]

शब्दानुक्रमिका

[योग]

यत् १.	८११५८	यति २.	६१२२९	यमस्वस्व २.	१११६२	यवःपटह १.	३११३३४	यान ३.	३१०१२३	युगमध्य ३.	३१०१३१
यत्तकर्म १.	४१३१५३	यतिन् १.	३१३१६०	" २.	४१२२५	यवःपटह २.	२१३३६	" ३.	३१३२६	युगल ३.	५१११५
यत्तधूप १.	३१८१११	यत्त १. २. ३.	५१३११३	यमी २.	४१२२५	यष्टि १. २.	३१३१२३	यानमुख १.	३१०१३०	युगवर्तक १.	२१३३५
यत्तराज १.	११२१५५	यत्न १.	३१३१६७	यमुना ३.	४१२२५	" २.	३१०१६२	यापन १.	७१३२८	युगान्त १.	२११९४
यत्तम १.	४१३१२४	यत्न ४.	८१८२१	यमुनाभ्रातृ १.	११२३४	" १. २.	८१२२५	याप्य १. २. ३.	५१३७५	युगालिक १ ब.	३११२५
यत्तमन् १.	४१३१२४	यथा ४.	८१०२७	ययु १.	६११४८	यष्टिमधुका २.	३१८१०३	" १. २. ३.	६१३१३	युगावर्त १.	११११४
यज १.	३१६१८३	" ४.	८१८२०	" १. २. ३.	६१५६५	यष्टि १.	३१६१७६	याप्ययान ३.	३१०१३६	युगासार ३.	२११९२
यजत्र ३.	३१६१९४	यथातथम् ४.	८१८१३	यर्हि ४.	८१८१५	यस्त १. २. ३.	५१३११६	याम १.	२११६७	युगाह्वया २.	३१८१९४
यजन ३.	३१६१९४	यथायथम् ४.	८१८११४	यव १.	३१८१५१	याग १.	३१६१८२	" १.	५१२३०	युगिन् १.	३१६१८२
यजमान १.	३१६१७६	यथार्थम् ४.	८१८१३	" १.	५११३३	यागकण्टक १.	३१६१८०	यामक १.	२११३९	युग्म ३.	५१११५
यजुरादेष्टृ १.	३१६१७६	यथार्हवर्ण १.	३१७२६	" १ ब.	८१२१५६	याचक १. २. ३.	५१३६०	यामिनी २.	२११५६	" १. २. ३.	५११२३
यजुस् ३.	३१६१२६	यथासुख १.	२११२६	यवक १.	३१८१५३	याचनक १. २. ३.	५१३६०	यामुन ३.	३१२४२	युग्य १.	१११५०
यज्ञ १.	३१६१६३	यथास्वम् ४.	८१८११४	यवक्य १. २. ३.	३१८११९	याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२११५६	" १. २. ३.	३१६१५८
" १.	३१६१८२	यथेप्सित १. २. ३.	४१३१०४	यवक्रीत १.	३१६१५६	याचित ३.	३१८१२	यायजूक १.	३१६१७५	" ३.	३१७१२३
" १.	६११३७	यथोद्धत १. २. ३.	५१३२१	यवक्षार १.	३१८१२७	याच्ना २.	३१३१२०	यायावर १.	३१६१४२	युग्माशनप्रसेव १.	३१७११५
यज्ञकर्मार्ह १. २. ३.	५१३११७	यद् १. २. ३.	५१३२१	यवचूर्णक १.	४१३६८	याजक १.	३१६१७८	" १.	३१६१५६	युज १. २. ३.	५१३२३
यज्ञकृत १.	३१६१८६	" १. २. ३.	८१७११	यवद्वीप ३.	३१११३	याजन ३.	३१६१६३	याव १.	४१३१५३	युजिन १.	११२४८
यज्ञजागर १.	३१३२२७	यदा ४.	८१८१५	" ३.	३१११५	" ३.	३१८१७	यावक ४.	३१८१५३	युजान १.	७११६३
यज्ञत्यागिन् १.	३१६१७७	यदि ४.	८१८११४	यवन १ ब.	३१५१२	" ३.	३१८१७	यावत् ४.	८१७२८	युत १. २. ३.	६१३१३
यज्ञपूरुष १.	११११२	यदृच्छा २.	५१२१६	" १.	३१५१७२	याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावतिथ १. २. ३.	५११२०	युतक ३.	५१११५
यज्ञलिह १.	३१६१७८	यज्ञविष्य १. २. ३.	५१३३०	" १.	३१८१२३	याज्ञिक १.	३१८१५२	यावनाल १.	३१८१५६	" १. २. ३.	७१५६७
यज्ञवराह १.	३१११८	यद्धव १. २. ३.	५१३३०	" ३.	३१८१२३	याज्य १.	८१९१४४	यावशादन १.	३१५१८	युद्ध ३.	३१७२०३
यज्ञवह १.	११३१६	यन्तृ १.	३१७१३८	यवनिका २.	४१३१२४	याज्या २.	३१६११२	यावशूक १.	३१८१२८	युद्धवान १.	२१३१०
यज्ञाग्नि १.	११२२३	" १.	६११३७	यवनेष्ट ३.	३१२३०	याज्यापुट १.	३१६११२	यावत ३.	३१७८९	युध २.	३१७१५६
यज्ञाङ्ग १.	३१३१२	यन्त्र ३.	३१७१५०	" १.	३१३२०७	यात ३.	३१७८९	याष्टीक १. २. ३.	३१७१४४	युधिष्ठिर १.	११२१५
यज्ञाढ्य १.	३१६१५५	यन्त्रक ३.	३१९१८	यवपिष्टक १.	४१३७२	यातना २.	११२३९	यास १.	३१३१२६	युवति २.	४१३१८
यज्ञिय १.	२११९२	यन्त्रगृह ३.	४१३२४	यवफल १.	३१३२१५	यातयाम १. २. ३.	८१३११	युक्त १. २. ३.	५१३१०३	युवन् १. २. ३.	५१३३३
" १.	३१३२२९	यन्त्रमुक्त ३.	३१७१९५	यवफलक १.	८११५५	यातु ३.	११२४०	" १. २. ३.	६१३१३	युष्मद् १. २. ३.	८१९३९
" १. २. ३.	५१३११७	यम १.	११२३३	यवमत्त १. २. ३.	५१३११९	यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	यू १.	४१३१००
यज्ञोपकरण ३.	३१६१९४	" १.	३१६२०९	यवस १.	४१३७४	यातुधान १.	११२४१	" ३.	३१७१३०	यूक १.	४१३३८
यज्ञोपवीत ३.	८१३१७	" १.	३१७१७	यवागू २.	४१३८०	यातुगति १.	११२४३	" १.	५१११५	यूथ १. ३.	५१३१४
यज्ञोपवीतक ३.	३१६२०	" १. २. ३.	३१७१२२	यवाग्र १.	५१३४३	यातृ २.	४१३३७	" १. ३.	६१५६६	यूथनाथ १.	३१७१६७
यज्वन् १.	३१६१७६	" ३.	५१११५	यवाग्रज १.	३१८१२८	यात्य १.	११२३८	युगकीलक ३.	३१८२८	यूथप १.	३१७१६७
यज्वर १.	७११६२	" १.	५१२३०	यवानिका २.	३१८१०२	यात्रा २.	५१२१०	युगच्छद १.	३१३१७७	यूथिका २.	३१३१८२
यत ३.	३१७१८९	" १. २. ३.	६१५६५	यवान्वित १. २. ३.	५१३११९	" २.	६१२२९	युगद्वय ३.	२११९२	यूप १. ३.	३१६१०३
" १. २. ३.	५१३३२	यमक ३.	४१३९९	यवास १.	३१३१२६	यादस् ३.	४१३४०	युगन्धर १ ब.	३११७९	यूपमध्य ३.	३१६१०४
" १. २. ३.	६१३१२	यमभगिनी २.	११३६२	यविष्ठ १.	११२३६	यादसाध्याथ १.	११२४६	" १.	३१७१३२	यूपपात्र ३.	३१६१०४
यतः (-स्) ४.	८१८२१	यमरथ १.	३१३१०	यवीयस् १. २. ३.	५१३४३	यादसाप्ति १.	८११५७	युगपत् ४.	८१८१६	यूष १. ३.	४१३१००
यतस्तु १.	३१६१७८	यमराज १.	११२३४	यवीयस ३.	३१२३३	यादस्पति १.	८११५८	युगपार्श्वग १. २. ३.	३१३१५६	यूषज ३.	३१८१२८
यति १.	३१६१६०	यमल ३.	५१११५	यव्य १. २. ३.	३१८११९	यान ३.	३१७१६			योग १.	३१६२०८

[योग]

योग १.	६११४८
योगपट्ट १.	३१६१५०
योगवाही २.	३१८१२९
योगाजि १.	३१६१५५
योगावाप १.	३१७१८८
योगिन् १.	३१३३६
" १.	३१८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३१६१५५
योगेष्ट ३.	३१२२९
योग्य १.	२११३९
" ३.	३१७१२४
" ३.	३१८१४५
" १. २. ३.	६१५६७
" १. २. ३.	३१५६७
योग्या २ व.	२११४१
" २.	३१६१४६
" २.	३१७१९५
" २.	३१८१९४
" २.	६१५६७
योग्यारथ १.	३१७१३०
योजन ३.	३११६३
" १.	३१३२१८
योजनगन्धा २.	८१२१२
योजनबल्ली २.	३१३१४५
योजना २.	३११६३
योत्र ३.	३१८१८८
योधन ३.	२१४१०
योनि १. २.	४१४६१
" १. २.	६१५६६
योषा २.	४१४४
योषित् २.	४१४४
यौतक ३.	३१६१५५
" १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३१६१५५
यौध १.	३१७१३९
यौधक १.	३१७१३९
यौधेय १ व.	३११२८
यौन ३.	३१६१२
यौनिक १.	११२५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४१४५३
" ३.	५११८
यवागुली २.	४१३७८
यवागुल्या २.	४१४७८
र	
रहस्य ३.	११२५५
रक्त ३.	३१२२४
" १.	३१३४०
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८११६
" ३.	४१४१६
" ३.	४१४१०५
" १.	५१३११
" १. २. ३.	६१४१४
रक्तक १.	३१३१८५
रक्तकुण्डल ३.	४१२४४
रक्तग्रह १.	११२४१
रक्तचन्दन ३.	८१६२३
रक्ततेजस् ३.	४१४१०७
रक्तदन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२१३१४
रक्तपाणिक ३.	४१२३५
रक्तपीतासितश्चेत् १.	
रक्तपुच्छिका २.	५१३१६
रक्तपुष्प १.	४११२९
" १.	३१३३९
रक्तफला २.	३१३१४७
रक्तभव ३.	४१४१०७
रक्तशालि १.	३१८३२
रक्तशीर्षक १.	३१८१०९
रक्ता २.	३१३१५३
रक्तात् १.	७१२६३
रक्ताङ्ग १.	३१३१५
रक्तिका २.	३१३१७९
रक्तस् ३.	११२४०
रक्तस्सभ ३.	८१९२०
रक्तित १. २. ३.	५१४१००
रक्तोघ्न १.	३१८११
" ३.	४१३८२

[रट्टास]

रङ्गुटी २.	३१८१४४
रङ्ग ३.	३१२३०
" ३.	३१२३१
" १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३१९१२
" १.	३१९६३
रङ्गावतारिन् १.	३१९६३
" १.	३१९६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३१९६६
रचना २.	४१३१५८
" २.	५१२१४
" २.	५१२३९
रजःपुष्प १.	३१३२२३
रजःपूता २.	३१४४२
रजक १.	३१५३८
" १.	३१५४५
रजत ३.	३१२२३
" १. २. ३.	७१५७०
रजताद्रि १.	३१२५
रजनी २.	२११५६
" २.	३१८८९
" २.	७१२२०
रजस् ३.	३१२३२
" ३.	३१३१६२
" ३.	३१८२५
" ३.	६१२२८
" ३.	८१५३६
रजसानु १.	८११३७
रजस्वल १.	३१४९
रजस्वला २.	४१४१५
रज्जु २.	३११५८
" २.	३१९३०
" २.	८१२३
रज्जुदाल १.	३१३५४
रज्जन ३.	३१८११५
" ३.	३१९६०
रज्जनवल्ली २.	३१३१६४
रज्जनी २.	३१२११
" २.	३१३११०
" २.	३१३२११
रट्टास १.	३१५१३

[रण]

रण ३.	३१७२०४
" १. ३.	६१५६८
रणरणक १.	३१६१७९
रणसङ्कुल ३.	३१७२१७
रण्डा २.	३१३११३
" २.	६१२३१
रत्त ३.	४१३१७०
रत्तद्विक ३.	८१३११
रत्तार्थिनी २.	४१४११
रत्ति २.	३१३१७८
" २.	३१९७६
" २.	४१३१७०
रत्तिपति १.	१११२८
रत्तेमदा २.	११३११
रत्न ३.	३१२३६
" ३.	६१३२६
" ३.	८१३१७
रत्नगर्भ १.	११२५८
रत्नगर्भा २.	३११४
रत्नवर ३.	३१२२०
रत्नसू २.	३११४
रत्नहस्त १.	११२५८
रत्नाकर १.	४११११
रत्नि १.	३११५४
रथ १.	२१३९
" १.	३१३३१
" १.	३१७१२४
रथकट्या २.	५१११३
रथकार १.	३१५४८
" १.	३१५७५
" १.	३१५७५
" १.	३१५९०
" १.	३१९३४
रथकारक १.	३१५३३
रथगरुत १.	३१६१०७
रथगर्भक १.	३१७१२७
रथगुप्ति २.	३१७१३२
रथनीड १.	३१८१३२
रथपद ३.	३१७१३४
रथरेणु १. २.	५११४२

शब्दानुक्रमणिका

रथवारक १.	३१५२५
(रथकारक)	
रथाङ्ग ३.	३१७१३४
" ३.	३१७१३५
रथायुधक १.	३१७१७४
रथाश्मन् १.	३१५२०
रथिक १. २. ३.	३१७१४०
रथिन् १. २. ३.	३१७१४०
रथिन १. २. ३.	३१७१४०
रथ्य १. २. ३.	६१४१४
रथ्या २.	४१३१६
" २.	५१११३
रथ्यावाद १.	२१४२७
रद १.	४१४७८
" १.	६११५०
रदन १.	४१४७८
रदिन् १.	३१७६०
रन्तिदेव १.	११११४
रन्धक १. २. ३.	४१३१०८
रन्धन ३.	५१२३२
रन्धित १. २. ३.	४१३१९३
रन्ध १.	३१५७
" ३.	४११२
" ३.	८१६१९
रभस १.	५१४१४४
" १.	७११६३
रभू १.	३१७२९
(रत्तु)	
रमणी २.	४१४६
रमति १.	८११६३
रमा २.	१११३६
रम्भण ३.	२१४५
रम्भा २.	२१४५
" २.	३१३१७३
" २.	३१३१७४
" २.	३१६११८
रम्भित ३.	२१४५
रम्यक ३.	३११८
रय १.	११२५५
रयि १. २.	८१९२७
रयक १.	४१३१२९

[रसगर्भक]

रव १.	२१४४
रवण १.	२१४१
" ३.	३१२२९
" १.	३१३१६५
(द्रवण)	
" १.	३१४६७
" १. २. ३.	५१४४८
" १. २. ३.	७१५७०
रवा २.	३१३९९
रवि १.	२११४०
रविग्रावन् १.	३१२३७
रविध्वज १.	२११५५
रशना २.	४१३१४६
रशिम १. २.	२१११६
" १. २.	६११५०
" १. २.	८१९२५
रश्मिकलाप १.	४१३१३९
रश्मिमालिन् १.	२१११३
रस १.	४१४२
" १.	३१२१५
" १.	३१२४४
" १.	३१३१४९
" १.	३१३१५१
" १.	३१३२०५
" १.	३१३३०
" १.	३१८१११
" १.	३१९७४
" १.	३१९७५
" १.	४१३१००
" १.	४१४१०४
" १.	४१४११४
" १.	५१३२
" १.	५१३४५
" १.	६१३४९
रसक १.	३१२३५
" १.	३१६१९८
" १.	३१८१२८
" १.	४१३८७
रसकोप १.	५१३४०
रसक्रिया २.	४१४१४२
रसगर्भक ३.	३१२४१

[रसज्ञ]

वैजयन्तीकोषः

[राञ्जान्त]

रसज्ञ १.	३१२३५	रागशालव १.	५३३३१
रसज्ञा २.	४११९०	रागसूत्रक ३.	५११६४
रसज्येष्ठ १.	५३३२५	राघव १.	१११२०
रसतेजस ३.	४११०५	राङ्गव १. २. ३.	४३३११८
रसन ३.	७५६८	राज १.	३१७१
रसना २.	४११९०	राजक ३.	५११८
रसनेत्री २.	३२१११	राजकर्कट २.	३३३१६७
रसयोनि १.	३१८१३०	राजकोशातकी २.	३३३१६१
रसवती २.	४३१५४	राजजम्बू २.	२३३१९३
रसवर १.	३२३३५	राजदन्त १.	४११८९
रसविद्ध ३.	३२३२२	राजधानी २.	४३३१४३
रसा २.	३११२	राजन् १.	३१७१
" २.	३३३१३१	" १.	६११५०
" २.	३३३१८१	" १.	८१११२
" २.	४११२	राजन्य १.	३१७१
रसागोह १.	१३३१०	राजन्यक ३.	५११८
रसाग्र १.	४३३१७७	राजन्वत् १. २. ३.	३११४६
रसाञ्जन ३.	३२३१४१	राजपटोल १.	३३३१६६
रसाढ्य १.	३१८१२८	राजपुत्री २.	८१२८
रसातल ३.	४१११	राजफल १.	३३३१६६
" १.	४३३११०	राजवीजिन् १.	४११५०
रसादान ३.	४३३१०३	राजभृङ्ग १.	२३३२७
रसायन ३.	३१८१४८	राजमार्ग १.	४३३१६
रसाल १.	३३३१४१	राजमाष १.	३१८१४६
" १.	४३३१९८	राजमुद्ग १.	३१८३८
रसिक १.	३१९१७७	राजराज १.	११२५७
रसोज्ज्वल ३.	४१११०५	राजरीति २.	३२३२६
रसोन १.	३३३२०४	राजवंश्य १.	४११५०
रहस् ३.	५१११२०	राजवत् १. २. ३.	३११४६
" ३.	६३३२७	राजवर्त १.	४३३११९
रहस्य १. २. ३.	५१११२०	राजवल्ली २.	३३३१६४
राक १.	६११५१	राजवाह्य १.	३१७३९
राका २.	२११७३	राजविहङ्गम १.	२३३२९
" २.	४११८	राजवृक्ष १.	८१२०
राक्षस १.	१२१४०	राजवेश्मन् ३.	४३३३०
राक्षसघ्न १.	१११२१	राजसर्षप १.	३१८१४२
राग १.	३३३१८१	" १.	५११४२
" १.	३१९११४	राजसी २.	२११६०
" १.	६११५१		
रागवत् १.	३३३२१७		

[राञ्ज]

शब्दानुक्रमणिका

[रूप्य]

राञ्ज १.	२११८३	रिष्टि २.	३१७१५९	रुद्रपुष्प ३.	३३३१९५
राञ्जा २.	२११४०	रीढा २.	३३३१७२	(ओदुपुष्प)	
राञ्ज १.	१११२०	रीण १. २. ३.	५१११०९	रुद्रव्रतितन् १. २. ३.	३३३१३१
" १.	१११२०	रीति २.	३३३२५	रुद्रसख १.	१२१५८
" १.	१११२२	" २.	५२३२	रुद्रा २ व.	२१२२१
" १.	३३३३२	" २.	६२३०	रुद्राक्ष १.	३३३३७९
" १. २. ३.	६३३१४	रीतिपुष्प ३.	३३३३३	रुद्राणी २.	१११५८
रामक १.	३१५७९	रुक्म ३.	३३३१८	रुधिर १.	२११३२
" १.	३१५८२	" ३.	६३३२७	" ३.	४११०५
रामठ ३.	३१८१३१	" १.	८३३१०	रुमा २.	३२३१०
रामदुती २.	३३३१०९	रुम्भेद १.	४११३७	रुमाभव ३.	३१८१२१
रामपूग १.	३३३२१८	रुच् २.	२११२२	रु १.	३३३१४
रामभगिनी २.	१११६२	" २.	४३३१५०	रुवथ १.	७११६४
रामस्वस्त २.	१११६२	" २.	८२३१९	रुवु १.	३३३६५
रामा २.	४११६	रुचक १.	३३३३३	रुवुक १.	३३३६५
राम्भ १.	३३३१८	" ३.	३१८१२५	रुवती १. २. ३.	२१११८
रालि १.	८१११०	" १.	८११६४	रुष् २.	३३३१८३
रावण १.	१२३४२	रुचि २.	२११२२	रुपा २.	३३३१८३
रावणसूदन १.	१११२०	" २.	३३३३३२	रुच ३.	३३३३४
राशि १.	२११५०	" २.	३३३१८३	" १.	३३३१५
" १.	५११३	" २.	६३३१४	" ३.	३३३१४२
" १.	५२३५४	रुचि १.	३३३१४	" १.	५३३३
राष्ट्र ३.	३३३३	रुचित १. २. ३.	५३३१६	" १.	५३३१६
" ३.	३३३४८	रुचिर १. २. ३.	५३३३४	" १. २. ३.	५३३४४
" ३.	६३३६९	रुचिष्य ३.	३३३१२५	" १. २. ३.	६३३३३
राष्ट्रिका २.	३३३१०६	रुचु १.	३३३२८	रुचणीय १.	३३३१७७
राष्ट्रीय १.	३३३१०५	रुच्य १.	४३३३७	रुचणीया २.	३३३१६१
रास १.	३३३१७३	" १.	५३३३८	रुचवालुक ३.	३३३१३५
रासभ १.	३३३३५	" १. २. ३.	५३३३४	रुचस्वर १.	३३३३६
" १.	८३३५	रुज् २.	४३३३८	रुढ १. २. ३.	३३३१७७
रास्ना २.	३३३१८	रुजा २.	३३३३५	" १.	३३३१५१
राहु ३.	२३३३७	" २.	४३३३८	रूप ३.	३३३१०१
रिक्त १.	२३३७९	" २.	६३३२९	" ३.	५३३१
रिक्तक १. २. ३.	५३३८७	रुण्ड १.	३३३१०८	" ३.	५३३२
रिक्थ ३.	३३३७३	" १.	३३३२१६	" ३.	६३३२८
रिङ्ग १.	३३३३३६	रुण्डक १.	३३३२८	रूपजीवना २.	४३३२४
रिङ्गोल ३.	३३३३३६	रुत ३.	२३३४४	रूप्य ३.	३३३२३
रिङ्गोलन ३.	३३३३३६	रुदित ३.	३३३१८७	" ३.	३३३७४
रिपु १.	३३३४१	रुद्ध १. २. ३.	५३३९६	" १. २. ३.	६३३६८
रिरी २.	३३३२५	रुद्र १.	१३३३९	" ३.	८३३११
रिष्ट ३.	६३३२७	" १ व.	१३३८		

रूप्यमास]

रूप्यमास १.	पा११४४
रूप्यशतमान ३.	पा११६०
रूप १.	पा३१२९
रूपित १ २. ३.	पा१११३
रेक १.	पा११४६
रेखा २.	पा१२४४
" २.	पा१२३२
रेचक ३.	पा११५५
रेचनी २.	पा३१३८
रेचित १. २. ३.	पा१११८
" १. २. ३.	पा११२२
" ३.	पा११२९
रेटि २.	पा१२३२
रेणु १.	पा१२२५
" १. २.	पा११४२
" १. २.	पा१२२६
रेणुका २.	पा१२२५
रेतस् ३.	पा११११
" ३.	पा३१२७
रेफ १. २. ३.	पा११७५
रेभटि २.	पा३१२६
रेभण ३.	पा११२
रेरिहाण १.	पा११४४
रेवट १. ३.	पा११६९
रेवती २.	पा११५९
" २.	पा३११०९
" २.	पा३११८२
" २.	पा१२२०
रेवतीकान्त १.	पा११२३
रेवा २.	पा१२२६
रेशी २ व.	पा१२२०
रेशण ३.	पा११६
रेषा २.	पा११६
रै १. २.	पा११३८
रोक ३.	पा११२
" १. ३.	पा११६७
रोक्य ३.	पा१११०५
रोग १.	पा११३८
रोगहारिन् १.	पा११४३
रोगाख्य ३.	पा११९९
रोचक १.	पा३१२९

वैजयन्तीकोषः

रोचन १.	पा३१९१
" १. २. ३.	पा११४२
रोचना २.	पा१२२०
रोचनी २.	पा११११
" २.	पा३१९५
" २.	पा३१३८
" २.	पा३१२११
रोचिष्णु १. २. ३.	पा११४२
रोचिस् ३.	पा१११६
रोदन ३.	पा११८७
रोदनी २.	पा३१२५
रोदस २ द्वि.	पा११५
रोदसी २ द्वि.	पा११५
रोध १.	पा११८०
रोधस् ३.	पा१२३१
रोधोवक्त्रा २.	पा१२२२
रोपण १.	पा११७९
रोमकर्ण १.	पा११३१
रोमज ३.	पा३११७
रोमन् ३.	पा११७५
" ३.	पा११७७
रोमन्थ १.	पा११७५
रोमन्थन ३.	पा११७५
रोमश १.	पा३१७५
" १.	पा११६४
" १. २. ३.	पा११८
रोमशपुच्छक १.	पा११२७
रोमशी २.	पा११२७
रोमहर्ष १.	पा११८२
रोमहृत् ३.	पा१११४
रोमाङ्क १.	पा११८२
रोमाञ्च १.	पा११८२
रोमोद्गम १.	पा११८२
रोष १.	पा३१८३
" १.	पा१२४
रोषाण १.	पा३११९
" १. २. ३.	पा११७१
रोहणद्रुम १.	पा१११२
रोहणी २.	पा११२९
रोहिणी २.	पा११४४
" २.	पा११८६

[लक्ष्मणा

रोहिणी २.	पा१२२१
रोहिणीकान्त १.	पा११२४
रोहित् १.	पा११४४
" १.	पा११११
रोहित ३.	पा१२३३
" १.	पा३१४०
" १.	पा३११६
" १.	पा३१५६
" १.	पा३१११
रोहिताश्व १.	पा१२१५
रोहिन् १.	पा३१४०
रौच्य १.	पा३१६६
रौद्र ३.	पा११२२
" ३.	पा११७५
" १. २. ३.	पा११७९
रौद्री २.	पा११४९
" २.	पा११५८
" २.	पा३११२
" २.	पा११४४
रौमक ३.	पा११२१
रौरव १.	पा१२३७
रौहिण्य १.	पा११३७
रौहितक १.	पा३१४०
रौहिष १.	पा३१४०
" १.	पा३११६
" १. ३.	पा११७१
ल	
लकुच १.	पा३१७५
लक्ष १.	पा३१३५
" ३.	पा१११४
" ३.	पा११३२
" १. २. ३.	पा११६९
लक्ष्मण ३.	पा११२९
" ३.	पा१११४
" ३.	पा१२११
" ३.	पा१२२८
लक्षा २.	पा११३२
लक्ष्मण १. २. ३.	पा११५६
लक्ष्मणा २.	पा३१३३

[लक्ष्मन्]

लक्ष्मन् ३.	पा११२९
" ३.	पा३१२९
लक्ष्मी २.	पा१११६
" २.	पा११३६
" २.	पा३११९१
" २.	पा३११३
" २.	पा३११९
" २.	पा३११९
लक्ष्मीनिकेतन ३.	पा३१११४
लक्ष्मीपति १.	पा११३८
लक्ष्मीपुत्र १.	पा११३८
लक्ष्मीवत् १.	पा३१४२
" १. २. ३.	पा११५६
लक्ष्य ३.	पा१११४
लक्ष्यग्रह १.	पा१११०
लगणा २.	पा३१३९
लगुड १.	पा११२९
लगुडवैशिका २.	पा३१२१६
लग्न १.	पा११६८
लग्नक १. २. ३.	पा१११०
लघु १.	पा३१५३
" २.	पा३११६
" ३.	पा११०७
" १. २. ३.	पा११७६
" १. २. ३.	पा११२४
" १. २. ३.	पा१११५
लघुक १.	पा३१२९
लघुकाष्ठ १.	पा१११९
लघुग १.	पा११४८
लघुहस्त १. २. ३.	पा३१४९
लघ्वचरक १.	पा११५२
लङ्का २.	पा१२३२
लङ्कायिका २.	पा३११७
लङ्केश्वर १.	पा११४३
लङ्गन ३.	पा११२२
लङ्गनी २.	पा३१५३
लङ्गन ३.	पा११२३
" ३.	पा११३९

शब्दानुक्रमणिका

लङ्गन ३.	पा१२१२
लङ्गा २.	पा३११४
लङ्गाळ २.	पा३११४८
" २.	पा३११४८
लङ्गाशील १. २. ३.	पा११४०
लङ्गित १. २. ३.	पा११५१
लट् १.	पा३१५६
लडह १. २. ३.	पा११३५
लण्ड १. ३.	पा१११९
लता २.	पा३१७
" २.	पा३१६६
" २.	पा३१०४
" २.	पा३११७
" २.	पा३१८७
" २.	पा११३
लताकुश १.	पा३१२८
लताकोलि २.	पा३१७८
लताङ्कुर १.	पा३१२१९
लतापूग ३.	पा३१२१८
लतामारिष १.	पा३१५२
लतार्क १.	पा३१२०५
" १.	पा३१२०७
लताबृहती २.	पा३११०४
लब्ध १. २. ३.	पा११६४
लब्धवर्ण ४.	पा३१२५
लभ्य १. २. ३.	पा१११५
लम्पट १. २. ३.	पा११३६
लम्पा २.	पा११४६
लम्पाक १ व.	पा११२५
लम्बकर्ण १.	पा११६२
लम्बन ३.	पा३१३७
लम्बा २.	पा११४६
लम्बोदर १.	पा११५३
लम्भन ३.	पा१२२०
लय १.	पा३१२००
" १.	पा१११९२
" १.	पा१११२२
लयनालिक १.	पा३१२८
लल ३.	पा३१२९
ललना २.	पा११४४

[लस्तकग्रह

ललनाक्ष १.	पा३१३४
ललन्तिका २.	पा३१३३६
लकाट ३.	पा११९६
ललाटिका २.	पा३१३३६
" २.	पा३१३४९
ललाम १. २. ३.	पा११७२
ललामक ३.	पा३११५५
ललामन् १. ३.	पा११७२
ललित ३.	पा३१९६
लल्लर १. २. ३.	पा१११५
लव १.	पा११५३
" १.	पा१२२९
लवङ्ग ३.	पा३१०३
लवण ३.	पा३१२६
" १. २. ३.	पा३१९३
" १.	पा३१२६
" १.	पा३१२७
लवणक्रीतक १.	पा३१८८
लवणलायिका २.	पा३१११६
लवणाकर १.	पा३११०
लवणापण १.	पा३१३४
लवणोत्कट १. २. ३.	पा३१२३
लवणोद् १.	पा३११०
लवन १.	पा१२२९
लवली २.	पा३१२६
लवित्र ३.	पा३१३०
लवेटिका २.	पा३१३१
लश १.	पा३१११
लशुन ३.	पा३१२०४
" ३.	पा३१२०६
लषित १. २. ३.	पा११९६
लस ३.	पा३१११५
" १.	पा११३५
" १.	पा३१५४
लसिका २.	पा१११८
लसीका २.	पा१११८
लस्तक १.	पा३११७७
(लस्तक)	
लस्तकग्रह १.	पा३११८९

लहरी]

लहरी २.	४२११४
लाक्षा २.	४३११५३
लाङ्गल ३.	३८१२७
लाङ्गलषद्धति २.	३८१३०
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०
लाङ्गली २.	३३११९७
लाङ्गूल ३.	३११४७४
" ३.	७३१२९
लाङ्गूली २.	३३११३६
लाज १ ब.	४३१६८
लाजमण्ड १.	४३१७९
लाजि २.	३११२४
लान्छन ३.	२११२९
लाङ्गीक १.	३११३
लातक १.	३३११८९
लाभ १.	३८१७०
लामज ३.	३३१२३१
लाल १.	३३१३६
" ३.	६३१२९
लालक १. २. ३.	२१११५
लालन १.	३८११११
लालस २. ३.	५११३६
लालसा १. २. ३.	७११७२
लाला २.	३३१२६
" २.	४१११२०
लालाटिक १. २. ३.	८११११
लालिका २.	३११११२
लाव १.	२३१४०
लावण १.	३१११०
लावली २.	३३१२६
लास्य ३.	३११७३
लिकुच १.	३३१७५
लिङ्गा २.	४११४२
लिङ्गु १.	३३१११
" १.	६११५१
लिङ्ग ३.	५१११७
" ३.	६३१३०
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३३११६३
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३३११९
लिङ्गशोफ १.	४११३२

वैजयन्तीकोषः

लिच्छिवि १.	३११५४
लिपि	३११२४
लिपिकर १.	३११२३
लिपिसन्नाह १.	३११५४
लिप्ता १. २. ३.	६१११५
लिप्तिका २.	२११५३
लिप्ता २.	३३११८०
लिप्ता १. २. ३.	५११३५
लिवि २.	३११२३
लिष्ट १. २. ३.	५१११५
लिह् १.	११२५१
लीला २.	३११८८
" २.	३११९२
" २.	३११९३
" २.	३११९७
" २.	६१२३३
लीसुष १.	५३१३८
लुङ्ग १.	३३१३३
लुञ्जना २.	२११२६
लुठित १. २. ३.	३१११०७
लुण्ठित १. २. ३.	५११११६
लुब्ध १. २. ३.	५११३५
लुब्धक १.	३११३८
लुम्बिका २.	३११३५
लुलाय १.	३१११९
लुलित १. २. ३.	५१११०३
लुष १.	३११३१
(युष)	
लुस्त ३.	३१११७७
लृत् १. २. ३.	५११४४
लृता २.	४११३४
लृतात १.	४११३६
लृतापट्ट १.	४११३५
लृतिका २.	४११३४
लृन १. २. ३.	४१११०२
लृनदोस् १.	१११५२
लृमन् ३.	३११७४
लेख १.	१११३
" १.	३१११२

[लोपामुद्रा]

लेखक १.	३११२३
लेखनी २.	३१११३
लेखा २.	३११२४
" २.	४३११४९
" २.	५११२४
लेख्य ३.	३१११२
लेह १.	११२५१
लेप १.	४३११०२
" १.	६११५२
लेपकार १.	३१११४
लेप्य ३.	३१११३
लेलिहान १.	४१२५
लेश १.	२११५४
लेष्टु १.	३११२४
लेहन ३.	४३११०३
लेह्य ३.	४३१९१
लैङ्गिक १.	३१११६३
लैङ्गधूम १.	३११८०
लोक १.	३११२०६
" १.	६११५२
लोकजित् १.	१११३३
लोकपाल १.	२१११४
" १.	८११३८
लोकान्ताद्रि १.	३११३
लोकालोक १.	३११३
लोचक १. २. ३.	३११३४
" १. २. ३.	७११७३
लोचन ३.	४११९४
लोचना २.	२११२८
लोचमस्तक १.	३१११०२
लोचमालक १.	३३११९९
लोठन ३.	५११४२
लोठना २.	२११२८
लोठभू २.	३११११२
लोत १.	३११८७
लोघ्न १.	२११८७
" १.	३३१५२
" १.	३३१५२
लोपा २.	२३१२५
लोपामुद्रा २.	३३११५३

लोपायिका]

लोपायिका २.	२३१२५
लोपास १.	३११३९
लोपत्र ३.	३११५८
लोभन ३.	३२११९
" १.	३८१३६
लोमन् ३.	४११९७
" १. ३.	८११३१
लोमश १. २. ३.	५११८
लोमशी २.	३८११००
लोल १.	३११२०६
" १. २. ३.	५११३६
" १. २. ३.	६१११६
लोलम्ब १.	२३१४२
लोलिका २.	३८१५८
लोलुप १. २. ३.	५११३६
लोलुभ १. २. ३.	५११३६
लोष्ट १. ३.	३८१२४
लोष्टभञ्जन १.	३८१२९
लोह ३.	३११३३
" ३.	३११३६
" १. ३.	६११६९
लोहकारक १.	३१११६
लोहकार्पापण १.	५११३९
लोहज ३.	३११२९
लोहदण्ड १.	३१११६७
लोहपृष्ठ १.	२३१३१
लोहमात्र १.	३१११५६
लोहमारक १.	३३११५६
लोहमालक १.	३११३६
लोहल १. २. ३.	५११४७
लोहशृङ्खल १.	३११८५
लोहसंश्लेषक १.	३११३०
लोहाख्य ३.	३८१८०
" १.	३८११०७
लोहाभिसार १.	३११२००
लोहित १. २.	३८११२६
" १.	४११४३
" ३.	४११०५
" १.	५३१११
लोहितक ३.	३३१३९

शब्दानुक्रमणिका

लोहितचन्दन ३.	३८१११६
लोहिता २.	१२१३०
लोहिताक्षक १.	४१११५
लोहिताङ्ग १.	३११३१
लोहिताहि १.	४१११२
लोहिनीक ३.	५११४७
लोह्य १.	३१११७
लोह्य ३.	३११२६
(लोभ्य)	
लोह ३.	३११३३
व	
व ४.	८१११५
वंश १.	३३१११
" १.	३३१२१४
" १.	३३१२२६
" १.	३१११२५
" १.	४११४९
" १.	४११६६
" १.	६११५२
वंशक ३.	३८११०७
वंशज १.	४११५०
वंशपत्र ३.	३२११४
वंशरोचना २.	३८१९०
वंशवर्ण १.	३८१४३
वंशिक १.	३११६१
" १.	३११२३
" ३.	३८११०७
वंशिका २.	३१११२५
वंश १-	४११५०
वंश्या २.	३८१५०
वकुल १.	३३१२६
वक्तव्य १. २. ३.	८१११५
वचत् १. २. ३.	५११४५
वचन ३.	४११८६
वचनपट्ट १.	३१११४
वक्र १.	२११३६
" १.	४११९१
" १. २. ३.	५११२३
वक्रकील १.	३११८५
वक्रदंष्ट्र १.	३११५

[वञ्चक]

वक्रपद ३.	४३१११९
वक्राख्य ३.	३११३१
वक्राङ्ग १.	२३१३६
वक्रोष्ठक १. २. ३.	३११८३
वचश्छद् १.	३१११५३
वचस् ३.	४११६८
वचसिज १.	४११६८
वङ्कित १.	४१११५५
वङ्कण १.	४११५९
वङ्ग १ ब.	३११३१
" ३.	३११३१
वङ्गजीवन २.	३११२४
वङ्गसेनक १.	३३११५६
वचन ३.	२११२१
" ३.	२११३४
वचनेस्थित १. २. ३.	५११४९
वचस् ३.	२११२१
वचा २.	३३११९७
वचाच्छद् १.	३३११२१
वज्र १. ३.	१२११३
" १. ३.	२३१३६
" १. ३.	३३१३९
" ३.	३३१२०२
" १. ३.	३३११४६
" १. ३.	६११६८
" १. ३.	८११३
वज्रदक्षिण १.	१२१७
वज्रधारण ३.	३११२२
वज्रनिषेध १.	२११३६
वज्रपाणि १.	१२१५
वज्रपुष्प ३.	३८१४०
वज्रा २.	३३१९७
वज्रांशुक ३.	४३१११९
वज्राभिषवण ३.	३३११४७
वज्रासन ३.	३३१२१८
वज्रिन् १.	१२११
वज्री २.	३३१९८
वञ्चक १. २. ३.	५११२४

[वक्षक]

वक्षक १. २. ३.	७५१७४
वक्षति १.	१२११८
वक्षथ १.	७५१६४
वक्षन ३.	५२१३५
वक्षुल १.	२३१११
" १.	२३१२६
" १.	३३१३१
" १.	३३१३०
" १.	३३१३६
वक्षुला २.	३३१३५
वट १.	३३१२७
" १.	३३१५७
" १. २. ३.	३३१३०
" १. २. ३.	८११३७
वटक ३.	५११४८
वटाश्रय १.	१२१५६
वटी २.	३३१३०
" २.	८११३७
वटु १. २. ३.	५११३
वटुकृति २.	३३१९
वडबा २.	३३१७०७
" २.	४११२६
" २.	७२१२२
वडबामुख ३.	४१११
" १.	८११५५
वणिग्गृह ३.	४१३३४
वणिज् १.	३३८७२
यणिजा २.	३३८३
वणिज्य ३. २.	८११३२
वणिज्या २.	३३८३
वण्ट १.	५२१७
वण्टफ १.	३३८३०
वतंस १.	४३११५४
" १.	८११५९
वत्स १.	२११९१
" १.	३३३७३
" १.	३३४५१
" १. २. ३.	५११२
" १. २. ३.	६५७३
वत्सकामा २.	३३४४७
वत्सतर १.	३३४५४

वैजयन्तीकोषः

वत्सनाभ १.	१११२४
वत्सर १.	२११९०
वत्सरान्ता ३.	२११७७
वत्सल १. २. ३.	५१११८
वत्सला २.	३३१४७
वत्सादनी ३.	३३१३२
वत्सीय १. २. ३.	३३१२८
वद १. २. ३.	५११४५
वदन ३.	४११८६
वदान्य १. २. ३.	७११२६
वदाल १.	४११४३
वदावद १. २. ३.	५११४५
वध १.	३३७२११
" १. २. ३.	६५७५
वधरत १. २. ३.	३३१११
वधस्थान ३.	३३१३७
वधा २.	३३११४९
वधिर. १. २. ३.	५११३३
वधू २.	४११४
" २.	४११७
" २.	४१३५
" २.	४१३६
" २.	४१३६
वधूटी २.	४११९
वधोद्यत १. २. ३.	
वन ३.	३३११
" ३.	४२१२
" ३.	६३३१
वनकोद्रव १.	३३८५५
वनगव १.	३३४३३
वनच्छाया १.	३३४६३
वनज १.	२३३४१
" ३.	४२३६
वनतक्तिका २.	३३३३०
वनद्रुम १.	३३८१०८
वनन १.	३३४११
वनप्रिय १.	२३३२७
वनमाय १.	३३८१०८
वनमालिन् १.	१११२५
वनमुद्ग १.	३३८३८

[वमति]

वनस्पति १.	३३३६
" १.	८११४२
वनायुज १.	३३८८५
वनालु १.	३३३१५०
वनाश १.	३३८५२
वनिता २.	४११४
" २.	७२१२५
वनी २.	३३३१
वनीपक १. २. ३.	
	५११६०
वनेवासिन् १.	३३१२४
वनोद्भवा २.	३३११८४
वनौकस् १.	३३४४०
वन्दन ३.	३३३३९
वन्दनमाला २.	३३१५९
वन्दा २.	३३३८४
वन्दाक १.	३३३८४
वन्दार १. २. ३.	५११४३
वन्दिन् १.	३३५७८
" १.	३३५८१
" १.	३३३३०
वन्दीक १.	१२१७
वन्ध्य १. २. ३.	३३३८
वन्ध्या २.	३३४४७
वन्थ १.	३३३३३
" ३.	४२३६
वन्था २.	३३३१६१
" २.	५१११४
वपन ३.	३३३४
" ३.	३३१२६
वपनी २.	४३३२५
वपा २.	४११२
" २.	६२३३३
वपुस् ३.	६३३३०
" ३.	८३३१७
वप्तु १.	४११२९
वप्र १. ३.	३३२७
" १. ३.	३३८२६
" १. ३.	४३३१३
" १. ३.	६५७९
वमति १.	८१११०

[वमथु]

वमथु १.	३३७८२
" १.	४११२६
" १.	८११३३
वमि १.	१२११८
" २.	४११२६
वम १. २. ३.	४१३८
वयस् ३.	४११५३
" ३.	४११५३
" ३.	६३३३०
वयस्य १. २. ३.	३३७४३
वयस्या २.	३३११२
" २.	४११२५
वयस्स्थ १. २. ३.	५११३
वयस्स्था २.	७५७८
वर १.	२३३१८
" ३.	३३१५४
" ३.	३३३५४
" १.	३३३१५२
" ३.	३३३१९९
" १.	३३८११०
" ३.	३३८११७
" १.	३३८१२७
" ३.	४११११
" १. २. ३.	५११६४
" १. २. ३.	६५७२
वरक १.	३३८३८
" १.	३३८५४
" १.	४३३१२७
वरट १. २.	८११२६
वरटा २.	२३३८
" २.	२३३४६
वरण ३.	२११६३
" १.	३३३४१
" १.	४३३१४
वरण्ड १.	४३३६५
" १.	४११२५
वरत्रा २.	३३७८४
" २.	३३१४४
वरनिमन्त्रण ३.	३३३५६
वरप्रदा २.	३३३१५३
वरयात्रा २.	३३३५६

शब्दानुक्रमणिका

वरयितृ १.	४१३७
वररुचि १.	३३१५८
वरला २.	२३३८
वरवर्णिनी २.	८२१३३
वरवाहन १ द्वि.	१३३५
वरा २.	३३१०५
" २.	३३१७९
" २.	३३३२३
" २.	३३३२३
वराङ्ग ३.	३३१०४
" ३.	७३२९
वराङ्गना २.	३३३२४
वराङ्गा २.	३३४४५
वराट १.	३३३३०
वराटक १.	४११५७
" १.	४२१४५
वराणक १.	३३५५०
" १.	३३३५५
वराधि १.	३३३३९
वरान्तक १.	१३३६
वराभ १.	३३३६१
वराम्ल १.	३३३३३
वरारोहा २.	३३३१८४
" २.	३३३१९९
" २.	४१३१२
वरार्गल १.	३३३७९
वराल १.	५३३१४
वरालक ३.	३३८१०३
वराला २.	२३३८
वराश्रि १.	५३३२८
वरासि २.	४३३२६
वराह १.	३३३५
वराहकन्द १.	३३३३१०
वराहकर्णक १.	३३७१६७
वराहद्वीप ३.	३३३१४
" ३.	३३३१८
वरिवसित १. २. ३.	
	५११०५
वरिवस्या २.	३३३३८
वरिष्ठ १.	२३३३५
" ३.	३३३२५

[वर्णिनी]

वरिष्ठ १. २. ३.	७३२५
वरीयस् १. २. ३.	
	७३२६
वरुट १.	३३५५५
वरुण १.	१२३४५
वरुणकाष्ठिका २.	
	३३३१०८
वरुणकृच्छुक ३.	३३३१४१
वरुणग्रह १.	४३३३४
वरुणप्रिया २.	१२३४६
वरुणावास १.	४२३११
वरुथ १.	३३७३३२
वरुथिनी २.	३३७५५
वरेणुक १.	३३८३१
वरेण्य १. २. ३.	५११६३
वरेन्दी २.	३३३२१
" २.	३३३३०
वरोत्कट १.	३३४४
वरोत्पल ३.	४२३३५
वर्ग १.	५११४
" १.	५१३६
वर्चस् ३.	६३३३१
वर्चस्क १.	४३३१९
वर्जन ३.	५२३४०
" ३.	७३३२९
वर्ण १. ३.	२३३२१
" १.	३३५२
" १.	४३३१५६
" १. २. ३.	६५७०
वर्णक ३.	३३३५६
" ३.	४३३४७
" १. २. ३.	७३७९
वर्णतर्णक १. २. ३.	
	८१३३२
वर्णन ३.	५२३३९
वर्णा २.	३३८४९
वर्णि १.	८१११०
वर्णित १. २. ३.	
	५१३०६
वर्णिन् १.	३३३७
वर्णिनी २.	३३३२१२

वर्णिलिङ्गिन्]

वैजयन्तीकोषः

[वशीकार

वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.	३१६१९
वर्ण्य ३.	३१८११६
वर्तक ३.	३१३१४०
" ३.	३१३१२०१
" १.	७११६४
वर्तन ३.	३१४१२२
" ३.	३१७१११
" ३.	३१८११
" ३.	५१२१४१
" १. २. ३.	५१४१४०
वर्तनी २.	७१२१२१
वर्ति २.	४१३१६१
" २.	४१३१६१
वर्तिष्णु १. २. ३.	५१४१९०
वर्तुल १. २. ३.	५१४१८२
वर्तुलान्न १.	२१३१३०
वर्त्म ३.	४१४१९५
वर्त्मन् ३.	४१४१९५
वर्द्धी २.	३१९१४४
(वर्धी)	
वर्धकि १.	३१९१३४
वर्धकिहस्त १.	३१९१५६
वर्धन ३.	४१३११००
" १. २. ३.	५१४१४०
" ३.	७१३१२९
वर्धनी २.	४१३१५७
वर्धमान १.	४१३१५९
" १.	८१११४४
वर्धिष्णु १. २. ३.	५१४१४०
वर्धी २.	६१२१३४
वर्मन् ३.	३१७१५२
वर्मि १.	८१९११०
वर्मित १. २. ३.	३१७११४२
वर्य १. २. ३.	५१४१६३
वर्या २.	४१३१७
वर्ष १. ३.	२१११९१
" १. ३.	२१२१७
" १. ३. २. ३.	६१५७९
वर्षकारी २.	३१६१५२
वर्षण ३.	२१२१७

वर्षमुख १.	२१११८१
वर्षवर १.	३१७१२३
वर्षा २. ३.	२१११८९
" २.	३१३११७
वर्षाभी १.	४१६११८
वर्षाभू १. २.	७१५७७
वर्षाभूवी २.	३१३१४५
वर्षामिद १.	२१३१३७
वर्षीयस् १. २. ३.	५१४१४
वर्मन् १. ३.	६१५८१
वल १.	६११५३
वलन्न १.	५१२११५
वलन्न १.	४१४१६७
वलज १.	५१३१४०
" ३.	७१५७८
वलजा २.	३१८१६५
" २. ३.	७१५७८
वलन ३.	३१९१११
" १.	५१३१५२
वलना २.	२१४१२५
वलभी २.	४१३१३१
" २.	४१३१३९
वलय १.	११२१५१
" १.	३१३१२५
" १.	३१३१९९
" ३.	४१३१४४
वलयित १. २. ३.	५१४१९६
वलरिपु १.	११२१२
वलाङ्ग १.	२१११८७
वलाहक १.	२१२११
" १.	३१३१७८
" १.	४११११२
" १.	४११११७
वलाहका २.	३१७१९८
वलि २.	६१२१३३
वलिन १. २. ३.	५१४१७
वलिभ १. २. ३.	५१४१७
वलिर १. २. ३.	५१४१३३
वलीक ३.	४१३१३७
वलीनक १.	३१३१२३

वलीमुख १.	३१४१४०
" ३.	३१८११४१
वलक ३.	३१३११४
वलकल १. ३.	३१३११३
वलगन ३.	३१७१२२
वलगा २.	३१७११४
वल्लित १. २. ३.	३१७११८
" १. २. ३.	
वल्लु ३.	४१४१९५
" १. २. ३.	६१३१६
वल्लमीक १. ३.	३१११४८
वल्लकी २.	३१९११६
वल्लभ १. २. ३.	५१४१७०
" १. २. ३.	७१४१२५
वल्लरि २.	३१३१२०
वल्लरीका २.	४१४१९९
वल्लव १.	३१९१२८
" १. २. ३.	४१३१२२
वल्ला २.	३१८१४८
वल्लार १.	३१५१५२
वल्ली २.	३१३१३७
वल्लीपद ३.	४१३११९
वल्लूर ३.	४१२१३
" १. २. ३.	४१३१८९
वश १.	३१३१८३
" १.	३१५११९
" १. २. ३.	५१४१२८
" १. २. ३.	५१४१३२
" १. २. २.	६१५७१
" १. २. ३.	६१५७१
वशा २.	३१३१८६
" २.	३१४१४७
" २.	४१४१४
" २.	६१५७१
वशाकु १.	२१३१३
वशामख १.	३१५१२७
वशिक १. २. ३.	५१४१८७
वशिन् १.	४१११५४
वशीकार १.	३१६११७

वश्य]

शब्दानुक्रमणिका

[वातमृग

वश्य १. २. ३.	५१४१३२
वषट् ४.	८१८१३
वसति २.	७१२१२३
वसन ३.	४१३११६
वसन्त १.	२११८७
वसन्तघोष १.	२१३१२७
वसा २.	४१४११४
वसिक १. २. ३.	३१३१३४
वसित ३.	४१३११६
वसिष्ठ १.	३१६१५५
वसीर १.	३१८१७८
वसु १. ३.	११३१८
" १.	३११५४
" ३.	३१२१३६
" १.	३१३१५
" १.	३१३१९४
" १. २. ३.	३१८१११
" १.	३१८१३६
" ३.	३१८१७३
" १.	६१५७८
वसुदेव १.	१११२६
वसुधा २.	३११२
वसुन १.	३१६१८३
वसुन्धरा २.	३११२
वसुभट्ट १.	३१३१९४
वसुमती २.	३११२
वसुरेतस् १.	११२१६
वसुवह्निका २.	३१३१०८
वसुव्रत ३.	३१६१४९
वस्त ३.	४१३१७
(वस्न)	
वस्ति १. २.	४१३१३१
" १. २.	४१४१६६
वस्तिशुण्डक ३.	३१६१२७
वस्य ३.	४१३१७
वस्त्र ३.	४१३११६
वस्त्रकोश ३.	४१३१६३
वस्त्रग्रन्थ १. ३.	४१३१३०
वस्त्रधारणी २.	४१३१५३

वस्त्रान्त १.	४१३१३१
वस्न १.	३१८१७०
" ३.	३१८१२२
वस्वौकसारा २.	११२१५९
वह १.	११२१४८
" १.	६११५३
वहन ३.	३१७१२४
वहा २.	४१२१३
वहि १.	६११५३
वहिन्न ३.	३१७१२४
वहिन्रकर्ण १.	३१६१२६
वहिन १.	३१४१५२
वह्नि १.	११२१४४
वह्निक १.	५१३१८
वह्निशिख ३.	३१८१९१
वह्निसुत १.	४१४१०४
वा ४.	८१८१६
" ४.	८१८१५
वाक्पति १.	५१४१४
वाक्य ३.	२१४१२१
वाक्पट् ४.	८१८१३
वागीश १. २. ३.	५१४१४
वागुर १.	३१५१७
वागुरा २.	३१९१३९
वागुरिक १.	३१९१३८
वागूजी २.	३१३१०८
वागुद १.	२१३१२८
वागिमन् १.	२१३१२५
" १. २. ३.	५१४१४५
वाघत् १.	३१६१७८
वाच् २.	१११११
वाचंयम् १.	३१६१५०
वाचस्पति १.	२१३१३३
वाचाट १. २. ३.	५१४१४६
वाचाल १. २. ३.	५१४१४६
वाचाला २.	२१३१२०
वाचिक ३.	२१४१२५
" ३.	२१४१३६
" १. २. ३.	३१९१९९
वाचोयुक्तिपटु १. २. ३.	५१४१४५

वाच्य १. २. ३.	८१४१५
वाज १.	२१३१४९
" १.	३१७१८५
" १.	४१३१७६
वाजिदन्तक १.	३१३१०१
वाजिन् १.	६११५५
वाजिन ३.	३१६१९८
वाजिशाला २.	४१३१२१
वाञ्छा २.	३१६१७९
वाञ्छित १. २. ३.	५१४१९६
वाट १.	३१५१२१
" १. ३.	४१३१४४
" १. २. ३.	८१९१३७
वाटक १. ३.	४१३१५
वाटधान १.	३१५१५३
" १.	३१५१०१
वाटिका २.	३१३११७
वाटी २.	३१३१४
" २.	३१३१३०
" २.	८१९१३७
वाटवपुष्पी २.	३१३१२७
वाटवमण्ड १.	४१३१७९
वाटया २.	३१३१२७
वाटयाल १.	३१३१२८
" १.	३१८१५४
वाडबेय १.	८१९१३९
वाण ३.	२१४१११
वाणि २.	३१९१८
वाणिज १.	३१८१७२
वाणिज्य ३.	३१८१३
वाणिनी २.	७१२१३३
वाणी २.	११११९
वात १.	११२१४७
वातगामिन् १.	२१३१४
वातघ्न १.	३१३१६५
वातपात १.	२१२१६
वातपोथ १.	३१३१२९
वातप्रमी १.	३१४११६
" १.	८१९१३८
वातमृग १.	३१४११६

[वातल]

वैजयन्तीकोषः

[वार्ताहर]

वातल १. २. ३. ४४१४५
वातसख १. १२१७
वातसञ्चार १. ४४१२७
वातसारथि १. १२१७
वातसुत १. ३११७०
वातापिसूदन १. ३११५२
वातायन ३. ४११५४
वातायु १. ३१११६
वाताहार १. २. ३. ३११३१
वाति २. १२१४८
वातिक १. ४११२५
वातिङ्गन १. ३३११०२
वातुल १. ३१८४३
वातूल १. २. ३. ७११८०
वात्या २. २११५१
" २. ५१११४
वात्सक ३. ५१११०
वात्स्यायन १. ३११५५
वादन ३. ३११११४
" ३. ३१११२१
" ३. ३१११३१
" ३. ३१११३६
वादर १. २. ३. ४१११७
वादित्र ३. ३११११४
" ३. ३१११३६
वादित्रलगुड १. ३१११३६
वाद्य ३. ३११११४
वाद्यनिर्घोष १. ३१११३६
वाद्यवादकसामग्री २. ३१११४०
वान १. २. ३. ३३११०
" ३. ३११८
" १. २. ३. ६११८०
वानक ३. ३१११४
वानदण्डक १. ३११८
वानप्रस्थ १. ३३११४
" १. ३१११२४
" १. ८११४०

वानर १. ३११३९
" १. ८११७
वानवासिक १. ३११२०
वानस्पत्य १. ३३१६
वानरी १. ३३१३१
वान्ताशिन १. २. ३. ३११९
वान्ति २. ४११२६
वापिम १. ३११६४
वापी २. ४२१६
वाप्य ३. ३११९९
वाम १. १११२९
" १. १२१५५
" १. २. ३. ६१११६
वामदेव १. १११४२
वामन १. ११११९
" १. १२१८
" १. २. ३. ५११८१
वामलूर १. ३११४८
वामलोचना २. ४११५
वामा २. १११४८
" २. ४११५
वामी ३. ३१११०७
वायव्य १. २११९१
" १. २. ३. ३११०१
वायस १. २३११६
" १. ८११६
वायसाली २. ३११२६
वायसी २. ३३११२
" २. ३३११४९
वायु १. १२१४७
वायुन १. १११२
(वायुन)
वायुवर्मन् ३. २१११
वायुसम्भवा २. ३११४४
वार २. ३. ४२१३
वार १. ५१११
" १. ५२१७
वारक ३. ३११५०
वारट १. ५११५१

वारण १. १२१७
" १. ३११६१
" १. ४२११०
वारणावत ३. ४३१९
वारणासी २. ४३१७
वारबुसा २. ३३११७३
वारसुख्या २. ४११४२
वारवाण १. २. ८११२२
वारवाणि १. ८११४२
वारखी २. ४११२४
वाराणसी २. ४३१७
वाराह ३. ३१११८
वाराही २. १११६४
" २. ३३१२१०
वारि ३. ४२११
" २. ६११८२
वारिकूट १. ४३११५
वारिज ३. ३१११९
वारिधर १. २२११
वारिपर्णी २. ४२१४६
वारिपिण्ड १. ४११४८
वारु १. ३११९०
" २. ६२१३७
वारुणपाशक १. ४११५२
वारुणी २. १११५९
" २. ३३११०९
" २. ३११४६
वार्च ३. ३३११
वार्त ३. ४१११४२
" १. २. ३. ४१११४३
वार्ता २. २११३९
" २. ३१८१
" २. १. ३. ६११२५
वार्ताकशाकट १. २. ३. ३१८२१
वार्ताकशाकिन १. २. ३. ३१८२१
वार्ताकी २. ३३११०२
" २. ३३११०४
वार्ताकु २. ३३११०२
वार्ताहर १. ३११६

वार्तिक]

वार्तिक ३. ३११५६
" १. ३११२९
वार्त्तिक ४. ७३१३०
" ३. ८१११७
वार्त्तुष ३. ३११५
वार्त्तुषिक १. २. ३. ३११८
वार्त्तुषिन् १. २. ३. ३११८
वार्त्तुष्य ३. ३११५
वार्त्तुषिणस १. ३११८
(वाधनीणस)
वार्मण ३. ५१११३
वार्मिक १. ३११४०
वार्षी २. २११८९
वाल १. ३. ४३११६०
" १. ४११९८
" १. ६११५४
वालक ३. ७३१३१
वालकूर्चा १. ४१११००
वालकेशी २. ३३१२३०
वालधि १. ३११७४
वालनाटक १. ३१८५४
वालपाशक १. ३१८८१
वालपाश्या २. ५३११३६
वालमृग १. ३११२९
वालवायज १. ३२१४०
वालवीज्य १. ३११६३
वालहस्त १. ३११७४
वालिका २. ४३११३५
वालिनी २. २११४२
वालुक ३. ३१८९६
" ३. ४११२३
वालुका २ ब. ४२१३३
" २. ७२१२४
वालुकी २. ३३११६७
वालक १. २. ३. ४३१११७
वालमीक १. ३११५३
वालमीकि १. ३११५३
वावदूक १. २. ३. ५११४५
वावाता २. ३११३२
वाशन ३. २११४

शब्दानुक्रमणिका

वाशा २. ३३११०२
वाशित ३. २११४
वाशिता २. ७२१२२
वाशी २. २११२०
वास १. ३३११९१
" १. ३१११८
वासक १. ३३११०१
वासतेयी २. २११५७
वासन १. ४३१४५
" ३. ४३११६७
" ३. ५११४९
वासना २. ४३११५८
वासनी २. ३३११६८
वासनीयक ३. ३१८११६
वासन्त १. ३३१६१
" १. ३१८३७
वासन्ती २. ३३११८२
" २. ३३११८७
वासयोग १. ४३११७७
वासर १. ३. २११५५
" १. ७३१७२
वासव १. १२११
" १. ३३११०८
वासस् ३. ४३१११६
" १. ८१११६
वासगार ३. ४३१२०
वासिक ३. ४३१४१
वासिष्ठ ३. ४३११०६
वासी २. ३११३६
वासुकि १. ४११३
वासुदेव १. ११११२
" १. ८११३९
वासू २. ३१११०७
वास्तु १. ३. ४३११०
" १. ३. ६११८०
वास्तुक १. ३३११५४
वास्तुकशाकट १. २. ३. ३१८२१
वास्तुकशाकिन १. २. ३. ३१८२१
वास्तुमध्य ३. ४३११०

[विकराल]

वास्तोपपति १. १२१२
वास्त्र १. २. ३. ३११२९
वाह १. ३११५२
" १. ३३१६५
" १. ५११५६
" १. ५११५८
" १. ५११५८
वाहन ३. ३१११२३
वाहनी २. ४३११७
वाहवारण १. ३३१३३
वाहस १. ४३११९
" १. ७३१६५
वाहि १. ८१११०
वाहिक १. ५११५३
वाहित १. ३११८७
" ३. ५११६४
वाहित्य ३. ३११७३
वाहिनी २. ३११५५
" २. ३११५८
" २. ४२१२३
वाहिनीपति १. २. ३. ३१११४१
वाहीक १ ब. ३११२७
वाह्य १. ३११५२
" ३. ३११२३
वि १. ३२१२
" १. ८११६०
" ४. ८११६
विश १. २. ३. ५११२२
विशति २. ५११२६
विशतितम १. २. ३. ५११२२
विशतिभुज १. १२१४२
विकङ्कत १. ३३१३८
विकच १ ब. १२१३७
" १. २. ३. ३३१९
विकट १. २. ३. ५११८२
" १. २. ३. ५११२६
" १. २. ३. ७३१२६
विकटा २. ३११७७
विकराल १. ३११७

विकराल]

विकराल १. २. ३. पा१८२	विकरालिन् १. पा३१९	विकर्तन १. २११११	विकर्मन् ३. ३१६११७	विकल १. २. ३. पा१८६	विकला २. ३१६१५०	विकलाङ्ग १. २. ३. पा११११	विकल्पना २. २१११०	विकसा २. ३१३१३५	विकार १. पा२१२२	" १. ७११६६	विकालक १. २१११५	विकिर १. २१३१३	" १. ४१२१८	" १. ७११७०	विकिष्कु १. ३१११५	विकुण्ठना २. ३१६१७५	विकुर्वाण १. २. ३. पा१३३३	विकृत १. २. ३. ३१९१७८	" ३. ३१९१५५	" १. २. ३. ४१११४४	" १. २. ३. ७११२५	विक्र १. ३१७१६६	विक्रम १. पा२११६	" १. पा२११७	विक्रय १. ३१८१६९	विक्रयिक १. २. ३. ३१८१६८	विक्रान्त १. २. ३. ३१७१४७	" ३. ३१९१४८	विक्रायिक १. २. ३. ३१८१६८	विक्रेतृ १. २. ३. ३१८१६८	विक्रेय १. २. ३. ३१८१६९	विकल्ब १. २. ३. पा११६७
-----------------------	--------------------	------------------	--------------------	---------------------	-----------------	--------------------------	-------------------	-----------------	-----------------	------------	-----------------	----------------	------------	------------	-------------------	---------------------	---------------------------	-----------------------	-------------	-------------------	------------------	-----------------	------------------	-------------	------------------	--------------------------	---------------------------	-------------	---------------------------	--------------------------	-------------------------	------------------------

वैजयन्तीकोषः

विद्युभा २. २११२३	विद्याभ १. ३१७१७४	विगण्डीर ३. ३१३१५१	विगत १. २. ३. ७११२४	विगतनासिक १. २. ३. पा११२	विगता २. ३१६१४८	विगन्धिका २. ३१२१२	विगन्धिन ३. ४१२३६	विगम १. पा२१२७	विगर्वा २. २११२८	विगीत १. २. ३. ३१६११	विग्रक १. ३१३१८४	विग्र १. २. ३. पा११२	विग्रह १. ३१७१६	" १. पा२१३	" १. ७११६८	विघन १. ३१६१०२	विघस १. ३१६१६७	विघसासिन् १. ३१६१४१	विघूणिका २. ४११९१	विघ्न १. पा२१४	विघ्नेश १. १११५३	विचकिल १. ३१३१८३	विचक्षण १. ३१६१२३	विचक्षणा २. ३१८१४७	विचयन ३. पा२१४२	विचर्चिका २. ४११२३	विचारिका २. ३१७१३७	विचारोक्ति २. २१८१२८	विचिकित्सा २. ३१६१७७	विचुल १. ३१३१५०	विचोलक १. ११२१४३	विच्छित्ति २. ३१९१९३	विच्युत १. २. ३. पा११०२	विजन १. २. ३. पा१११९	विजन्मन् १. ३१५१०४	(द्विजन्मन्)	विजय १. ३१७१५९	" १. ३१७२०९
-------------------	-------------------	--------------------	---------------------	--------------------------	-----------------	--------------------	-------------------	----------------	------------------	----------------------	------------------	----------------------	-----------------	------------	------------	----------------	----------------	---------------------	-------------------	----------------	------------------	------------------	-------------------	--------------------	-----------------	--------------------	--------------------	----------------------	----------------------	-----------------	------------------	----------------------	-------------------------	----------------------	--------------------	----------------	----------------	-------------

[विताली

विजयच्छन्द १. ४१३१३९	विजविल १. २. ३. पा३१४	विजाता २. ४१११७	विजाति २. ३१४२६	विजिज्ञासा २. ४१६१७५	विज्ञ १. २. ३. पा११९	विट १. २११७०	" १. ४१३१९	वितका २. ४१३१८	वितकान्ता २. ३१३१२	वितङ्क १. ३१३१७२	" १. ३. ४१३१५४	वितप १. ३१३१६	" १. ३१८१७३	" १. ३. ७१११६२	वितपिन् १. ३१३१४	विटाटिका २. ३१३१४६	" २. ४१३१८	विटाश्रय १. ४१३१७	विट्खदिर १. ३१३१६४	विट्चार १. ३१४१७१	विट्पति १. ११११४	विड १. ३१८१२४	विडङ्ग १. ३. ३१८१९७	" १. २. ३. ८११३८	विडु ३. ४१११०८	वितंस १. ३१९१४१	वितत ३. ३१९११५	" ३. ३१९११६	वितथ १. २. ३. २१११७	वितरण ३. ३१६११८	वितर्क १. ३१६१७६	वितर्दिका २. ४१३१६	वितस्ति २. ३१११३	" २. ४१४१८०	" १. २. ८११२७	वितान ३. ३१७१९०	" १. ३. ४१३१२३	" १. २. ३. ७११७६	विताली २. ३१९१२४
----------------------	-----------------------	-----------------	-----------------	----------------------	----------------------	--------------	------------	----------------	--------------------	------------------	----------------	---------------	-------------	----------------	------------------	--------------------	------------	-------------------	--------------------	-------------------	------------------	---------------	---------------------	------------------	----------------	-----------------	----------------	-------------	---------------------	-----------------	------------------	--------------------	------------------	-------------	---------------	-----------------	----------------	------------------	------------------

वितुन्नक]

वितुन्नक ३. ३१२१४२	वित्त ३. ३१८१७३	" १. २. ३. ६११७४	वित्तेश १. ११२१५७	विदग्ध १. पा३१९८	" १. २. ३. पा१२०	विदण्ड १. ४१३१५०	विदर १. पा२१४१	विदल १. २. ३. ३१३१४	विदा २. ३१६१६३	विदारक १. ४१३११	विदारण ३. ८१३१२	विदारी २. ३१३१२३	" २. ३१३१९५	विदित १. २. ३. पा११०१	" १. २. ३. ७११२३	विदिश २. २११३३	विदुर १. २. ३. पा१४३३	विदुल १. ३१३३१	(अम्बुप्रिय)	विदूषक १. ३१९१६९	विदूषिका २. ३१६१५३	विदेह १. ३. ३११३०	विद्ध १. २. ३. पा११७७	" १. २. ३. पा११११	" १. २. ३. ६१११७	विद्धकर्णी २. ३१३१३१	विद्धायुध ३. ३१७१७३	विद्या २. ३१६१२७	" २. ३१६३०	विद्याधर १. ११३१४	विद्युत् २. २१२३३	" २. ३१२१२	विद्रधि १. २. ४११३३७	विद्रव १. ३१७२११	विद्रुत १. २. ३. ४१३१५	विद्रुम १. ३१२३९	" १. ७११६५	विद्रुमलता २. ३१८१५५	विद्रुस् १. ३१६१२३४
--------------------	-----------------	------------------	-------------------	------------------	------------------	------------------	----------------	---------------------	----------------	-----------------	-----------------	------------------	-------------	-----------------------	------------------	----------------	-----------------------	----------------	----------------	------------------	--------------------	-------------------	-----------------------	-------------------	------------------	----------------------	---------------------	------------------	------------	-------------------	-------------------	------------	----------------------	------------------	------------------------	------------------	------------	----------------------	---------------------

शब्दानुक्रमणिका

विद्वेष १. ३१६१८४	विधवा २. ४१११४	विधा २. ३१६३५	" २. ६१२३४	विधातृ १. १११६	विधान ३. ७१३३३	विधि १. १११९	" १. ३१६३३	" १. ३१६११३	" १. ३१६१८९	" १. पा२१२५	" १. ६११५५	विधु १. २११२४	" १. ६११५५	विधुत १. २. ३. पा११०१	" १. २. ३. ७११२३	विधुन्तुद १. २११३६	विधुर १. १११४१	" १. २. ३. ७११२७	विधुवन ३. पा२१४०	विधूनन ३. पा२१४०	विधेय १. २. ३. पा१२८	" १. २. ३. पा१३२	विनय १. ७११७०	विनयग्राहिन् १. ३१७६७	विना ४. ८१८१४	विनायक १. १११३२	" १. १११५३	विनिमय १. ३१८१७१	विनियोग १. पा२१२५	विनीत १. २. ३. ७११७४	विनोद १. ३१६१८७	विन्दु १. २. ३. पा११४३	विन्ध्य १. ३१२३३	विन्ध्यकूटक १. ३१६१५१	विन्ध्यवासिन् १. २१११५८	विन्ध्यवासिनी २. १११६३	विन्न १. २. ३. पा११९९	" १. २. ३. ६१११७
-------------------	----------------	---------------	------------	----------------	----------------	--------------	------------	-------------	-------------	-------------	------------	---------------	------------	-----------------------	------------------	--------------------	----------------	------------------	------------------	------------------	----------------------	------------------	---------------	-----------------------	---------------	-----------------	------------	------------------	-------------------	----------------------	-----------------	------------------------	------------------	-----------------------	-------------------------	------------------------	-----------------------	------------------

[विप्रव

विपक्षक १. ३१७१२	विपक्षी २. ३१९११६	" २. ७१२२४	विपण १. ३१८१६९	विपणि २. ४१३३५	" २. ७१२२४	विपत्ति २. ३१६१९१	विपथ १. ३११५०	विपद् २. ३१६१९१	" २. ३१७१४	विपर्यय १. पा२१५	विपर्यास १. पा२१५	विपश्चित् १. ३१६१२३	विपाक १. ३१६१८९	" १. ७११६७	विपाकिन् १. २१३१२७	विपादिका १. ४११२२	(विपाटिका)	विपाश २. ४१२२७	विपाशा २. ४१२२७	विपिन ३. ३१३११	विपुल १. २. ३. पा१८०	विपुला २. ३११२	विप्र १. ३१६१९	विप्रकार १. पा२१२२	विप्रकुण्ड १. ३१६१६२	विप्रकृष्ट ३. पा११४२	विप्रतिसार १. ३१६१८५	विप्रप्रिय ३. ३१८१३९	विप्रयाण ३. ३१७२१०	विप्रयोग १. पा२११६	विप्रलम्भ १. पा२१२०	विप्रलाप १. २१४२९	" १. ८११४१	विप्रशेषित ३. ३१६१७	विप्रशिका २. ४११११	विप्रिय ३. ३१७१४७	" १. २. ३. पा११६९	विप्रुष २. २१२१८	विप्रुष १. २१३१२	विल्ब १. ३१६१९०
------------------	-------------------	------------	----------------	----------------	------------	-------------------	---------------	-----------------	------------	------------------	-------------------	---------------------	-----------------	------------	--------------------	-------------------	--------------	----------------	-----------------	----------------	----------------------	----------------	----------------	--------------------	----------------------	----------------------	----------------------	----------------------	--------------------	--------------------	---------------------	-------------------	------------	---------------------	--------------------	-------------------	-------------------	------------------	------------------	-----------------

[विबुध]

विबुध १.	३१५२०
विबुध १.	७११६६
विभण्ड १.	३१५२६
विभञ्जन ३.	५२१३९
विभाकर १.	२१११४
विभाग १.	५२१७
विभाजन ३.	३१३१५१
विभात ४.	२११६८
विभाव १.	३१५८०
विभावनी २.	३१३१८५
विभावरी २.	२११६७
विभावसु १.	८११३९
विभाषण ३.	२११२४
विभीतक १. २. ३.	३१३१७५
विभीदक १.	३१३१७६
विभीषण १.	११२५
विभु १. २. ३.	६१५८१
विभृति २.	८१५३४
विभूषण ३.	५१३१३३
विभ्रम १.	३१२१९६
" १.	७११६९
विमनस १. २. ३.	५१४३४
विमल १.	३१२४१
" १. २. ३.	५१४६६
विमातृज १.	४१४३३
विमान १. ३.	७१५८१
वियत् ३.	२१११
वियद्गङ्गा २.	११३१३
वियम १.	५२१३०
वियात १. २. ३.	५१४१७
वियाम १.	५२१३०
वियुन १.	११२६
वियोग १.	५२१२६
विरजा २.	३१३९२
विरत ३.	३१७२०२
विरति २.	५२१३६
विरल १. २. ३.	५१४१२५
विरह १.	५२१२६
विराग १.	३१६१६७

वैजयन्तीकोषः

विरागार्ह १. २. ३.	५१४५४
विराज् १.	३१७१
विराव १.	२१४३
विरावृत्त ३.	३१८७९
विरिञ्च १.	१११७
विरुक्कोद्रव १.	३१८५५
विरुक्त्तण ३.	२१४३३
विरूप १. २. ३.	५१४१२६
विरूपाक्ष १.	१११४२
विरोचन १.	८११४२
विरोध १.	३१६१८४
विरोधन ३.	५२१३०
विरोधिन् १.	३१७४२
विरोधोक्ति २.	२१४२९
विलक्ष १. २. ३.	५१४२९
विलम्बित ३.	३१९१२३
" १. २. ३.	८१४१२
विलम्भ १.	५२११९
विलाप १.	२१४२९
विलाव १.	५२१२९
विलास १.	३१९९३
विलिष्ट १. २. ३.	५१४८४
विलीन १. २. ३.	४१३९५
" १. २. ३.	७१४२३
विलेपी २.	४१३८०
विलेप्या २.	४१३८०
विलोमिका २.	३१३१११
विल्वगन्ध १.	३१३१२१
विविध १. *	७११७१
विवरण ३.	२१४२६
विवर्ण १.	३१५२
" १. २. ३.	७१४२४
विवर्णता २.	३१९८१
विवश १. २. ३.	७१४२७
विवस्वत् १.	१११३
" १.	२१११२
विवाद १.	२१४२४
विवाह १.	३१६५४
विवाहाम्नि १.	११२१७
विविक्त १. २. ३.	५१४११९

[विशुन्धलवण]

विविक्त १. २. ३.	७१४२४
विचुतान् १.	२१३१३
विवेशिका २.	४१३४
विवेष्टन ३.	५२१४२
विश १.	३१५२
" १.	३१८११
" २. ३.	४१४११९
" १. २.	८१५३९
विशङ्कट १. २. ३.	५१४८२
विशद १.	५१३१०
" १. २. ३.	५१४१३४
" १. २. ३.	७१४२५
विशय १.	३१६१७७
विशर १.	३१७२११
विशल्या २.	३१३१३१
विशस् १.	३१७२११
विशसन १.	३१७१५८
" ३.	३१७२१४
विशास्त्र १.	१११५७
" १.	७१५८३
विशाखा २.	२११४०
" २.	८१५५७
विशाखिका २.	३१६१२३
विशारद १. २. ३.	८१४१२
विशाल १.	४१३१२९
" १. २. ३.	५१४८०
" १. २. ३.	५१४८२
विशालता २.	५२१५
विशालत्वच् १.	३१३१७७
विशाला २.	३१३१०३
" २.	३१३१७२
विशिख १.	३१७१७९
" १. २. ३.	७१५८१
विशिखा २.	४१३१६
विशिखाश्रय १.	३१७१७८
विशीर्णपाद् १.	११२३५
विशीर्णाङ्गी २.	३१६५१
विशुन्धलवण २.	३१८१२१

[विशेष]

विशेष १.	३१६२०५
विशेषक १. ३.	४१३१४८
" १. ३.	८१९३०
विशेषभाग १.	३१७७६
विशोक १.	२१३२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विश्लिष्ट १. २. ३.	५१४१२५
विश्लेष १.	५२१२६
विश्व १ व.	११३८
" १. २. ३.	५१४८६
" १. २. ३.	६१५७८
विश्वकद्रु १.	३१३३९
विश्वकर्मन् १.	११३६
" १.	८११४१
विश्वगोप्तृ १.	८११३९
विश्वभृत् २ व.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३१८७५
विश्वम्भर १.	८१५२२
विश्वरुचि २.	११२३०
विश्वरूप १.	११११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४१४१४
विश्वहयंक १.	३१६८३
(विश्वहयंत)	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
" १.	७११६७
विश्वावसु १. २.	८१५२३
विष ३.	३१२३३
" ३.	३११२४
" ३.	४१२१
विषघ्न १.	३१३५५
विषघ्नी २.	३१३१००
" २.	३१३१२७
" २.	३१३१३२
विषजित् ३.	३१८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३१३५०
विषम १.	३१३२१६

शब्दानुक्रमणिका

विषमच्छद १.	३१३४७
विषमस्पृहा २.	३१६१७९
विषमालुध १.	१११२८
विषमोज्जत १. २. ३.	५१४८३
विषय १.	३१७४८
" १.	५१३२
" १.	७११२२
विषयग्राम १.	५१११७
विषयिन् १. २. ३.	७१५७५
विषवृत्त १.	८१६१९
विषवैद्य १.	४११२५
विषा २.	३१८९०
विषाण १. २. ३.	७१५८२
विषाणिका २.	४१३२२
विषाणिन् १.	३१४५२
" १. २. ३.	७१५७७
" १.	८१६१४
विषाणी २.	३१३११६
विषाद् १.	३१६१९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषूचीन १. २. ३.	५१४९१
विष्कम्भ १.	७११६७
विष्किर १.	२१३३८
" १.	७११६६
विष्टप ३.	३१६२०६
विष्टर १.	३१३४
" ३.	४१३१६४
" १.	७११६९
विष्टरश्रवस् १.	११११०
विष्टि १.	३१९५५
विष्टा २.	३१३१००
" २.	४१४११९
विष्टाख्य ३.	३१३३६
विष्टिका २.	३१८८१
विष्णु १.	११११०
" १.	१११२०
विष्णुकान्ता २.	३१३१२३

[विस्मय]

विष्णुकान्ता २.	३१३१३४
विष्णुगुप्त १.	३१६१५९
विष्णुपद ३.	२१११
विष्णुपदी २.	४१२२४
विष्णुरथ १.	११३३८
विष्णुशक्ति २.	११३१६
विष्णार १.	२१४९
विष्फुलिङ्गिनी २.	११२३०
विषय १. २. ३.	५१४७१
विष्वक् ४.	८१८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३१३६६
विष्वच् १. २. ३.	५१४९१
विष्वदीचीन १. २. ३.	५१४९३
विष्वद्यच् १. २. ३.	५१४९३
विसंवाद १.	५२१२०
विसर १.	५१११
" १.	५१३२६
विसर्ग १.	११२८९
" १.	३१६३७
" १.	७११७०
विसर्जन ३.	३१६११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४११४२
विसृत् १. २. ३.	५१४११०
" १. २. ३.	७१४२६
विस्त १.	५११५१
विस्तर १.	५२१३
विस्तार १.	३१३१६
" १.	५२१३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५१४८०
विस्तीर्णजालु २.	३१६१४७
विस्त्रुत् १. २. ३.	५१४११०
विस्फोट १.	४१४१२३
विस्मय १.	३१६१८१
" १.	३१९७६
" १.	७११६५

[विस्मरण]

विस्मरण ३.	३६१७७
विस्मृत १. २. ३.	५४१०९
विस्म ३.	४४१०६
" ३.	४४१०८
विस्मसजा २.	४४१५४
विस्मव्य १. २. ३.	५४१५२
विस्मम्भ १.	७१६६
विहग १.	२३३२
विहगाधिप १.	१११३८
विहङ्ग १.	२३३२
विहङ्गम १.	२३३२
विहङ्गिका २.	३१९६
विहनन ३.	३१९१०
विहसित ३.	३१९८३
विहस्त १. २. ३.	५४१६८
विहान १. ३.	२११६८
विहापन ३.	३६११९८
विहायस् १. ३.	७१५८०
विहायस ३.	२१११
विहार १.	४३३२८
" १.	७११६८
विहारिणी २.	३६१५२
विहास १. २. ३.	७१५८३
विहल १. २. ३.	५४१६७
वीकाश १.	७११६७
वीक्षा २.	३६११८१
वीचि २.	४२११४
" २.	६२३२५
वीज्य १.	३८१३१
" १.	३८१३२८
वीणा २.	३६१११६
वीणावंशशलाका २.	३६११२०
वीणावाद १.	३६१७०
वीत ३.	३७१८९
(पीत)	
" १. २. ३.	६१५७५
वीतक ३.	४३१११०
वीतराग १.	१११३५
वीतिहोत्र १.	१२११४

वैजयन्तीकोषः

वीथि २.	३६११००
वीथिका २.	५२१४६
वीथी २.	२११४४
" २.	६२३३५
वीथ १. २. ३.	५४१६६
वीनाह १.	३३३२२७
वीर १. २. ३.	३७१५७
" १.	३६१७५
" १. २. ३.	६१५८२
वीरजयन्तिका २.	
वीरण ३.	३७१२०८
वीरतृण ३.	३३३२३१
वीरपत्नी २.	४४११३
वीरपाण ३.	३७१२०२
वीरभद्र १.	१११५३
वीरभार्या २.	४४११३
वीरमातृ २.	४४११३
वीरल १.	४११५५
वीरविप्लावक १.	३६१७२
वीरवृक्ष १.	८६११८
वीरशङ्कु १.	३७११८०
वीरशाक १.	३३३१५४
वीरसू २.	४४११३
वीरस्कन्ध १.	३४१९
वीरस्नाना २.	४३११११
वीरहन् १.	३६१७१
वीराशंसन ३.	३७१२०६
वीरासन ३.	३६१२२७
वीरधू २.	६२३३५
वीरोज्ज १.	३६१७०
वीरोपजीवक १.	३६१७१
वीर्य ३.	३७११०
" ३.	४४११११
" ३.	६३३३२
वीर्यकर १.	४४१११०
वीलक १.	३५१२८
वीवध १.	७११७१
वृक १ ब.	३६१४०
" १.	३६१८

[वृद्ध]

वृकधूप १.	३८१११०
" १.	३८१११२
वृकधूर्तक १.	३४१७
" १.	३४३३८
वृकधोरण १.	३४३३२
वृकवाला २.	४३३४४
वृकस्थली २.	४३३९
वृकाम्लिका २.	३३३३४
वृक्कण १. २. ३.	५४११०२
वृक्तवहिसू १.	३३३७८
वृक्ष १.	४४१११२
" १.	३३३४
" १.	८९१११
वृक्षक १.	३३३८३
वृक्षगृह १.	८६११८
वृक्षमूलिन् १. २. ३.	
वृक्षरुहा २.	३३३८५
वृक्षादनी २.	३३३८५
वृक्षाम्ल ३.	३८११३२
वृक्षोत्पल १.	३३३७२
वृजिन १. २. ३.	५४११२३
" १.	७१५८४
वृत्तिद्रुम १.	४३३१४
वृत्तिमार्ग १.	३११५१
वृत्त ३.	३६१११५
" १. २. ३.	५४१८३
" १. २. ३.	६१५७६
वृत्ताङ्गी २.	३३३६७
वृत्तान्त १.	२४३३९
" १.	७११७१
वृत्ति २.	३८११
" २.	३८१७
" २.	३६११०२
" २.	६२३३६
वृत्र १.	६११५६
वृत्रारि १.	१२११
वृथा ४.	८७१२८
वृथाजात १.	३६१७७
वृद्ध ३.	३८१९६
" १. २. ३.	५४१११६

[वृद्ध]

वृद्ध १. २. ३.	६१५८०
वृद्धकाक १.	२३३१७
वृद्धगोनस १.	४१११३
वृद्धनाभि १. २. ३.	
वृद्धप्रपितामह १. ४३३०	
वृद्धप्रमातामह १. ४३३०	
वृद्धवयस् १. २. ३.	
वृद्धश्रवस् १.	१२११
वृद्धा २.	४४२१
वृद्धि २.	३८१५
" २.	३८१९४
" २.	४४१३१
" २.	५२३३३
" २.	६२३३७
वृद्धोक्त १.	३४१५५
वृद्धयाजव १. २. ३.	
वृन्त ३.	३३३२०
" १.	३३३१६८
" ३.	३४१५१
" ३.	४४१६८
वृन्ततुम्बी २.	३३३१६८
(वृत्ततुम्बी)	
वृन्ता २.	३३३६६
वृश्चिक १.	३३३१४६
" १.	४१३३२
" १. २.	४१३३३
" १.	४१३३३
वृश्चिकच्छदा २.	३३३१२७
वृश्चिकाली २.	३३३१२६
वृष ३.	४३३३६
" १.	४३३२
" १. २. ३.	६१५७७
वृषण १.	४३३६३
वृषणश्च १.	१२११०
वृषणवसु १.	१२१८
वृषध्वज १.	१११४२
वृषन् १.	१२११
" १.	६११५६

शब्दानुक्रमणिका

वृषपर्णी २.	३३३१४३
वृषपूतन १.	३६१२२
वृषभ १.	३२१५
" १.	३४१५२
वृषल १.	३४१५२
" ३.	३८१७६
" १.	३९११
वृषलक्षणा २.	३६१५२
वृषली २.	७२३२४
वृषवाहन १.	१११४६
वृषसानु १.	८११४०
वृषस्थन्ती २.	४४१११
वृषा २.	३३३११३
" २.	३३३१७३
" २.	३८१९४
वृषाकपायी २.	८२११३
वृषाकपि १.	८११४०
वृषाक्रान्ता २.	३४१५१
वृषाण १.	१११५२
वृषावाह १.	३८१५७
वृष्णि १.	३४१६४
वृष्टि २.	२२३७
वृष्य १.	३३३२२५
" १.	३८३३५
वृष्यकन्द ३.	४२३४७
वृष्या २.	३८१९४
वेग १.	१२१५५
" १.	६११५६
वेगसर १.	३७११०८
वेगिन् १.	१२१५०
वेङ्कट १.	३२१५
वेङ्कर १.	३६११६९
वेजन १.	३६११०८
वेटी २.	४२११५
वेण १.	३६१९८
" १.	३६१९८
वेणि २.	४२३३०
वेणिनी २.	४३३६
वेणी २.	३३३८६
" २.	३३३६५
" २.	६२३३६

[वेन]

वेणु १.	३३३२१४
" १.	६११५४
वेणुक १.	३१५१३
" ३.	३७१८२
वेणुका २.	३९११२५
वेणुधमा १.	३९१७१
वेणु ३.	४३३२७
वेतन ३.	३९१५
वेतस १.	३३३३१
वेतस्वतृ १. २. ३.	
वेताल १.	१२३३८
वेतालासन ३.	३६२२२१
वेज १.	३३३१३३
वेजधर १.	३७१२४
वेजवती २.	४११२८
वेद १.	३६२२७
वेदगर्भ १.	३६११
वेदन १. २. ३.	७१५८३
वेदपठितृ १.	२६२३३
वेदयष्टि २.	३६१२४
(देवयष्टि)	
वेदाङ्ग ३.	३६२२८
वेदि २.	३६११०९
" २.	३६१११०
वेदिका २.	४३३३६
" २.	७२३२५
वेदितृ १. २. ३.	५४१४३
वेदिपर १ ब.	३१३३७
वेद्यास्तरण ३.	२६१९१
वेधक १.	३८११२०
वेधनिका २.	३९११८
वेधमुख्यक १.	३३३११७
वेधमुख्या २.	३४३३६
वेधस् १.	११११९
" १.	६११५७
वेधित १. २. ३.	५४११११
वेध्य ३.	३७११९४
वेध्या २.	३९१३३५
वेन १.	३१५८४
" १.	३१५९७

वेन]	वैजयन्तीकोषः	[वैश्वदेवामि	
वेन १.	३।५।९९	वैदेहक १.	३।५।७८
वेपथु १.	३।९।८५	" १.	३।८।७२
" १.	३।९।८९	वैदेही २.	३।८।७७
वेमन् १.	३।९।८	वैद्य १. २. ३.	४।४।१४३
वेल १.	३।३।२५	वैद्यमातृ २.	३।३।१०२
वेलज १.	५।३।३६	यैद्यशास्त्र ३.	३।६।२९
वेलव १.	३।५।२२	वद्युत ३.	३।१।१९
(पेलव)		वैद्युत्त्वत १.	३।१।१२
वेला २.	४।२।१३	वैद्योत १. २. ३.	३।२।१९
" २.	४।२।३३	वैधव्यलक्षणोपेता २.	३।६।५३
" २.	६।२।३६	वैधात्र १.	१।३।७
वैलान १.	५।३।३६	वैधेय १. २. ३.	५।४।२१
वैल्ल ३.	३।८।९७	वैनतेय १.	१।१।३७
वैल्लन ३.	३।८।७९	वैनथिक १. २. ३.	३।७।३०
वैल्लित १. २. ३.	५।४।९५	वैनीतक १. ३.	३।७।१३७
" १. २. ३.	७।४।२३	वैपरीत्य ३.	५।३।५
वेश १.	३।५।१८	वैमात्रेय १.	४।४।३३
(उग्रवेश)		वैमेय १.	३।८।७१
" १.	४।३।३५	वैयथित १.	३।६।१०७
वेशनी २.	४।३।२४	वैयाघ्र १. २. ३.	३।७।१२८
वेशन्त १.	४।२।६	वैर ३.	३।६।१८४
वेशवार १.	४।३।८७	वैरङ्गिक १. २. ३.	५।४।५४
" १.	४।३।९०	वैरशुद्धि २.	३।७।२०९
वेशमन् ३.	४।३।१८	वैराग्य ३.	१।१।४७
वेशमस्थूणा २.	४।३।३९	" १.	३।६।१६७
वेश्य ३.	३।३।१८४	वैरिन् १.	३।७।४१
वेश्या २.	४।३।२४	वैवधिक १.	३।९।६
वेश्यागृह ३.	४।३।३३	वैवस्वत १.	१।२।३३
वेश्याचार्य १.	३।९।७०	वैशाख १.	२।१।८३
वेश्याजनाश्रय १.	४।३।३५	" १. ३.	३।७।१८६
वेश्यापति १.	४।३।३९	" १.	३।९।३१
वेप १.	३।९।६८	वैशाखिन् १.	३।७।७६
" १.	४।३।१३२	वैशाखी २.	२।१।७५
वेष्ट १.	३।८।१०९	वैशिख ३.	३।७।१७५
" ३.	६।३।३२	वैश्य १.	३।८।१
वेष्टन ३.	३।६।१०५	वैश्यकुण्ड १.	३।५।६३
" ३.	४।३।९३	वैश्रवण १.	१।२।५७
" ३.	७।३।३४	वैश्वदेवामि १.	१।२।२७
वेष्टावार ३.	३।८।१२३		
वेष्टित १. २. ३.	५।४।९६		
वैसर १.	३।७।१०८		
येहत् २.	३।४।४७		
वै ४.	८।७।७		
" ४.	८।७।११		
वैकच्य ३.	४।३।१२३		
" ३.	४।३।१५६		
वैकरञ्ज १.	४।१।९		
" १.	४।१।१०		
" १.	४।१।१६		
वैकुण्ठ १.	१।१।१२		
" १.	३।३।१२१		
" १.	७।१।७२		
वैकृन्त १.	३।२।३५		
वैखानस १.	३।६।१३४		
वैखारक १.	५।३।३०		
वैघटिक १.	३।९।१५		
वैचित्य ३.	३।६।२००		
वैजनन १.	४।३।१९		
वैजयन्त १.	१।१।५५		
" १.	१।२।९		
" १.	१।२।९		
वैजयन्तिक १. २. ३.	३।७।१४५		
वैजयन्ती २.	३।३।९६		
" २.	८।२।९		
वैज्ञानिक १. २. ३.	५।४।१९		
वैद्व्य ३.	३।२।४०		
वैणव ३.	३।२।२१		
" १.	३।३।२२		
" १.	३।५।३८		
वैणविक १.	३।९।७१		
वैणिक १.	३।९।७०		
" १.	५।३।५७		
वैतंसिक १.	३।९।४०		
वैतनिक १. २. ३.	३।९।५		
वैतालिक १.	३।५।८१		
" १.	३।७।३०		
वैदिक १.	३।६।८		
वैदेह १.	३।५।८७		
" १.	३।५।११६		
वैदेहक १.	३।५।१६		

प्रबन्धानर]	शब्दानुक्रमणिका	[मूल
प्रबन्धानर १.	११११४	व्यवहार १. ८१११४३
" ३.	२१११४९	व्यवहित ३. ५१११४२
प्रबन्धानरी २.	२१११४८	व्यवाय १. ७१११६५
व्यवधिकी २.	३१७१३५	व्यष्ट ३. ३१११२४
व्यवणव १.	३१६१०८	व्यसन ३. ७१३१३२
व्यवणवी २.	१११११६	व्यसनार्त १. २. ३. ५१११६८
" २.	११११६५	व्याकरण ३. ३१६१२८
व्यवणुत ३.	३१६१९५	" ३. ८१३१११
व्यवसारिण १.	४१११४१	व्याकुल १. २. ३. ५१११६८
व्यवहायस ३.	३१७११८८	व्याकृति २. ५१२१३४
व्यवहासिक २.	३१७११७	व्याकोच १. २. ३. ३१३१९
व्यवखान १.	३१७११०२	व्याघात १. ३१३१४८
व्यवपाट ४.	८१८१३	व्याघ्र १. ३१४१३
व्यवपाट ४.	८१८१३	व्याघ्रक १. ३. ४१३१४३
व्यवपाट ४.	८१८१३	व्याघ्रनख ३. ३१८१९९
व्यवसक १. २. ३.	५१४१२४	व्याघ्रपाद १. ३१३१३८
व्यवक्त १.	५१३१८	व्याघ्रपुच्छक १. ३१३१६५
" १. २. ३.	६१५१७२	व्याघ्राट १. ३१३११९
व्यवज्ञा २.	३१६१५०	व्याज १. ३१६१९५
व्यवजन ३.	४१३११५९	" १. ६१११५४
व्यवज्ञक १.	३१९१९८	व्यादीर्णस्थ १. ३१४११
व्यवज्ञन १.	३१३१२२३	व्याध १. ३१९१३८
" १. ३.	३१६१३६	व्याधाम १. ११२११३
" १. २. ३.	३१६१९३	व्याधि १. ४१४१३८
" ३.	४१३१८५	" १. ८१६१८
" ३.	४१४१०३	व्याधित १. २. ३. ४१४१४४
" ३.	७१३१३०	व्यापन १. ५१२१४१
व्यतिकर १.	८१११४१	व्यापलण्डिका २. ४१४१८४
व्यतिहार १.	५१२१६	व्यापादन ३. ३१७१२५
व्यत्यय १.	५१२१५	व्याप्य १. ४१४१३८
व्यत्यास १.	५१२१६	व्यप्च १. २१११२७
व्यथा २.	३१६११८७	व्याम १. ४१४१८२
व्यध्व १.	३१११५०	व्यायत १. २. ३. ७१४१२४
व्यन्तर १.	४१११९	व्यायाम १. ४१४१८२
व्यय १.	३१७१४४	" १. ७१११६८
व्यर्थ १. २. ३.	५१४१२९	व्यायोग १. ३१९१०१
व्यलीक ३.	५१२१३५	व्याल १. ३१४१७३
" १. २. ३.	७१५१७९	" १. ४१११४
व्यवच्छेद १.	३१७१९२	" १. २. ३. ६१५१७४
व्यवधि १.	११२१६३	व्यालम्राहिन् १. ४१११२५
व्यवहार १.	३१८११५	
		व्यालालुध ३. ३१८१९९
		व्यालि १. ३१६१५८
		व्यावहारी २. ८१११४
		व्यास १. ११११३०
		" १. ११११३१
		" ३. ३१६१७६
		" १. ५१२१३
		व्युत्क्रम १. ५१२११६
		व्युत्थान ३. ५१२१२०
		" ३. ७१३१३१
		व्युत्पन्न १. २. ३. ५१४१४२
		व्युप १. २. ३. ३१६१३२
		व्युष्ट ३. २१११६८
		व्युष्टि १. २. ३. ३१६१२६
		" १. २. ३. ६१२१३५
		व्यूह १. २. ३. ५१४१८०
		" १. २. ३. ५१४१८३
		व्यूति २. ३१९१२
		व्यूह १. ५१११२
		" १. ६१११५६
		व्योकार १. ३१९११६
		व्योमकेश १. ११११४१
		व्योमगुण १. ११४११
		व्योमधारण १. ३१२१३५
		व्योमन् ३. २११११
		" ३. ५१११३१
		व्योमसम्भवा २. ३१४१४४
		व्योमाख्य ३. ३१२११५
		" ३. ३१६१३६१
		व्योष ३. ३१८१८०
		व्रज १. ३१९१३१
		" १. ५११११
		" १. ६१११५४
		व्रण १. ३. ३१७१२७
		व्रणघ्नी २. ३१३१५७
		व्रणबन्ध १. ४१४१४०
		व्रत ३. ३१११३३
		" १ व. ३१११३२
		" १. ३. ३१६११४
		" १. ३. ३१६१३६
		" १. ६१३१३१

व्रतति]

वैजयन्तीकोषः

[शतभिषज्

व्रतति २.	३१३७	शकुन ३.	८१११६
व्रतती ३.	३१३७	शकुनि १.	२३३३
व्रतसङ्ग्रह १.	३१६८७	शकुन्त १.	२३३३
व्रतिन् १.	३१६७	" १.	२३३३२
" १.	३१७९०	" १.	७११७४
व्रश्चन १.	३१९३५	शकुन्ति १.	२३३३
व्राजिक ३.	३१६१४८	शकुलाक्ष १.	३३३२००
व्रात १.	३१५१	शकुलादनी २.	३३३१९७
" १.	३१५५९	" २.	३३८८६
" १.	५१११	शकुलार्भक १.	४११४५
व्रात्य १.	३१५५९	शकुलिन् १.	४११४१
" १.	३१५१०२	शकुत् ३.	४११११८
" १.	३११११९	शक्ति २.	१११३६
व्रीड १. २.	८१९२७	" २.	३१६१६१
व्रीला १.	३१६१९४	" २.	३१७५
व्रीहि १ व.	३३३२३	" २.	६१२३८
" १.	३१८३१	शक्तिपाणि १.	१११५५
" १.	३१८३२	शक्र १.	६११५७
" १.	३१८६३	शक्रवृत् १.	८१६१८
" १.	८१९५७	शक्राख्य १.	३३३७३
व्रीहिकङ्क १.	३१८४०	शक्ल १. २. ३.	५१४४४
व्रीहिन् १. २. ३.	५१४११९	शकरी २.	२११२१
व्रीहिमत् १. २. ३.	५१४११९	" २.	७१२२५
व्रीहेय १. २. ३.	३१८१९	शङ्कर १.	१११३९
श		शङ्का २.	६१२३८
शंसा २.	२१४३५	शङ्किल १.	३१७८७
" २.	६१२४१	शङ्कु १.	११२४१
शंस्य १.	११२२४	" १.	२३३६
शक १.	३१४७४	" १.	३१७८५
" १.	३१५७४	" १.	३१७६७
" १.	६१५९१	" १.	३१७६७
शकट १.	३३३२०९	" १. ३.	८१९३०
" १. ३.	३१७१२५	शङ्कुकर्ण १.	८११४४
शकटाविल १.	२३३१२	शङ्कुमूली २.	२११७३
शकल १. ३.	४१४५६	शङ्कुला २.	३३३१७०
" ३.	७३३३४	शङ्कु १.	११२६०
शकलज्योतिस् १. ४१११८		" १.	३३३४१
शकुटा २.	३१७७९	" १.	३३१०१
शकुन १.	२३३३	" ३.	४११५५

शतभिषज्

शब्दानुक्रमणिका

[शरि

शतभिषज् १.	३३३१८३	शब्दन १. २. ३.	५१४४८
(शतभिषज्)		शम् ४.	८१८१७
शतमन्यु १.	११२५	शम १.	३११७६
शतमान ३.	५११४५	" १.	५१२२७
" ३.	५११५०	शमथ १.	५१२२७
शतमुखी २.	१११६०	शमन १.	११२३५
शतमूर्धन् १.	३११४८	" ३.	३१६९४
शतमूली २.	३३३१४२	" १.	७१५८७
शतवीर्या	३३३२३३	शमल ३.	४११११८
शतवेधिन १.	३१८१३३	" ३.	७३३३४
शतद्वदा २.	२१२४	शमित १. २. ३.	५१११४
शताङ्ग १.	३१७१२४	शमिता २.	४३३६८
शतानन्द १.	१११८	शमी २.	३३३८९
" १.	११११४	" २.	३१८६५
" १.	३१६१५६	शमीधान्य ३.	३१८६२
शतावरी २.	३३३१४२	शमीफला २.	३३३१४८
शतावर्त १.	११११४	शम्फली २.	४१४२५
शतावर्ता २.	२१२४	शम्ब १.	६११५८
शत्रु १.	३१७३९	शम्बर १.	३१४१३
" १.	३१७४०	" १.	४११४२
" १. २.	८१९४७	" १. ३.	७१५८४
शत्रुघ्न ३.	३१७१५७	शम्बरारि १.	१११२८
शनक १.	३१५३०	शम्बरी २.	३३३११३
शनकैः (-स्) ४.	८१८१६	शम्बल १. ३.	३१९७
शनि १.	२११३६	शम्बाकृत १. २. ३.	३१८२३
शनैः (-स्) ४.	८१८१६	शम्बूक १.	४११५७
शनैश्चर १.	२११३५	" १.	४३३१७
शपथ १.	७११७३	" १.	४३३१७
शफ १.	३१४९९	शम्बूकावर्त १.	४११३०
शफरी २.	३३३९४	शम्भर १.	३३३१८८
" १. २.	४११४४	शम्भल १.	३१७९६
शबर १ व.	३११३४	शम्भु १.	६११५७
" १.	३१५२३	" १.	८१६११
शबल १.	५१२२३	शम्या २.	३१८२८
शबली २.	३१४४४	शम्याक १.	३३३४८
शब्द १.	२१४११	शय १.	४११२८
" १.	५१३१७	" १.	४३३१२८
" १.	६११५९	" १.	४११२३
शब्दकार १. २. ३.	५१४४८	शयणढक १.	४११२६
शब्दग्रह १.	४१४९२		

शयथ १.	७१५८५
शयन ३.	४३३१६५
" ३.	४३३१६७
" १. ३.	७१५८५
शयनीय ३.	४३३१६५
शयान १.	४११२८
शयालु १.	३३३३८
" १. २. ३.	५१४३९
शयित १. २. ३.	५१४३९
शयीचि १.	११२६
शयु १.	४३३१९
शय्य ३.	४३३१८
शय्या २.	४३३१६५
" २.	६१२४१
शर १.	११२५४
" १.	३३३२२८
" १.	३१७१८०
" १.	३१८१४७
" १.	६११५८
" १.	८१६१६
शरज १.	१११५४
शरजालक	३१७१८३
शरण ३.	८३३१७
शरद् २.	२११८९
" २.	२११९१
" २.	६१२३८
शरदण्ड १ व.	३१३३९
शरभ १.	३३३३२
शरभा १.	३१६५१
" २.	३१७५२
शरण्य १. २. ३.	३१७१९४
" १. २. ३.	८१९३२
शराटिका २.	२३३११
शरादान ३.	३१७१८९
शरायुध ३.	३१७१७३
शरारु १. २. ३.	५१४४२
शराव १.	४३३५९
शरावती २.	४३३३०
शरासन ३.	३१७१७५
शरि १.	३१४७३

[शरि]

वैजयन्तीकोषः

[शान्तिगृह]

शरि १.	३१४७४	शशादन १.	२३३३०	शाक्य १.	१११३४
(चरि)		शशिन् १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४
शरीर ३.	४१४५२	शशिभूषण १.	१११३९	शकर १.	३१४५३
शरु १.	२३३२०	शशिसेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७
शर्करा २.	३१८१३४	शशोर्ण ३.	३१८११८	शाखा २.	३३३१५
" २.	७२१२६	" ३.	८१२२२	" २.	६२३२९
शर्करिल १. २. ३.		शशवत् ४.	८१२२८	शाखापुरी २.	४३३१
	३११४४	" ४.	८१८१६	शाखामृग १.	३१४३९
शर्मन् ३.	३१६१८९	" ४.	८१८११	शाखारण्ड १. २. ३.	
शर्व १.	१११४०	" ४.	८१८१२		३१६१३
शर्वर १. २.	७५१८४	शकुली २.	४३३७५	शाखास्थि ३.	४३३११६
शर्वरी २.	२११५७	" २.	४२३२६	शाखि १ ब.	३११२७
" २.	८१६५	शष्प ३.	३३३२३५	शाखिन् १.	३३३१५
शर्वाणी २.	१११५८	शस्त १. २. ३.	५४११०६	शाखोट १.	३३३७७
शल १.	१११५४	शस्त्र ३.	३३३१११	शाङ्गिक १.	३३३१७
" ३.	३३३३७	" ३.	३३३१५७	शाट १.	४३३२७
" १.	३३३६६	" ३.	३३३१९६	" १. २.	८१२२६
शलक १.	२३३४	" ३.	३३३२२६	शाटिका २.	४३३१२७
शलभ १.	२३३४३	" ३.	६३३३३	शाटी २.	८१२२६
शलल ३.	३३३३७	शस्त्रक १.	३३३१३१	शाडव १.	५३३२८
" २. ३.	३३३३७	शस्त्रचार १.	३३३१३१	शाडविक १.	५३३४०
शलाका २.	३३३१९९	शस्त्रमार्ज १.	३३३१५	शाण १.	३३३१९
" २.	३३३१४१	शस्त्रमुख ३.	३३३१६६	" १.	५३३४७
शलाट १.	५३३६१	शस्त्राख्य ३.	३३३३३	" १.	५३३६३
शलाह १. २. ३.	३३३१०	शखिका २.	३३३१६३	शाणी २.	४३३१३०
शलक ३.	६३३३२	शाक १.	३३३७६	शात ३.	३३३१८९
शलमलि १. २.	३३३१०	" १.	३३३६२	शालकुम्भ ३.	३३३२०
शल्य १.	३३३३७	" १. ३.	४३३१०	शातर १.	२३३८२
" १. ३.	३३३१६७	शाकट १. २. ३.	३३३५८	शान्नव १.	३३३४१
" १. ३.	३३३४१	" १.	५३३६१	शाद १.	३३३२३५
शल्यक १.	३३३६३	" ३.	५३३६१	" १.	३३३२६
शल्लक १. २.	८३३२६	शाकटीन १.	५३३६१	" १.	६३३५७
शलव १. ३.	३३३२१६	शाकफला २.	३३३१७०	शलल १. २. ३.	३३३४३
शलवयान ३.	३३३२१६	शाकशाकट १. २. ३.		शलनक १.	२३३८२
शलवर १.	३३३५२		३३३८२०	शलन्त १.	३३३१४९
शलवशीर्षक १.	३३३१०७	शाकशाकिन १. २. ३.		" १.	३३३७५
शलश १.	३३३१५		३३३८२०	" १. २. ३.	५३३११४
" १.	३३३३१	शलकुनिक १.	३३३१४०	शलन्ति २	५३३२७
शलशब्द १.	२३३२४	शलकोल १.	३३३१५२	" २.	६३३२९
शललोमन् ३.	३३३११८	शलक्तीक १. २. ३.		शलन्तिक ३.	३३३१२०
शलझा १.	२३३२७		३३३१४४	शलन्तिगृह ३.	४३३२०

(१४६)

[शान्तियात्रा]

शब्दानुक्रमणिका

[शित्तिचन्दन]

शान्तियात्रा २.	३३३५६	शालाजिर १.	५३३५९	शित्तर ३.	३३३८
शाप १.	२३३३२	शालि १.	३३३३२	" ३.	३३३१५
शापटिक १.	२३३३७	शालिजात १.	३३३३५	शित्तरिणी ३.	४३३९८
शाब ३.	५३३६	शालियष्टिक १.	३३३३४	शित्तरिन् १.	२३३५
" १. २. ३.	५३३२	शालिहोत्रि १.	३३३९०	" १.	८३३५८
शाम्बरी २.	३३३१२	शालीन १.	३३३१५६	शित्तरि २.	३३३११५
शार १.	३३३६१	" १.	३३३४१	शित्तरा २.	१३३२९
" १.	५३३२९	" १. २. ३.	५३३१७	" २.	३३३१५
" १.	५३३२५	शलु १.	४३३४७	" २.	४३३६८
" १. २. ३.	६३३९१	शलक ३.	४३३४४	" २.	४३३१०४
शारद १.	३३३४७	" ३.	७३३३४	" २.	६३३४०
" १.	३३३३६	शलर १.	४३३४७	" २.	८३३१५
" १. २. ३.	५३३८९	शलैय १. २. ३.	३३३१९	शित्तरावत् १. २. ३.	
" १.	७३३८६	शलशवत् १. २. ३.	५३३८८		३३३६
शारदी २.	३३३१९७	शलकुलिक ३.	५३३११	शित्तरावत् १.	३३३३६
शारि २.	२३३२०	शलसन ३.	३३३४७	शित्तरिणी १.	३३३४२
" १.	३३३६०	" ३.	७३३३५	शित्तरिन् १ ब.	२३३३७
" १. २.	६३३८८	शलसि १.	८३३१२	" १.	२३३३३
शारिका २.	३३३१३६	शलस्ति १.	८३३१२	" १.	२३३३७
शारिवा २.	३३३१३९	शलसृ १.	१३३३२	" १.	६३३६०
शार्कर १. २. ३.	३३३४४	" १.	३३३१५९	शित्तराहन् १.	१३३५५
" १.	३३३४९	शलस्त्र ३.	६३३३३	शित्तरिन्द्र १.	३३३९४
शार्ङ्ग ३.	१३३१७	शलस्त्रविद् १. २. ३.		शित्तरि १.	३३३५६
" १.	२३३२४		४३३४४	" १.	४३३९०
" ३.	६३३३३	" १. २. ३.	५३३३१	शित्तरि ३.	४३३१०३
शार्ङ्गवत् ३.	३३३१९	शलशपा २.	३३३११	शलित्तरिणी १.	४३३९२
शार्ङ्गिष्ठा २.	३३३१११	शलशुमार १.	४३३५४	" ३.	४३३१०३
" २.	३३३१४४	शलक्य ३.	३३३१७	शलित्तरिणि १. २. ३.	
" २.	३३३१७९	शलकियत् १. २. ३.			४३३९१
शार्ङ्गिन् १.	१३३११		५३३११६	शलित्तरि ३.	२३३९
शार्ङ्गल १.	३३३११	शलचा २.	३३३२८	शलित्तरिनी २.	४३३१४५
" १.	३३३३३	शलचित्ति १. २. ३.		" २.	७३३२६
शार्वर ३.	२३३६२	" १. २. ३.	५३३१९	शलित्तरिणी २.	४३३८४
" १. २. ३.	७३३८७	शलखण्ड १.	२३३३९	शलित्तरि १. २. ३.	६३३८३
शार्वी २.	२३३१५	" १.	४३३१०२	" ३.	३३३८२०
शल १.	३३३१५६	शलखण्डक १.	४३३१०२	शलित्तरि १.	३३३८५
शल २.	३३३१५	शलखण्डिक १.	२३३३३	शलित्तरि १. २. ३.	३३३१७
" २.	३३३८८	शलखण्डिन् १.	२३३३७	शलित्तरि १. २. ३.	३३३१७
" २.	६३३३७	शलखण्डिनी २.	८३३१९	शलित्तरि १. २. ३.	३३३१७
शलालक ३.	३३३३३	शलखण्डिनी २.	४३३१०२	शलित्तरि १. २. ३.	३३३१७
शलाला २.	२३३१५			शलित्तरि १. २. ३.	३३३१७

(१४७)

[शितिसारक]

शितिसारक १.	३३१५१
शितपुट १.	२३३४३
शिथिल १. २. ३.	३३११६
शिथिली २.	३३१३८
शिपिविष्ट १. २. ३.	३३११७
" १. २. ३.	३३११५
" १. २. ३.	३३११८
शिफा २.	३३३१२
" २.	३३२१०
" २.	३३८६५
शिबिका २.	३३७३३६
शिबिर ३.	३३३१०
शिम्बा २.	३३८६५
(शिम्बा)	
शिम्बक १.	३३८३७
शिर १.	३३८७८
" १.	३३८९१
शिरःपीठ १.	३३८८४
शिरसू ३.	३३३१५
" ३.	३३४८५
" ३.	३३६११
शिरसिज १.	३३४९७
शिरसिसिचू २.	३३३१२४
शिरस्थ १. २. ३.	३३८१७
(शिरस्थ)	
शिरस्थ ३.	३३४१०१
शिरीष १.	३३३७२
शिरोगेह ३.	३३३३४
शिरोधरा २.	३३४८४
शिरोधि २.	३३४८४
शिरोरत्न ३.	३३३१३६
शिरोरुह २.	३३४९८
शिरोरुहा २.	३३३११२
शिरोवर्तिन् १. २. ३.	३३८१०
शिरोऽस्थि ३.	३३४११५
शिल ३.	३३८९२
शिला २.	३३२१८
" २.	३३२१२

वैजयन्तीकोषः

शिला २.	३३३४०
" २.	३३३४५
" २.	३३३१६३
शिलाजतु ३.	३३२१६
शिलाह्वय ३.	३३८९६
शिली २.	३३११५२
" २.	३३३४०
शिलीमुख १.	३३७१८१
" १.	३३११४५
शिलोच्चय १.	३३११७
शिलोद्भव ३.	३३२१८
शिल्प ३.	३३९१८
शिल्पा २.	३३३२५
शिल्पिन् १.	३३९१७
" १.	३३९१७
शिल्पशाला २.	३३३२२
शिव १.	१११११
" १.	३३३१४९
" ३.	३३३१५५
" १.	३३४१६
" ३.	३३८९६
" १.	३३९१७
" ३.	३३४१४३
" १. २. ३.	३३५८४
शिवङ्कर १.	३३७१५८
" १. २. ३.	३३४१५५
शिवताति १. २. ३.	३३४१५५
शिवपार्श्वग १.	१३३२
शिवपुरी २.	३३३७
शिवप्रिय १.	३३३१९३
शिवमल्लिका २.	३३३१९३
शिवव्रतिन् १. २. ३.	३३६१३०
शिवा २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३३३११९
" २.	३३३१७७
" २.	३३८६०
" २.	३३५८४

[शीरा]

शिवेष्ट १.	३३३८३
शिशिर १.	२११८७
" १.	३३३७
शिशु १. २. ३.	३३४२
शिशुक १.	३३१७३
शिशुकच्छ ३.	३३६१३७
शिशुकच्छातिकच्छ ३.	३३६१३८
शिशुत्व ३.	३३४१५४
शिशुप्रिय ३.	३३२३५
शिशुवर्जिता २.	३३४२०
शिश्व ३.	३३४६१
शिश्वदान १. २. ३.	३३६१२
शिष्टि २.	३३७१४८
शिष्य १.	३३६२५
" १. २. ३.	३३९१४४
शीकर १. ३.	३३२१७
" १.	३३३६
शीघ्र १.	१३२५०
" १. २. ३.	३३४१२५
शीघ्रगमन ३.	३३२११
शीत १.	३३३३१
" १.	३३३६
" १. २. ३.	३३५९३
शीतक १. २. ३.	३३४१५५
शीतकङ्क २.	३३८१५६
शीतकृच्छ्रक ३.	३३६१४०
शीतपङ्क १.	३३९१७७
शीतपङ्कव १.	३३३९३
शीतल १.	१३२४५
" १.	३३३८२
" ३.	३३२४
" १.	३३३६
शीतला २.	३३२१३४
" २.	३३४४४
शीथु ३.	३३९१४५
" १.	३३९१७७
शीन १. २. ३.	३३४९५
शीरा २.	३३३९९

[शीरी]

शीरी २.	३३३२२८
शीर्णक १. २. ३.	३३६१२९
शीर्णपर्णाशिन १. २. ३.	३३६१२९
शीर्णवृन्त १.	३३३१७१
शीर्ष ३.	३३८१०७
" ३.	३३४८५
शीर्षक ३.	३३७१५६
शीर्षण्य ३.	३३७१५६
" ३.	३३४१०१
शीर्षत्राण ३.	३३७१५६
शील ३.	३३३३३
शीवाल ३.	३३२४९
शुक १.	३३३२
" १.	३३३२५
" ३.	३३८९२
शुककूट १.	३३६१५८
शुकनास १.	३३३१५७
शुकनासक १.	१३३६८
शुकपोत्र १.	३३११७
शुक्त ३.	३३३८२
" ३.	३३३८५
" १.	३३३२६
" १.	३३३२९
" १. २. ३.	३३४१८
शुक्तित्तकषायक १.	३३३३५
शुक्ति २.	३३३८१
" २.	३३८१०१
" २.	३३८१३२
" २.	३३१५६
" २.	३३१५८
" २.	३३१५०
" २.	३३३३७
शुक १.	१३२३३
" १.	२११३४
" १.	२११८४
" १.	३३२१९
" १. २. ३.	३३५८६
शुकशिष्य १.	१३३१०

शब्दानुक्रमिका

शुकसृष्टा २.	३३३१७८
शुक्रा २ व.	२११२१
शुक्ल १.	२११७९
" ३.	३३४१११
" १.	३३३१०
शुक्लकार ३.	३३२४७
शुक्लधातु १.	३३२१३
शुक्लपुष्प १.	३३३६१
" १.	३३३१९१
शुक्लहरित १.	३३३२४
शुक्लापाङ्ग १.	२३३३६
शुक्ल १. २. ३.	३३३१७
शुक्ला २. १. ३.	३३३३७
शुक्ल २.	३३३१८३
शुक्ल १.	२११८४
" १.	२११८८
" १.	३३४१३५
" १.	३३३१०
" १. २. ३.	३३४६५
" १. २. ३.	३३५८५
शुक्लकिर्णिक ३.	३३२४०
शुण्ठ १.	३३३८९
शुण्ठि २.	३३८७५
शुण्ठा २.	३३२४०
" २.	३३२४०
शुण्ठापान ३.	३३२५३
शुण्ठाल १.	३३७६२
शुण्ठुदी २.	३३२२७
शुद्ध ३.	३३३८५
" १. २. ३.	३३४६५
" १. २. ३.	३३५९१
" ३.	३३३१८
शुद्धजड १.	३३४७२
(शुद्ध, जड)	
शुद्धान्त १.	३३३३६
" १.	३३१७४
शुद्धि २.	३३६८९
शुन १.	३३४६९
शुनक १.	३३४६८
शुनासीर १.	१३२११
शुनि १.	३३४६९

[शुद्धी]

शुनी २.	३३४७१
शुभ १.	३३४१४३
" १. २. ३.	३३४१७
" १.	३३६१६
शुभयु १. २. ३.	३३४२९
शुभक १.	३३८४१
शुभदती २.	२११९
शुभा २.	३३४४१
शुभान्वित १. २. ३.	३३४२९
शुभ्र ३.	३३२२४
" १.	३३३१०
" १. २. ३.	३३४१८
शुभ्रि १.	३३५९२
शुभ्रक १. ३.	३३५८९
शुभ्रव ३.	३३२२४
" ३.	३३३३४
शुभ्रवा २. ३.	३३२३०
(शुभ्रपा)	
शुभ्रपा २.	३३३३८
शुभ्रपित १. २. ३.	३३४१०५
शुष १.	३३५५०
शुषिका २.	३३६१८१
शुषिल १.	१३२४७
शुष्कगोमय १.	३३४६०
शुष्कमांस ३.	३३३८९
शुष्मन् १.	१३२१५
" ३.	३३७२१०
शुष्मि १.	१३२५०
शूक १.	३३१५८
" १.	३३८६५
शूककीट १.	३३१३३
शूकधान्य ३.	३३८६२
शूकशिखि २.	३३३१२९
शूद्र १.	३३५१७
" १.	३३९११
" १.	३३९११
शूद्रकुण्ड १.	३३५६३
शूद्रा २.	३३४२३
शूद्री २.	३३४२३

[शून्य]

शून्य १. २. ३.	२५१२०
" १. २. ३.	३११४५
" १. २. ३.	५४१८७
शूर १. २. ३.	३७१२८
" १. २. ३.	३७१४७
" १.	३८१३३
" १. २. ३.	६५१९२
शूरसेन १ व.	३११२४
शूरसेनि १ व.	३११२४
शूर्प १. ३.	४३१६५
" १. ३.	५११५६
शूर्पकर्ण १.	३७१६१
शूर्पकारि १.	१११२८
शूर्पावर ३.	५११५५
शूल १.	४४१३७
" १. ३.	६५१९२
शूलनाशक ३.	३८१२५
शूलाकृत १. २. ३.	४३१९४
शूलिक १.	३४१३१
" १.	३५१५
" १.	३५११२
" १.	३५१६९
" १.	३५१७३
शूलिका २.	३८१२३
शूलिन् १.	१११४१
शून्य १. २. ३.	४३१९४
शृङ्गल १. २. ३.	३७१८३
" १. २. ३.	४३१४६
शृङ्गलक १.	३४१६८
शृङ्ग ३.	३१२८
" १. ३.	६५१८७
शृङ्गवर्जित १.	३४१७३
शृङ्गवाद्य ३.	३९१२५
शृङ्गाट १.	३११५१
" १.	३७१५१
शृङ्गाटक १.	४१२४७
शृङ्गार १.	३७१८६
" १.	३९१७५
" १.	४३१६९
शृङ्गारगर्व १.	३६१६९

वैजयन्तीकोषः

शृङ्गिणी १.	३४१६४
शृङ्गिणी २.	३४१४१
शृङ्गिन् १.	३४१९
" १.	३४१५२
" १.	३७१९६
" १.	४११४४
" १.	८११६०
शृङ्गिवेर ३.	३३१२१४
" ३.	३८१७६
शृङ्गी २.	३८१९०
" २.	४११४४
शृङ्गीकनक ३.	३२१२२
शृङ्ग १. २. ३.	४३१९५
शेखर १.	४३१५३
शेफ १.	४४१६१
शेफस् ३.	४४१६१
शेफालिका २.	३३१८६
शेमुषी २.	३६१६३
शेवधि १. ३.	१२१६०
शेवाल ३.	४२१४९
शेष १.	१११३०
" १.	४११३
" १. २. ३.	६५१८७
शैच १.	३६१२४
शैख १.	१२१८७
" १.	३५१५३
" १.	३५१००
शैखरिक १.	३३११५
शैखालीक १.	३६१०७
शैग्रव ३.	३६१२२
शैनि १.	१११२६
शैन्या २.	४२१२७
शैल १.	२११८६
" १.	३२११
" १.	८११११
शैलमूल ३.	३३१२०३
शैलालिन् १.	३९१६२
शैलूष १.	३९१६२
शैलेय ३.	३२१४१
" ३.	३८१९६

[शौण्ड]

शैवल १.	४२१४९
शैवल्लिनी २.	४२१२३
शैवाल ३.	४२१४९
शैशव ३.	४४१५४
शोक १.	३६१८३
" १.	३९१७६
शोचिकेश १.	१२११५
शोचिस् ३.	६३१३४
शोण १.	३३१६८
" १.	३७१००
" १.	५३१७७
" १.	५३१५१
शोणरत्न ३.	३२१३९
शोणिक १.	५३१३१
शोणित ३.	४४१०६
" ३.	५३१९१
" ३.	८६१८
शोथ १.	४४१२२
शोथशत्रु १.	३३१२०९
शोधन १.	३३१४१
शोधनी २.	४३१५२
शोधित १. २. ३.	५४१६६
शोध्य ३.	४४१०५
शोफ १. ३.	४४१२२
शोफली २.	३३१४५
शोभ १.	३६१२३
शोभन ३.	३२१३२
" १. २. ३.	५४१३५
शोभा २.	४३१४९
शोभाजन १.	३३१५६
शोष १.	४४१२४
शोषु १.	३६१८१
शौक ३.	५११६
शौक्तिकेय ३.	४११५७
शौक्लिकेय १.	४११२४
शौच ३.	३६१२०९
शौटीर्य ३.	३६१६९
शौण्ड १.	२३११४
" १. २. ३.	५४१३७

शौण्ड]

शौण्ड १. २. ३.	६५१९०
शौण्डिक १.	३५१४४
" १.	३९१४४
शौण्डी २.	३८१७६
" २.	६५१९०
शौद्धोदनि १.	१११३४
शौभिक १.	३६१९०३
शौरि १.	१११२६
शौर्य ३.	५११५६
शौर्य ३.	३७१२१०
शौर्यकरण ३.	५२११६
शौक्तिक १. २. ३.	५४१५०
शौखिक १.	३९११५
श्च्योति २.	५२१३४
श्मशान ३.	३९१४८
श्मश्रु ३.	४४१०३
श्मश्रुल १. २. ३.	५४१९
श्याम १.	३३१४५
" ३.	३८१७९
" १.	५३१११
" १.	५३११४
श्यामकङ्कु २.	३८१५६
श्यामल १.	५३१११
श्यामलक १.	३३१२६
श्यामवल्ली २.	३८१८०
श्यामा २.	२३११९
" २.	३३१३८
" २.	३८१७७
" २.	४४१८
" २.	६२१२९
श्यामाक १.	३८१५६
श्यामाङ्ग १.	२११३२
श्यामाङ्गी २.	४२१२६
श्यामिका २.	३४११९
श्याव १.	५३११८
" १.	५३१३१
श्येत १.	५३११०
श्येन १.	२३११९
" १.	२३१३०
श्येना २.	२३१२०

शब्दानुक्रमिका

अद्धा २.	३६११८०
" २.	६२१३८
अद्धाल १. २. ३.	५४१३७
अन्धन ३.	५२१३९
अपणी २.	३६११००
(अयणी)	
अपाय १.	७११७४
अमण १. २. ३.	५४११५
अमणी २.	३३१२५
" २.	३४११०
अमस्थान ३.	३७१९४
अयण ३.	४२१३३
अवण ३.	२११४०
" ३.	४४१९३
अवस् ३.	४४१९२
अविष्टा २ व.	२११४०
आणा २.	४३१८०
आद्ध ३.	३६१६४
" १. २. ३.	५४१३७
आद्धदेव १.	१२१३४
आन्त १. २. ३.	५४१३६
आमणी २.	३३१२५
आय १.	५२१३३
आवक १.	३९११११
आवण १.	२११८५
आवणिक १.	२११८४
आवणी २.	२११७६
" २.	३८१९३
श्री २.	३६१९१
" २.	८२११९
" २.	८११२
श्रीकण्ठ १.	१११३८
श्रीकर्णायिक १.	२३१४०
श्रीकृच्छ्र ३.	३६११४०
श्रीखण्ड १.	३८११३
श्रीगर्भ १.	३७१५९
श्रीघन १.	१११३२
" १.	३८१३९
श्रीधर १.	११११२
श्रीपति १.	१११११
श्रीपथ १.	४३११६

[श्रेष्ठिन्]

श्रीपर्णी २.	३३१५८
" २.	३३१५८
" २.	७५१८६
श्रीपुष्प ३.	४२१४१
श्रीफल १.	३३१३०
श्रीफली २.	३३१११०
श्रीवेर ३.	३३१२०२
श्रीमकुट ३.	३२११९
श्रीमत् १ व.	२११३७
" १.	२३१२५
" १.	३३१५३
" १.	३३१६०
" १.	३३१६९
" १.	३४१५३
श्रील १. २. ३.	५४१५६
श्रीवत्स १.	१११११
" १.	११११७
श्रीवत्सपिण्याक १.	३८१०९
श्रीवत्साङ्ग १.	१११११
" १.	८११४५
श्रीवास १.	३८१०९
श्रीवृक्ष १.	३३१२७
" १.	८६११९
श्रीवृक्षकिन् १.	३७१९२
श्रीवेष्ट १.	३८१०९
श्रीसंज्ञ ३.	३८१०३
श्रुत १. २. ३.	६५१८९
श्रुतकर्मन् १.	२११३६
श्रुति २.	३६१२७
" २.	४४१९३
" २.	६२१४०
श्रूषा २.	३३११५४
श्रेणि २.	६५१९०
श्रेयस् १. २. ३.	५४११४३
" १. २. ३.	८११३२
श्रेयसी २.	३३१३१
" २.	८११३३
श्रेष्ठ ३.	३२१२५
" १. २. ३.	५४१६३
श्रेष्ठिन् १.	३५१७१

श्रीण]

वैजयन्तीकोषः

[षण्मातुर

श्रीण १. २. ३.	पा११४४	श्रपाक १.	३१५५१
श्रीणा २.	२११४०	श्रपामन १.	३१३१०७
श्रीणि २.	४१४६४	श्रभीरु १.	३१४३७
श्रीत्र ३.	४१४९३	श्रभ्र १. ३.	४११२
श्रीत्रकान्ता २.	३१८९३	श्रयथु १.	४१४१२२
श्रीत्रिय १.	३१६८१	श्रवृत्ति २.	३१८१७
" १.	८१९४५	श्रशुर १.	४१४३०
श्रीषट् ४.	८१८३	" १ द्वि.	४१४४८
श्रीषि २.	३१६१६६	श्रशूर्य १.	७११७४
श्रयाख्य ३.	३१८१०९	श्रश्रू २.	४१४३०
श्रयूष १.	५१३२८	श्रश्रूश्रशुर १ द्वि.	४१४४८
श्रचण १.	५१३४	श्रश्रयस १. २. ३.	५१४१४३
" १. २. ३.	५१४१३६	श्रसन १.	११२४७
श्रचणपत्रक १.	३१४९४	श्रसित ३.	३१६२०४
श्रचणवाच् १. २. ३.	५१३४४	श्रस्तन १. २. ३.	५१४८९
श्राघा २.	२१४३५	श्रापद १.	३१४७३
श्रिकु २. ३.	३१६१९१	श्राली १.	३१४७१
श्रीपद १.	४१४१३३	श्राविध् १.	३१४३७
श्रीष्मन् १.	४१४१२१	श्रास १.	३१६२०४
श्रीष्मफल १.	३१३५५	श्रासहेति २.	३१६२००
श्रीष्मल १.	३१८५३	श्रासा २.	३१३१३८
" १. २. ३.	४१४१४६	श्रित्र ३.	४१४१२५
श्रीष्मसू १. २. ३.	४१४१४६	" १. २. ३.	५१४१४४
श्रीष्मातक १. २. ३.	३१३५५	श्रेत ३.	३१८१३९
श्रीष्मिन् १.	३१३५३	" १.	५१३१०
श्रीोक १.	६११६०	" १. २. ३.	६१५९२
श्रः (-स्) ४.	८१८१९	श्रेतकन्द १.	३१३२०५
श्रकण्टक १.	३१५५८	श्रेतकाक १.	२१३१८
" १.	३१५१०६	श्रेतक्षार १.	३१८१२७
श्रचण्डाल १.	३१५८	श्रेतच्छाण ३.	३१८१४९
श्रदंष्ट्रा २.	३१३१४२	श्रेततण्डुल १.	३१८३२
" २.	३१७५१	श्रेतपिङ्गल १.	३१४११
श्रदयित ३.	४१४१०९	श्रेतबिन्दुका २.	५१३१५
श्रन् १.	३१४८६	श्रेतमध्य १.	३१३२००
" १.	८१६५	श्रेतमरिच ३.	३१८१९०
श्रनिश ३. २.	३१५३४	श्रेतरक्त १.	५१३१७
श्रपच १.	३१५३९	श्रेतशाल १.	३१८३३
" १.	३१५४७	श्रेतशिखिका २.	३१८४६
श्रपाक १.	३१५३८	श्रेतसुरसा २.	३१३११९
		" २.	३१३१८७

(१५२)

श्रेता २.	३१९५०	षट्क ३.	३१७१०
श्रैत ३.	३११९	षट्कर्मन् ३.	३१६६३
श्रौववीयस ३.	५१४१४२	षट्पद १.	२१३४३
ष		पट्सस १. २. ३.	५११२६
षट्क ३.	३१७१०	पडभिज्ञ १.	१११३२
षट्कर्मन् ३.	३१६६३	पडभ्रा २.	३१३१११
षट्पद १.	२१३४३	" २.	३१३१७७
पट्सस १. २. ३.	५११२६	पडानन १.	१११५६
पडभिज्ञ १.	१११३२	पडूषण ३.	३१८८१
पडभ्रा २.	३१३१११	पडगुण १.	३१७६
" २.	३१३१७७	पडग्रन्थ १. २.	७१५८७
पडानन १.	१११५६	पडग्रन्था २.	३१३१९८
पडूषण ३.	३१८८१	पडज्ज १.	३१९१३२
पडगुण १.	३१७६	पडूद १. २. ३.	३१४५७
पडग्रन्थ १. २.	७१५८७	पडूस १.	५१३४५
पडग्रन्था २.	३१३१९८	पडूसासव १.	४१४१०४
पडज्ज १.	३१९१३२	(पडूसावस)	
पडूद १. २. ३.	३१४५७	पण्ड १.	३१४५३
पडूस १.	५१३४५	" १.	३१६१२२
पडूसासव १.	४१४१०४	" १.	३१७३३
		" १.	४१४३
		" १. ३.	५११५
		" १.	६११६०
		पण्डतायोग्य १.	३१४५५
		पण्माससङ्ग्रहिन् १.	३१६१२५
		पष्टि २.	५११२७
		पष्टिक १.	३१८३४
		पष्टिक्य १. २. ३.	३१८१९
		पष्टितम १. २. ३.	५११२२
		पष्टिहायन १.	३१७६४
		पष्ट १. २. ३.	५११२१
		पष्टकालिन् १. २. ३.	३१६१२७
		पष्टी २.	१११५९
		पाण्ड १.	१११४६
		पाण्मातुर १.	१११५६

षण्मासी]

षण्मासी २.	३१६६६	संवाल १.	२११२८
षाष्टिक ३.	३१६१४६	" १.	३१७८०
षिद्ध १.	३१९७०	संवास १.	४१३४
" १.	४१३३९	" १.	४१३३५
षोडत् १. २. ३.	३१४५७	" १.	४१३१६७
षोडशक १. २. ३.	८१५२४	संवासन ३.	४१३२३
षोडशाङ्घ्रि १.	४११४७	संवाहक १.	३१९१५
षोडशावर्त १.	४११५६	संवाहन ३.	५१३३०
षोडशाह १.	३१६१४४	संवित्ति २.	३१६१६४
ष्यम १.	६११६१	" २.	७१२२९
स		संविद् २.	५१३३७
संयत् २.	३१८२०६	" २.	६१२४१
संयत् १. २. ३.	५१४६७	संवीक्षण ३.	५१२४२
संयता २.	३१८१६८	संवीत १. २. ३.	५१४९६
संयम १.	३१६२३३	संवृत १.	२११४५
" १.	५१३३०	संवृतता २.	३१६३५
संयोज्य १.	३१६११२	संवेश १.	४१३१६८
संयाम १.	५१३३०	(सवोस)	
संयाव १.	४१३७३	संव्यान ३.	४१३१२२
संयुग १.	३१८२०४	संसप्तक १.	३१७१५२
संयोग १.	५१२२६	संशय १.	३१६१७७
संरम्भ १.	३१९८९	" १.	३१६१९७
संराव १.	२१४४	(संश्रय)	
संरोध १.	७११७६	संशयालु १. २. ३.	५१४१३३
संवत् ४.	८१८१०		८१७२९
संवत्सर १.	११२९०	संशित १. २. ३.	५१४१४४
संवत्सरतम १. २. ३.	५१११९	संश्रव १.	५१२३७
	२१४२५	संश्लेष १.	५१२२६
	३१६११७	संसद् २.	३१८१३
	४१२१२	संसरण ३.	४१३१६
	३१३१७७	" ३.	८१३१२
	३१८४३	संसिद्धि २.	७१२२९
	३१९७६	संसृष्ट १. २. ३.	७१४२८
	१११२४	संसृष्टिन् १.	५१४५५
	११२२१	संस्कार १.	३१६१२
	४१२४५	संस्कृत १. २. ३.	७१४२८
	४१३२	संस्कृतस्तम्भ १.	३१६१०३
	२१४२५		७१५८८
	४१३१६७	संस्कृति १. २.	४१३१६५
		संस्तर १.	७११७६
		" १.	७११७६

शब्दानुक्रमणिका

संस्तव १.	५१२३१
संस्ताव १.	३१६११०
संस्त्याय १.	७११७८
संस्था २.	३१६८७
" २.	३१८१५
" २.	६१२४३
संस्थाचर १.	३१७२७
संस्थान ३.	५१२२१
" ३.	७१३३७
संस्थित १. २. ३.	३१७२२०
संस्पृष्टमैथुना २.	३१६१८
संस्फोट १.	३१७२०४
संहतजानु १. २. ३.	५१४१०
संहतल १.	४१४७८
संहनन ३.	४१४५२
संहार १.	२११९५
संहारी २.	४१३३८
संहिता २.	७१२३८
संहृति २.	२१४३१
सकल १. २. ३.	५१४८५
सकाश १. २. ३.	५१४१३३
सकृत् ४.	८१७२९
" ४.	८१८१६
सकृत्प्रज १.	२१३१७
" १.	८११४५
सकृप १. २. ३.	३१९७९
सक्त १.	४१३४०
" १. ३.	८१९३१
सक्तुफला २.	३१६८९
सक्थि ३.	३१७७९
" ३.	४१४५९
सखि १. २. ३.	३१७४३
" १. २. ३.	६१५९८
सखी २.	४१४२५
सख्य ३.	३१६१८७
सगर ३. २.	८१९३३
सगर्भ १.	४१४३४
सगोत्र १.	४१४१०

[सगोत्र

(१५३)

[सन्धि]

वैजयन्तीकोषः

[सदागति]

सन्धि २.	४३१०३	सङ्ग्रह ३.	४३१४२	सतत १. २. ३.	४३१३०
सङ्कट १. २. ३.	४३१२६	सङ्ग्रह १.	७११७८	सतस्व ३.	४३१२१
सङ्कर १.	४३१२२	सङ्ग्राम १.	३७१२०६	सती २.	१११५९
सङ्करज १. २. ३.	३७१६२	सङ्ग्रह १.	३७१२००	" २.	३२११६
" १. २. ३.	३७१६५	" १.	४३१७९	" २.	४३१७७
" १. ३.	३७१११	सङ्घ १.	४३११४	सतीनक १.	३७१४४
सङ्कर्षण १.	१११२२	सङ्घचारिन् १.	४३१४२	सतीर्थ्य १.	३७१४४
सङ्कलित १. २. ३.	४३१०९	सङ्घतिथ १. २. ३.	४३११९	सन्तुष्ट १. २. ३.	४३१३७
सङ्कल्प १.	३७११७३	सङ्कर्ष १.	७११७७	तिरक ३.	२११८६
सङ्कीर्ण १.	३७१२२	सङ्ज्ञात १.	४३१०९	सत्किष्कु १.	३७१५७
" १. २. ३.	४३११०	" १.	४३१११	सत्त्व ३.	३७१६२
सङ्कुचित १.	२११३६	सङ्ज्ञातिका २.	३७१०८	" ३.	३७१९७
सङ्कुल १. २. ३.	२१११७	सचिव १.	७११७५	" १. ३.	६११९३
" १. २. ३.	४३११०	सञ्जः (-च्) ४.	८११७७	सत्त्वक १.	११२३८
सङ्कुसुम १. २. ३.	४३१६८	सज्ज १. २. ३.	३७१४२	सत्पथ १.	३११४९
सङ्कीच ३.	३७११७७	सज्जन ३.	३७१५९	सत्य ३.	१११४७
सङ्कन्दन १.	११२३३	सज्जना २.	३७१७०	" ३.	३७१२०९
सङ्क्रम १.	३७१५२	सञ्जय १.	४३१११	" ३.	४३१३३
सङ्क्रा २.	११२१५	सञ्जर १.	४३१५३	" १. २. ३.	६११९५
सङ्क्षेप १.	२११४०	सञ्चार १.	३७१२८	सत्यङ्कार १.	३७१७१
सङ्ख्य ३.	३७१२०४	सञ्चारिका २.	३७१३६	सत्ययुग १.	२११९१
सङ्ख्यान ३.	४३१३६	सञ्चारिणी २.	४३१२४	सत्ययौवन १.	११३३४
सङ्ख्यावत् १.	३७१२३४	सञ्चारित १.	३७१३३	सत्यलोक १.	३७१२०८
सङ्ग ३.	३७१२२१	सञ्चारिन् १.	३७१८१	सत्यवती २.	३७११४४
" ३.	४३१६१	सन्ध्यादनी २.	४३१०३	सत्यवतीसुत १.	१११३१
" १.	४३१२७	सन्ध्या ३.	४३१३१	सत्याकृति २.	३७१७१
सङ्गत १.	२११६४	सङ्गवन ३.	४३१२६	सत्याग्नि १.	३७१५२
" १.	३७११४७	सङ्गावन ३.	३७१४४	सत्यानृत ३.	३७१८३
" ३.	३७११८६	सङ्गपन ३.	३७१२१५	सत्यापन ३.	३७१७१
सङ्गति २.	४३१२१	सङ्गा २.	२११२३	सत्र ३.	३७१८५
सङ्गम १.	३७११४७	" २.	६११४३	" ३.	३७१८५
" १.	४३१२७	सङ्गु १. २. ३.	४३११०	" ३.	६११३५
सङ्गर १.	३७१२०५	सङ्ग्वर १.	११२३१	सत्रशाला २.	४३१२६
" १.	७११९२	सट १.	३७१५७	सत्रा ४.	८१११७
सङ्गव १.	२११६४	सट्ट ३.	४३१४४	सत्वर १. २. ३.	४३१२४
सङ्गाली २.	३७१८९	सट्टक ३.	४३१९८	सदस् २. ३.	३७११४
सङ्गीतक ३.	३७१७२	सणि १.	४३१५५	सदसदात्मक ३.	३७१६४
सङ्गीर्ण १. २. ३.	४३१०६	सण्डीन ३.	२११५०	सदस्य १.	२७१८१
सङ्गूढ १. २. ३.	४३१०९	सत् ३.	११२३८	" १.	३७११३
		" ३.	३७१२३४	सदा ४.	८११५
		" १. २. ३.	८३११६	सदागति १.	१११५०

(१५४)

[सदागति]

शब्दानुक्रमिका

[ससला]

सदागति १.	२११५५	सन्तान १.	१३१४४	सन्धिबन्धन ३.	४३११७
सदावन १. २. ३.	४३१८८	" १.	४३१४०	सन्ध्या २.	२११६९
सदाफल १.	३३१२२१	" १.	४३१४९	सन्न १. २. ३.	४३११५
सदृश १. २. ३.	४३१२२१	सन्तानिनी २.	३७१४७	" १. २. ३.	६३११९
सदृश १. २. ३.	४३१२२१	सन्ताप १.	११२३१	सन्नद्ध १. २. ३.	३७१४२
सदृश १. २. ३.	४३१२२१	" १.	४३१३८	सन्नय १.	७११८२
सदृश १. २. ३.	४३१२२१	सन्तापित १. २. ३.	४३१२८	सन्नाम १.	४३१२४
सदृश १.	११११८	सन्तोष १.	३७१६६	सन्नाह १.	३७१५३
(सन्धि)		" १.	३७१२०९	सन्नाहित १. २. ३.	४३१२७
सदृश ३.	४३११८	सन्देश १.	३७११७	सन्नाहय १.	३७१६९
सद्यः (-स्) ४.	८११७	" १.	४३११०	सन्निकृष्ट १. २. ३.	४३१४१
सद्यःपाक १.	३७१९९	सन्देशित १. २. ३.	३७१११	सन्निधि १.	७११८०
सद्यःप्रचालिताज्ञक १.	३७१४२	सन्दर्भ १.	४३१२९	सन्निपात १.	४३१२६
सद्यस्तन १. २. ३.	४३१८९	सन्दृष्ट १.	३७११३	सन्निभ १. २. ३.	३७१२१
सदुचि १. २. ३.	३७१४३	सन्दान ३.	३७१२९	" १. २. ३.	४३१२२
सधर्मचारिणी २.	४३१३५	सन्दानिनी २.	४३१२२	सन्निवेश १.	४३१३१
सध्रीचीन १. २. ३.	४३१९३	सन्दानभाग १.	३७१७६	" ३.	४३१२१
सध्वयच १. २. ३.	४३१९३	" १.	३७१७९	सन्निहित १. २. ३.	४३१३३
सन्कुमार १.	११३३७	सन्दाल १.	२११५१	सन्न्यास १.	३७१४४
सनल १. २. ३.	३७१४४	सन्दित १. २. ३.	४३१९७	सन्न्यासपत्नी २.	४३१२८
सना ४.	८११६	सन्देष्ट १. २. ३.	४३१३८	सपट्टी २.	४३१४४
सनात् ४.	८११६	सन्देश १.	२११२५	सपत्न १.	३७१४१
सनातन १.	११३३७	सन्देशगिर २.	२११३६	सपत्राकृति २.	४३१३८
" १. २. ३.	४३१८८	सन्देशहर १.	३७१२९	सपदि ४.	८११३३
" १. २. ३.	८११२५	सन्देह १.	३७१७७	" ४.	८११३३
सनाभि १.	४३१५०	सन्दोह १.	४३११२	सपर्या २.	३७१३९
सनालिङ्ग १.	३७१२०	सन्द्वय १.	३७१२१	सपिण्ड १.	४३१५०
सनि १. २.	३७१२१	सन्द्राव १.	३७१२१	सपीति २.	३७१५३
" १.	८१११०	सन्धा २.	२११६९	ससकी २.	४३१४६
सनिष्टीव १. २. ३.	२१११८	" २.	६११४४	ससजिह्व १.	११२१७
सनीडक १. २. ३.	४३१४१	सन्धान ३.	४३१८२	ससतन्तु १.	३७१८२
सन्त १. २. ३.	४३१४१	सन्धानी २.	३७११०५	ससति २.	४३१२७
सन्तति २.	४३१४१	" २.	४३१२१	ससपर्ण १.	३७१४७
" २.	७१२२८	सन्धि १.	३७११६	" १.	६११६३
सन्तमस ३.	२११६२	" १.	६११६३	सन्धिकाष्ठ ३.	४३१४१
		सन्धित १.	४३१०९	सन्धित १.	४३१०९
		सन्धिनी २.	३७१५१	सन्धिनी २.	३७१५१

(१५५)

सप्तसप्त]

वैजयन्तीकोषः

[समुद्रनवनीतक

सप्तसप्त १.	२११११	समन्तात् ४.	८१८३	समाहार १.	५१२१८
सप्तार्चिस् १.	१२११६	समन्तिक १. २. ३.		" १.	८११४७
सप्त १.	३१७९०		५११३३	समाहित १. २. ३.	
सप्तह्यचारिन् १.	३१६२४	समपद ३.	३१७१८७		२१११३
सभा २.	३१८१३	समम् ४.	८१८१७	" १. २. ३.	२१११४
" २.	५११५	समय १.	७११८२	समाह्वय १.	८११४७
" २.	६१२४२	समया ४.	८१७३३	समिक ३.	३१७२०३
सभाजन ३.	३१६१८६	" ४.	८१८१५	" १.	७११७७
सभासद् १.	३१८१३	समर १. ३.	३१७२०६	मिति २.	७२२१७
सभास्तार १.	३१८१३	" १. ३.	८१६१७	समिदाधान ३.	३१६११
समिक १.	३१९५९	" १. ३.	८१६१८	समिध् २.	३१६१६
सम्य १.	१२२२५	समर्थ १. २. ३.	७१३३०	" २.	३१७२०६
" १.	३१८१३	समर्थन ३.	३१८१५	समीक १.	५१३१६
" १. २. ३.	६१४१८	समर्थान् १. २. ३.		" १.	७११७५
सम् ४.	८१७८		५११३१	समीकरण ३.	३१८३०
सम १.	३११५२	समलेपनी २.	३१९१४	समीचीन ३.	५१३३
" ३.	५११६१	समवकारक १.	३१९१००	समीप १. २. ३.	५११४०
" ३.	५११६२	समवर्तिन् १.	१२३३४	समीर १.	१२३४९
" १. २. ३.	५११८६	समवाय १.	५१११	समीरण १.	१२३४७
" १. २. ३.	५११२१	समशन १.	५१३५४	" १.	३३३१२०
" १. २. ३.	६१५९५	समष्टि २.	५१३४८	समुच्चय १.	५२११८
समक ३.	५११६२	समसुप्ति २.	२११९४	समुच्छ्रय १.	८१६१६
समकम् ४.	८१८१७	समस्त १. २. ३.	५११८५	समुज्झित १. २. ३.	
समक्ष १. २. ३.	५११३३	समस्थान ३.	३१६२२४		५११०१
समग्र १. २. ३.	५११८५	समस्या २.	२१४४०	समुत्थान ३.	५२२२५
समङ्ग १.	३१९६०	समा २ ब.	२११९१	समुत्पिञ्ज १. २. ३.	
समङ्गा २.	३३३१३५	" २.	६१५९५		५११९४
समज १.	५११५	समांसमीना २.	३१४४८	समुद् १. २. ३.	५१३३३
समज्ञा २.	२१४३६	समाघात १.	३१७२०४	समुद्य १.	३१७२०५
समज्या २.	३१८१४	समाज १.	५११५	" १.	५११२
समक्षस ३.	३१७४८	समादान ३.	३१६१०४	समुदस्त १. २. ३.	
समतट १ ब.	३११३१	समाधि १.	३१६२३२		५१११२
समधिक १. २. ३.		" १.	३१९६०	समुदाय १.	३१७२०५
	५११३७	" १.	७११८१	" १.	५११२
समनीपद १.	१२३४४	समान १. २. ३.	५११२१	समुद्र १.	४३३६४
समन्त १. २. ३.	५११३३	" १. २. ३.	७११८८	समुद्धत १. २. ३.	
समन्ततः (-स्) ४.		समानोदर्य १.	४१३३४		५१३३१
	८१८३	समापन ३.	८३३३३	समुद्र ४.	४२३११
समन्तदुग्धा २.	३३३१७	समालम्भन ३.	४३३१४७	" १. २. ३.	५११२९
समन्तभद्र १.	११३३३	समास १.	२१४४०	समुद्रनवनीतक ३.	
समन्तभुज् १.	१२३१४	" १.	५२३१८		२११२७

(१५६)

समुद्रान्ता]

शब्दानुक्रमणिका

[सर्वज्ञ

समुद्रान्ता २.	८२११०	सम्भोग १.	३१७७०	सरस्वती २.	१११९
समुन्दन ३.	५२२२९	" १.	७११८०	" २.	४२२२८
समुन्नति २.	३३३१६	सम्भ्रम १.	३१९८९	" २.	८१५३०
समुन्नद्ध १. २. ३.	८१४१२	" १.	७११७९	सरि २.	२११२
समूह १.	३१४२०	सम्मति २.	७२२२९	सरित् २.	४२२२२
समूह १.	५११२	सम्मद १.	३१६१८८	सरिताम्पति १.	४२३११
समूहन ३.	३१७१८९	सम्मर्द १.	३१७२०५	सरिस्पति १.	४२३१२
समृद्ध १. २. ३.	५१४५७	सम्मार्जनी २.	४३३१२	सरी २.	३१७९८
समृद्धि २.	३१८९३	सम्मासा २.	३३३१२७	सरीस्प १.	४११४४
समोलक १.	५३३४५	(समांसा)		" १.	४११४०
समोलुक ३.	३२३३०	सम्भुज् १. २. ३.	५१४४७	सरुज् २.	३१६५०
सम्पत्ति २.	३३३१९१	सम्भूर्च्छन ३.	५२३४१	सरुहाह १.	३१७१०६
" २.	३१७४४	सम्भृच ३.	५३३३	सरोज २.	४२३३७
सम्पद् २.	३३३१९१	सम्भ्राज् १.	६११६१	सरोरुह ३.	४२३३६
" २.	८१९५	सर १.	१२३४८	सर्ग १.	३३३३२
सम्पात १.	५२२२६	" १.	३३३४२	" १.	५२३१
सम्पातपाटव ३.	५२३१९	" ३.	३३३४५	" १.	६१३६२
सम्पुट १.	४३३६४	" १.	५३३२६	सर्ज १.	३३३३८
सम्पूर्ण १. २. ३.	५११८७	सरक ३.	३१९५३	सर्जक १.	३३३३४०
सम्पृक्त १. २. ३.	५११७८	" ३.	७३३३८	सर्जन १.	३३३३११
सम्प्रति ४.	८१८५	सरघा २.	२३३४५	सर्प १.	४१३४
सम्प्रधारण ३.	३३३१५	सरट् १.	६१३६४	" १.	८३३१५
सम्प्रयोग १.	५२२२६	सरट् १.	४१३२८	सर्पजाति २.	४१३११
" १.	८११४५	सरटी २.	३३३२७	सर्पदंष्ट्री २.	३३३३२७
सम्प्रहार १.	३३३१५	सरणी २.	४२२२१	सर्पभुज् १.	४१३१६
सम्प्रेष १.	५२२२५	सरण्यु १.	७११७६	" १.	८३३२१
सम्प्रेषणी २.	३३३६५	सरमा २.	३३३७१	सर्पभृता २.	३३३११
सम्फल १.	३३३६४	सरल १.	३३३७४	सर्पराज १.	४१३३
सम्फुल्ल १. २. ३.	३३३९	" १. २. ३.	५१२२०	" १.	४१३१५
सम्बन्ध १.	५२३३३	सरलद्रव १.	३३३१०९	" १.	४१३१६
सम्बाध १. २. ३.		सरलशीणिक १.	५३३५१	सर्पशफरी २.	४१३४४
	५१३२६	सरलिक १.	५३३५२	सर्पाञ्चर १.	४१३२१
" १. २. ३.	७११२२	सरस् ३.	४२३३६	सर्पारि १.	८३३२१
सम्भरी २.	३३३१२१	" ३.	६३३३४	सर्पिस् ३.	३३३३३८
सम्भव १.	७११७९	सरपिज् ३.	४२३३७	" ३.	६३३३५
सम्भाल १ ब.	३३३२४	सरसी २.	४२३३६	सर्व १.	५१३३१
सम्भावना २.	३३३१७६	सरसीज् ३.	४२३३७	" १.	५१३८५
सम्भाषण ३.	२३३२३	सरसीरुह ३.	४२३३७	सर्वसहा २.	३३३३३
सम्भेद १.	४२३३१	सरस्वत् १.	४२३२९	सर्वगन्ध ३.	४३३१५१
" १.	५२३२६	" १.	८१३३३	सर्वजनप्रिया २.	३३३१५३
		" १.	८१३३४	सर्वज्ञ १.	११३३३

२५ वै०

(१५७)

[सर्वज्ञ]

वैजयन्तीकोषः

[साज्य]

सर्वज्ञ १.	१११४४	सवितृ १.	२१११०
सर्वतः (-स्) ४.	८८८३	" १.	७११७८
सर्वतोभद्र १.	४३३३०	सविध १. २. ३.	पा४१२१
सर्वतोमुख १.	१११८	" १. २. ३. पा४१४१	
" ३.	८३१४८	सविस्मय १. २. ३.	४१२९
सर्वदा ४.	८३१५	सवेध १. २. ३. पा४१४१	
सर्वधुरीण १. २. ३.	३१४५८	सवेश १. २. ३. पा४१४१	
सर्वभक्त १. २. ३.	पा४१५०	सव्य १.	११२२८
सर्वभक्ता २.	३१४६२	" १. २. ३. ६१४१८	
सर्वमङ्गला २.	१११५८	सव्येष्ट १.	३१४१३८
सर्वला २.	३१४१६६	सस्य ३.	३३३२०
सर्वलोचना २.	३१८१८	" ३.	३१८३१
सर्वविद् २.	३१४२३३	सस्यसंवर १.	३३३३८
सर्वविद्या २.	३१४३१	सह ४.	८८११७
सर्ववेदस् १.	३१४७७	सहकारक १.	३३३२५
सर्ववेशिन् १.	३१४६३	सहचर १. २. ३.	३३३१९१
(सर्वकेशिन्)		सहचरी २.	४१४३४
सर्वसन्नहन ३.	३१४१५७	सहज १.	४१४३१
सर्वसस्यभू २.	३१८१७	" ३.	पा२११
सर्वसह १.	३३३५३	सहधर्मिणी २.	४१४३४
सर्वाङ्गीन १. २. ३.	पा४१५०	सहन १. २. ३. पा४३३	
सर्वाभिसार १.	३१४१५७	सहपानक ३.	३१५५३
सर्वार्थसिद्ध १.	१११३४	सहभोजन ३.	४३३१०३
सर्वौघ १.	३१४१५७	सहरक्षस् १.	१११२१
" ३.	३१८१३६	" १.	१११२२
सर्षप १.	३१४४१	सहस् १.	२११८१
सर्षपी २.	३३३६७	" ३.	३१४२१०
सलज्ज १.	३३३१२२	सहसा ४.	८१४३४
सलवण ३.	३३३३२	सहसानु १.	३३६८३
सलिल ३.	४३२११	" १.	७१५४५
सल्लकी २.	३३३९६	सहस्य १.	२११८२
सल्लाप १.	२१४२९	सहस्र ३.	पा११२८
सव ३.	३३६८२	सहस्रतम १. २. ३.	
सवन १.	३३६६९		पा११२३
सवर्ण १.	३३५३	सहस्रदंष्ट्र २.	४११४२
" १.	३३५७०	सहस्रपत्र ३.	४३३३८
" १. २. ३. पा४१२१		सहस्रवीर्या २.	३३३२३३
सविक्रम १.	३१४११	सहस्रवेधिन् ३.	३१८१३१

(१५८)

सहस्रवेधिन् १.	३१८१३३	सहा २.	३३३१०६
सहस्रांशु १.	२१११५	" २.	३३३१२८
सहस्राक्ष १.	१३२१	" २.	३३३१८८
सहस्रिन् १. २. ३.		" २.	३३३१९०
		" २.	३३३१९१
सहा २.	३३३१०६	सहाध्यायिन् १.	३३३२४
" २.	३३३१२८	सहाय १.	३१४१६
" २.	३३३१८८	" १. २. ३. ३१४३३	
" २.	३३३१९०	सहायता २.	पा११९
" २.	३३३१९१	सहित ३.	३१४१७६
सहाध्यायिन् १.	३३३२४	सहितोदर ३.	३१४१७७
सहाय १.	३१४१६	सहिष्णु १. २. ३. पा४३३	
" १. २. ३. ३१४३३		सहुरि १.	१३२१८
सहायता २.	पा११९	" १.	७१४७५
सहित ३.	३१४१७६	सांयात्रिक ३.	१३२६८
सहितोदर ३.	३१४१७७	" ३.	३१४१२३
सहिष्णु १. २. ३. पा४३३		" १.	४३२१८
सहुरि १.	१३२१८	सांयुगीन १. २. ३.	
" १.	७१४७५		३१४१४९
सांयात्रिक ३.	१३२६८	सांराविण ३.	८१११७
" ३.	३१४१२३	सांक्सर १.	१३२८०
" १.	४३२१८	" १.	३१४२५
सांयुगीन १. २. ३.		" १.	३१८३३
		आंक्सरी २.	३३६६६
सांराविण ३.	८१११७	साकम् ४.	८१८१७
सांक्सर १.	१३२८०	साकेत ३.	४३३१५
" १.	३१४२५	साक्षात् ४.	८१४३०
" १.	३१८३३	साक्षिन् १. २. ३. ३१८१९	
आंक्सरी २.	३३६६६	सागर १.	४३३१०
साकम् ४.	८१८१७	साङ्कारिका २.	३३६५२
साकेत ३.	४३३१५	साङ्ग्रामिकगुण १.	
साक्षात् ४.	८१४३०		३१४४
साक्षिन् १. २. ३. ३१८१९		" १.	३१४५
सागर १.	४३३१०	साचि १.	१३२१८
साङ्कारिका २.	३३६५२	" ४.	८१८१९
साङ्ग्रामिकगुण १.		साज्य ३.	३३६५५

[साति]

साति २.	६३२४४	सात्त्विक ३.	३३३१९९
सातिसार १. २. ३.	४३११४६	" १. २. ३. ३३३१०५	
		" १. २. ३. ३३३१०५	
सात्त्वत १.	१११२३	सात्त्विकी २.	३३३१०५
" १. २. ३. ३३३१०५		" १. २. ३. ३३३१०५	
सात्त्वती २.	३३३१०५	साद १.	३३३१०५
सात्त्विक ३.	३३३१०५	सादिन् १.	६३३१०५
" १. २. ३. ३३३१०५		साद्यस्क १. २. ३.	
सात्त्विकी २.	३३३१०५		पा४१८९
साद १.	३३३१०५	साधन ३.	७३३३६
सादिन् १.	६३३१०५	साधारण १. २. ३.	
साद्यस्क १. २. ३.		" ३.	पा४१२९
		साधिका २.	३३३१०७
साधन ३.	७३३३६	साधीयस् १. २. ३.	
साधारण १. २. ३.			७३३२९
" ३.	पा४१२९	साधु १. २. ३. पा४१३५	
साधिका २.	३३३१०७	" १. २. ३. ६३३१०५	
साधीयस् १. २. ३.		साधुवाद १.	२३३३६
		साध्य १ ब.	१३३८
साधु १. २. ३. पा४१३५		साध्वस ३.	३३३१८५
" १. २. ३. ६३३१०५		साध्वी २.	४३३३७
साधुवाद १.	२३३३६	सानु १. ३.	३३३३७
साध्य १ ब.	१३३८	" १.	३३३३३
साध्वस ३.	३३३१८५	सानुनासिक १. २. ३.	
साध्वी २.	४३३३७		२३३३६
सानु १. ३.	३३३३७	सानुमत् १.	३३३३६
" १.	३३३३३	सान्व १. २. ३. २३३३६	
सानुनासिक १. २. ३.		" ३.	३३३३३
		" ३.	६३३३५
सानुमत् १.	३३३३६	सान्वन ३.	३३३३३
सान्व १. २. ३. २३३३६		" ३.	पा३३८
" ३.	३३३३३	सान्वष्टिक ३.	३३३३६
" ३.	६३३३५	सान्वेशिक १.	३३३३९
सान्वन ३.	३३३३३	सान्द्र १. २. ३. पा४१२६	
" ३.	पा३३८	सान्द्रसिन्ध १. २. ३.	
सान्वष्टिक ३.	३३३३६		पा४३३

शब्दानुक्रमणिका

सान्व १.	२३३३६	सारणी २.	२३३३२
सान्नाय ३.	३३३३९	सारथि १.	३३३३८
सासपदीन ३.	३३३३८		
सामज १.	३३३३९		
सामन् ३.	२३३३३		
" ३.	३३३३६		
" ३.	३३३३९		
" ३.	३३३३३		
सामन्त १.	३३३३८		
सामर्थ्य ३.	७३३३८		
सामाजिक १.	३३३३३		
सामान्य १. २. ३.	पा४३२९		
सामि ४.	८३३२९		
सामिक ३.	३३३३३		
सामुद्र १.	३३३३२		
" ३.	४३३३४		
सामुना ३.	३३३३०		
साम्पराय १.	८३३३८		
साम्परायिक १.	३३३३६		
" १.	३३३३३		
साम्प्रतम् ४.	८३३३४		
" ३.	८३३३५		
साम्बाधिक १.	२३३३६		
सायक १.	७३३३७		
सायन्तूर्य ३.	३३३३३		
सायम् ४.	८३३३०		
सायाह १.	२३३३५		
सायुज्य ३.	३३३३३		
सार १.	३३३३४		
" १.	४३३३०		
" १. २. ३. ६३३३७			
सारघ ३.	३३३३५		
सारङ्ग १. २. ३. ७३३३९			
सारण १.	१३३३५		
" १. २. ३. ३३३३६			
" १. २. ३. ३३३३६			
" ३.	३३३३९		
" ३.	पा३३१		
सारणी २.	२३३३२		
सारथि १.	३३३३८		

(१५९)

[सिंह]

सारणी २.	३३३३०	सिंह १.	३३३३५
सारमेय १.	३३३३८	" १.	३३३३५
सारस १.	२३३३३		
" ३.	४३३३७		
" १.	७३३३३		
सारसन ३.	३३३३५		
" ३.	४३३३६		
सारसप्रिया २.	२३३३३		
सारस्वत १.	३३३३९		
सारिका २.	३३३३८		
सारी २.	३३३३१		
सार्थ १.	पा३३४		
सार्थवाह १.	३३३३८		
सार्द्र १. २. ३. पा४३०७			
सार्धम्	८३३३७		
सार्पिष्क १. २. ३. ४३३३५			
सार्धभौम १.	२३३३८		
" १.	३३३३२		
सार्ष्टि २.	३३३३७		
साल १.	३३३३८		
" २.	४३३३४		
" २.	६३३३५		
सालभञ्जिका २.	३३३३४		
सालातुरीयक १.			
	३३३३५		
सालावृक १.	८३३३६		
साल्व १ ब.	३३३३२		
" १ ब.	३३३३८		
सावन १.	२३३३१		
सावित्र १.	३३३३५		
सावित्री २.	४३३३४		
सावित्रेय २.	१३३३४		
साष्टी २.	३३३३७		
सारना २.	३३३३०		
साहस १. ३.	३३३३६		
साहस १. २. ३.			
	३३३३५		
" ३.	पा३३३		
साहायक १. २.	८३३३५		
सिंह १.	३३३३५		
" १.	३३३३५		

[सिंह]

सिंह १.	८१६१४
सिंहकर्णी २.	३१७१९३
सिंहकेसर १.	३३३२६
सिंहपुच्छी २.	३३३१३७
" १.	८२११५
सिंहमल ३.	३३२१८
सिंहल ३.	३१११९
" ३.	३३२३१
" ३.	३८८७५
सिंहवाहना २.	१११६२
सिंहसहनन १. २. ३.	५११६
सिंहाण ३.	३२३३६
सिंहासन ३.	३१७१५
सिंहास्थ ३.	३३३१०१
सिंहिका २.	३६१४७
सिंही २.	३३३१०२
" २.	३३३१०६
सिकता २ ब.	४२३३३
सिकताप्राय ३.	४२३३३
सिकतावत् १. २. ३.	३११४४
सिकतिल १. २. ३.	३११४४
सिक्थ १.	६११६६
सिच् २.	४३३११६
सिचय १.	४३३११६
सित १.	५१११०
" १. २. ३.	५१११०
सितकाच १.	५३३१३
सितकाचर १.	५३३१३
" १.	५३३१४
सितकुञ्जर १.	११२१४
सितकृष्ण १.	५३३१४
सितच्छद् १.	२३३५
सितपिङ्गाण १.	५३३१४
सितपीतहरित्रील १.	५३३१५
सितलोहित १.	५३३२५
सितश्याम १.	५३३१२
" १.	५३३१५

वैजयन्तीकोषः

सिता २.	३१८१३४
सिताङ्ग १.	३१८१०५
सितायुध १.	४११४४
सितासित १.	१११२४
सितोदर १.	११२५८
सिद्गुण्ड १.	३३३१८
" १.	३१५९
सिद्ध १.	१३३२
" १. २. ३.	४३३९३
" १. २. ३.	५३३१११
सिद्धसेन १.	१११५५
सिद्धान्त १.	३३३२५
सिद्धार्थ १.	३१८११
सिद्धि २.	३१८१३
सिद्धम ३.	४११२६
सिद्धमन् १.	५१११४४
सिद्धमल १. २. ३.	४१११४६
सिध्य १.	२११३९
सिन ३.	४११५२
सिनीवाली २.	२११७१
" २.	८२११०
सिन्दुक १.	३३३११८
सिन्दुवार १.	३३३११८
सिन्दूर ३.	३१८११८
सिन्धि ३.	३१८१२१
सिन्धु १ ब.	३११२७
" १.	३३३१८
" २.	४२३२३
" १.	६१५१७
सिन्धुर १.	३१७६१
सिन्धुसर्ज १.	३३३३९
सिन्धुज्व ३.	३१८१२१
सिरा २.	४१११६
सिराल १. २. ३.	५११८
सिल ३.	३१८१२
सिलिन्ध्र १.	३३३१५३
सिह १.	३१८११०
सीता २.	३१८३०
" २.	६२३४५
सीत्य १. २. ३.	३१८२२

[सुगन्धि]

सीम १.	५३३७
सीमन् २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीमन्त १.	४१११००
सीमन्तिनी २.	४११४
सीमन्तोन्नयन ३.	३३३३
सीमा २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीर ३.	३१८२७
सीवन ३.	३१९१२
सीवनी २.	३१९११
" २.	४११६२
सीस १. ३.	३३३२९
सु ४.	८१७८
" ४.	८१८४
" ४.	८१८१३
सुकर १. २. ३.	३१७१०७
सुकुमार १.	५३३५
सुकृत ३.	३३३१६८
" ३.	७११९४
सुकृतिन् १. २. ३.	५११५६
सुख ३.	३३३१८९
" ३.	५१११४४
" ३.	६३३३५
सुखकर १.	१११२१
सुखङ्घुण १.	१११५०
सुखदोषा १.	३११३९
सुखवर्चक १.	३११२९
सुखवास १.	३३३१७१
सुखसुसिका २.	३३३२००
सुखा २.	१११४९
सुखोदय १.	३१९१८
सुगत १.	१११३४
सुगन्ध १.	३३३६९
" १.	३३३२००
" १.	४३३१५३
सुगन्धक १.	३३३१६४
सुगन्धा २.	३३३१८६
" २.	३१८१७
सुगन्धि २.	३३३११९

[सुगन्धि]

सुगन्धि १.	३३३२
" १.	३१८२४
सुगन्धिक १.	३१८३२
सुगन्धिका २.	३३३१३९
सुगन्धिन् ३.	३१८१५
सुगन्धी २.	३३३१७५
सुग्रीव १.	४११५५
सुचरित्रा २.	३१८५०
सुत १.	१३३३
" १.	४११४०
" १.	६११६६
सुतङ्ग १.	३३३२२०
सुतश्रेणी २.	३३३११३
सुतापुत्र १ द्वि.	४११४८
सुताह्वा २.	३३३१४४
सुतेजित १. २. ३.	५१११४
सुत्रामन् १.	११२१४
सुत्वन १.	३३३७५
सुदर्शन ३.	११११७
" ३.	१२३१०
" १.	२३३३०
सुदर्शना २.	३३३१४३
सुदार १.	३२३४
सुदिनाह ३.	८१९२२
सुदुष्प्रभ १.	४११२९
सुधन्व १.	३३३१०७
(युन्धान)	
सुधन्वन् १.	३१५५६
सुधन्वाचार्य १.	३१५५७
" १.	३१५१०४
सुधर्मन् २.	१३३११
सुधा २.	४३३१०५
" २.	६२३४५
सुधी १.	३३३२३४
सुनन्दा २.	१११६०
" २.	३३३४३
सुनाल ३.	४२३४२
सुनासीर १.	१२३५
सुनिषण्णक १.	३३३१५०
सुन्दर १. २. ३.	५१११३४

शब्दानुक्रमणिका

सुन्दरी २.	४११६
सुपथिन् १.	३११४९
सुपर्ण १.	१११३८
" १.	३३३४९
सुपर्णक १.	२३३१९
सुपर्णाण्ड १.	३१५२५
सुपर्णातिनय १.	१११३७
सुपर्वन १.	१११४
सुपार्थ १.	३३३५९
सुप्त १.	२३३२४
" ३.	३३३१७७
" १.	४११३४
सुप्रतीक १.	२११८
सुफल १.	३३३३३
" १.	३३३९३
सुब्रह्मण्य १.	१११५७
सुभग १. २. ३.	५११७०
सुभजन १.	३३३५६
सुभद्रा २.	३३३१७०
सुभिच्चा २.	३३३९७
सुभीरुक ३.	३२३२४
सुम ३.	३३३१८
सुमदा २.	१३३१
सुमन १.	३१८५३
सुमनस् २ ब.	३३३१८
" १. २.	७११९०
सुमना २.	३३३४४
सुमानस १. २. ३.	५११५७
सुमुखी २.	३३३१२३
सुमेरु १.	१३३१२
सुयमा २.	३३३६७
सुर १.	१११२
सुरगायन १.	१३३२
सुरज्येष्ठ १.	१११७
सुरदीर्घिका २.	१३३१३
सुरपणिका २.	३३३७०
सुरभि १.	१२३२६
" १.	२११८७
" २.	३३३९६
" १.	३३३१२२

[सुवृत्त]

सुरभि २.	३३३४३
" १.	५३३४७
" १.	५३३४९
" १. २. ३.	७११९३
सुरभिच्छद् १.	३३३९३
सुख १.	५३३५४
सुरवर्त्मन् ३.	२१११
सुरवत्सल १.	३३३७०
सुरवेता २.	४१३३१
सुरसा २.	३३३९३
" २.	३१८१७
सुरा २.	३१९४५
सुराचार्य १.	२११३३
सुराजन् १. २. ३.	३११४६
सुराजिका २.	४१३३१
सुराधिप १.	१२३२
सुरामण्ड १.	३१९५२
सुरालय १.	१३३१२
सुरावास १.	११११
सुराष्ट्र १.	३१८३७
सुराष्ट्रजा २.	३२३१७
सुराह्वय ३.	३३३७१
सुरूप २.	३३३१८४
सुरूहक १.	३३३१०२
सुरोत्तम १.	११११४
सुलभ १.	१२३२७
सुललिक १.	३१२३७
सुलवणा २.	३१८६०
सुलोह ३.	३२३३४
सुलोहक ३.	३२३२५
सुवर्चला २.	२११२३
" २.	३१८४५
सुवर्चिका २.	३१८१२९
सुवर्ण १.	३२३१९
" १. ३.	५११४१
" १.	५११४९
सुवहा २.	३१८१८
सुवासक १.	३३३१७१
सुवासिनी २.	४११४८
सुवृत्त १. २. ३.	५११८९

[सुवेल]

सुवेल १.	३१२२
सुवता २.	३१४१९
सुषम १. २. ३.	५४१३५
सुषमा २.	४३१५२
सुषवी २.	३३१६३
" २.	३१८८५
सुषि १. २.	४११२
सुषिक १.	५३३६
सुषिम १.	५३३६
सुषिर १.	३३२२८
" ३.	३१११५
" ३.	४११२
" १. ३.	७५१०
सुषिरच्छेद १.	३११२७
सुषिरा २.	३११००
सुषुप्ति २.	३३२००
सुषुम्ना २. १.	८११२५
सुषेण १.	३३१८४
सुषेणी २.	३३१३८
सुषु ४.	८१८४
" ४.	८१८३३
सुसंस्कृत १. २. ३.	४३१९४
सुसाम १.	३३३३७
सुस्निग्धा २.	३३१०४
सुहस्त १. २. ३.	३१७१४८
सुहित १. २. ३.	४३११०५
" १. २. ३.	५३१९९
सुहृद् १.	३१७३
" १. २. ३.	३१७४३
" २.	४३१२५
" १. २. ३.	६३१२०
सुहृदय १. २. ३.	५३११६
सुहृ १ ब.	३१११५
सुकर १.	३१४५
" १.	३१८३३
सुकररी २.	४३३४१
सूक्ष्म ३.	४३१२२
" ३.	४३११०
" १. २. ३.	५३१३६

वैजयन्तीकोषः

सूक्ष्म १. २. ३.	६५१९८
"	८११११०
सूक्ष्मदर्शिन १. २. ३.	
सूक्ष्मा २.	११११६
सूचक १.	३३३३८
" १.	३५१४०
" १.	३११६८
" १. २. ३.	५३१२५
सूचना २.	८२११४
सूचा २.	३११११
" २.	८२११४
सूचि १.	३५१२९
" १.	३५१२९
" २.	३११११
" २.	४३३४८
सूचिसूत्र ३.	३१११२
सूची २.	४३३४८
सूचीमुख ३.	३३२१४
सूत १.	३२३४४
" १.	३५११२
" १.	३५१७७
" १.	३५१७७
" १.	३१७१३८
सूता २.	३३३७३
सूति १.	२३३६
सूतिकागृह ३.	४३३२०
सूतिकामास १.	४३११९
सूस्थान १. २. ३.	५३१५४
सूत्र ३.	३३३२०
" ३.	३११११
" ३.	३१११४२
" ३.	६३३३६
सूत्रक ३.	३१७१५३
सूत्रधार १.	३११६८
सूत्रवेष्टन १.	५१११९
सूत्रसङ्ग्रह १.	३१७११७
सूद १.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९२
सून ३.	३३३१८
" ३. २.	६५१९९

[सुप्र]

सूना २.	३१७८४
" २.	४३१९०
सूनातटि २.	३११३७
सूनु १. २.	४३३३९
सूनुत ३.	५३११४३
" १. २. ३.	७३१२९
सूप १. ३.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९३
सूपकार १. २. ३.	४३३९२
सूर १.	२१११०
सूरण १.	३३३२०८
सूरि १.	३३३२३४
सूर्मि १. २.	३११२२
" १. २.	८११२५
सूर्य १.	२१११०
सूर्यकान्त १.	३३३३७
सूर्यभ्रातृ १.	१३३१२
सूर्या २.	३३३३३४
सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	
सूर्यारक १ ब.	३१३२९
सूर्यार्क १ ब.	३१३२५
सूर्यवर्त १.	३३३१२४
सूर्योद १.	३३३६८
सूक्था २.	४११५८
सूक्न ३.	४३३८८
सृग १.	३१७१६६
सृगाल १.	३३३३७
" १.	८१५७
सृगालकोलि २.	३३३८९
सृगालवास्तुक १.	
सृजया २.	३३३१५४
" २.	३३३१०
सृणि १. २.	३१७८४
सृणिका २.	४३३१२०
सृति २.	३३३४९
सृदाकु १.	१३३१९
" १.	७११७७
सृपाट १. २.	८११२५
सृपाटिका २.	२३३५७
सृप्र १.	२११२७

[सुमर]

सुमर १.	३३३२९
सृष्टा २.	३१८९४
" २.	३१११२९
सृष्टि २.	८१५३५
से १. २. ३.	८१५४०
सेकपात्र ३.	४३२१८
सेकमिश्रान्न ३.	४३३१०६
सेकिम ३.	३३३१५५
सेवतृ १.	४३३३७
सेचन ३.	४३३१८
सेतु १.	३३३४१
" १.	४३३१०
सेतुज १ ब.	३१३३४
सेना २.	३१७५५
सेनानी १.	१११५५
" १. २. ३.	३१७१४१
सेनामुख ३.	३१७५८
सेनारक्ष १. २. ३.	३१७१४०
सेनास्थ १. २. ३.	३१७१४०
सेभ्य १.	५३३७
सेराल ३.	५३३२०
सेराह १.	३१७१०४
सेहराह १.	३१७१०६
सेलिस १.	३३३२४
सेलु १.	३३३५५
सेवक १.	३१७१७
" १. २. ३.	७५१९३
सेवन ३.	३३३३८
" ३.	३१११२
" ३.	७३३३७
सेवनी २.	३३३१८४
सेवा २.	३३३३८
" २.	३१८३७
सेव्य १.	२३३१८
" ३.	३३३२३१
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८१२०
" ३.	३१८१४२
" १.	३१९४९

शब्दानुक्रमणिका

सेव्य ३.	८३३१८
सेव्या २.	३३३८५
" २.	३३३१७७
" २.	३१८५८
सेहिका २.	५३१५४
सेहिकेय १.	२१३३६
सेकत १. २. ३.	३३३४४
" ३.	४३३३३
सेतवाहिनी २.	४३३२६
सेता २.	४३३२६
सेध १.	२१३८२
सैनिक १. २. ३.	
" १. २. ३.	३१७१४०
" १. २. ३.	३१७१४०
सैन्धव ३.	३१८१२०
" ३.	३१७७२
" १.	७५१९१
सैन्य ३.	३१७५५
" १. २. ३.	३१७१४०
सैर १ ब.	३३३४०
सैरन्धी २.	४३३२५
सैराभ १.	५३३१५
सैरिक १. २. ३.	३३३५८
सैरिन्ध १.	३३३११२
" १.	३३३११५
सैरिन्धजाति २.	
सैरिन्धजाति २.	३३३११३
सैरिभ १.	४३३८
सैरेयक १.	३३३१९०
सोढ १. २. ३.	
" ३.	५३३११५
सोढ १. २. ३.	५३३३३
सोत्पात ३.	४३३११२
सोत्त्व १.	३३३७६
सोद्व १.	४३३३४
सोद्व १.	४३३३४
सोन्माद १. २. ३.	
" १.	५३३४१
सोपाक १.	३३३४५
" १.	३३३१०६
सोपान ३.	४३३५१

[सौमिक]

सोम १.	३३३१६९
" १.	३३३८४
" १.	६३३६६
सोमप १.	३३३७५
सोमपान ३.	३३३९२
(सोममान)	
सोमपीथिन् १.	३३३७५
सोमभवा २.	४३३२६
सोमयोनि १.	८१३४९
सोमरसोद्धव ३.	
" ३.	३३३१४५
सोमराजि २.	३३३१०८
सोमल १.	५३३८
सोमवल्लरी २.	३३३१४४
सोमवल्लरी २.	३३३१०८
" २.	३३३१३२
सोमाल १.	५३३४
सोमिन् २.	३३३८३
सोर १.	५३३१२
सोरण १.	५३३३८
सोरावास १.	४३३८८
सोल १.	५३३६
" १.	५३३३५
सोलिक १.	५३३६
सोवाल १.	५३३१३
सौख्य ३.	३३३१८९
सौगन्धिक १.	३३३१४
" ३.	३३३२३४
" ३.	४३३३५
सौचिक १.	३३३११
सौदामनी २.	२३३५
सौध ३.	३३३३४
" १. ३.	४३३२९
सौधात १.	३३३७
सौनन्द ३.	१३३२५
सौसिक १.	३३३२०३
सौभागिनेय १.	४३३४३
सौमनस १.	५३३४९
सौमिक ३.	३३३१०१
(सोमक)	
" १. २. ३.	३३३१२७

सौमिकी]	वैजयन्तीकोषः	[स्थल
सौमिकी २.	३१६८७	स्वव १. २१७३५
सौमेरव ३.	३११७	स्तिमित १. २. ३. ४७३०
सौम्य १.	२११३२	स्तुत १. २. ३. ५४१०६
" ३.	२११९१	स्तुति २. २१७३५
" १.	३१६८४	" २. ३१६१११
" १.	३१६१०८	स्तुतिपाठक १. ३१७३०
" ३.	३१६१४५	स्तूप १. ३१६१७
" १. २. ३.	३१५९८	स्तूपपृष्ठ १. ४११५०
सौम्यकृच्छ्र ३.	३१६१३२	स्तेन १. ३१५५६
सौम्या २.	८१२१५	स्तेम १. ५१२२९
सौरत १.	११२५१	स्तेय ३. ३१५५८
सौरभेय १.	३१४५३	स्तेन्य ३. ३१५५८
सौरभेयी २.	३१४४१	स्तोक १. २१२८
सौरसा २.	३१३८८	" १. २. ३. ५४१३६
सौराष्ट्र ३.	३१२२९	स्तोकक १. २१३३२
सौराष्ट्रिक १.	४११२४	स्तोकपाण्डु १. ५१३१४
(सारोष्ट्रिक)		स्तोत्र ३. २१३३५
सौराष्ट्री २.	३१२१६	" ३. ३१६१११
" २.	३१८४८	स्तोम १. ३१६११
सौरि १.	२११३५	" १. ३१६८२
सौरिक १.	१११११	" १. ५११११
सौर्य १.	२११९१	स्यान १. २. ३. ४१३९५
सौवर्चल ३.	३१८१२५	स्त्री २. ४११४४
" ३.	३१८१२६	" २. ८१२१६
सौवस्तिक १.	३१७२४	" २. ८१६१५
सौवास १.	३१३१२०	स्त्रीधर्मिणी २. ४१७१५
सौविद १.	३१७२२	स्त्रीपुंसलक्षणा २. ४१७३३
सौविद्वह १.	३१७२२	स्त्रीप्रिय १. ३१३४०
सौविष्ट ३.	३१६११२	स्त्रीभूषण १. ३१३२३३
सौवीर १ व.	३११२८	स्त्रीवास १. ३११४८
" ३.	३१२४२	स्त्रीव्यञ्जनाकृता २. ४१४८
" ३.	४१३८१	स्त्रैण १. २. ३. ५४११८
" १. ३.	७१५९१	स्थायक्या १. ३१६१७
सौशमिकन्ध ३.	८१९१९	स्थगणा २. ३११११
सौष्ठव ३.	३१७२०८	स्थण्डिलश १. २. ३. ३१६१३२
सौहार्द ३.	३१६१८६	स्थपति १. ३१५८६
सौहित्य ३.	४१३१०५	" १. ७११८०
सौहृद ३.	३१६१८६	" १. ८१९४५
स्कन्द १.	१११५४	स्थपुट १. २. ३. ५४१८३
" १.	३१९६५	स्थल ३. ३११४२
स्कन्दोल १.	५१३१६	

स्थल]	शब्दानुक्रमणिका	[स्फिच्
स्थल १. २.	८१९३२	स्थिति २. ५१२१४
स्थलशृङ्गाट १.	३१३१४१	" २. ३१२४४
स्थली २.	३११४२	स्थिर १. २११३६
" २.	८१९३२	स्थिरगति १. २११३५
स्थविर १. २. ३.	५१४३	स्थिरजिह्व १. ४११४२
स्थाणु १.	१११४३	स्थिरप्रेमन् १. २. ३.
" १. ३.	३१३१३	स्थिरा २. ३११२
स्थान ३.	३१७१८६	" १. ३१३१००
" ३.	३१९१११	स्थूल ३. ४१३१२५
" ३.	६१३३६	स्थूणा २. ३१२२२
स्थानिक १. २. ३.	३१९१९	" २. ६१२४६
स्थानीय ३.	४१३११	स्थूणाशीर्ष ३. ४१३४०
" ३.	४१३२	स्थूरिन् १. २. ३. ३१४५६
स्थाने ४.	८१८१४	स्थूल ३. ३१८१३९
स्थापत्य १.	३१७२३	" १. २. ३. ५१४८४
" १.	८१९४५	" १. २. ३. ६१४१९
स्थापनी २.	३१३१३०	स्थूलकाष्ठानि १. ११२२०
स्थाप्य १.	३१८१२	स्थूलनास १. ३१४६
स्थामन् ३.	३१७२०	स्थूलपुष्पिका २. ३१३१३५
स्थायिन् १.	३१९८१	स्थूललक्ष १. २. ३.
" १. २. ३.	५१४४२	स्थूलशटिका २. ४१३१२६
स्थायिभाव १.	३१९७६	स्थूलहस्त १. ३१७७१
स्थायुक १.	३१७२१	स्थूलीक्षय १. ८११४८
" १. २. ३.	५१४४२	स्थेय १. ३१८१३
स्थाल १.	१११४५	स्थेयस १. २. ३. ५१४७९
" ३.	४१३६१	स्थेष्ट १. ३. ५१४७९
स्थाला २.	३१८२७	स्थौण्य ३. ३१८९२
स्थालिक १.	५१३५७	स्थीर १ व. ३११३६
स्थाली २.	४१३५५	स्नपित १. २. ३. ५१४१०७
स्थावर १. २. ३.	५१४६२	स्नव १. ५१३३२
स्थाविर ३.	४१४५४	स्नसा २. ४१३११७
स्थासक १.	३१७८७	स्नातक १. ३१६४०
" १.	४१२१३	स्नान ३. ४१३११३
" १.	४१३१४८	" ३. ६१३३६
स्थानु १. २. ३. ५१४४२		स्नायु २. ३. ३१३११७
" १. २. ३. ५१४७९		स्नाव १. ३१३१४
स्थित १. २. ३. ६१४२०		" १. ३१९३३
स्थितासन ३. ३१६२२६		
स्थिति २. ३१८१५		
" २. ५१२२		

स्फीत]		वैजयन्तीकोषः		[स्वर्णदी	
स्फीत १.	पा३१७	संसिन् १.	३१३१५	स्वधिति १.	३१३३६
स्फुट १. २. ३.	३१३१९	सक्ति २.	३१३१५२	स्वन १.	३१३१९
" १. २. ३.	पा३१३३	सज्ज २.	३१३१५३	" १. २. ३.	पा३१३८
" १. २. ३.	३१३१९	सज्ज १.	३१३१५३	स्वप्न १.	३१३१९७
स्फुटन ३.	पा३१३१	" १.	पा३१३२	" १.	३१३१९७
स्फुटवल्ग्वकी २.	३१३१३०	सज्ज १.	३१३१३२	स्वप्नज्ज १. २. ३.	पा३१३०
स्फुटित १. २. ३.	३१३१३६	सज्जपाणिपादा २.	३१३१५२	स्वप्नप्रतिष्ठ १.	पा३१३७
स्फुरण ३.	पा३१३३	सज्जवर्मा २.	३१३१३७	स्वभाव १.	पा३१३२
स्फुरित ३.	३१३१९१	सज्जवन्ती २.	३१३१३२	स्वभू १.	११११३२
स्फुलन ३.	पा३१३३	सज्जट्ट १.	११११३६	स्वमनीषिका २.	३१३१३७
स्फुलिङ्ग १. २. ३.	११३१३१	सज्जट्टव ३.	११११३८	स्वयंवरा २.	३१३१३७
स्फूर्जक १.	३१३१५१	सज्जस्त १. २. ३.	पा३१३०२	स्वयम् ३.	८१८११८
स्फूर्जथु १.	३१३१३६	सज्जक् ३.	८१८११	स्वयम्भू १.	११११८
स्फोटक १.	३१३१३३	सज्जवस्ती २.	३१३१३१	स्वर १.	३१३११०
स्फय १.	३१३१३०२	" २.	३१३१३०	" १.	३१३१३२
स्म ३.	८१७१७	सुगासादन ३.	३१३१८९	" १.	३१३१३३
" ३.	८१७१११	सुगिजङ्ग १.	११३११७	स्वरकम्प १.	३१३१८५
स्मय १.	३१३१३६९	सुच २.	३१३१३००	स्वरभेद १.	३१३१८५
स्मयाक १.	३१८१५८	" २.	८१३११८	स्वराष्ट्रचिन्ता २.	३१७११३
स्मर १.	११३१३७	सुत १. २. ३.	पा३१३०९	स्वरिङ्गण १.	११३१५२
स्मराङ्कुश १.	३१३१३६	सुव ३.	३१३१३००	स्वरित १. २. ३.	३१३१३७
स्मित १. २. ३.	३१३१३९	सुवा २.	३१३१३१३	स्वरु १.	३१३१३६
" ३.	३१३१८३	स्रोतस् ३.	३१३१३३	स्वरुमोचन १.	३१३१३०६
" ३.	८१३१३६	" ३.	३१३१३७	स्वरूप ३.	पा३१३१
स्मृति २.	३१३१३९	स्रोतस्विनी १.	३१३१३२	स्वरेणु २.	३१३१३३
स्यद १.	११३१५५	स्रोतोञ्जन ३.	३१३१३२	स्वर्ग १.	११३१३१
स्यन्द १.	३१३१३२	स्व १. २. ३.	८१३१३८	स्वर्जि २.	३१८१३२९
स्यन्दन १.	३१७१३३	स्वः (-र) ३.	११३१३	स्वर्जिका २.	३१८१३२९
स्यन्दनध्वनि १.	३१३१३९	" (-र) ३.	३१३१३०७	स्वर्ण ३.	३१३१३८
स्यन्दिनी २.	३१३१३२०	" (-र) ३.	८१७१३७	" १.	३१३१३२१
स्यन्न १. २. ३.	पा३१३०९	स्वकुलक्षय १.	३१३१३१	स्वर्णकार १.	३१३१३६
स्यमीक १.	७१३१७५	स्वङ्ग १. २. ३.	पा३१३६	स्वर्णचूड १.	३१३१३९
स्याल १.	३१३१३२	स्वच्छन्द १. २. ३.	पा३१३७	स्वर्णद्वीप ३.	३१३१३९
स्यालिका २.	३१३१३८	स्वज १.	३१३१३०	स्वर्णराज ३.	३१३१३१
स्यूत १.	३१३१३६	" १.	३१३१३५	(स्वर्णराग)	
" १. २. ३.	पा३१३१२	स्वजन १.	३१३१३५	स्वर्णरीति २.	३१३१३६
स्यूति २.	३१३१३२	स्वतन्त्र १. २. ३.	पा३१३७	स्वर्णशुक्तिका २.	३१३१३१
स्यूना २.	३१३१३५	स्वतन्त्रवृत्ति २.	पा३१३०	स्वर्णाद्रि १.	११३१३२
स्यूम १.	३१३१३१	स्वदन ३.	पा३१३०३	स्वर्चदी २.	११३१३३
स्योनाक १	३१३१३८	स्वधिति १.	३१३१३६	(स्वर्णदी)	

[हर्षभांनु]		शब्दानुक्रमणिका		[हरिकेलीय]	
स्वभांनु १.	२।१।३६	स्वामिन् १.	३।६।१५९	हठ १.	६।१।६८
स्वर्वापी २.	४।२।२४	" १.	३।७।३	हड्डिक १.	३।५।४८
स्वर्वेश्या १.	१।३।१	" १.	३।९।१०५	हडक १. ३.	३।९।१३४
स्वल्पदेहा २.	३।६।५१	" १. २. ३.	५।४।५८	हण्डा २.	३।९।१०८
स्वल्पफला २.	३।३।१६०	" १. २. ३.	६।५।९४	हतक १. २. ३.	३।७।१४७
स्वप्सर १.	४।४।३१	स्वामिनी २.	३।७।३२	" १. २. ३.	५।४।६७
स्वप्सू २.	३।१।४	" २.	३।९।१०३	हता २.	३।६।५०
स्वप्सू २.	४।४।२६	स्वाराज् १.	१।२।४	हनन ३.	५।१।३६
स्वप्सू २.	३।९।४	स्वास्थ्य ३.	४।४।१४२	हनु १.	३।५।३४
स्वप्सू २.	३।९।४	स्वाहा २.	१।२।१९	" २.	३।८।१०१
(स्वस्कन्ध)		स्वित् ४.	८।७।६	" १. २.	४।४।९०
स्वस्तर १.	३।८।६६	स्वेद १.	३।९।८१	हन्त ४.	८।७।३०
स्वति ४.	८।७।२९	स्वेदचूषक १.	१।२।५२	" ४.	८।८।२
स्वस्तिक १.	२।३।२८	स्वेदज १. २. ३.	४।४।२	हन्तकार १.	३।६।१५
" १.	३।३।१४९	स्वेदनी २.	४।३।५६	हज १. २. ३.	५।४।११३
" १.	३।६।२२४	स्वैर १. २. ३.	६।४।२०	हय १.	३।७।९०
" १.	४।३।३०	स्वेरिणी २.	४।४।९	हयन ३.	६।७।१२७
" १.	४।३।१३६	स्वेरिन् १. २. ३.	५।४।२७	हयपुच्छी २.	३।३।१०७
स्वस्थयन ३.	३।६।५८	ह		हयशिरसू १.	१।१।३०
स्वस्त्रीय १.	४।४।४१	ह ४.	८।७।८	हर १.	६।१।६७
स्वाती २.	२।१।४०	" ४.	८।७।११	हरक १.	३।७।१६२
स्वादु १.	५।३।२५	हंस १.	२।३।५	हरण १.	३।३।८२
" १. २. ३.	६।४।१९	" १.	३।३।२००	" ३.	३।७।१९३
" ३.	८।३।१८	" १.	६।१।६८	" ३.	३।९।९८
स्वादुकण्टक १.	८।१।५५	" १.	८।६।६	" १.	४।४।७१
स्वादुगन्धा २.	३।३।५७	" १.	४।३।१४४	" ३.	७।३।३९
स्वादुतिक्तकाषाय १.	५।३।३३	हंसक १.	२।३।८	हरणि २.	४।२।२१
स्वादुमुस्ता २.	४।२।४८	हंसकान्ता २.	३।३।१०	हरणेश्वरा २.	४।२।२४
स्वादुरसा ३.	८।२।९	हंसकालीसुत १.	३।४।१०	हरात्रि १.	३।२।५
स्वाद्य १.	५।३।३०	हंसच्छत्र ३.	३।८।७६	हरानत १.	१।२।१२
स्वाद्वम्लतिक्तनुवर १.	५।३।३९	हंसपद ३.	५।१।५०	हराक्षय १.	३।३।८०
स्वाही २.	३।३।१८१	हंसपाद ३.	३।२।४५	हरि १.	१।१।१५
स्वाध्याय १.	७।१।८३	हंसबाहन १.	१।१।८	" १.	३।५।२
स्वान १.	१।३।११	हंससाधि १.	२।३।९	" १.	३।४।३९
" १.	२।४।१	हकार १.	२।४।३१	" १.	३।५।२९
स्वान्त ३.	३।६।१७३	हजा २.	३।९।१०८	" १.	३।५।८९
स्वाप १.	३।६।१९७	हह १.	४।३।३५	" १.	३।७।१०४
" १.	४।३।१६७	हहबिलासिनी २.	३।८।१०१	" १.	३।८।३६
स्वापतेय ३.	३।८।७३	हहवेशमाली २.	४।३।३५	" १.	४।१।६
स्वामिन् १.	१।१।५६	हठ १.	३।७।२०९	" १. २. ३.	६।१।१००
		" १.	४।२।४६	हरिकेलीय १ अ.	३।१।३१

(१६७)

हरिचन्दन]

हरिचन्दन १. ३.	१३३१४
" ३.	३८११३
" १. ३.	८१२७
हरिण १.	३४१२
" १.	५३१२
हरिणी २.	३१२२
" २.	७२३०
हरित् २.	२१२
" १.	५३२२
" २.	६५१०१
हरित १.	३४२
" १.	३८३६
" १.	४३१०
" १.	५३२१
" १.	५३२२
हरिताल ३.	३२१३
हरितालिका २.	३३२३२
हरिद्व १.	२१११
हरिद्रा २.	३३२११
हरिद्रारागक १. २. ३.	५४२६
हरिद्विष १.	१३१०
हरिन्मण १. २.	३२२३८
हरिपर्ण १.	३३१५५
हरिप्रिया २.	८२१०
हरिमन् २.	७१८४
हरिमन्थ १.	३८३७
हरिमन्थज १.	३८३७
हरिया १.	३७१०४
हरिरोमन् १.	८११४९
हरिलोचन १.	२३२२
हरिवत् १.	१२३
हरिवर्ण ३.	३१३
हरिवालुक ३.	३८१५५
हरिवाहन १.	१२४
हरिहय १.	१२३
हरीतक १. २. ३.	८१३८
हरीतकी २.	३३२१
" २.	३३१७८
" २.	८१३८

वैजयन्तीकोषः

हरेणु २.	३८१५५
" १. २.	८१२६
हरेणुक १.	३८३४
हर्तु १.	६१६७
हर्ष ३.	४३१९
हर्षज १.	७१८४
हर्ष १.	३३१८७
हर्षज ३.	४४१११
हर्षमाण १. २. ३.	५४३३
हर्षवेणुक १.	३६६१
हर्षुल १.	२१३२
" १. २. ३.	७५१४
हर्षुला २.	३६५०
हल ३.	६८२७
हलभूति १.	३६१५४
हला २.	३९१०८
हलाभ १.	३७१०२
हलायुध १.	११२२
हलाहल १.	२१२४
हलिन १.	११२३
हलीचण १.	३४२
हलीम १.	३३२२३
हलीमक १.	३३६०
" १.	३३७६
हलुराह १.	३७१०५
हल्य १. २. ३.	३८२३
हल्या २.	५११४
हव १.	१२१८
" १.	२४३०
" १.	६१६७
हवन १.	१२१८
" ३.	३६६९
हवनी २.	३६१००
" २.	३६१०९
हवित्री २.	३६१०९
हविर्मन्थ १.	३३८६
हविर्यज्ञ १.	२६८३
हविशाला २.	४३२२
हविस् ३.	३८१३८
" ३.	६३३७

(१६८)

[हस्तिमल्ल]

हव्ययोनि १.	१११४
हव्यवाहन १.	१२१७
" १.	१२२२
" १.	१२२४
हस १.	३६१९४
हसन ३.	३६१९४
हसनी २.	४३५५
हसन्ती २.	४३५५
हसित ३.	३९८३
हस्त १.	१२४३
" १.	३१५४
" १.	४४७३
हस्तकोहलि २.	३६५९
हस्तम १.	३७१५५
हस्तत्रय ३.	३१५७
हस्तद्वय ३.	३१५७
हस्तपर्ण १.	३३६४
हस्तबिम्ब १.	४२१४८
हस्तलेपन ३.	३६६०
हस्तवारण ३.	४३१०५
हस्तसूत्र ३.	३६५९
हस्तावाप १.	३७१८९
हस्तिकर्कोटक ३.	३३१६५
हस्तिकर्ण १.	३७१९८
" १.	४३१२९
हस्तिकर्णद्वल १.	३३२९
हस्तिकोलि २.	३३८८
हस्तिघोष १.	३३१६२
हस्तिचार १.	३७१७०
हस्तिन् १.	३७६०
" १.	८६५
हस्तिनापुर ३.	४३८
हस्तिनी २.	४३८
हस्तिपक १.	३७८८
हस्तिपर्णिनी २.	३३१७१
हस्तिपादिका २.	३८९३
हस्तिपिप्पली २.	३८७८
हस्तिपूरणी २.	३३१४७
हस्तिप्रिया २.	३३९६
हस्तिमकर १.	४१५२
हस्तिमल्ल १.	८१४९

हस्तिमुख]

हस्तिमुख १.	४३१५
हस्तिराज १.	११५३
हस्तिवातिङ्गन १.	३३१०३
हस्त्य १. २. ३.	५४११७
हस्त्यगना २.	३३९६
हस्त्यारोह १.	३७८८
हहाल १ ब.	३१३६
हा ४.	८७८
हाटक १. ३.	३२२०
" १.	३७१६५
हाकृत ३.	२४८
हान ३.	५२४०
हायन १.	३८३४
" १.	७१८४
हार १.	४२१३८
" १.	४२१३९
हारफल ३.	४२१४०
हारभूरा २.	३३१८१
हारित १.	१२५२
हारिता २.	३६४९
हारिद्र १.	४४१३६
" ३.	५३११
हारिन् १. २. ३.	५४१३५
हारी २.	३६४८
हारीत १.	२३४०
हार्द ३.	३६१८६
हार्या २.	३८११४
हालक १.	३७१०३
हाला २.	३९४५
हालाहल १.	४१२९
हालिक १. २. ३.	३५५८
हाली २.	४४२८
हाव १.	३९९२
" १.	३९९७
हास १.	३६१९४
" १.	३९७६
" १.	३९८३
हासनिक १.	३७१७
हासिका २.	३६१९३
हास्तिक ३.	५३१०

शब्दानुक्रमणिका

हास्तिनपुर ३.	४३८
हास्य ३.	३६१९४
" १.	३९१७५
" १.	३९१७७
हि ४.	८७९
" ४.	८७११
हिंसन ३.	३७४१
हिंसा २.	३७२१५
" २.	६२४६
हिंसाकर्मन् ३.	३६११२
हिंसारु १.	३४३
हिंस्र १.	३४७३
" १. २. ३.	५४४२
हिंसा २.	३३८९
हिंसा २.	२३२१
" २.	४४१२७
हिक्किका २.	४४१३१
हिङ्गु ३.	३८१३१
हिङ्गुदी २.	३३१०४
हिङ्गुनिर्यास १.	८१५६
हिङ्गुल १.	३२४४
" ३.	३२४५
हिङ्गुल २.	३३१०२
हिङ्गीर १.	३७८५
हिङ्गीकान्त १.	११४४
(चण्डीकान्त)	
हित १. २. ३.	३७४३
" १. २. ३.	५४१०४
हिन्ताल १.	३३२२०
हिम् ४.	८७९
हिम ३.	२२९
" १.	५३७
हिमजा २.	३३२०३
हिमधृति १.	२१२४
हिमवत् १.	३२४
हिमवालुका २.	३८१०५
हिमसंहति २.	२२९
हिमा २.	११५९
हिमाचल १.	३२४
हिमानिल १.	१२५४
हिमानी २.	२२९

(१६९)

[हम्]

हिमारी १.	७१८३
हिरण्य ३.	३१९
हिरण्य १.	३८७४
" ३.	७३३९
हिरण्यकशिपुद्विपत् १.	१११८
हिरण्यगर्भ १.	१११७
हिरण्यनाभ १.	३२४
हिरण्यबाहु १.	१३५६
हिरण्यरेतस् १.	१२१६
हिरण्यवर्णा २.	४२२२
हिरुक् ४.	८७३०
" ४.	८८४
" ४.	८८१५
ही ४.	८८१६
हीन १.	३३८२
" १. २. ३.	५४२२
" १. २. ३.	५४१०१
" १. २. ३.	६४२०
हीनवर्ण १.	३५३
हीर १.	६४६९
हीरक १.	३२३९
हुङ्कु १.	३९१३४
हुङ्कुहिक्का २.	२४११
हुण १.	११११
हुण्ड १.	३४३
हुताशन १.	१२१६
हुति २.	३६६९
" २.	३६९०
हुम् ४.	८७९
हुरिङ्क १.	३५४४
हुर्टक १.	३७८५
हुरुकर १ ब.	३१२४
हुल ३.	३७१६८
हुलमात्रिका २.	३७१६४
हुलिक १ ब.	३१३९
हुलिलुली २.	३६५७
हुलु १.	३५४४
हुलुत १.	३७११२
हुति २.	२४३०
हुम् ४.	८७९

हृच्छय]	वैजयन्तीकोषः	ह्लादीनि
हृच्छय १. १११२९	हेति २. ६१२४६	होतृ १. ३६१७९
" १. ११२२१	हेतु १. ५३३३७	होत्र १. ३६१६९
हृणिया २. ३६१९३	" १. ६११६९	होत्वन् १. ३६१७६
(मृणिया)	हैमकरक १. ४३१५८	होम १. ३६१६९
हृणीया २. ३६१९३	हैमकुश ३. ३१११९	होमकाष्टी २. ६६१९५
हृद् ३. ३६१९७३	हैमघ्न ३. ३२३३०	होमधूम १. ३६१९५
" ३. ४१४६८	हैमघ्नी २. ३३३२११	होमधेनु २. ३६१९५
" ३. ४१४११४	हैमज ३. ३२३३२	होमभस्मन् ३. ३६१९५
हृदय ३. ४१४६८	हैमदुग्धक १. ३३३२८	होमयूप १. ३६१९०३
" ३. ४१४११४	हैमधारण ३. ५११५९	होमन्धन ३. ३६१९६
" ३. ७३३३८	हैमन् ३. ३२३२०	होरा २. २११५१
हृदयालु १. २. ३. ५१४१६	" ३. ६३३३७	होल १ ब. ३१२२६
हृष १. ३३३३२	हैमन्त १. ३११८७	हयः (-स) ४. ८८१९
" ३. ३६१९३९	हैमपुष्प १. ३३३३४१	हयस्तन १. २. ३. ५१४८९
" ३. ३९१४८	" १. ३३३३८१	हृद् १. ३३३३४
" १. २. ३. ५१४९६	हैमपुष्पिका २. ३३३३८२	" १. ४११५
" १. २. ३. ५१४१३५	हैमप्रतिमा २. ३९१२२	हृस्व १. २. ३. ५१४८१
" १. २. ३. ६१५१००	हैममाष १. ५११५	" १. २. ३. ६१५१०१
हृद्यगन्ध १. ३६१८४	हैमा २. ३११३	हृस्वगवेधुका २. ३६१९१
हृद्या २. ३२१११	हैरम्ब १. ३१४९	हृस्वनिर्वशक १. ३६१९५९
" २. ३३३३३	" १. ७११८४	हृद् १. २१४२
" २. ३६१९४	हैरुक १. ३६१२३९	हृदिनी २. ४१२३
हृद्यांशु १. २११२६	हैलक ३. ५११६२	" २. ७२२९
हृल्लेख १. ३६१९७९	हैला २. ६२३४६	हृदुनि २. २२१५
हृषित १. २. ३. ८१११३	हैलि २. ३६१५७	ह्री २. ३६१९४
हृषीक ३. ३६१२०३	" १. ६११६९	ह्रीक १. २. ३. ६११०१
हृषीकेश १. १११११	हैषा २. २१४६	ह्रीण १. २. ३. ५११५१
हृष्ट १. २. ३. ५११९९	है ४. ८८१२	ह्रीत १. २. ३. ५११५१
" १. २. ३. ८१११३	हैमकूट ३. ३११६	हैषा २. २१४६
हृष्टि २. ३६१८८	हैमवत ३. ३११३	ह्लाद १. ३६१९८८
है ४. ८८१२	हैमवती २. ८२१११	ह्लादिनी २ ब. २११५९
हैका २. ४१४१२७	हैयङ्गवीन ३. ३६१३८	
हैति १. २. ३६११५७	हैड ३. ५११६२	

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. **रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी।** सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।
२. **वैजयन्तीकोषः (कोश)।** यादव प्रकाशचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री
३. **नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)।** सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
४. **राजतरङ्गिणी जोनराजकृत।** हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह
५. **कालिकापुराणम् (पुराण)।** संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय
6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.**
Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.
7. **Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).**
An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.
Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.
८. **भास्करोदया।** तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी- नृसिंहशर्मकृत। म. म.ज्ञोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।
९. **तिलकमञ्जरी।** श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।
१०. **काव्यमाला।** सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)
११. **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१२. **सेतुबन्धम्** महाकवि प्रवरसेन विरचित। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

Mahākavi Pravarasena's

सेतुबन्धम्

Setubandham

Text with Hindi & English Translation

Dr. Asha Kumar

'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmaṣetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynasty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthets be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annotated bilingual translation was the main force behing presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज

वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचिता। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीता। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या।

व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

राजतरङ्गिणी जोनराजकृत। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

New Light on the Sun Temple of Konarka. Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).

An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstrī
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.

Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्यप्रमाणपारावारीण-नीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंहशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

तिलकमञ्जरी। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

सेतुबन्धम्। महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

शाखा :

चौखम्भा बुक्स

Chaukhambha Books

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)
Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)